प्रेमघन-सर्वस्व

प्रथम भाग

गोलोकवासी

चौधरी पं० बदरी नारायण उपाध्याय 'प्रेमघन'

'अभ्र' की कविताओं का संग्रह

सम्पादक

श्रीप्रभाकरेश्वर-प्रसाद उपाध्याय

श्रीदिनेश नारायण उपाध्याय "साहित्यरत्न"

प्रकाशक

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

सं० १९९६ वि०

प्रथमावृत्ति

मुद्रक—भगवतीप्रसाद वाजपेयी, लक्ष्मी-आर्ट प्रेस,

दारागंज, प्रयाग



उपाध्याय पं० बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन
(सभापति तृतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन)

दो शब्द

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अम्बिकादत्त व्यास, प्रेमघन बदरी नारायण चौधरी, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र और गोविन्द नारायण मिश्र, उस युग के नाम हैं जो हमारे बहुत निकट है किन्तु हमसे अब कुछ हट गया है। जिस डोर ने हमें उनसे बाँध रखा है वह अभी बहुत स्पष्ट है। जो केन्द्र उन्होंने बनाया था हम उसी की सीधी किरनें हैं यद्यपि हमने अपना भी अब नया केन्द्र बना लिया है। अपना निकास-स्थान अभी हमारी आँख के सामने है। उसकी याद मीठी और प्यारी है।

जिन प्रतिभाओं ने वह युग बनाया और हमारे युग का बीज डाला उनकी कृतियाँ हमारी सम्पत्ति हैं और रक्षा के योग्य हैं। आगे के लिये जो नया रास्ता बनाने वाले हैं उनके लिये यह जानना उचित है कि किस रास्ते से वे आए हैं। उस ज्ञान की रक्षा में यह 'प्रेमघन-सर्वस्व' सहायक होगा।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को प्रेमघन जी के सभापतित्व का गौरव और उनके सभापतित्व में मंत्री रहकर काम करने का सौभाग्य मुझे मिला था। प्रेमघनजी को देखने और जानने और उनके आर्शीवाद पाने का मुझे जो अवसर मिला वह मेरे जीवन की संचित स्मृतियों में से है।

प्रयाग आश्विन कृष्ण ३, रवि०
सं० १९९६ वि० } पुरुषोत्तमदास टंडन

परिचय

वह भी एक समय था जब भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के सम्बन्ध में एक अपूर्व मधुर भावना लिए सन् १८८१ में, आठ नौ वर्ष की अवस्था में, मैं मिर्जापुर आया। मेरे पिता जी जो हिन्दी-कविता के बड़े प्रेमी थे, प्रायः रात को रामचरितमानस, रामचन्द्रिका या भारतेन्दु जी के नाटक बड़े चित्ताकर्षक ढंग से पढ़ा करते थे। बहुत दिनों तक तो सत्य हरिश्चन्द्र नाटक के नायक हरिश्चन्द्र और कवि हरिश्चन्द्र में मेरी बालबुद्धि कोई भेद न कर पाती थी। हरिश्चन्द्र शब्द से दोनों की एक मिली जुली अस्पष्ट भावना एक अद्भुत माधुर्य का संचार करती थी। मिर्जापुर आने पर धीरे धीरे यह स्पष्ट हुआ कि कवि हरिश्चन्द्र तो काशी के रहने वाले थे और कुछ वर्ष पहले वर्तमान थे। कुछ दिनों में किसी से सुना कि हरिश्चन्द्र के एक मित्र यहीं रहते हैं और हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि हैं। उनका शुभ नाम है उपाध्याय बदरी नारायण चौधरी।

भारतेन्दु-मंडल के किसी जीते जागते अवशेष के प्रति मेरी कितनी उत्कंठा थी, इसका अब तक स्मरण है। मैं नगर से बाहर रहता था। अवस्था थी १२ या १३ वर्ष की। एक दिन बालकों की एक मंडली जोड़ी गई, जो चौधरी साहब के मकान से परिचित थे, वे अगुआ हुए। मील डेढ़ मील का सफर तै हुआ। पत्थर के एक बड़े मकान के सामने हम लोग जा खड़े हुए। नीचे

का बरामदा खाली था। ऊपर का बरामदा सघन लताओं के जाल से आवृत था। बीच बीच में खंभे और खुली जगह दिखाई पड़ती थी। उसी ओर देखने के लिए मुझसे कहा गया। कोई दिखाई न पड़ा। सड़क पर कई चक्कर लगे। कुछ देर पीछे एक लड़के ने उँगली से ऊपर की ओर इशारा किया। लता-प्रतान के बीच एक मूर्ति खड़ी दिखाई पड़ी। दोनों कंधों पर बाल बिखरे हुए थे। एक हाथ खंभे पर था। देखते-ही देखते वह मूर्ति दृष्टि से ओझल हो गई। बस, यही पहली झांकी थी।

ज्यों ज्यों मैं सयाना होता गया त्यों त्यों हिन्दी के पुराने साहित्य और नए साहित्य का भेद भी समझ पड़ने लगा और नए की ओर झुकाव बढ़ता गया। नवीन साहित्य का प्रथम परिचय नाटकों और उपन्यासों के रूप में था जो मुझे घर पर ही कुछ न कुछ मिल जाया करते थे। बात यह थी कि भारत जीवन के स्वर्गीय बा० रामकृष्ण वर्म्मा मेरे पिता के क्वींसकालेज के सहपाठियों में थे, इनसे भारतजीवन प्रेस की पुस्तकें मेरे यहाँ आया करती थीं। अब मेरे पिता जी उन पुस्तकों को छिपाकर रखने लगे। उन्हें डर था कि कहीं मेरा चित्त स्कूल की पढ़ाई से हट न जाय—मैं बिगड़ न जाऊँ। उन दिनों पं० केदारनाथ पाठक ने एक अच्छा हिन्दी पुस्तकालय मिर्जापूर में खोला था। मैं वहाँ से पुस्तकें लाकर पढ़ा करता था। अतः हिन्दी के आधुनिक सहित्य का स्वरूप अधिक विस्तृत होकर मन में बैठता गया। नाटक उपन्यास के अतिरिक्त विविध विषयों की पुस्तकें और छोटे बड़े लेख भी साहित्य की नई उड़ान के एक प्रधान अंग दिखाई पड़े। स्व० पं० बालकृष्ण भट्ट का हिन्दी-प्रदीप गिरता

पड़ता चला जाता था। चौधरी साहब की आनन्द-कादम्बिनी भी कभी कभी निकल पड़ती थी। कुछ दिनों में काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा के प्रयत्नों की धूम सुनाई पड़ने लगी। एक ओर तो वह नागरी लिपि और हिन्दी भाषा के प्रवेश और अधिकार के लिए आन्दोलन चलाती थी, दूसरी ओर हिन्दी साहित्य की पुष्टि और समृद्धि के लिए अनेक प्रकार के आयोजन करती थी। उपयोगी पुस्तकें निकालने के अतिरिक्त एक पत्रिका भी निकालती थी जिसमें नवीन नवीन विषयों की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता था।

जिन्हें अपने स्वरूप का संस्कार और उस पर ममता थी ज़ो अपनी परंपरागत भाषा और साहित्य से उस समय के शिक्षित कहलाने वाले वर्ग को दूर पड़ते देख मर्माहत थे, उन्हें यह सुनकर बहुत कुछ ढाढ़स होता था कि आधुनिक विचार धारा के साथ अपने साहित्य को बढ़ाने का प्रयत्न जारी है और बहुत से नव-शिक्षित मैदान में आ गए हैं। सोलह सत्रह वर्ष की अवस्था तक पहुँचते पहुँचते मुझे नवयुवक हिन्दी प्रेमियों की एक खासी मंडली मिल गई जिनमें श्री काशीप्रसाद जैसवाल, बा० भगवान दास हालना, पं० बदरीनाथ गौड़, पं० लक्ष्मीशंकर और उमाशंकर द्विवेदी मुख्य थे। हिन्दी के नये पुराने कवियों और लेखकों की चर्चा इस मंडली में रहा करती थी।

मैं भी अब अपने को एक कवि और लेखक समझने लगा था। हम लोगों की बातचीत प्रायः लिखने पढ़ने की हिन्दी में हुआ करती थी। जिस स्थान पर मैं रहता था; वहाँ अधिकतर वकील मुख्तार तथा कचहरी के अफ़सरों और अमलों की बस्ती थी। ऐसे लोगों के उर्दू कानों में हम लोगों की बोली कुछ अनोखी लगती

थी। इसी से उन लोगों ने हम लोगों का नाम 'निस्सन्देह लोग' रख छोड़ा था। मेरे मुहल्ले में एक मुसलमान सब जज आ गए थे। एक दिन मेरे पिताजी खड़े खड़े उनके साथ कुछ बातचीत कर रहे थे। इसी बीच में मैं उधर जा निकला। पिताजी ने मेरा परिचय देते हुए कहा—"इन्हें हिन्दी का बड़ा शौक है"। चट जवाब मिला—"आप को बताने की ज़रूरत नहीं, मैं तो इनकी सूरत देखते ही इस बात से वाक़िफ़ हो गया"। मेरी सूरत में ऐसी क्या बात थी यह इस समय नहीं कहा जा सकता। आज से चालिस वर्ष पहले की बात है।

चौधरी साहब से तो अब अच्छी तरह परिचय हो गया था। अब उनके यहाँ मेरा जाना एक लेखक की हैसियत से होता था। हम लोग उन्हें एक पुरानी चीज़ समझा करते थे। इस पुरातत्व की दृष्टि में प्रेम और कुतूहल का एक अद्‌भुत मिश्रण था। यहाँ पर यह कह देना आवश्यक है कि चौधरी साहब एक ख़ासे हिन्दोस्तानी रईस थे। बसंतपञ्चमी, होली इत्यादि अवसरों पर उनके यहाँ खूब नाच-रंग और उत्सव हुआ करते थे। उनकी हर-एक अदा से रियासत और तबियतदारी टपकती थी। कन्धों तक बाल लटक रहे हैं। आप इधर से उधर टहल रहे हैं। एक छोटा सा लड़का पान की तश्तरी लिए पीछे पीछे लगा हुआ है। बात की काट-छांट का क्या कहना है।

जो बातें उनके मुहँ से निकलती थीं, उनमें एक बिलक्षण वक्रता रहती थी। उनकी बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से एकदम निराला होता था। नौकरों तक के साथ उनका सम्वाद निराला होता था। अगर किसी नौकर के हाथ से कभी कोई

गिलास वगैरह गिरा तो उनके मुहँ से यही निकलता कि "कारे! बचा तो नाहीं" ! उनके प्रश्नों के पहले 'क्यों साहब' अकसर लगा रहता था।

वे लोगों को प्रायः बनाया करते थे, इससे उनके मिलने वाले लोग भी उनको बनाने की फ़िक्र में रहा करते थे। मिर्जापूर में पुरानी परिपाटी के एक प्रतिभाशाली कवि थे; जिनका नाम था— वामनाचार्य गिरि। एक दिन वे सड़क पर चौधरी साहब के ऊपर एक कवित्त जोड़ते चले जा रहे थे। अन्तिम चरण रह गया था कि चौधरी साहब अपने बरामदे में कन्धों पर बाल छिटकाये खम्भे के सहारे खड़े दिखाई पड़े। चट कवित्त पूरा हो गया और बामन जी ने नीचे से वह कवित्त ललकारा, जिसका अन्तिम चरण था— "खम्भा टेकि खड़ी जैसे नारि मुगलाने की"।

एक दिन कई लोग बैठे बातचीत कर रहे थे, कि इतने में एक पंडित जी आ पहुँचे। चौधरी साहब ने पूछा—'कहिये क्या हाल है?' पंडित जी बोले 'कुछ नहीं आज एकादशी थी, कुछ जल खाया है और चले आ रहे हैं।' प्रश्न हुआ 'जल ही खाया है कि कुछ फलाहार भी पिया है!'

एक दिन चौधरी साहब के एक पड़ोसी उनके यहाँ पहुँचे। देखते ही सवाल हुआ, "क्यों साहब, एक लफ़्ज मैं अक्सर सुना करता हूँ, पर उसका ठीक अर्थ समझ में न आया। आखिर घन-चक्कर के क्या मानी हैं, उसके क्या लक्षण हैं?" पड़ोसी महाशय बोले, 'वाह, यह क्या मुश्किल बात है। एक दिन रात को सोने के पहले कागज कलम लेकर सवेरे से रात तक जो जो काम किए हैं, सब लिख जाइये और पढ़ जाइए।"

मेरे सहपाठी पंडित लक्ष्मी नारायण चौबे, बा० भगवानदास हालना, बा० भगवानदास मास्टर (इन्होंने उर्दू बेगम नाम की एक बड़ी ही बिनोदपूर्ण पुस्तक लिखी थी, जिसमें उर्दू की उत्पत्ति, प्रचार आदि का वृतान्त एक कहानी के ढंग पर दिया गया था) इत्यादि कई आदमी गर्मी के दिनों में छत पर बैठे चौधरी साहब से बातचीत कर रहे थे। चौधरी साहब के पास ही एक लेम्प जल रहा था। लैम्प की बत्ती एक बार भभकने लगी। चौधरी साहब नौकरों को आवाज देने लगे। मैंने चाहा कि बढ़ कर बत्ती नीचे गिरा दूँ; पर पंडित लक्ष्मी नारायण ने तमाशा देखने के लिए धीरे से मुझे रोक लिया। चौधरी साहब कहते जा रहे हैं—"अरे जब फूट जाई तबै चलत जावह"। अन्त में चिमनी ग्लोब के सहित चकनाचूर हो गई; पर चौधरी साहब का हाथ लैम्प की तरफ आगे न बढ़ा।

उपाध्याय जी नागरी को भाषा का नाम मानते थे और बराबर नागरी भाषा लिखा करते थे। उनका कहना था कि नागर अपभ्रंश से, जो शिष्ट लोगों की भाषा विकसित हुई वही नागरी कहलाई। इसी प्रकार वे मिर्जापूर न लिख कर मीरजापूर लिखा करते थे, जिसका अर्थ वे करते थे लक्ष्मीपुर। मीर=समुद्र+जा=पुत्री+पुर।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक अभ्युत्थान का मुख्य लक्षण गद्य का विकास था। भारतेन्दु-काल में हिन्दी काव्यधारा नए नए विषयों की ओर भी मोड़ी गई पर उसकी भाषा पूर्ववत् ब्रज ही रही; अभिव्यंजना की शैली में भी कुछ विशेष परिवर्तन लक्षित न हुआ। एक ओर तो शृङ्गार और वीर रस की रचनाएँ पुरानी

पद्धति पर कवित्त सवैयों में चलती रहीं दूसरी ओर देशभक्ति, देशगौरव, देश की दीन दशा, समाजसुधार, तथा और अनेक सामान्य विपयों पर कविताएँ प्रकाशित होती थीं। इन दूसरे ढंग की कविताओं के लिए रोला छन्द उपयुक्त समझा गया था।

भारतेन्दु-युग प्राचीन और नवीन का संधिकाल था। नवीन भावनाओं को लिए हुए भी उस काल के कवि देश की परम्परागत चिरसंचित भावनाओं और उमंगों से भरे थे। भारतीय जीवन के विविध स्वरूपों की मार्मिकता उनके मन में बनी थी। उस जीवन के प्रफुल्ल स्थल उनके हृदय में उमंग उठाते थे। पाश्चात्य जीवन और पाश्चात्य साहित्य की ओर उस समय इतनी टकटकी नहीं लगी थी कि अपने परम्परागत स्वरूप पर से दृष्टि एकबारगी हटी रहे। होली, दीवाली, विजयादशमी, रामलीला, सावन के झूले आदि के अवसरों पर उमंग की जो लहरें देश भर में उठती थीं उनमें उनके हृदय की उमंगें भी योग देती थीं। उनका हृदय जनता के हृदय से विच्छिन्न न था। चौधरी साहब की रचनाओं में यह बात स्पष्ट देखने को मिलती है। जिस प्रकार उनके लेख और कविताएँ नेशनल कांग्रेस, देशदशा, आदि पर हैं उसी प्रकार त्योहारों, मेलों और उत्सवों पर भी। मिर्जापूर की कजली प्रसिद्ध है। चौधरी साहब ने कजली की एक पुस्तक ही लिख डाली है जो इस पुस्तक में वर्षाबिन्दु के अन्तर्गत संग्रहीत है। उस संधिकाल के कवियों में ध्यान देने की बात यह है कि वे प्राचीन और नवीन का योग इस ढंग से करते थे कि कहीं से जोड़ नहीं जान पड़ता था, उनके हाथों में पड़कर नवीन भी प्राचीनता का ही एक विकसित रूप जान पड़ता था।

दूसरी बात ध्यान देने की है उनकी सजीवता या जिंदःदिली। आधुनिक साहित्य का वह प्रथम उत्थान कैसा हँसता खेलता सामने आया था। उसमें मौलिकता थी, उमंग थी। भारतेन्दु के सहयोगी लेखकों और कवियों का वह मंडल किस जोश और जिंदःदिली के साथ कैसी चहल पहल के बीच अपना काम कर गया!

चौधरी साहब का हृदय कविहृदय था। नूतन परिस्थितियाँ भी मार्मिक मूर्त्तरूप धारण करके उनकी प्रतिभा में झलकती थीं! जिस परिस्थिति का कथन भारतेन्दु ने यह कह कर किया है—

अँगरेज-राज सुखसाज सबै अति भारी।
पै धन बिदेस चलि जात यहै अति ख्वारी॥

और पं० प्रतापनारायण जी ने यह कह कर—

जहाँ कृषी वाणिज्य शिल्प सेवा सब माहीं।
देसिन के हित कछू तत्व कहुँ कैसहुँ नाहीं॥

उसी परिस्थित की व्यंजना हमारे चौधरी साहब ने अपने भारत सौभाग्य नाटक में सरस्वती और दुर्गा के साथ लक्ष्मी के प्रस्थान समय के वचनों द्वारा बड़े हृदयस्पर्शी ढंग से की है।

अतीत जीवन की, विशेषतः बाल्य और कुमार अवस्था की स्मृतियाँ, कितनी मधुर होती हैं! उनकी मधुरता का अनुभव प्रत्येक भावुक करता है, कवियों का तो कहना ही क्या? हमारे चौधरी साहब ने अतीत की स्मृति में ही 'जीर्ण जनपद' के नाम से एक बहुत बड़ा वर्णनात्मक प्रबन्धकाव्य लिख डाला है।

'जीर्ण जनपद' की 'पूर्वदशा' का वर्णन कवि यों करता है—

करवांसी बँसवारिन को रकबा जहँ मरकत।
बीच २ कंटकित वृत्त जाके बठि लरकत॥

छाई जिन पर कुटिल कटीली वेलि अनेकन ।
गोलहु गोली भेदि न जाहि जाहि वाहर सन ॥

दूसरे स्थान पर कवि 'मकतवखाने' का वड़ा ही चित्ताकर्षक वर्णन करता है—

"पढ़त रहे बचपन में हम जहँ निज भाइन सँग ।
अजहुँ आय सुधि जाकी पुनि मन रँगत सोई रँग ॥
रहे मोलवी साहेब जहँ के अतिसय सज्जन ।
बूढ़े सत्तर वत्सर के पै तऊ पुष्ट तन ॥

इसी प्रकार 'अलौकिक लीला' काव्य में भक्ति रस में लीन हो कर कवि ने कृष्णचरित्र का वर्णन बड़े मनोहर ब्योरों के साथ किया है ।

चौधरी साहव स्थान स्थान पर अनुप्रास और वर्णमैत्री गद्य तक में चाहते थे । एक वार आनन्द-कादम्बिनी के लिए मैंने भारत वसंत नाम का एक पद्यवद्ध दृश्य काव्य लिखा, उसमें भारत के प्रति वसंत का यह वाक्य उपालम्भ के रूप में था—

वहु दिन नहिं बीते सामने सोइ आयो ।
गरजि गजनवी ते गर्व सारो गिरायो ॥

दूसरी पंक्ति उन्हें पसन्द तो वहुत आई पर उन्होंने उदासी के साथ कहा—"हिन्दू होकर आप से यह लिखा कैसे गया" ?

वे कलम की कारीगरी के कायल थे । जिस काव्य में कोई कारीगरी न हो वह उन्हें फीका लगता था । एक दिन उन्होंने एक छोटी सी कविता अपने सामने बनाने को कहा; शायद देशदशा पर । मैं नीचे की यह पंक्ति लिख कर कुछ सोचने लगा—

'विकल भारत, दीन आरत, स्वेद गारत गात ।'

आपने कहा—"आपने पहले ही चरण में ज्यादा घना काम कर दिया"।

चौधरी साहब के जीवन-काल में ही खड़ी बोली का व्यवहार कविता में वेधड़क होने लगा था और वह इनके सदृश अच्छे कवियों के हाथ में पड़ कर खूब मँज गई थी। भारतेन्दु के समय में कविता के केवल विषय कुछ बदले थे। अब भाषा भी बदली। अतः हमारे चौधरी साहब ने भी कई कविताएं खड़ी बोली में बहुत ही प्रांजल लिखी हैं।

यह पहले ही कहा जा चुका है कि हमारे कवि में रसिकता, और चुहलबाज़ी कूट कूट कर भरी थी। ऐसे रसिक जीव का संगीतप्रेमी होना आश्चर्य की बात नहीं। उन्होंने बहुत सी गाने की चीज़ें बनाईं जो उन्हीं के सामने मिर्जापूर में गाई जाने लगीं। चौधरी साहब कितने बड़े संगीत के आचार्य थे यह उनके गीतों से स्पष्ट रूप से विदित हो जाता है। चौधरी साहब ने होली आदि उत्सवों पर होली ही नहीं पर कबीर की भी बड़ी सुन्दर रचनायें की हैं। जैसे :—

"कबीर अर र र र र र र हाँ।
होरी हिन्दुन के घरे भरि भरि धावत रंग,
सब के ऊपर नावत गारी गावत पीये भंग,
भल्ला भले भागैं वेधरमी मुँह मोरे।"

विवाह आदि शुभ अवसरों पर गाने के उपयुक्त भी उनकी सुन्दर रचनायें हैं। जैसे—बनरा के गीत, समधिन की गाली इत्यादि। उदाहरणार्थ—

"सुनिये समधिन सुमुखि सयानी।
आवहु दौरि देहु दरसन जनि प्यारी फिरहु लुकानी॥
फैली सुभग सरस कीरति तुव, सुन सबहिन सुखदानी"

अन्त में मैं इतना कहना चाहता हूँ कि मुझे चौधरी साहब के सत्संग का अवसर उस समय प्राप्त हुआ था जब वे वृद्ध हो गए थे और उनकी लेखनी ने बहुत कुछ विश्राम ले लिया था। फिर भी उनकी एक एक बात का स्मरण मुझे किसी अनिर्वचनीय भावना में मग्न कर देता है। साहित्य में उनका स्मरण आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रथम उत्थान का स्मरण है।

दुर्गाकुण्ड, काशी
आश्विन कृष्ण ३, १९९६ }

रामचन्द्र शुक्ल

निवेदन

उन्नीसवीं सदी के अन्तिम चरण में सरस्वती के जिन उपासकों ने 'भारतेन्दु' के साथ हिन्दी को प्राणदान दिया है उनमें 'प्रेमघन' जी का एक अमिट स्थान है, 'प्रेमघन' जी के अमूल्य ग्रन्थों के प्रकाशन का एक बड़ा भारी भार हम उनके वंशजों के ऊपर था। सौभाग्यवश आज प्रेमघन सर्वस्व प्रथम भाग को, जिसके अन्तर्गत प्रेमघन जी की सम्पूर्ण पद्य की रचनायें संग्रहीत हैं, हम लोग हिन्दी साहित्य के समक्ष उपस्थित कर रहे हैं। यह पूर्णाशा है कि बहुत ही शीघ्र उनकी गद्य, नाटक तथा आलोचना की पुस्तकें भी हम लोग हिन्दी संसार के समक्ष उपस्थित करेंगे।

प्रेमघन सर्वस्व प्रथमभाग को 'प्रबन्ध काव्य', 'स्फुट काव्य', तथा 'संगीत काव्य', इन तीन भागों में विषयानुसार विभक्त किया गया है। संगीत काव्य के अन्तर्गत प्रेमघन जी की 'संगीत सुधा' पुस्तक रचनाक्रम के अनुसार उसी अपने प्राचीन रूप में संग्रहीत है। इसमें पुस्तक के आरम्भ तथा अन्त की दो ही तिथियाँ दी गई हैं, क्योंकि भिन्न भिन्न उपखंडों की तिथियाँ ज्ञात नहीं हैं और न हो सकती हैं।

अन्त में हम लोग उन महानुभावों को, जिन लोगों ने इस पुस्तक के प्रकाश में आने में सहायता दी है, हृदय से धन्यवाद देते हैं। इस पुस्तक के प्रकाश में आने का श्रेय माननीय बाबू

पुरुषोत्तमदास जी टन्डन को है। आपने दो शब्द लिख कर प्रेमघन परिवार के प्रति बड़ी ही कृपा की है। अन्त में आचार्य पंडित रामचन्द्र जी शुक्ल के हम लोग कितने आभारी हैं नहीं कह सकते—आचार्य शुक्ल जी का हम लोगों से प्रत्येक वार मिलने पर ग्रन्थ के प्रकाशन के विषय में कहना और अन्त में भूमिका लिखने का कष्ट करना उनकी कृपा ही है।

'शीतलसदन'
मसकनवां, गोन्डा
आश्विन कृ० ३, १९९६

निवेदक
श्री प्रभाकरेश्वर प्रसाद उपाध्याय
श्री दिनेश नारायण उपाध्याय
'साहित्यरत्न'

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति-संख्या (शीर्षकों को छोड़कर)	अशुद्ध	शुद्ध
११	१६	एकन एकन	एकन
१३	७	प	पै
१६	२०	रोव	रोवत
१७	६	को	के
२०	२१	अमुखता	आमुखता
२५	१६	चपल चपल	चपल
२६	२०	निज बल	निज निज बल
३६	२	तिय	तिहिं
४१	१७	सामी हूँ की	सामी की
४४	६	औरहु	औरहु
५२	५	भए	भाए
५७	१५	नहीं	नाहीं
६३	४	सो	सों
६४	१५	यदपि नीति	यदपि
६५	५	सकौ	यह सकौ
६६	७	नोशल, चाणूर	तोशल, चाणूरु
,,	६	अनुभय	अनुभव
,,	१६	हित	हित सब
६८	१५	रहयो	रह्यो
७०	१६	मचो	मच्यो
७५	६	करवन्दे	करवँदे
,,	६	कंज	कंजा
७६	१६	सो बठ्यो	सों बढ़यो
८०	१०	द्वतीय	द्वितीय
८१	४	द्वबि	छबि
८२	६	कंस ने	कंस जू
८२	२२	संग	संग चलि
८२	२४	सुनि	सुनियत
८६	१०	छोटे हैं	छोटो है
६०	१०	लीनेसि	लीने सिर
६७	१७	विनाय	वि ताय
१०३	२	सो	सों
,,	२०	घूमरी	धूमरी
११२	१६	जमुना	जमुनाहु
११३	५	मृड़ाल	मृणाल
,,	२४	मघव	माधव
११८	५	विद्यत	विद्युत
,,	७	सागर	सागर जल
१२२	१५	रंग...मोल	मोल...रंग
,,	१७	चौखटा	चौखट
१२६	५	कुमरिका	कुमारिका
१३८	१	मनमाली	बनमाली
,,	६	जयति जै जै	जयति जै
१४६	—	स० १६४२	सं० १६४२
१५१	३	अकास	आकास
१५६	२	बरस लो	बरस लौं
१६२	६	धूम सो	धूम सों
१७१	१३	दधकती	दधकतो
१७३	१५	मेद	भेद
,,	१६	भूमि	भूमी
१७५	३	रही	रह्यो
,,	२३	घड़ी	घड़ी
१७७	१२	अथय	अथै
,,	१७	द्रठय	द्रव्य
१८३	१६	भारि	भरि
१८४	१८	लेंये	लेय
१८५	२४	भाल	भल
१६१	६	ये ही	यही
२०३	१३	बरसी	बरसो
२०५	३	प्रफ्फुल	प्रफुल्ल
२०६	१	चतक	चातक
२०८	१३	उदय	उदै
,,	१७	भावानी	भावनी
२१४	३	घन	घन
२१६	१	चाँदनी की	चाँदनी
२४२	२०	सो	सों
२४६	२२	उत्यो	उठ्यो
२५५	२२	तू भयो तू	तू भयो
२६६	२२	महरानी	महारानी
२६६	२१	ठयाजन	व्याजन
२७१	२४	ध्यान प्रजा	ध्यान
२७७	२४	पूरन	पूरन पूरन
२८०	५	जीवन सम	जीवन जीवन सम
२८७	२३	समग्री	सामग्री

पृष्ठ	पंक्ति-संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
२६६	१७	लगि	लागि
२६७	५	जो कहँ	जो जा कहँ
२६८	६	बरखहु	बरखहू
३०२	८	बनय	बनाय
”	१८	विदिसमि	विदिसनि
३०३	१७	स्थल	स्थूल
३०५	१८	६ या	६ या ७
३११	२५	फ़स्ट	फ़ास्ट
३१७	२१	रात	रत
३२३	१०	भापा	भाषा
३२७	—	स० १६५६	सं० १६५६
३२६	१४	कमिनि	कामिनि
३३२	३	ध्यान	ध्याय
३३३	४	प्रेमघन	प्रेमघन
”	६	घटाकास	घटाकास
३३४	३	धृत	घृत
”	११	सौखट पट	सौ खटपट
”	१६	खिसहाय	सहाय
”	२०	छनक छबीसी	छनछबिसी
३३५	१२	नाहिं	नहिं
३३७	६	तिरती	तिरतो
”	१०	लागती	लगातो
३३६	—	स० १६६०	सं० १६६०
३४१	१३	निरखिन	निरखि
३४२	१९	रही	रहे
३४७	१४	विचराचार	विचाराचार
३४६	१३	उच्छाह	उछाह
३६८	१	पाला	पाला परयो
३६६	६	नासि	नसि
३७४	६	सतानम	सनातन
३७६	८	बतलाया	बतलाता
३८१	१३	रह्यो	रह्यौ
३८५	२	बिबिघ	विविध
”	६	हिन्तुस्तानी	हिन्दुस्तानी
३६२	१२	बसि भये	बसि बहु भये
”	२०	आगरा	आगार
३६६	८	टूटी	टूटो
३६८	१६	सुख	सुछन्द
४०२	१३	अघिक	अधिक
४०३	१६	उज्वल	उज्वल
४०५	१४	हसराज	हंसराज
४०८	२०	खयाल	ख्यालें
४१०	८	गुजन	गुंजन
”	६	दिखाता	दिखाता था
”	१०	समाता	समाता था
४१६	४	विलामावत	चिलमावत
४२२	१६	बेपीर	है बेपीर
४२३	१४	बदनीनारायन	बद्रीनारायन
४२४	७	दीनो	दीनी
४२५	१३	आई	आई रे
४३१	५	उप	उर
४३२	८	आँग्व	आँखें
४३३	१३	घूघट	घूँघट
४३४	४	सुगुंयां	सुगुयाँ
४४६	१६	नठ खट	नटखट
४६२	१६	सुाखदानी	सुखदानी
४६५	१	सदा	सबा
”	६	उशाको	उश्शाकों
४६७	११	षितमग़र	सितमगर
”	१५	जिग़र	जिगर
४७३	१८	शोक	शोख
४७६	६	को रे	को देख गिरे रे
४६०	२१	द्रम	द्रुम
४६२	१०	भेरा	मेरा
५२३	१५	भेहँदी	मेहँदी
५५२	११	ऊठो	उठो
५६०	शीर्षक	मे	मेघ
५७२	१२	भूठ	मूठ
५७६	६	सौंहीन	सौंहनि
५८०	६	भेरे	मेरे
५८५	११	बाजावत	बजावत
५८६	३	निपाह	निबाह
५६८	१७	टरै	टरै रे
६०४	१२	गाई रे	गाई री
६१३	२३	हतोरि	हतोरी
६१८	५	छोढ़	छोड़
६२३	१	सुहात	न सुहात
”	१४	करि भल	करि हम भल
६२५	८	गीरी	गोरी
६३१	६	पदमिनी	पदमिनि पदमिनि
”	२२	सब की	सब को

१२६ प्रारंभ में छन्द शीर्षक 'दोहा' समझें
३६६ छन्द शीर्षक 'दोहा' न पढ़ें।

प्रेमघन-सर्वस्व

प्रथम भाग

पहला खंड

प्रबन्ध काव्य

विषय-सूची

—:※:—

प्रबन्ध काव्य—(पहला खण्ड)

स्फुट काव्य—(दूसरा खण्ड)

संगीत काव्य—(तीसरा खण्ड)

जीर्ण जनपद

सं० १९६६

जीर्णजनपद

अथवा

दुर्दशा दत्तापुर*

श्रीपति कृपा प्रभाव, सुखी बहु दिवस निरन्तर।
निरत विविध व्यापार, होय गुरु काजनि तत्पर ॥१॥
बहु नगरनि धन, जन कृत्रिम सोभा, परिपूरित।
बहु ग्रामनि सुख समृद्धि जहाँ निवसति नित ॥२॥
रम्यस्थल बहु युक्त लदे फल फूलन सों बन।
ताल नदी नारे जित सोहत, अति मोहत मन ॥३॥
शैल अनेक शृंग कन्दरा दरी सोहन मय।
सजित सुडौल परे पाहन चट्टान समुच्चय ॥४॥
बहत नदी हहरात जहाँ, नारे कलरव करि।
निदरत जिनहिं नीरझर शीतल स्वच्छ नीर झरि ॥५॥
सघन लता द्रुम सों अधित्यका† जिनकी सोहत।
किलकारत वानर लंगूर जित, नित मन मोहत ॥६॥

---

* यह ग्राम प्रेमघन जी के पूर्वजों का निवासस्थान था और प्रेमघन जी भी इसी ग्राम में १९१२ वैक्रमीय में उत्पन्न हुए थे। इस ग्राम की प्राचीन विभूति तथा आधुनिक दशा का इसमें यथार्थ चित्रण है।

† पर्वत का ऊपरी भाग वा भूमि।

सुमन सौरभित पर जहँ जुरि मधुकर गुञ्जारत।
लदे पक्क नाना प्रकार फल नवल निहारत ॥७॥
वर विहंग अवली जहँ भाँति भाँति की आवति।
करि भोजन आतृप्त मनोहर बोल सुनावति ॥८॥
कोऊ तराने गावत, कोउ गिटगिरी भरैं जहँ।
कोऊ अलापत राग, कोऊ हरिनाम रटैं तहँ ॥९॥
धन्यवाद जगदीस देन हित परम प्रेम युत।
प्रति कुञ्जनि कलरवित होत यों उत्सव अद्भुत ॥१०॥
जाके दुर्गम कानन बाघ सिंह जब गरजत।
भाजत डरि मृग माल, पथिक जनको जिय लरजत ॥११॥
कूकन लगत मयूर जानि घन की धुनि हर्षित।
होत सिकारी जन को मन सहसा आकर्षित ॥१२॥
हरी भरी घासन सों अधित्यका छवि छाई।
बहु गुणदायक औषधीन संकुल उपजाई ॥१३॥
कबहुँ काज के व्याज, काज अनुरोध कबहुँ तहँ।
कबहुँ मनोरंजन हित जात भ्रमत निबसत जहँ ॥१४॥
कबहुँ नगर अरु कबहुँ ग्राम, वन कै पहार पर।
आवश्यक जब जहाँ, जहाँ को कै जब अवसर ॥१५॥
अथवा जब नगरन सों ऊबत जी, तब गाँवन।
गाँवन सों बन शैल नगर हित मन वहलावन ॥१६॥
निवसत, पै सब ठौर रहनि निज रही सदा यह।
नित्य कृत्य अरु काम काज सों बच्यो समय, वह ॥१७॥
बीतत नित क्रीड़ा कौतुक, आमोद प्रमोदनि।
यथा समय अरु ठौर एक इनमें प्रधान बनि ॥१८॥

औरन की सुधि सहज भुलावत हिय हुलसावत ।
सब जग चिन्ता चूर मूर करि दूर बहावत ॥१६॥
मन बहलावनि विशद बतकही होत परस्पर ।
जब कबहूँ मिलि सुजन सुहृद सहचर अरु अनुचर ॥२०॥
समालोचना आनन्द प्रद समय ठांव की ।
होत जबै, सुधि आवति तब प्रिय वही गाँव की ॥२१॥
जहं बीते दिन अपने बहुधा बालकपन के ।
जहँ के सहज सबं विनोद हैं मोहन मन के ॥२२॥

परिवार परिचय

ईस कृपा सों यदपि निवास स्थान अनेकन ।
भिन्न भिन्न ठौरन पर हैं सब सहित सुपासन ॥ २३ ॥
बड़ी बड़ी अट्टालिका सहित बाग तड़ागन ।
नगर बीच, वन, शैल, निकट अरु नदी किनारन ॥ २४ ॥
इष्ट मित्र अरु सुजन सुहृद सज्जन संग निसि दिन ।
जिन मैं बीतत समय अधिक तर कलह क्लेश बिन ॥ २५ ॥
अति विशाल परिवार बीच मैं प्रेम परस्पर ।
यथा उचित सन्मान समादर सहित निरन्तर ॥ २६ ॥
रहत मित्रता को सो बर बरताव सदाहीं ।
इक जनहूँ को रुचत काज सों सबहिं सुहाहीं ॥ २७ ॥
रहत तहाँ तब लगि सों, जाको जहाँ रमत मन ।
निज निज काज बिभाग करत चुप चाप सबै जन ॥ २८ ॥
एक काज को तजत, पहुँचि तिहि और सँभालत ।
होन देत नहिं हानि भली विधि देखत भालत ॥ २९ ॥

सवै सयाने, सबै अनेकन गुन गन मंडित।
कोऊ एक, अनेक विषय के कोऊ पंडित॥ ३० ॥
कोऊ परमारथिक, कोऊ संसारिक काजहिं।
कोऊ दुहुं सों दूर सदा सुख साजहि साजहिं॥ ३१ ॥
पै मिलि वैठत जवै सवै रंगि जात एक रंग।
भिन्न भिन्न वादित्र यथा मिलि वजत एक संग॥ ३२ ॥
कारन सव मैं सव की रुचि कछु कछु समान सी।
सवहि लहन निष्पाप सुखन की परी वानि सी॥ ३३ ॥
नित प्रति विद्या विविध व्यसन, साहित्य समादर।
सुख सामग्री सेवन, कौतूहल विनोद कर॥ ३४ ॥
राग रंग संग जवै हाट सुन्दरता लागति।
वहुधा ऐसे समय प्रीति की रीतिहु जागति॥ ३५ ॥
भरत आह नाले कोउ मोहत वाह वाह करि।
कोऊ तन्मय होत ईस के रंग हियो भरि॥ ३६ ॥
यह विचित्रता इतहिं दया करि ईस दिखावत।
विकट विरुद्ध विधान वीच गुल अजव खिलावत॥ ३७ ॥
रहत सदा सद्धर्म्म परायण लोग न्याय रत।
काम क्रोध अरु मोह, लोभ सों वचत वचावत॥ ३८ ॥
यथा लाभ सन्तुष्ट, अधिक उद्योग न भावत।
वहु धन मान, वड़ाई के हित, चित न चलावत॥ ३९ ॥
सदा ज्ञान वैराग्य योग की होत वारता।
ईस भक्ति मै निरत, सवन के हिय उदारता॥ ४० ॥
"अहै दोष विन ईश एक" यह सत्य कहावत!
तासों जो कछु दोष इतै लखिवे मैं आवत॥ ४१ ॥



प्रेमघन जी (२४ वर्ष)

सो सम्प्रति प्रचलित जग की गति ओर निहारे।
सौ सौ कुशल इतै लखियत मन माहिं विचारे ॥ ४२ ॥
मर्य्यादा प्राचीन अजहुँ जहँ विशद विराजति।
मिलि सभ्यता नवीन सहित सीमा छवि छाजति ॥ ४३ ॥
जित सामाजिक संस्कार नहिं अधिक प्रबल वनि।
सत्य सनातन धर्म्म मूल आचार सकत हनि ॥ ४४ ॥
जित अंगरेजी सिच्छा नहिं संस्कृत दवावति।
वाकी महिमा मेटि कुमति निज नहिं उपजावति ॥ ४५ ॥
पर उपकार चित्त सों वाहर होत जहाँ पर।
जहँ सज्जन सत्कार यथोचित लहत निरन्तर ॥ ४६ ॥
जहाँ आर्य्यता अजहुं सहित अभिमान दिखाती।
जहाँ धर्म्म रुचि मोहत मन अजहूँ मुसकाती ॥ ४७ ॥
जहँ विनम्रता, सत्य, शीलता, च्चमा, दया संग !
कुल परम्परागत वहुधा लखि परत सोई ढंग ॥ ४८ ॥
स्वाध्याय, तप निरत जहाँ जन अजहुँ लखाहीं।
वहु सद्धर्म्म परायन जस कहुँ विरल सुनाहीं ॥ ४९ ॥
नहिं कोऊ मूरख नहिं नृशंस नर नीच पापरत।
सुनि जिनकी करतूति होय स्वजनन को सिर नत ॥ ५० ॥
जो कोउ मैं कछु दोष तऊ गुन की अधिकाई।
मिलि मयंक मैं ज्यों कलंक नहिं परत लखाई ॥ ५१ ॥
जगपति जनु निज दया भूरि भाजन दिखरायो।
जगहित यह आदर्श विप्र कुल विरचि वनायो ॥ ५२ ॥
सव सुख सामग्री संपन्न गृहस्थ गुनागर।
धन जन सम्पति सुगति मान मर्य्याद धुरन्धर ॥ ५३ ॥

जन्मभूमि प्रेम

या विधि सुख सुविधा समान सम्पन्न होय मन।
तऊ चाह सों चहत ताहि धौं क्यों अवलोकन ॥ ५४ ॥
जन्म भूमि वह यदपि, तऊ सम्बन्ध न कछु अब।
अपनो वा सो रह्यो, टूटि सो गयो कबै सब ॥ ५५ ॥
और औरही ठौर भयो अब तो गृह अपनो।
तऊ लखत मन किह कारन वाही को सपनो ॥ ५६ ॥
धवल धाम अभिराम, रम्य थल सकल सुखाकर।
बसत, चहत मन वा सूनो गृह निरखन सादर ॥ ५७ ॥
रहे पुराने स्वजन इष्ट अरु मित्र न अब उत।
पै वा थल दरसन हूँ मन मानत प्रमोद युत ॥ ५८ ॥
तदपि न वह तालुका रह्यो अपने अधिकारन।
तऊ मचलि मन समुझत तिहि निज ही किहि कारन ॥ ५९ ॥
समाधान या शंका को पर नेक विचारत।
सहजै मैं ह्वै जात जगत गति ओर निहारत ॥ ६० ॥
जन्म भूमि सों नेह और ममता जग जीवन।
दियो प्रकृति जिहि कबहुँ न कोउ करि सकत उलंघन ॥ ६१ ॥
पसु, पच्छिन हूँ मैं यह नियम लखात सदा जब।
मानव मन तब ताहि कौन विधि भूलि सकत कब ॥ ६२ ॥
वह मनुष्य कहिबे के योगन कबहुँ नीच नर।
जन्म भूमि निज नेह नाहिं जाके उर अन्तर ॥ ६३ ॥
जन्म भूमि हित के हित चिन्ता जा हिय नाहीं।
तिहि जानो जड़ जीव, प्रगट मानव; मन माहीं ॥ ६४ ॥

जन्मभूमि दुर्दशा निरखि जाको हिय कातर।
होय न अरु दुख मोचन मैं ताके निसि वासर ॥ ६५ ॥
रहत न तत्पर जो, ताको मुख देखेहुँ पातक।
नर पिशाच सों जननी जन्मभूमि को घातक ॥ ६६ ॥
यदपि वस्यो संसार सुखद थल विविध लखहीं।
जन्म भूमि की पै छवि मन तें विसरत नाहीं ॥ ६७ ॥
पाय यद्‌पि परिवर्त्तन वहु वनि गयो और अव।
तदपि अजव उभरत मन में सुधि वाकी जब जब ॥६८॥

दर्शनाभिलाषा

यों रहि रहि मन माहिं यदपि सुधि वाकी आवै।
अरु तिहि निरखन हित चित चंचल ह्वै ललचावै ॥६९॥
तऊ वहु दिवस लौं नहिं आयो ऐसो अवसर।
तिहि लखि भूले भायन पुनि करि सकिय नवल तर ॥७०॥
प्रति वत्सर तिहूँ लाँघत आवत जात सदा हीं।
यदपि तऊ नहिं पहुँचत, पहुँचि निकट तिहि पाहीं ॥७१॥
रेल रॉड़ पर चढ़त होत सह जहँ पर वस नर।
सौ सौ सांसत सहत तऊ नहिं सकत कछू कर ॥७२॥
ठेल दियो इत रेल आय वे मेल विधानन।
दूरि प्राचीन प्रथान पथिक पथ के सामानन ॥७३॥
कियो दूर थल निकट, निकट अति दूर वनायो।
आस पास को हेल मेल यह रेल नसायो ॥७४॥
जो चाहत जित जान, उतै ही यह पहुँचावत।
वचे वीच के गाम ठाम को नाम भुलावत ॥७५॥

आलस और असुविधा की तो रेल पेल करि।
निज तजि गति नहिं रेल और राखी पौरुष हरि॥ ७६॥
तिहि तजि पाँचहु परग चलन लागत पहार सम।
नगरे तर थल गमन लगत अतिशय अरु दुर्गम॥ ७७॥
इस्टेशन से केवल द्वै ही कोस दूर पर।
वसत ग्राम, पै यापैं चढ़ि लागत अति दुस्तर॥ ७८॥
यों बहु दिन पर जन्म भूमि अवलोकन के हित।
कियो सकल अनुकूल सफ़र सामान सुसज्जित॥ ७९॥
पहुँचे तहँ जहँ प्रतिवत्सर बहु वार जात हे।
रहन सहन छूटे हूँ जेहि लखि नहिं अघात हे॥ ८०॥
काम काज, गृह अवलोकन, कै स्वजन मिलन हित।
व्याह बरातन हूँ में जाय रहे बहु दिन जित॥ ८१॥
यदपि गए जै वार हीन छवि होत अधिकतर।
लखि ता कहँ अति होत सोच आवत हियरो भर॥ ८२॥
पै यहि वार निहार दशा उजड़ी सी वाकी।
कहि न जाय कछु विकल होय ऐसी मति थाकी॥ ८३॥

वर्तमान दीन दृश्य

हा दत्तापुर रह्यो गांव जो देस उजागर।
गमना गमन मनुज समूह जित रहत निरन्तर॥ ८४॥
जिनके आवत जात परे पथ चारहुँ ओरन।
देत बताय पथिक अन जानेहुँ भूले भोरन॥ ८५॥
सो न जानि अब परै कहाँ किहि ओर अहै वह।
जानेहुँ चीन्हि परै न कैसहूँ अहै वहै यह॥ ८६॥

पूर्वदशा

कँटवासी वसवारिन को रकवा जहँ मरकत।
वीच २ कंटकित वृत्त जाके वढ़ि लरकत॥ ८७॥
छुई जिन पैं कुटिल कटीली वेलि अनेकन।
गोलहु गोली भेदि न जाहि २ वाहर सन॥ ८८॥

जाके वाहर अति चौड़ी गहिरी लहराती।
खंधक तीन ओर निर्मल जल भरी सुहाती॥ ८९॥
जा मैं तैरत अरु अन्हात सौ २ जन इक संग।
कूदत करत कलोल दिखाय अनेक नये ढंग॥ ९०॥

वने कोट की भाँति सुरक्षित जाके भीतर।
वैरिन सों लरि वचिवे जोग सुखद गृह दृढ़ तर॥ ९१॥
कटी मार दीवारन मैं हित अस्त्र चलावन।
पुष्ट द्वार मजवूत कपाटन जड़े गजवरन॥ ९२॥

अंतः पुर अट्टालिकान की उच्च दरीचिन।
वैठि लखत ऋतु शोभा सुमुखि सदा *चिलवन विन॥ ९३॥
औरन सों लखि जवै को भय नहिं जिनके मन।
रहि नभ चुम्बित वंसवारिन की ओट जगत सन॥ ९४॥

शीतल वात न जात, शीत ऋतु जातैं उत्कट।
लहि जाको आघात गात मुरझात नरम झट॥ ९५॥
व्यजन करत जो तिनहिं वसन्त मन्द मारुत लै।
निज सहवासी तरु प्रसून सौरभ पराग दै॥ ९६॥

---

* चिक।

ग्रीषम आतप तपन, छांह सन छाय बचावत।
खनधक जल कन लै समीर सुभ लूह बनावत॥ ९७॥
वर्षा मैं वनि सघन सदाघन घेरन की छवि।
राखत रुचिर बनाय देखि नहिं परन देत रवि॥ ९८॥
निसि मैं जापैं जुरि जमात जीगन की दमकत।
जनु कज्जल गिरि मैं चहुंधा चिनगारी चमकत॥ ९९॥
परि परिखा तट मूल सेन दादुर की भारी।
करत घोर अन्दोर दांव हित मनहुँ जुवारी॥ १००॥
झिल्लीगन को सारे रोर चातक चहुँ ओरन।
सुनि सखीन संग सबै नवेली झूलन झूलन॥ १०१॥
गावत झूलन, सावन, कजरी, राग मलारहिँ।
करहिं परस्पर चुहुल नवल चोंचले बघारहिँ॥ १०२॥
भौजाइन बैठाय, पेंग मारत देवर गन।
लाग डांट दुहुँ ओरन सों बढ़ि अधिक वेग सन॥ १०३॥
पौढ़त झूला, पाट उलटि कै सरकि परत जब।
गिरत सबै तर ऊपर चोट खाय, कोऊ तब॥ १०४॥
सिसकत गारी देत कोउन कोऊ, अरु विहँसत।
कोउ, उपचार करत कछु कोउन कोऊ मनावत॥ १०५॥
कोउ अपराध छमावैं निज, पग परि कर जोरैं।
कोउ झिझकारैं कोउन, वङ्क जुग भौंह मरोरैं॥ १०६॥
सुनि कोलाहल जब प्रधान गृह स्वामिन आवत।
भागत अपराधी तिन कहँ कोऊ ढूँढ़ि न पावत॥ १०७॥
यों वह बालक पन के क्रीड़ा कौतुक हम सब।
करत रहे जहँ सो थल हूँ नहिँ चीन्ह परत अब॥ १०८॥

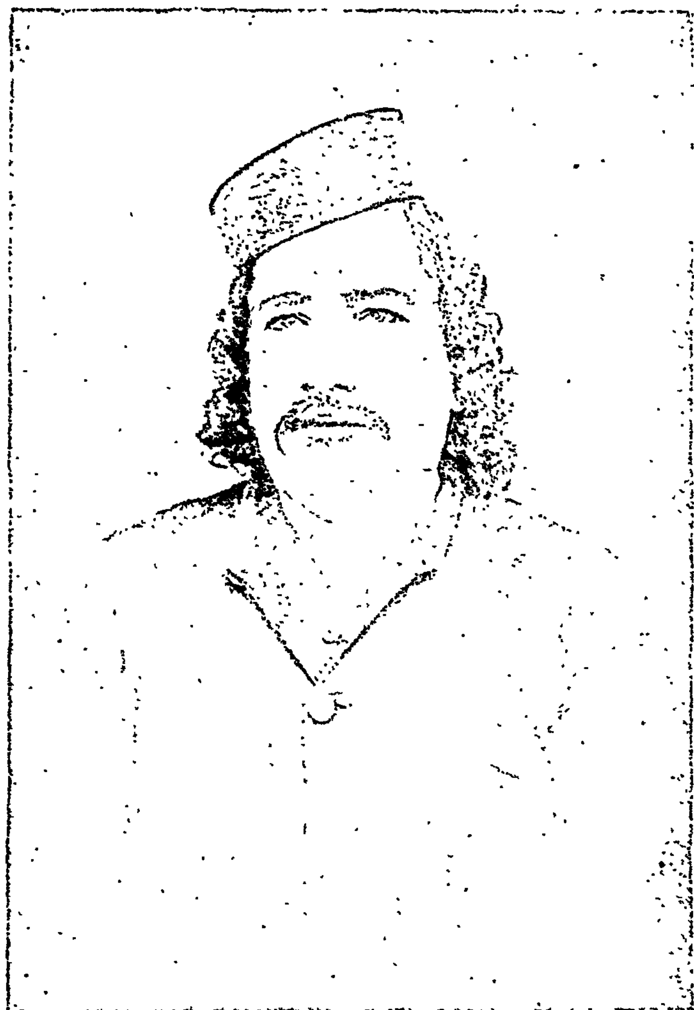
नहिं रकवा को नाम, धाम गिरि ढूह गयो वनि।
पटि परिखा पटपर ह्वै रही सोक उपजावनि ॥ १०९ ॥

द्वार

हाय यहै वह द्वार दिवस निसि भीर भरी जित।
भाँति २ के मनुजन की नित रहति इकत्तृत ॥ ११० ॥
एक २ से गुनी, सूर, पंडित, विरक्त जन।
अतिथि, सुहृद, सेवक समूह संग अमित प्रजागन ॥ १११ ॥
जहाँ मत्त मातंग नदत झूमत निसि वासर।
धूरि उड़ावत पवन, वही, विधि, वही धरा पर ॥ ११२ ॥
जहँ चंचल तुरंग नरतत मन मुग्ध वनावत।
जमत, उड़त, ऐंड़त, उछरत पैंजनी वजावत ॥ ११३ ॥
मनहुँ दूलहिन वने काढ़ि घूँघट इतराते।
ढीली परत लगाम पवन वनि दूर दिखाते ॥ ११४ ॥
जहँ योधागन दिखरावत निज कृपा कुशलता।
अस्त्र शस्त्र अरु शारीरिक वहु भाँति प्रवलता ॥ ११५ ॥
चटकत चटकी डाँड़ कहूं कोउ भरत पैतरे।
लरत लराई कोऊ एक एकन एकन सों अभिरे ॥ ११६ ॥
होत निसाने वाजी कहुँ लै तुपक गुलेलन।
कोऊ सांग वरछीन साधि हँसि करत कुलेलन ॥ ११७ ॥
करत केलि तहँ नकुल ससक साही अरु मूषक।
वहै रम्य थल हाय आज लखि परत भयानक ॥ ११८ ॥
नित जा पैं प्रहरी गन गाजत रहे निरन्तर।
वह फाटक सुविशाल सयन करि रह्यो भूमि पर ॥ ११९ ॥

सवारी

याही मग जब सरदारन की कढ़त सवारी।
सो निरखी छवि अजहुँ न मन सों जाय बिसारी ॥ १२० ॥
नहिं नैमित्तिक वरुक नित्य की बात बतावत।
कोउ कारज बस जबै कोऊ कहुँ जात जबावत ॥ १२१ ॥
छाय जात लालरी चहूँ चौंधी दै लोचन।
लाल बनाती उरदी धारे परिकर जन सन ॥ १२२ ॥
चपल पालकी के कँहार, सरवान महाउत।
त्यों मसालची खिदमतगार अनेकन संयुत ॥ १२३ ॥
आवश्वयक उपकरन लिये असि बगल झुलावत।
कोउ कर पीकदान कोउ के छतुरी छवि छाजत ॥ १२४ ॥
कोउ पंखा लीने कोउ चंवरी चलत चलावहिं।
जो प्रधान उनमें खवास वह पान खवाबहिं ॥ १२५ ॥
लाल मखमली रुचिर पान को झोरा धारे।
जासों जुरी जंजीर रजत बहु लर गर डारे ॥ १२६ ॥
उर पै एक ओर झोरा वह, अन्य छोर पर।
झब्बा से बहु छोटे बटुये झूलत सुन्दर ॥ १२७ ॥
विविध रंग के, चाँदी की घुन्डिन सों सोहे।
पान मसाले विविध भरे रेसम सों पोहे ॥ १२८ ॥
लिये खास हथियार कटार कमर मैं खोंसे।
भरे तमंचे आदि खरीदे बहु दामों से ॥ १२९ ॥
अलबेली अवली अरदली सिपाहिन केरी।
आगे २ चलत लोग हहरत हिय हेरी ॥ १३० ॥



कविवर प्रेमघन (२५ वर्ष)

Krishna Press, All'd.

राजकुमारी पाग लसत सिर जिनके बांकी।
लाल बनाती खोली सों तैसेही ढाँकी॥ १३१॥
एक कांध पै तोड़ेदार तुपक धरि सोहत।
दूजे पैं साबरी परतला परि मन मोहत॥ १३२॥
जामैं झूलत बगल्ल बंक तरवार कटीली।
त्यों गैंडे की ढाल पीठ फुलियन सों खीली॥ १३३॥
लाल अंगरखन प कारी वह यों छवि पाती।
गुल अनार पर परी मधुकरी ज्यों मन भाती॥ १३४॥
कमर बँध्यो पटका पर पेटी कसी साज की।
जा मैं रहत सबै सामग्री तुपक बाज की॥ १३५॥
रंजक दानी, सिंगरा, तूलि, पलीता दानी।
तोस दान, चकमक, पथरी गोलीन भरानी॥ १३६॥
चोछी आर सरिस टेई मूंछैं सबही की।
दाढ़ी पैंठी, उठी असित अहिफ़न सम नीकी॥ १३७॥
दीरघ तन परि पुष्ट सबै बल सों ऐड़ाते।
भरि उछाह सों उछरत्त चल दर्प दिखराते॥ १३८॥
खटकनि ढालन की अरु झनकन तरवारन की।
चलनि वीरगति गहे, करत रव हुंकारन की॥ १३९॥
सहज सवारी साजत वै जो परत लखाई।
मनहुँ चढ़त सामन्त कोऊ रन करन लराई॥ १४०॥
ब्याह बरातहुँ मैं न आज वह कहूँ देखियत।
पलटि गयो वह समय हाय सब साजहिं बदलत॥ १४१॥
आज तिनहिं के पुत्र भतीजे हम सब इत उत।
घूमत फिरत अकेले बेष बनाये अद्भुत॥ १४२॥

तन अँगरेजी सूट, बूट पग, ऐनक नैनन।
जेब घड़ी, कर छड़ी लिये जनु इस्त्रन सस्त्रन ॥ १४३ ॥
चहै लेय जो पकरि सीस धरि बोझ ढोवावै।
नहिं प्रतिकार ततच्छन कछु जो मान बचावै ॥ १४४ ॥
भई रहनि अरु सहनि सबै ही आज अनोखी।
ब्रह्मज्ञानी सबै बने साधू संतोखी ॥ १४५ ॥

कचहरी दीवान

(१)

गयो कचहरी को वह गृह कहँ जहँ मुनसी गन।
लिखत पढ़त अरु करत हिसाब किताब दिये मन ॥१४६॥
तिन सबको प्रधान कायथ इक बैठ्यो मोटो।
सेत केस कारो रंग कछु डीलहु को छोटो ॥१४७॥
रुखे मुख पर रामानुजी तिलक त्रिशूल सम।
दिये ललाट, लगाये चस्मा, घुरकत हरदम ॥१४८॥
पाग मिरजई पहिनि, टेकि मसनद परजन पर।
करत कुटिल जब दीठ, लगत वे कांपन थर थर ॥१४९॥
बाकी लेत चुकाय छनहिं में मालगुजारी।
कहलावत दीवान दया की बानि बिसारी ॥१५०॥
वाके सन्मुख सबै राखि रुख वचन उचारत।
जाय पीठ पीछे पै मन के भाव उघारत ॥१५१॥
कहत लोग यह चित्र गुप्त को वंश नहीं है।
साच्छात ही चित्र गुप्त अवतार नयो है ॥१५२॥

पूजा करत देर लौं बनत वैष्णव भारी।
पढ़ि रामायन रोवत है पै अति व्यभिचारी ॥१५३॥
विन पाये कछु नजर मिलावत नजर न लाला।
लाख वीनती करौ वतावत टालें वाला ॥१५४॥
लिये हाथ मैं कलम कलम सिर करत अनेकन।
गड़वड़ लेखा करत सबन को धारि कसक मन ॥१५५॥
कागद की कुछ ऐसी किल्ली राखत निज कर।
करै कोटि कोउ जतन पार नहिं पाय सकत पर ॥१५६॥
मालिक वैठि जहां निरखत वहु काजनि गुरुतर।
करत निवोरो त्यों प्रजान को कलह परस्पर ॥१५७॥
दूर ग्राम की प्रजा करम चारि गनहू सन।
अरज गरज सुनि देत उचित आदेस ततच्छन ॥१५८॥
अन्य अनेकन काज विषय आदेस हेतु नत।
रहे प्रधानागमन मनुज जिहि ठौर अगोरत ॥१५९॥
तहँ नहि नर को नाम गयो गृह गिरि ह्वै पटपर।
मुद्रा कागद ठौर रहो सिकटी अरुकंकर ॥१६०॥

चौक

जिन वैठकन सहन मैं प्रातःकाल जुरे जन।
रहत प्रनाम सलाम करत हित सावधान मन ॥१६१॥
रजनी संध्या समय जुरत जहँ सभा सुहावनि।
विविध रीति समयानुसार चित चतुर लुभावनि ॥१६२॥
कथा, वारता, रागरंग, लीला, कौतुक मय।
मन वहलावन काम काज हित सहित सदामय ॥ १६३॥

जग मगात जहँ दीपक अवलि रहत निसि सुन्दर ।
चहल पहल जित मची रहत नित नवल निरन्तर ॥१६४॥
कास तहाँ अरु घास जमी दूहन पर लखियत ।
चरत अजामिलि पात इते सों उत अव घूमत ॥१६५॥

पूजा गृह

जहँ पर पूजा पाठ करत पंडित अनेक मिलि ।
कोउ मूरति से अचल बने कोउ झूलत हिलि मिलि ॥१६६॥
कोऊ शालग्राम कोऊ पारथिव बनाये ।
कोउ नांगी असि मैं दुर्गा को ध्यान लगाये ॥१६७॥
कहूँ धूप को धूम छयो, घृत दीप उजाली ।
शंख बजत कहुँ संग सहित घंटा घड़ियाली ॥१६८॥
उग्र स्तोत्रन की मधुर ध्वनि परत सुनाई ।
कुसुम समूह रहत सुन्दर सुगन्ध बगराई ॥१६९॥
कोउ तृपुंड कोउ ऊर्ध्व पुंड दीने ललाट पर ।
जपमाली में हाथ डारि जप करत ध्यान धर ॥१७०॥
जिन सब मैं एक छोटो, मोटो, गौरवरन तन ।
जंज पूक गठरी सों बैठ्यो झुको कमर सन ॥१७१॥
वृद्ध बाघ सम सबहिं गुरेरत घुरकत सब छिन ।
नेकहु करत प्रमाद लखत काहू को जबहिन ॥१७२॥
घोखत चिन्तत सन्ध्या विद्यारथी निकट जहँ ।
हाय दिनन के फेर आज रोव शृगाल तहँ ॥१७३॥
जिहि जनानखाने की ड्योढ़ी डगर सुहावनि ।
दासी अरु परिचारिकान अवली मन भावनि ॥१७४॥

आवति जाति रहति सुन्दर पट भूषन धारे।
भरे मांग सिन्दूर किये लोचन कजरारे॥ १७५॥
कहुँ कहारिनी लिये सजल घट लंक लचावति।
निज कुच कुंभन की उपमा दिखराय रिझावति॥ १७६॥
लिये बारिनी पत्रावली जात मुसकाती।
संग नाइनिन को जावक लीने इठलाती॥ १७७॥
मालिन लीने जात फूल फल भाजी डाली।
तम्बोलिन लै पान दिखावति अधरन लाली॥ १७८॥
पैरिन की झनकार करत खनकार चुरी की।
चलत चलावत चितै किती जनु चोट छुरी की॥ १७९॥
जिनके घाय अघाय युवक जन भरत उसासैं।
तऊ त्रास वस पहुँच सकत नहिं तिनके पासैं॥ १८०॥
निज पद के अनुसार करत कोउ हँसी मसखरी।
फागुन में वहुधा होती ये वात रस भरी॥ १८१॥
पै वहु जन के मध्य, न "ये काकी" कोउ वोलत।
सुनत जवाव जुवति कानन मैं जनु रस घोलत॥ १८२॥
गावन आस पास की भद्र भामिनी जो नित।
आवति तिन्हें न देखत कोउ आँखें उठाय जित॥ १८३॥
औरहु प्रजावृन्द की जे आवैं नित नारी।
निम्न कोटि के उच्च नात सव मैं सम जारी॥ १८४॥
सम वयस्क माता, माता, भगिनी भगिनी सम।
वहू बेटियाँ निज वहून वेटिन सों नहिं कम॥ १८५॥
लहत रहत 'सम्मान' सहित सद्भाव सदा जहँ।
अटल दिल्लगी त्यों पद देवर भौजाइन महँ॥ १८६॥

मिलि प्रनाम आसीस सरिस पद के अनुसारहिं।
हँसी ठिठोली हूँ सो जहँ प्रिय जन सत्कारहिं ॥ १८७ ॥
होत स्वभावहिँ हँस मुख जहँ के नर-नारी नित।
भावत जिनके सरस चोज़, चोंचले चुहल चित ॥ १८८ ॥
तऊ न सकत कोऊ करि मर्य्यादा उल्लंघन।
होत विनोद विलास प्रेममय शुद्धभाव सन ॥ १८९ ॥
नेकहुँ पाप लेस भावत आवत आफत सिर।
होय महाजन, के लघु पै नहिं तासु कुसल फिर ॥ १९० ॥
सीसहु कटि जैवे में नहिँ जन जानत अचरज।
मवहिन सों सिर गंजा होवे में न परत कज ॥ १९१ ॥

सामाजिक न्याय

नहिं अब कोसो कहुँ अंगरेजी न्याय रह्यो तब।
जहँ ऐसे अपराध गिनत अति तुच्छ लोग सब ॥ १९२ ॥
बिन रुपया खरचे नहिं मिलत न्याय कोउ विधि जहँ।
होत साँच को झूठ वकीलन की जिरहन महँ ॥ १९३ ॥
जहँ थोरे ही लाभ देत जन झूंठ गवाही।
लौकिक हानि न गुनत नगद लहि चेहरे साही ॥ १९४ ॥
जहाँ आज को चह्यो न्याय दस बरस अनन्तर।
सौ साँसति सहि, निर्धन ह्वै कोउ भाँति लहत नर ॥ १९५ ॥
तब तौ पाँच पंच जहँ बैठत ठीक २ तहँ।
होत न्याय विनु खरच, विना स्रम, घरी पहर महँ ॥ १९६ ॥
रहत सबै भयभीत सहज सामाजिक त्रासन।
देस रीति, कुल रीति करत विधि सों परिपालन ॥ १९७ ॥

रहे सबै सम्पन्न, सबै स्वाधीन समुन्नत।
सबके हिय साहस, मन सबको सदा धर्म्मरत ॥ १९८॥
सबके तन में प्रबल पराक्रम, तेज बदन पर।
सबके मुख मुसक्यानि नैन में ओज रह्यो भर ॥ १९९॥
जहाँ मिलत दस नर नारी ह्वै जात उँजारी।
हिलन मिलन, उनकी लागत मन को अति प्यारी ॥ २००॥
हाय यही थल जहाँ रहत आनन्द मच्यो नित।
आवत ही ह्वै जात उदासहु जहँ प्रफुलित चित ॥ २०१॥
आज तहाँ की दसा कछू कहिवे नहिं आवत।
वन विहंग हैं जुरि वहु कुत्सित सोर सुनावत ॥ २०२॥

मोदीखाना

यह भंडार भवन जो अन्न भरो गरुआतो।
जहँ समूह नर नारिन को निस दिवस दिखातो ॥२०३॥
आगन्तुकन सेवक़न हित सीधन जहँ तौलत।
थकित रहत मोदी अबो सो सीध न बोलत ॥२०४॥
मनुजन की को कहै मूसहू तहँ न दिखाते।
तिनको बिलन भुजंग बसे इत उत चकराते ॥२०५॥

मक़तबखाना

यही ठौर पर हुतो हाय वह मकतव खाना।
पढ़न पारसी विद्या शिशुगन हेतु ठिक़ाना ॥२०६॥
पढ़त रहे बचपन मैं हम जहँ निज भाइन संग।
अजहुँ आय सुधि जाकी पुनि मन रंगत सोई रंग ॥२०७॥

रहे मोलवी साहेब जहँ के अतिसय सज्जन।
बूढ़े सत्तर वत्सर के पै तऊ पुष्ट तन ॥२०८॥
गोरे चिट्टे नाटे मोटे वुधि विद्या निधि।
वहुदर्शी वहुतै जानत नीकी सिच्छन विधि ॥२०६॥
पाजामा, कुरता, टोपी पहिने तसवी कर।
लिये दिये सुरमा नैनन रूमाल कन्ध धर ॥२१०॥
प्रातः काल नमाज वजीफा पढ़िकै चट पट।
करत नास्ता इक रोटी की पुनि उठिकै झट ॥२११॥
पढ़त कुरान शरीफ़ अजव मुख विकृत वनावत।
जिहि लखि हम सव की न हँसी रुकि सकत वचावत ॥२१२॥
कोउ किताव की ओट हँसत, कोउ वन्द किये मुख।
अट्टहास करि कोउ भाजत फेरे तिन सों रुख ॥२१३॥
कोउ आमुखता पढ़त जोर सों सोर मचावत।
कोउ बिहँसत, औरनै हँसावन हित मटकावत ॥२१४॥
आये तालिव इलम जानि सव मीयां जी तव।
आवत पाठ छाँड़ि कीने कुछ रूसन सो ढव ॥२१५॥
करत सलाम अदव सों तव हम सव ठाढ़े ह्वै।
बैठत तव जव "जीते रहो" कहत वैठत वै ॥२१६॥
प्रथम नसीहत करत, अदव की वात वतावत।
हम सवकी वेअदवी की कहि वात लजावत ॥२१७॥
फेरि दोआ पढ़ि, अमुखता सुनि, सवक पढ़ावैं।
जे नहिं आये वालक तिन कहं पकरि मगावैं ॥२१८॥
उन कहँ अरु जो याद किये नहिं अपने पाठहिं।
सजा करैं तिनकी वहु विधि डपटहिं अरु डाटहिं ॥२१६॥

सटकारत सुटकुनी, जबै मोलवी रिसाने।
मारखाय रोवत तिहि लखि सब सहमि सकाने ॥२२०॥
हम सब निज निज पाठ पढ़त बहु सावधान ह्वै ।
भूलि भूलि अरु जोर जोर अति कोलाहल कै ॥२२१॥
सुनि रोदन चिघ्घार दयावश बूढ़ो पंडित।
उठि कै आवत तहाँ सकल सग्दुन गन मंडित ॥२२२॥
कहत "मौलवी जी" यह करत कवन तुम अनरथ।
सत सिच्छा को जानत नहिं तुम अहो सुगम पथ ॥२२३॥
दया प्यार प्रगटाय प्रथम विद्या को परिचय।
विद्यारथिन करावहु यहि विधि सत सिच्छा दय ॥२२४॥
ज्यों ज्यों विद्या स्वाद शक्ति ये पावत जैहें।
त्यों त्यों श्रम करि आपुहिं पढ़ि पंडित ह्वै जैहैं ॥२२५॥
हम सब ऐसहिं निज शिष्यन कहँ विवुध वनावत।
भूलेहूँ कवहूँ नहिं कोउ पैं हाथ चलावत ॥२२६॥
कठिन संस्कृत भाषा जाको वार पार नहिं।
ताके विद्या सागर होते यही प्रकारहिं ॥२२७॥
तुम सब मुर्गी करि हलाल नित, निज कठोर हिय।
विनय दया बिन हतहु हाय विद्यार्थीन जिय ॥२२८॥
हँसत मोलवी, वै रोवत बालकहिं चुपावत।
अरु कछु सिच्छा देत कथान पुरान सुनावत ॥२२९॥
कवहुँ मोलवी अरु पंडित बैठे मोढ़न पर।
प्रेम बतकही करहिं मिले लखि परहिं मनोहर ॥२३०॥
जनु लोमस ऋषि अरु बाबा आदम की जोरी।
सतयुग की बातन की मानहु खोले झोरी ॥२३१॥

तुल्य बयस, रंग रूप, डील अरु शील सयाने।
निज निज रीति, प्रीति जगदीस दोऊ सरसाने ॥२३२॥
है सुंघनी सम्बन्ध, दोउन मैं प्रेम परस्पर।
मित्रभाव सों होत सहज सत्कार मिले पर ॥२३३॥
कबहुँ ज्ञान, वैराग्य, भक्ति की बात बतावत।
मोहत मन दोऊ, दुहुँ के दृग नीर बहावत ॥२३४॥
छन्द प्रबन्ध दोऊ निज निज भाषा के कहि कहि।
ऊबि ऊबि कै लेत उसासहिँ दोऊ रहि रहि ॥२३५॥
मनहुँ पुरायठ अजगर द्वै सनमुख औंचक मिलि।
क्रोध अंध ह्वै फुंकारत चाहत लरिबो मिलि ॥२३६॥
धर्म्म भेद पर कबहुँ विवाद बढ़ाय प्रबलतर।
झगरत वृढ़ बाघ सम दोऊ गरजि परस्पर ॥२३७॥
लिखन पढ़न करि बंद भरे कौतुक तब हम सब।
सुनत लगत उनकी बातैं, अरु वे जानत जब ॥२३८॥
अन्य समय पर धरि विवाद तब उठि चलि आवत।
फेरि मोलवी साहेब सब कहँ सबक पढ़ावत ॥२३९॥
मच्यो रहत नित सोर सुभग बालक गन को जहँ।
आज रोर काकन को करकश सुनियत है तहँ ॥२४०॥

सिपाह ख़ाना

पता सिपाहिन के डेरन को रह्यो न कतहूँ।
गिरीं दलानैं थे निवसत जिनमें वे कबहूँ ॥२४१॥
बिछी रहत जिनमें कतार सों खाट अनेकन।
जिन पै बैठे ऐंठे बाँके रहत बीर मन ॥२४२॥

प्रात समय नित न्हाय जुवक जोधा जित आये।
चहुआ सो दरपनी काढ़ि ककही मन लाये॥ २४३॥
दाढ़ी झारत कोऊ कोऊ जुलफीन सँवारत।
कोऊ चन्दन घसत बिरचि कोउ तिलक लगावत॥ २४४॥
किते करत कसरत कितने जुरि लरत अखारे।
पीठ लगन को करि विवाद झगरत हठ धारे॥ २४५॥
करत डंड कोउ बैठक कोउ मुगदरनि हिलावत।
लेजिम झनकारत कोउ भारी नाल उठावत॥ २४६॥
बाँह करत जुरि कोऊ ताल मारत कोउ ऐंठे।
कहुँ कोउ पंजे करत वीर आसन सों बैठे॥ २४७॥
कहूँ जरठ जन करत पाठ दुर्गा को दै मन।
आगे निज असि धरे किये श्रद्धा सों अरचन॥ २४८॥
कोऊ सुरज-पुरान, कोऊ रामायन, गीता।
पाठ करत कोउ हनुमत-कवच, चटकि जनु चीता॥ २४९॥
बाल भोग कोउ खाय पियत चरनामृत हरषत।
कोऊ करि जलपान मुरेठा ठटि २ बान्हत॥ २५०॥
पहिरि सिरज़ई पाग पिछौरी अस्त्र शस्त्र धरि।
चलत कचहरी ओर सबै ऐंठे गरूर भरि॥ २५१॥
प्रभु अभिवादन करि बहु जात काज आदेशित।
बैठत किते सभा की शोभा करि परिवर्धित॥ २५२॥

सिपाहियों की रहनि

जहँ मध्यान समय दीने चौकन महँ चरवन।
चाभि २ पीयत सिखरन पुनि ह्वै प्रसन्न मन॥ २५३॥

खात लगाय पान सुरती कोउ पीवत हुक्का।
विविध वतकही करत किते करि धक्का मुक्का ॥२५४॥
मांजत कोउ तरवार, कोऊ लै पोछत म्यानहिँ।
कोऊ ढाल गैंड़े की फुलिया मलि चमकावहिँ ॥२५५॥
कोउ धोवत वन्दूक, वन्द वाँधत खुसियाली।
कोउ माजत वरछीन सांग उर वेधन वाली ॥२५६॥
कोउ कटार माजत, कोउ जुगल तमंचे साजत।
कोउ ढालत गोली, कोउ वुंद्वन वैठि वनावत ॥२५७॥
कोउ वरांही खूनि खानि कै वरत पलीते।
कोउ सुखाय काटत, मुट्ठा वाधत निज रीते ॥२५८॥
भरत तोसदानन कोउ, सिंगरा भरत वरूदहिँ।
कोउ रंजक भुरवावहिँ खोली भारहिँ पोछहिँ ॥२५९॥
सिंगरा साजि परतले पेटी कोऊ साफ़ करि।
टांगत निज निज खूंटिन पर निज हथियारन धरि ॥२६०॥
गुलटा कोऊ बनावहि कोउ गुलेल सुधारहिँ।
ढोल कसहिँ कोउ वैठि, चिकारे कोऊ मिलावहिँ ॥२६१॥
ठीक साज कै मिले युवक रामायन गावत।
झाँझ मजीरा डंडताल करताल वजावत ॥२६२॥
प्रेम भरे त्यों वृद्ध भक्त कोउ अर्थ करैं तहँ।
जब वे गहैं विराम, राम रस यों वरसै जहँ ॥२६३॥
कहुँ वृद्ध कोउ वीर युद्ध की कथा पुरानी।
अपनी करनी सहित युवन सों कहहिं बखानी ॥२६४॥
असि, गोली, वरछीन छाप दिखरावैं निज तन।
लखि कै सांचें साटिक-फिटिक सराहैं सब जन ॥२६५॥

वृद्ध बीर इक रह्यो सुभाव सरल तिन माहीं।
जाढिग हम सब बालक गन मिलि नित प्रति जाहीं ॥२६६॥
बीर कहानी जो कहि हम सब के मन मोहै।
भारी भारी घाव जासु तन पैं बहु सोहै ॥२६७॥
पूछ्यो हम इक दिवस "कहा ये तुमरे तन पर"।
हँसि बोल्यो निर्दन्त "सबै ये गहने सुन्दर" ॥२६८॥
जे गहने तुम पहिनत ये बालक नारिन हित।
अहैं बने नहिँ पुरषन पैं ये सजत कदाचित ॥२६९॥
पुरषन की शोभा हथियारन हीं सों होती।
कै तिनके घायन सों पहिर न हीरा मोती ॥२७०॥
बोले हम यों भयो चौंथरा वदन तुम्हारो।
नेकहु लगत न नीक भयंकर परम न कारो ॥२७१॥
कह्यो वृद्ध हँसि तुम अबोध शिशु जानत नाहीं।
होत भयंकर पुरुष, नारि रमनीय सदाहीं ॥२७२॥
कोमल, स्वच्छ, सुडौल, सुघर तन सुमुखि सराही।
बाँके, टेढ़े, चपल, चपल, पुष्ट, साहसी सिपाही ॥२७३॥
होत न जानत जे मरिबे जीवे की कछु भय।
अभिमानी, स्वतंत्र, खल अरि नासन मैं निर्दय ॥२७४॥
सदा न्याय रत, निबल दीन गो द्विज हितकारी।
निज धन धर्म्म भूमि रच्छक आस्रित भय हारी ॥ २७५ ॥
कुरुख नजर जे इन्द्रहु की न सकत सहि सपने।
तृन सम समुझैं अरि सन्मुख लखि आवत अपने ॥ २७६ ॥
पुनि अपने बहु बार लरन की कथा कहानी।
बूढ़ बाघ सों डपटि डपटि कैं बोलत बानी ॥ २७७ ॥

रहत पहर दिन जबै जानि संध्या को आगम।
सायं कृत्य हेतु तैयारी होत यथा क्रम ॥ २७८ ॥
धोइ भंग कोऊ कूंड़ी सोंटा सों रगड़त।
कोउ अफीम की गोली लै पानी सों निगलत ॥ २७६ ॥
कोउ हुक्का अरु कोऊ भरि गाँजा पीयत।
कोऊ सुरती खात वनै कोउ सुंघनी सूंघत ॥ २८० ॥
कोउ लै डोरी लोटा निकरत नदी ओर कहँ।
कोऊ लै गुलेल, गुलटा वहु भरि थैली महँ ॥ २८१ ॥
कोऊ लिये वंदूक जात जंगल महँ आतुर।
मारत खोजि सिकार सिकारी जे अति चातुर ॥ २८२ ॥
कोऊ फँसावत मीन नदी तट वंसी साधे।
भक्त लोग जहँ बैठे रहत ईस आराधे ॥ २८३ ॥
संध्या समय लोग पहुँचत निज निज डेरन पर।
निज २ रुचि अनुसार वस्तु लीने निज २ कर ॥ २८४ ॥
कोउ खरहा कोउ साही मारे अरु निकि आये।
कोउ कपोत, कोउ हारिल, पिंडुक, तीतर लाये ॥ २८५ ॥
कोउ तलही, मुर्गाबी, कोऊ कराकुल, मारे।
काटि, छाँटि, पर, चर्म, अस्थि, लै दूर पवारे ॥ २८६ ॥
कोउ भाजी जंगली, कोऊ काछिन तैं पाये।
बहुतेरे पलास के पत्रन तोरि लिआये ॥ २८७ ॥
बिरचत पतरी अरु दोने अपने कर सुन्दर।
कोऊ मसाले पीसत, कोउ चटनी ह्वै ततपर ॥ २८८ ॥
कोउ सीधा, नवहड़ ल्यावत मोदी खाने सन।
खरे जितै रुक्का लीने बहु आगन्तुक जन ॥ २८९ ॥

जोरत कोउ अहरा, कोऊ पिसान लै सानत।
कोऊ रसोई बनवत अरु कोऊ बनवावत ॥ २९० ॥
दगत जबै इक ओरहिं सों चूल्हे सब केरे।
जानि परत जनु उतरी फौज इतैं कहुँ नेरे ॥ २९१ ॥
आज तहाँ नहिं कोऊ कारो कोहा लखियत।
नहिं कोउ साज समाज, जाहि निरखत मन बिसरत ॥२९२॥
बटत बुतात, जहाँ रुके, साँझहि सो पहरे।
अतिहि जतन सों चारहुँ दिसि दुहरे अरु तिहरे ॥ २९३ ॥
जाँचत जमादार दारोगा जिन कहँ उठि निसि।
जरत पलीता रहत तुपक दारन को दिसि दिसि ॥ २९४ ॥
घूमत जोधा गन जहँ पहरन पर निसि चटकत।
आवत हरिकारन हूँ को जगदिसि पग थहरत ॥ २९५ ॥

बर्षा ऋतु व्यवस्था

आवत जब बरसात झरी निस दिन की लागत।
तब तो आठो पहर अधिक तर ढोलहिं बाजत ॥ २९६ ॥
गावत करखा आल्हा के योधा अलबेले।
देत वीरता बारिधि की लहरैं जनु रेले ॥ २९७ ॥
बजत ढोल घन गर्जन सम कीने रव भारी।
चटकत गायक मानहुँ बिज्जु पतन चिक्कारी ॥ २९८ ॥
जानि परत जनु ऊदल आप आय इत डपटत।
कै करीन माला पैं कुपित केहरी झपटत ॥ २९९ ॥
जहँ बैठे नर ऐंठे मूछ, रोस भरि घूरैं।
तनहिं तनेनै अंगड़ि अँगरखन के बंद तूरैं ॥ ३०० ॥

वातनि, उठनि, खसकि वैठनि मैं होत लराई।
मचै जवै घमसान वन्द तव होत गवाई॥ ३०१॥
होय वन्द जव एक ओर तव दूजी ओरन।
चटकत ढोल सुनाय सहित करखा के सोरन॥ ३०२॥

नाग पञ्चमी

नाग पंचिमी निकट जानि वहु लोग अखारे।
लरत भिरत सीखत नव दाँव पेच प्रन धारे॥ ३०३॥
जोड़ तोड़ वदि देत वढ़ाय अधिक निज कसरत।
ह्वै तैयार पंचिमी के वे दंगल जीतत॥३०४॥
सीखत चटकी डांड़ विविध लकड़ी के दावन।
वांधत कूरी किते लोग लागत हीं सावन॥३०५॥
संध्या समय आय सौ सौ जन कूदत कूरी।
वीस हाथ लौं लांघि दिखावत वहु मगरूरी॥३०६॥
होत पंचमी के दिन निरनय इन कलान को।
सम वयस्क, सम कृपा कुशल जन, मध्य मान को॥३०७॥
जा दिन अति उत्साह लखात समग्र देश इहि।
वड़े वड़े त्योहारन के सम जानत जन जिहि॥३०८॥
अठवारन पखवारन आगे होत तयारी।
गड़त हिंडोला झूलत गावत युवती वारी॥३०९॥
निज गुड़ियान सजाय वालिका वारी भोरी।
राखत जीतन वाद सखिन सों वदि वरजोरी॥३१०॥
प्रात पंचिमी उठि माता निज शिशुन सजावत।
रचि रचि नागा विन व्याहे वालकन वनावत॥३११॥

कन्यनहीं को तों यह है त्योहार मनोहर।
ताही सों तो तिनको होत सिंगार अधिक तर ॥३१२॥
नये बसन आभूषन सजि डलरी गुड़िया लै।
गावत जिनके संग सुसज्जित सखी समुच्चय ॥३१३॥
चलैं मराल चाल सों ताल जाय सेरवावैं।
बाटैं घुघुनी, चना, मिठाई, जब गृह आवैं ॥३१४॥
झूलैं झूलन फेरि, झुलावैं तिन भ्राता गन।
जेवैं जुरि तब पुनि नाना प्रकार के व्यञ्जन ॥३१५॥
तिन रच्छा हित रहैं सिपाही गन चहुँ ओरन।
पहरे पर नियुक्त ते आय लहैं बकसीसन ॥३१६॥
भीर होय भोजन के समय उठैं सब इक संग।
निपटैं कई पंक्ति मैं सहित प्रजा आश्रित गन ॥३१७॥
होली ही के सरिस उछाह रहत जामैं इत।
खेल, कूद, कसरत, मनरंजन साज, अपरमित ॥३१८॥
कहुँ झूलन की गीत कहूँ कजरी तिय गावैं।
पुरुष कहूँ सावन मलार ललकार सुनावैं ॥३१९॥
बीतत बर्षा जबहिँ बिसद रितु सरद सुहावत।
बीर बिनोद बढ़ावन कौतुक लखिबे आवत ॥३२०॥
विजयादशमी की तैयारी होन लगत जब।
चहत दिखावन सब जिहि मिस निज बल करतब ॥३२१॥
होत रामलीला को अति बिशाल आयोजन।
करत काज आरम्भ अनेकन कारीगर गन ॥३२२॥
करत सिकिल सिकलीगर हथियारन के ऊपर।
करत मरम्मत बनचल त्यों म्यानन मियानगर ॥३२३॥

बहु चढ़ई लोहार गन निज निज काज संवारत।
कुन्दा कांटा कील कसत रचि सजत बनावत ॥३२४॥
करत मरम्मत ढाल परतले तोसदान की।
बनवत नूतन हूँ मोर्चा करि सज दुकान की ॥३२५॥
आतस-बाज अनेक मिले बारूद बनावत।
कितने आतशबाजी बनवत ठाट सजावत ॥३२६॥

रामलीला

होत रामलीला हित बहु भाँतिन तैयारी।
विधिवत लीला साज सबै भाँतिन हिय हारी ॥३२७॥
बनत सुनहरी पन्नी सों लंका विशाल अति।
जगमगात जगमगा नगनि सों त्यों छवि छाजति ॥३२८॥
होत नृत्य आरम्भ द्वै घरी दिवस रहत जित।
दशमुख को दर्बार लगत निश्चर दल शोभित ॥३२९॥
जहँ पर जैसो उचित साज तैसोई तहाँ पर।
देखि होत मन मुग्ध मानवन को विशेषतर ॥३३०॥
जानि एक जन कृत आयो जन यों विशाल अति।
गंवई की लीला जो बहु नगरीन लजावति ॥३३१॥
होत महीनन के आगे सों सिच्छा जारी।
आवत दूर दूर सों सिच्छक गुनी सिंगारी ॥३३२॥
ग्रामटिका बनिजात नगर वह उभय मास लौं।
भांति भांति जन भीर भार अरु चहल पहल सौं ॥३३३॥
बनत अयोध्या और जनकपुर शोभा भारी।
मोहित होत मनुज मन लखि लीला फुलवारी ॥३३४॥

चलत सखिन को झुंड किये सिंगार मनोहर।
झनकारत नूपुर किंकिन सिय संग सुमुखि बर ॥३३५॥

रंग भूमि की शोभा तो बरनी नहिँ जाई।
होत बड़े ही ठाट बाट सों सबै लराई ॥३३६॥

घूमत कहुँ काली कराल बदना मुँह बाये।
झुंड डाकिनी और साकिनी संग लगाये ॥३३७॥

बिहँसत शिव इत उत, ठठाय सिर जटा बढ़ाये।
निश्चर बानर युद्ध लखत मन मोद मढ़ाये ॥३३८॥

बड़े बड़े योधा दुहुँ ओर बने कपि निश्चर।
भिरत परस्पर लरत महा करि बाद परस्पर ॥३३९॥

मनहुँ असम्भव अंगरेजी के राज लराई।
जानि लड़ाके लोग युद्ध झूठे में आई ॥३४०॥

कसक निकारत मन की निज करतब दिखरावत।
भूले युद्ध नवाबी के पुनि याद करावत ॥३४१॥

छूटत गोले और धमाके आतशबाजी।
चिघ्घारत डरपत मतंग वाजी गन भाजी ॥३४२॥

दूर दूर सों दर्शक आवत निरखि सराहत।
डेरे साधू सन्त डारि रामायन गावत ॥३४३॥

यदपि लखी बहु नगर रामलीला हम भारी।
लगी नहीं पै कोऊ हमैं वाके सम प्यारी ॥३४४॥

को जानै याको ममत्व निज वस्तुहि कारन।
कै शिशुपन के देखे जे विनोद मन भावन ॥३४५॥

विजया दशमी

विजया दशमी के दिन की तो अकथ कहानी।
उमड़ि परत जब भीड़ चहूँ दिस सों अररानी ॥३४६॥
युवति वृन्द कजलित नैनन सिन्दूर दिये सिर।
नवल वसन भूषन साजे उत्साह भरी चिर ॥३४७॥
आवति चंचल चखनि नचावत मृगनि लजावति।
बहुतेरी गावति कोकिल कुल मूक बनावति ॥३४८॥
वीर विजय दिन वीर भूमि के वीर उछाहित।
अस्त्र शस्त्र वाहन पूजन नव वसन सुसज्जित ॥३४९॥
वीर भाव सो भरे चहूँ दिसि सों जन आवत।
जनु रावन बध काज अवध नर दल चल धावत ॥३५०॥
राजकुमारी पाग सवै सिर टेढ़ी बाँधे।
तोड़ेदार तुपक कोउ कोउ धरि लाठी काँधे ॥३५१॥
कोऊ ढाल तलवार कोऊ कर सांग विराजत।
कोऊ बरछी लै तुरंग चढ़े करतबहिं दिखावत ॥३५२॥
कोउ सिंगार सज्जित मातंग चढ़े ऐंड़ाये।
निज दलबल संग आवत विजय पताक उड़ाये ॥३५३॥
आय लखत लीला सह कौतुक भक्ति भरे मन।
होत युद्ध घमसान रामरावन को जा छन ॥३५४॥
आतशबाजी धूम छाय जब लेत अकासहिं।
होत सोर अन्दोर सकत कोउ सुनि नहिं बातहिं ॥३५५॥
रावन को बध होत जवै जय जय धुनि गूंजत।
गिरत धरहरा सम कागद रावन छिति चूमत ॥३५६॥

वरसनि ढेलन की तब होत वन्द कोउ भाँतिन।
लंका स्वर्ण लूटि कै लौटत घर जन जाछिन ॥२५७॥
मिलत परस्पर प्रेम सहित सबही हिय हर्षित।
करत प्रनामासीस पान लाची त्यों वितरित ॥२५८॥
त्यों इनाम अकराम लहत बहु लोग यथावत।
सेवक, द्विज दच्छिना, कंचनी, कवि धन पावत ॥२५९॥
भाँति भाँति के याचक त्यों जन दीन जुरे बहु।
लहत दान, सन्मान सहित संग प्रजा समूहहु ॥२६०॥
लेत मिठाई पान सगुन करि नजर गुजारत।
निज स्वामी अभिवादन करि निज भवन सिधारत ॥२६१॥
भरत मिलाप अधिक लोगन को मन उमगावन।
जादिन होत सनाथ अवध को दुखित प्रजागन ॥२६२॥
होत राजगद्दी की अति विशाल तैयारी।
शारद पूनो निसि लहि दीपावली उज्यारी ॥२६३॥
होत राजसी ठाट बाट संग जसन मनोहर।
होत सबै कृत कृत्य पाय लीला विनोद्वर ॥२६४॥
आवत कातिक की जब रजनि उँज्यारी प्यारी।
जुते हिंगाये खेत बनत उज्वल दुतिधारी ॥२६५॥
वड़े वड़े खेतन मैं रजनी समय प्रहर्षित।
कढ़त गोल की गोल खेल खेलन भावरि हित ॥२६६॥
सौ सौ जन संग सोर करत खेलत भरि हौसन।
अति कोलाहल मचत युद्ध सम दोउ दल वीचन ॥२६७॥
भितरी रच्छत किते, वाहरी करत चढ़ाई।
छ्वै भाजनि, गहि पकरन हीं मैं होत लराई ॥२६८॥

घायल होत कोऊ, कोऊ को कर पग टूटत।
तऊ मचीही रहत महीनन खेल न छूटत ॥३६९॥
कहाँ क्रूकिट, फुटवाल, कहाँ हाकी टग-वारहु।
ऐसो विपद विनोद सकत उपजाय विचारहु ॥३७०॥
जामें होत सहज हीं शिक्षा युद्ध चातुरी।
बिन आडम्बर, खरच, सबै सीखत बहादुरी ॥३७१॥
हिम ऋतु आवत जबहिं ठौर ठौरहिँ तपता तब।
बरत जुरत इक भाँति कथा बहु कहत सुनत सब ॥३७२॥
वृद्ध युवक अरु ऊँच नीच अनुसार मंडली।
गठत तहाँ तस ठाट, बात जित रुचत जो भली ॥३७३॥
कहुँ बोलत हुक्का, कहुँ सुरती मलत खात जन।
छींकत सुंघनी सूंघि सूंघि कोउ बहलावत मन ॥३७४॥
कहत कथा बहु भाँति सुनत केतने मन दीने।
कहूँ चिकारा बजत लोग गावत रस भीने ॥३७५॥
फागुन के नगिच्यात जात रंग बदलि और ढंग।
सम वयस्क जन जुरत मिलत अरु कढ़त एक संग ॥३७६॥
घुटत भंग कहुँ छनत रंग कहुँ बनत कहूँ पर।
चलत पिचुक्का अरु पिचकारी करत तरातर ॥३७७॥
कहुँ करही उबलत, सूखत, महजूम बनत कहुँ।
कहूँ अबीर गुलाल कुमकुमा रङ्ग चलत चहुँ ॥३७८॥
कहुँ धमार की धूम, कहूँ चौताल होत भल।
मच्यो फाग अनुराग जाग सो गयो सबै थल ॥३७९॥
धमकत ढोल, बजत डफ़, झाँझ अनेक एक संग।
मंजीरा करताल सबै जन रँगे एक रंग ॥३८०॥

गावत भाव बतावत नाचत लोग रंगीले।
बाल युवक अरु वृद्ध भए इक सरिस रसीले ॥३८१॥
कहुँ गृह भीतर सों युवती तिय गावत फागहिं।
ढोल मजीरा के संग, जनु जगाय अनुरागहिं ॥३८२॥
बाहर सों फगुहार जुरे जुव जन रस राते।
उनके लेत विराम तुरत जे सब मिल गाते ॥३८३॥
होत सवाल जवाब जोड़ के तोड़ फाग सन।
लाग डांट मैं यों बीतत निशि रम्य अनेकन ॥३८४॥
बरु बहुदिन चढ़िबे लगि फाग बन्द नहिं होतो।
इक दल हारत जबहिं होत तबहीं सुरझोतो ॥३८५॥
ज्यों २ आवत निकट दिवस होरी को या विधि।
त्यों २ उमड़त ही आवत आनन्द पयोनिधि ॥३८६॥
अरराहट कबीर की चहुँ दिशि परत सुनाई।
बाहर गाँवन के युवती जहँ परत लखाई ॥३८७॥
सन्ध्या रजनी समय होलिका इन्धन संचय।
हित, नव युवक सहित बालकगन अतिसय निर्भय ॥३८८॥
किये गुट्ट, अरु लिये शस्त्र चुपचाप वदे थल।
देशी जन के घर अथवा खेतन पैं जुरि भल ॥३८९॥
लूटत देरहून के काँटे छप्पर औ टाटिन।
चोरी त्यो बरजोरिन चलत चलावत लाठिन ॥३९०॥
तिनसों छीनत लोग प्रबल बीचहिँ मैं लरिभिरि।
पै नहिं काढ़त कोऊ जात जब होरी मैं गिरि ॥३९१॥
गाली और गलौजन की तौ गिनती ही नहिँ।
रहत उन दिननि माहिं जाति मानी मन भावनि ॥३९२॥

वदलो लोग चुकावत एसहिँ होति शक्ति जिहि ।
सावधान सव लोग रहत याही सों हित तिय ॥३६३॥
साँझ सकारे दुपहर घुटत भंग अधिकाधिक ।
सिल लोढ़न की मची खटा खट रहत चार दिक ॥३६४॥
घमकत ढोल रहत अस फाग मच्यो निसि वासर ।
फटत ढोल वहु ढोलकिहन की अंगुरिन तर तर ॥३६५॥
वहत रुधिर पै तऊ न वे कोऊ विधि मानत ।
लत्ते सजल लपेटि आंगुरिन ढोल वजावत ॥३६६॥
होत नृत्य आरम्भ निकट होरी दिन आवत ।
नचत कंचनी सुमुखि जोगीड़े धूम मचावत ॥३६७॥
तदपि गिनेही चुने राग रस रसिक लोग ही ।
रहत उतै कै जे सम्मानित मनुज वहुत ही ॥३६८॥
नहिँ तौ फाग मंडली तजि कोउ ताहि न ताकत ।
चढ्यो फाग को भूत मनहुँ सवके सिर नाचत ॥३६९॥
होली की निशि मचत भड़ौवा फाग धूम सों ।
धूलि उड़े लगि रहत निरंतर रूम झूम सों ॥४००॥
अद्भुत दृश्य दिखात निशि दिवस वह्व मन भावनि ।
जो देखेउ सोइ जानत है, है सकत वखाननि ॥४०१॥
भये सवै उन्मत्त वाल अरु वृद्ध एक संग ।
नाचत कूदत भाव वतावत गाय सवै संग ॥४०२॥
गाली की गाथा विचित्र कविता संग टेरत ।
घूमि २ चहुं ओर फिरत युवती तिय हेरत ॥४०३॥
होरी रात जलाय प्रात मिलि धूलि उड़ावत ।
पी पी भंग उमंग सहित वहु स्वांग सजावत ॥४०४॥

बैठे गर नहिँ गाय जाय पै तौ हूँ गावैं।
परत आँगुरी ढोल न, पै हठि ढोल बजावैं ॥४०५॥
नसा नींद सों उघरत नहिं दृग तौहूँ ताकैं।
सिथिल गात पग परत न पै चलि तिय गन झाँकैं ॥४०६॥
देखत तिय अरराय कबीर गाय दोरावैं।
जाके बदले रंग नीर बरु कीचहुँ पावैं ॥४०७॥
आस पास गाँवन मैं घूमत गाली गावत।
जहँ पहुँचत अति ही आदर सों स्वागत पावत ॥४०८॥
गृह वा ग्राम प्रधान पुरुष जे परम वृद्ध नर।
यथा उचित सत्कार करत मिलि सबहिं द्वार पर ॥४०९॥
गृह स्वामिनि त्यों गाली सुनि निज जुरी सखिन संग।
मारि भगावत सबन फेंकि जल अमित कीच रंग ॥४१०॥
घूमि घामि तब आय द्वार की धूलि उड़ावत।
ढोल छोड़ि सब जात नदी अन्हाय जब आवत ॥४११॥
खात पियत पुनि भाँग पियत कपड़े बदलत सब।
मलि मलि गाल गुलाल परस्पर मिलत गले तब ॥४१२॥
होत सलाम प्रणामाशिष नव वर्ष यथोचित।
धन्यवाद जगदीश देत तब परम प्रहर्षित ॥४१३॥
होत नृत्य अरु गान देव पूजन मजलिस सजि।
गुज़रत नजर बटत इनाम—अकराम बाज बजि ॥४१४॥
होत फैर अरु बाढ़ दगत. जहँ पर हम देखे।
आज न तहँ कछु चिन्ह दिखात न तिह के लेखे ॥४१५॥
जित आवत नित नव कवि कोविद पंडित चातुर।
ढाढ़ी कथक कलाँवत नट नरतक अरु पातुर ॥४१६॥

विविध वाध्यविद नट चेटक वहुरूपिये सुघर।
इन्द्रजालि वाजीगर सौदागर गुन आगर ॥४१७॥
तहँ नहिं मनुज लखात न कछु सामान सुहावन।
ढहे धाम अभिराम देखि वै लगत भयावन ॥४१८॥

वाटिका

रही कहाँ इत वह सुविशाल विशद फुलवारी।
भाँति भाँति फल फूलन सों मन मोहन वारी ॥४१६॥
जामैं राजत कुटी एक फूसहि सोँ छाई।
आलड्वाल विहीन तऊ अतिसय सुख दाई ॥४२०॥
जामैं चौकी एक खाटहू इक साधारन।
बिछी रहति इक ओर सहित सामान्य अस्तरन ॥४२१॥
कम्मल गुनरी और चटाई द्वै द्वै इक जित।
रहति तहाँ आगन्तुक जन के वैठन के हित ॥४२२॥
द्वै ही इक जल पात्र और सामान्य उपकरन।
प्रस्तुत वामें रहत सहित द्वै इक सेवक जन ॥४२३॥
जेठे वृद्ध पितामह मम ऋषि कल्प जहाँ पर।
रहत विरक्तभाव सों भक्ति ज्ञान के आकर ॥४२४॥
केवल सान्त सुभाव मनुज जाके दर्शन हित।
जाते जिज्ञासू जन अरजन ज्ञान हेतु तित ॥४२५॥
संसारिक वातन की तौ न चलत चरचा तहँ।
ज्ञान विराग भक्ति मय कथा पुरान होत जहँ ॥४२६॥
जव हम सव वालक गन जाय तहाँ जुरि जाते।
करि प्रणाम दूरहिं सों छिति पर सीस नवाते ॥४२७॥

विहँसि बुलाय लेत पढ़िवे की बातैं पूंछत।
अरु आरोग्न प्रश्न, करि सत सिच्छा उपदेसत ॥४२८॥
वैठारत ढिग, कहत दास निज सों आनन हित।
मालिन सों फल मधुर हम सबन हेतु यथोचित ॥४२६॥
पाय पाय फल हम सब विदा होय तहँ सो सब।
घूमत घुसि उद्यान बीच इत उत सब के सब ॥४३०॥
नोचत कोऊ खसोटत फल फूलन मन भाए।
कच्चे पके; कली, डाली हाली हरषाए ॥४४१॥
यदपि चलत चुप चाप दुराए गात सबै जन।
तऊ पाय आहट लख चिल्लाते माली गन ॥४३२॥
भाजत हम सब तुरत खदेरत आवत माली।
बीनत गिरी परी कलिका फल संयुत डाली ॥४३३॥
जात मोलवी ढिग लखि तिहि हम सब जुरि आवत।
करै न वह फिरियाद कोऊ विधि ताहि मनावत ॥४३४॥
भांति भांति समयानुसार ऋतुफल[1] नव फूलन।
हम सब लहत जहां सुखसो विहरत प्रमुदित मन ॥४३५॥
आज न तह द्रुम, लता, रविश पटरी न लखाहीं।
प्राकारहु को चिन्ह कहूँ क्यों लखियत नाहीं ॥४३६॥
यहै विछौना ताल, बाग मम प्रपितामह त्यों।
दिखरावत निज हीन दशा बन बीहड़ थल ज्यों ॥४३७॥
जिहिं अमराईं मध्य रामलीला वह होती।
नवो रसन की वहति महीनन जित नित सोती ॥४३८॥
और पितामह पितृव्यन की जे अमराईं।
कूप सरोवर आदि नष्ट छबि भे सब ठाईं ॥४३६॥

औरहु जेते रहे तवै अतिशय रम्य स्थल।
जहँ हम सब बालक गन विहरत अरु खेलत भल ॥४४०॥
तेऊ सब दुर्दशा ग्रस्त अब परत लखाई।
दीन हीन छवि भये न कै सहुँ परत चिन्हाई ॥४४१॥

कौवा नारी

"कौवा नारी" घाट नदी "मकुई" को सुन्दर।
सहित सुभग तरु वृन्दन के जो रह्यो मनोहर ॥४४२॥
रह्यो हम सबन को जो भलो विहार स्थल वर।
भयो अधिक छवि हीन थोरे ही दिवस अनन्तर ॥४४३॥
वह सेमर सु विशाल लाल फूलन सों सोहत।
सह वट विटप महान घनी छाहन मन मोहत ॥४४४॥
भाँति भाँति द्विज वृन्द जहाँ कलरव करि बोलैं।
शाखन पैं जिनकी शाखा मृग माल कलोलैं ॥४४५॥
जिनकी छाया अति वसन्त वासर मैं प्यारी।
पास ग्राम के आय न्हाय सेवत नर नारी ॥४४६॥
कोऊ सुखावत केश ओट तरु जाय अकेली।
निज मुख चन्द छिपाय अलक अवली अलवेली ॥४४७॥
करति उपस्थित ग्रहन परव अवगाहन के हित।
कारन जो नव रसिक युवक जन दान देन चित ॥४४८॥
बहु बालिका जहाँ जुरि गोटी गोट उछालति।
चकित मृगी सी कोऊ नवेली देखत भालति ॥४४९॥
संध्या समय जहाँ बहुधा हम सब जुरि जाते।
भाँति भाँति की केलि करत आनन्द मनाते ॥४५०॥

छुनत भंग कहु रंग रंग के खेल होत कहुँ।
कोऊ अन्हात पै हाहा ठीठी होत रहत चहुँ ॥४५१॥
होली के दिन जित अन्हात हम सब मिलि इक संग।
खेद होत तहँ को लखि आज रंग वहु वेढंग ॥४५२॥

मदनाताल

मदना तालहु की दुर्दशा जाय नहिँ देखी।
जहाँ जात हम सब जन दोऊ समय विसेषी ॥४५३॥
जहँ वक सारस कलरव करत रहे निसि वासर।
सोहत वन पलास के मध्य कुमुदिनी आकर ॥४५४॥
स्वच्छ वारि परिपूरित पंक हीन मन भावन।
हरित पुलिन नत द्रुम लतिकन सों सहज सुहावन ॥४५५॥
नागपंचमी दिन जहँ गुड़िया जात सिराई।
जाकी वह छवि अजहुँ न मन सौं जात भुलाई ॥४५६॥
तरु सिंहोर तटवर्ती वृहत रह्यो नहिँ वह अव।
जा शाखा चढ़ि वर्षा मैं कूदत हे हम सब ॥४५७॥

विजउर

विजउरहू को वन कटि गयो भयो थल छवि हत।
नदी तीर जो रह्यो निरखि जेहि नित मन विरमत ॥४५८॥
जहाँ सत्य सामी हूँ की कुटी विराजत नीकी।
निरखि आज लागत वह भूमि भयावनि फीकी ॥४५९॥
ऋतु पति आवत ही पलास वन होत ललित जव।
हम सब ताकी छवि निरखन हित जात रहे तब ॥४६०॥

वहु बालक बालिका सुमन किन्सुक के भूषन।
वनवत पहिनत पहिनावत अतिसय प्रसन्न मन ॥४६१॥
कबहूँ कोउ बुल बुल बटेर पालन हित फाँसत।
ससक सिसुन गहि कोउ खेलत तिनकी करि सांसत ॥४६२॥
छुधित होत कै थकत जवै बालक गन वन मैं।
चोंका पियत टेरि चरवाहन महिषी गन मैं ॥४६३॥
कोकिल कुल कूजत कूकत मयूर सारस जित।
भाँति भाँति के सौजे दौरत रहत जहाँ नित ॥४६४॥
लहत जितै आखेट शिकारी जन मन भावन।
जहँ निर्द्वन्द ईस आराधत हे विरक्त जन ॥४६५॥
आस पास के जे वन रहे औरहू सुन्दर।
चरत जहाँ पशु पुष्ट, वन्य जन सकत पेट भर ॥४६६॥
तहाँ खेत वनि गये मरत पशु त्रिन विन निर्बल।
जाविन होत न अन्न, दुग्ध घृत दुर्लभ सव थल ॥४६७॥
जा कारन सब देश निवासी, भये छीन तन।
हीन तेज, साहस, वल विक्रम, वुद्धि मलिन मन ॥४६८॥
भई नहीं छवि हीन जन्म भूमिहिँ अपनी अति।
लखियत आस पास सगरे थलहू की दुर्गति ॥४६९॥
जहँ आवत जहँ वसत स्वर्ग सुख निदरति हो मन।
वहँ अब होत उचाट चित्त रमि सकत न इक छन ॥४७०॥

बालविनोद

कैसे प्यारे रहे दिवस वे बालक पन के।
जल्दी ही बीते जे हे अति मोहन मन के ॥ ४७१ ॥

जाते जामैं सबै समय आनन्द मनावत।
नित निष्कपट विनोद खेल अरु कूद मचावत॥ ४७२॥
कष्ट एक पढ़ि वे ही मैं जब मानत हो मन।
भय को भाव दिखात कछू निज सिच्छक ही सन॥ ४७३॥
बीति जात पढ़िवे को समय मिलत छुट्टी जब।
सीमा हरख उछाह की न रहि जात फेरि तब॥ ४७४॥
होत सबै बालक गन एकहि ठौर एकत्रित।
जस जहँ को अवसर चाह्यो कै जित सबको चित॥ ४७५॥
फिर तो बस आनन्द उदधि उमगात छिनहिँ महँ।
नव विनोद के नित्य नएही ठाट जमत तहँ॥ ४७६॥
कबहुँ स्वजन शिशु त्यों कबहूँ सेवक अरु परजन।
के बालक मिलि होत यथोचित गोल संगठन॥ ४७७॥
मचत कबहुँ झावरि कबहूँ तुतु लूम लूल भल।
कबहुँ गेंद खेलत कूरी कूदत कबहूँ दल॥ ४७८॥
कबहुँ लच्छ बेधत अनेक भाँतिन सों सब मिलि।
कबहुँ करत जल केलि कूदि सरितन तालन हिलि॥ ४७९॥
बन्द राम लीला जब होति सबै बालक गन।
करत खेल आरम्भ सोई अतिसय मन रञ्जन॥ ४८०॥
राम लच्छिमन बनत कोउ हनुमान बाल गन।
जामवान अंगद सुग्रीव तथा कोउ रावन॥ ४८१॥
कुम्भ करन घननाद, कोउ खर दूषन आदिक।
बनत, होत लीला सब यों क्रम सों न्यूनाधिक॥ ४८२॥
कभी और मैं होति, लराई मैं पै नाहीं।
होति, नित्य जामैं अनेक घायल ह्वै जाहीं॥ ४८३॥

पै न कहत कोउ निज घर इत की सत्य कहानी।
सदा खेल की दुर्घटना यों रहत छिपानी ॥ ४८४ ॥

कटत धान अरु दायँ जात जब फरवारन महँ।
त्यों पयाल को गाँज लगत ऊँचे २ तहँ ॥ ४८५ ॥

तब तिन पैं चढ़ि कूदत हम सब ह्वै मन प्रमुदित।
औरहु खेल अनेक भाँति के होत नए नित ॥ ४८६ ॥

जात हिंगाए खेत जबै हेंगन चढ़ि हम सब।
खात चोट गिरि पै हटको मानत कोउ को कब ॥ ४८७ ॥

नई तिहाई के अँखुआ खेतन ज्यों ऊगत।
खात चना के साग सिवारन में शिशु घूमत ॥ ४८८ ॥

मटरन की फलियाँ कोउ चुनत बूट कोउ चाभैं।
ऊमी भूमि चबात कोउ गुनि अतिसै लाभैं ॥ ४८९ ॥

होरहा कोऊ जलाय खात कच्चा रस पीवत।
चुहत ईख कोऊ छीलि गंडेरी के रस चूसत ॥ ४९० ॥

चलत कुल्हार जबै कोउ इन पर चढ़त धाय कोउ।
कातरि के तर गिरत बैल चौंकत उछरत दोउ ॥ ४९१ ॥

चोट खाय कोउ रोवत दूजो चढ़त धाय कै।
टिकुरी छटकत परत सीस पर तब ठठाय कै ॥ ४९२ ॥

हँसत, अन्य, शिशु, सबै मजूरे सोर मचावत।
समाचार ये देवे हित इत उत वे धावत ॥ ४९३ ॥

तऊ न होत बिराम विनोद तहाँ लगि तहँ पर।
जब लगि रच्छक प्यादा पहुँचत कै कोउ गुरु चर ॥ ४९४ ॥

जाड़काल की क्रीड़ा

जाड़न मैं लखि सब कोउन कहँ तपते तापत।
कोऊ मड़ई मैं बालक गन क्रीड़ा विरचत ॥४९५॥
विविध बतकही मैं तपता अधिकाधिक बारत।
जाकी वह्निके लपट छानि अरु छप्पर जारत ॥४९६॥
कोलाहल अति मचत भजत तब सब बालक गन।
लोग बुझावत आगि होय उद्विग्न खिन्न मन ॥४९७॥
खोजत अरु जाँचत को है अपराधी बालक।
पै कछु पता न चलत ठीक है कहा, कहाँ तक ॥४९८॥
न्याय मोलवी साहब ढिग जब बैठत याको।
अपराधी ता कहँ सब कहत, दोष नहिं जाको ॥४९९॥
न्याय न जब करि सकत मोलवी गहि शिशुगन सब।
सटकावत सुटकुनी खूब सबकी पीठन तब ॥५००॥

फागुन और फाग

फागुन तौ बालक विनोद हित अहै उजागर।
ज्यों ज्यों होली निकट होत अधिकात अधिक तर ॥५०१॥
सजत पिचुका अरु पिचकारी तथा रचत रंग।
नर नारिन पैं ताहि चलावत बालक गन संग ॥५०२॥
गावत और बजावत बीतत समय सबै तब।
भाँति भाँति के स्वाँग बनावत मिलि बालक सब ॥५०३॥
हँसी दिल्लगी गाली रंग गुलाल उड़त भल।
देवर भौजाइन के मध्य सहित बहु छल बल ॥५०४॥

वसन्त विहार

ऋतु वसन्त मैं पत्र पुष्प के विविध खिलौने।
आभूषण त्यों रचत छरी अरु छत्र बिछौने ॥५०५॥
भाँति भाँति के फल चुनि सब मिलि खात प्रहर्षित।
नव कुसुमित पल्लवित बनन बागन बिहरत नित ॥५०६॥
कोऊ काले भौंरन हीं हेरैं दौरावैं।
पकरैं भाँति भाँति तितिली कोउ ल्याय सजावैं ॥५०७॥
ग्रीषम मैं जब चलैं बवन्डर भारी भारी।
दौरैं हम सब ताके संग बजावत तारी ॥५०८॥
पकरत फनगे मुकुलित मंदारन सों आनत।
ताकी कटि मैं कसि २ डोरी बिधि सों बाँधत ॥५०९॥
ताहि उड़ावत कोउ मदार फल कोऊ ल्यावैं।
गेंद खेल खेलैं तिहिसों सब मिलि हरखावैं ॥५१०॥

वर्षागमन

वर्षागम मैं बड़ी २ आँधी जब आवैं।
नमित द्रुमन साखन तब चढ़ि २ झोंका खावैं ॥५११॥
गिरैं, परैं, पै तनिक न कछु चित चिंता आनैं।
पके रसाल फलन लूटैं चखि आनद मानैं ॥५१२॥
रक्षक प्यादा रहत सदा यद्यपि हम सब संग।
पैं तिह सों छुटि निकरि भजत हम सब करि सौ ढंग ॥५१३॥
पता लगावत जब लगि वह आवत ऐसे थल।
तब लगि पहुँचत कोउ दूजे थल पर बालक दल ॥५१४॥

जब कोऊ बिधि वह पहुँचै वा दूजे थल पर।
तब लगि घर पर डटि हम पूछैं गयो वह किधर ॥५१५॥

बर्षा बहार

जब वर्षा आरम्भ होय अति धूम धाम सों।
बर्षैं सिगरी निसि जल करि आरम्भ शाम सों ॥५१६॥
उठैं भोर अन्दोर सोर दादुर सुनि हम सब।
बदली जग की दसा लखैं आवैं बाहर जब ॥५१७॥
किए हहास बहत जल चारहुँ दिसि सों आवै।
गिरि खन्दक मैं भरि तिह को तब नदी सिधावै ॥५१८॥
भरै लबालब जब खन्दक अतिशय मन मोहैं।
बँसवारी के थान बोरि नव छबि लहि सोहैं ॥५१९॥
धानी सारी पर जनु पट्टा सेत लगायो।
रव दादुर पायल धुनि जाके मध्य सुनायो ॥५२०॥
श्याम घटा ओढ़नी मनहुँ ऊपर दरसाती।
ओढ़े बरसा बधू चंचला मिसि मुसकाती ॥५२१॥
भाँति २ जल जन्तु फिरत अरु तैरत भीतर।
भाँति २ कृमि कीट पतंगे दौरत जल पर ॥५२२॥
मकरी, और छुछुन्दे, तेलिन, झींगुर, झिल्ली।
चींटे, माटे, रीवें, भौंरे, फनगे चिल्ली ॥५२३॥
जनु हिमसागर पर दौरत घोड़े अरु मेढ़े।
सर्राटे सों सीधे अरु कोऊ ह्वै टेढ़े ॥५२४॥
बिल में जल के गए ऊबि उठि निकरे व्याकुल।
अहि, वृश्चिक, मूषक, साही, बिषखोपरे बाहुल ॥५२५॥

लाठी लै २ तिनहिँ लोग दौरावत मारत।
किते निसाने बाजी करत गुलेलहि धारत ॥५२६॥
कोऊ सुधारत छप्पर औ खपरैलहिँ भीजत।
भरो भवन जल जानि किते जन जलहि उलीचत ॥५२७॥
लै कितने फरसा कुदाल छिति खोदि वहावैं।
बाढ़ेव जल आंगन सों, नाली को चौड़ावैं ॥५२८॥
लै किसान हल ज़ोतैं खेतहिँ, लेव लग्यो गुनि।
बोवत कोऊ हिंगावत बाँधत मेड़ कोऊ पुनि ॥५२९॥

मछरि मराव

नीच जाति के बालक खेतन मैं पहरा धरि।
मारत मछुरी सहरी अरु सौरी गगरिन भरि ॥५३०॥
युव जन छीका और जाल लीने दल के दल।
मत्स मारिबे चलत नदी तट अति गति चंचल ॥५३१॥
पौला सब के पगन सीस घोघी कै छतरी।
लैकर लाठी चलैं मेंड़ बाटैं सब पतरी ॥५३२॥

निरवाही

होत निरौनी जबै धान के खेतन माहीं।
अवलि निम्न जातीय। जुवति जन जुरि जहँ जाहीं ॥५३३॥
खेतन में जल भरयो शस्य उठि ऊपर लहरत।
चारहुँ ओरन हरियारी ही की छवि छहरत ॥५३४॥
भोरी भारी ग्राम वधू इक संग मिलि गावति।
इक सुर में रसभरी गीत झनकार मचावति ॥५३५॥

कहँ नागरी नवेली ए तीखे सुर पावैं।
रंग भूमि को "कोरस" सोरस कब बरसावैं ॥५३६॥
किती युवति तिन मैं अति रूप सलोनो पाए।
किए कज्जलित नैन सीस सिन्दूर सुहाए ॥५३७॥
धान खेत मैं बैठी चंचल चखनि नचावति।
बन मैं भटकी चकित मृगी सी छबि दरसावति ॥५३८॥
किते गाँव के छैल लट्टू ह्वै जिनहिँ निहारैं।
तिनकी ताकनि मुसकुरानि लखि तन मन वारैं ॥५३९॥
तुच्छ बसन भूषन संग सोभा घनी लखावैं।
मनहुँ "लाल चीथड़ा बीच" सच मसल बनावैं ॥५४०॥
और लखावैं मनहुँ ईस को सम दरसी पन।
दियो रूप सम जिन ऊँचे अरु नीचन बीचन ॥५४१॥

बालकेलि

हमहूँ सब संजोगन जब इन ठौरन जाते।
भाँति २ के खेलन सों तहँ मन बहलाते ॥५४२॥
फुटे फूट कोऊ ल्यावैं कोऊ भुट्टे लै घूमैं।
पक्के २ पेहटन कोऊ करन मलैं मुख चूमैं ॥५४३॥
बहु विधि बरसाती जीवन कोउ पकरि लियावत।
अतिहि विचित्र विलोकि चकित औरनहिँ दिखावत ॥५४४॥
बीर बहूटी कोउ पकरत, कोउ लिल्ली घोड़ी।
कोउ धन कुट्टी, कोउ टीड़िन, पाँखिन गहि छोड़ी ॥५४५॥
रजनि समय जुगनून पकरि अतिसय हरखावैं।
आवरवाँ के बसन बान्हि फानूस बनावैं ॥५४६॥

ऐसहिं विविध वनस्पति के विचित्र संग्रहसन।
वहु विधि खेल बनावैं सब जन वहलावैं मन ॥५४७॥

कहँ लगि कहैं न चुकिवे की यह राम कहानी।
वाल चरित्रावलि समुझत अजहूँ सुख दानी ॥५४८॥

सबै समय, सब दिवस सबै दिसि सब मैं सुख सम।
सब वस्तुन मैं सचमुच अनुभव करत रहे हम ॥५४९॥

समय परिवर्तन

सो सब सपने की सम्पति सम अब न लखाहीं।
कहूँ कछू हू वा साँचे सुख की परछाहीं ॥५५०॥

अब नहिं बरषागम मैं वैसी आँधी आवैं।
नहिँ घन अठवारन लौं वैसी झरी लगावैं ॥५५१॥

नहिं वैसो जाड़ा बसन्त नहिँ ग्रीषम हूँ तस।
आवत मनहिं लुभावत हरखावत आगे कस ॥५५२॥

नहिं वैसे लखि परत शस्य लहरत खेतन मैं।
नहिं बन मैं वह शोभा, नहिं विनोद जन मन मैं ॥५५३॥

अद्भुत उलट फेर दिखरायो समय बदलि रंग।
मनहुँ देसहू वृद्ध भयो निज वृद्ध पने संग ॥५५४॥

ताहू मैं या गांव की परत लखि अति दुर्गति।
तासु निवासी जन की सब भाँतिन सों अवनति ॥५५५॥

अपनेहीँ घर रह्यो जासु उन्नति को कारन।
ताही के अनुरूप कियो छबि यानैं धारन ॥५५६॥

अवनति कारण

रह्यो एक घर जब लौं सुख समृद्धि लखाई।
उन्नति ही सब रीति निरंतर परी लखाई ॥५५७॥
गयो एक सों तीन जबै घर अलग अलग बन।
ठाट बाट नित बढ़त रह्यो परिपूरित धन जन ॥५५८॥
छूटेव प्रथम निवास पितामह मम को इत सों।
विवस अनेक प्रकार भार व्यापार अमित सों ॥५५९॥
तऊ लगोई रह्यो सहज सम्बन्ध यहाँ को।
हम सब सों बहु बतसर लौं पूरब वत हो जो ॥५६०॥
आधे दिवस बरस के बीतत याही थल पर।
नित्य नवल आनन्द सहित पन प्रथम अधिक तर ॥५६१॥
क्रम सों छूटत, टूट्यो सब संबन्ध यहाँ को।
बीसन बरसन सों न लख्यो अब अहै कहाँ को ॥५६२॥
बचे दोय घर जे तिनकी है अकथ कहानी।
समझत मन मुरझात, जात अधिकात गलानी ॥५६३॥
इक घर नास्यो अमित व्यैयिता अरु ऐय्यासी।
दूजो कलह अदालत को उठं सत्यानासी ॥५६४॥
भए एक के चार २ घर अलग २ जब।
भरे परस्पर कलह द्वेश तब कुशल होत कब ॥५६५॥
गए दीन बनि सबै मिटी या थल की शोभा।
जाहि एक दिन लखत कौन को नहिं मन लोभा ॥५६६॥
तऊ स्वजन वे धन्य अजहुं जे बसे अहैं इत।
साधारनहुँ दसा मैं सेवत जन्म भूमि नित ॥५६७॥

पूरव उन्नत दशा न इत की दृग जिन देखी।
तासों होत न उन्हें खेद वसि इतै विसेखी ॥५६८॥
ग्राम नाम अरु चिन्ह बनाए अजहुँ यहाँ पर।
करि स्वतंत्र जीविका रहत सन्तुष्ट सदा घर ॥५६९॥
पूजत भूले भटके, भए, आगन्तुक जन।
मुष्टि अन्न दै तोषत अजहूँ वे भिक्षुक गन ॥५७०॥
जहाँ आय जन भाँति भाँति सत्कारहि पावत।
श्री समृद्धि लखि जहँ की जन मन मोद बढ़ावत ॥५७१॥
बड़े वड़े श्रीमान महाजन आस पास के।
तालुकदार अनेक आश्रित रूप जुरे जे ॥५७२॥
रहत जहाँ, तहँ आज को लखे दीन दसा यह।
होत जौन मन व्यथा कौन विधि जाय कही वह ॥५७३॥
जाकी शोभा मनभावनि अति रही सदाहीं।
जाहि लखत मन तृप्त होत ही कबहूँ नाहीं ॥५७४॥
आज तहाँ कोऊ विधि सों नहि रमत नेक मन।
हठ बस बसत जनात कल्प के सम बीतत छन ॥५७५॥
आय गई दुर्दसा अवसि या रुचिर गाँव की।
दुखी निवासी सबै, छीन छबि भई ठाँव की ॥५७६॥
जे तजि या कहँ गये अनत वे अजहुँ सुखी सब।
ईस कृपा उन पर वैसी' ही है जैसी तब ॥५७७॥
कारन याको कहा समझ मैं कछू न आवत।
बहु विचार कीने पर मन यह बात बतावत ॥५७८॥
जब लौं अगले लोग रहे सद्धर्म्म परायन।
न्याय नीति रत साँचे करत प्रजा परिपालन ॥५७९॥

तब लौं सुख समुद्र उमड्यो इत रहत निरन्तर।
उत्तरोत्तर उन्नति की लहरात ही लहर ॥५८०॥
भये स्वार्थी जब सों पिछले जन अधिकारी।
भरे ईर्षा द्वेष, अनीति निरत, अविचारी ॥५८१॥
करन लगे जब सों अन्याय सहित धन अरजन।
भूलि धर्म्म, करि कलह, स्वजन परजन कहँ पेरन ॥५८२॥
होन तबहिँ सो लगी दीन यह दसा भयावनि।
देखे पूरब दसा लोग मन भय उपजावनि ॥५८३॥
पै जब करत विचार दीठ दौराय दूर लौं।
अन्य ठौर प्रख्यात रहे जे इत वेऊ त्यों ॥५८४॥
विदित वंश के रहे बड़े जन जे बहुतेरे।
श्री समृद्धि अधिकार सहित या देशन हेरे ॥५८५॥
पता चलत उनको नहिँ गए विलाय कवैधौं।
थोरे ही दिन बीच कुसुम खसि कुसुमाकर लौं ॥५८६॥
राजा तालुकदार जिमींदार हू महाजन।
राजकुमार, सुभट औरौ दूजे छत्रीगन ॥५८७॥
कहाँ गए जे गर्वित रहे मानधन जन पैं।
गनत न औरहिँ रहे माल अपने भुज बलतें ॥५८८॥
किते वंश सों हीन छीन अधिकार किते ह्वै।
किते दीन बनि गए भूमि कर औरन के दै ॥५८९॥
जे नछत्र अवली सम अम्बर अवध विराजत।
रहे सरद रजनी साही मैं शुभ छवि छाजत ॥५९०॥
ऊषा अंगरेजी मैं कहुँ कहुँ कोउ जे दरसैं।
हीन प्रभा ह्वै अतिसय नहिं ते त्यों हिय हरसैं ॥५९१॥

भयो इलाका कोउ को कोरट के अधीन सब।
बंक तसीलत किती, महाजन किती कोऊ अब ॥५६२॥
कोऊ मनीजर सरकारी रखि काम चलावत।
पाय आप तनखाह कोऊ विधि समय वितावत ॥५६३॥
कैदी के सम रहत सदा आधीन और के।
घूमत लुंडा बने शाह शतरञ्ज तौर के ॥५६४॥
कहुँ २ कोउ जे सबही विधि सम्पन्न दिखाते।
नहिँ तेऊ पूरब प्रभाव को लेस लखाते ॥५६५॥
पिता पितामह जैसे उनके परत लखाई।
जैसी उनमें रही बड़ाई अरु मनुसाई ॥५६६॥
सो अब सपनेहुँ नहिँ लखात कहुँधौं केहि कारण।
पलटी समय सङ्ग सब देश दशा साधारण ॥५६७॥
जैसे ऋतु के बदलत लहत जगत औरै रंग।
बदलत दृश्य दिखात रंगथल ज्यों विचित्र ढंग ॥५६८॥
त्यों रजनी अरु दिवस सरिस अद्भुत परिवर्तन।
चहुँ ओरन लखि जात न कछु कहि समझि परत मन ॥५६९॥
रह्यो जहाँ लगि बच्यो अवध को साही सासन।
रही बीरता झलक अजब दिखरात चहूँकन ॥६००॥
रहे मान, मर्य्यादा, दर्प, तेज मनुसाई।
इतै आतम रच्छा चिंता बल करन लराई ॥६०१॥
सहज साज सामान शान शौकत दिखरावन।
बने बड़े जन पास भेद सूचक साधारन ॥६०२॥
शान्त राज अंगरेजी ज्यों २ फैलत आयो।
सबै पुरानो रंग बदलि औरै ढंग ल्यायो ॥६०३॥

ऊँच नीच सम भए, वीर कादर दोऊ सम।
बड़े भए छोटे, छोटे बढ़ि लागे उभरन ॥६०४॥
लगीं बकरियाँ बाघन सों मसखरी मचावन।
धक्का मारि मतंगहिँ लागीं खरी खिझावन ॥६०५॥
रही बीरता ऐड़ इतै जो सहज सुहाई।
जेहि एकहिँ गुन सों पायो यह देस बड़ाई ॥६०६॥
ताके जात रही नहिँ इत शोभा कछु बाकी।
वीर जाति बिन मान बनी मूरति करुना की ॥६०७॥
जिन बीरन कहँ निज ढिग राखन हेतु अनेकन।
नित ललचाने रहत इतै के संभावित जन ॥६०८॥
भाँति भाँति मनुहार सहित सत्कार रहत जे।
आज न पूँछुत कोऊ तिन्हैं बिन काज फिरत वे ॥६०९॥
रहे वीर योधा ते आज किसान गए बनि।
लेत उसास उदास सर्प जैसे खोयो मनि ॥६१०॥
रहे चलावत जे तलवार तुपक ऐंड़ाने।
आजु चलावहिँ ते कुदारि फरसा बिलखाने ॥६११॥
जे छाँटत अरि मुंड समर मह पैठि सिंह सम।
कड़वी बालत बैठि खेत काटत बनि वे दम ॥६१२॥
रहत मान अभिमान भरे सजि अस्त्र शस्त्र जे।
सस्य भार सिर धरे लाज सों दबे जात वे ॥६१३॥
भेद न कछू लखात बिप्र छत्री सूदन महँ।
समहिँ बृत्ति, सम वेष, समहिँ अधिकार सबन कहँ ॥६१४॥
चारहुँ बरन खेतिहर बने खेत नहिँ आँटत।
द्विज गन उपज्यो अन्न अधिक हरवाहन बाँटत ॥६१५॥

करत खुसामत तिनकी पै न लहत हरवाहे।
मिलेहु न मन दै करत काज अब वे चित चाहे ॥६१६॥
करत सबै कृषि कर्म न पै हल जोतत ये सब।
विना जुताई नीकी अन्न भला उपजत कब ॥६१७॥
सम लगान, व्यय अधिक, आय कम सदा लहत जे।
दीन हीन ताही सों नित प्रति बने जात ये ॥६१८॥
नहिँ इनके तन रुधिर, मास नहिँ बसन समुज्ज्वल।
नहिँ इनकी नारिन तन भूषण हाय आज कल ॥६१९॥
सूखे वे मुख कमल, केश रूखे जिन केरे।
वेश मलीन, छीन तन, छवि हत जात न हेरे ॥६२०॥
दुर्बल, रोगी, नङ्ग धिङ्के जिनके शिशु गन।
दीन दृश्य दिखराय हृदय पिघलावत पाहन ॥६२१॥
नहिँ कोउ सिर टेढ़ी पाग लखात सुहाई।
बध्यों फाँड़ ? नहिं काहू को अब परत लखाई ॥६२२॥
नहिं मिरजई कसी धोती दिखरात कोऊ तन।
नहिँ ऐड़ानी चाल गर्व गरुवानी चितवन ॥६२३॥
नहिं परतले परी असि चलत कोऊ के खटकत।
कमर कटार तमंचे नहिँ बरछी कर चमकत ॥६२४॥
लाठी हूँ नहिँ आज लखात लिए कोऊ कर।
वेंत सुटकुनी लै घूमत कोउ बिरलेही नर ॥६२५॥
पढ़ि २ किते पाठ शालन मैं विद्या थोड़ी।
परम परागत उद्यम सों सहसा मुख मोड़ी ॥६२६॥
ढूंढ़त फिरत नौकरी जो नहिँ कोउ विधि पावत।
खेती हू करि सकत न, दुख सों जनम वितावत ॥६२७॥

चलै कुदारी तिहि कर किमि जो कलम चलायो ।
उठै बसूला, घन तिन सों किमि जिन पढ़ि पायो ॥६२८॥
अंगरेजी पढ़ि राज नीति यूरप आजादी ।
सीखि, हिन्द मैं बसि, निरख्यो अपनी बरबादी ॥६२६॥
करि भोजन मैं कमी किते अंगरेजी बानों ।
बनवत, पै नहिँ बनत कैसहू ढंग बिरानो ॥६३०॥
आय स्वल्प, अति खरचीली वह चलन चलै किमि ।
टिट्टुई ऊँटन को बोझा बहि सकत नहीं जिमि ॥६३१॥
खोय धर्म्म धन किते बने नट्टुआ सम नाचत ।
कर्ज लेन के हेतु द्वार द्वारहिँ जे जाँचत ॥६३२॥
उद्यम हीन सबै नर घूमत अति अकुलाने ।
आधि व्याधि सों व्यथित, छुधित बिलपत बौराने ॥६३३॥
मरता का नहिँ करता की सच करत कहावत ।
बहु प्रकार के अकरम करत विचार न ल्यावत ॥६३४॥
ईस दया तजि और भास जिनको कछु नाहीँ ।
सोई दया उपजावै अधिकारिन मन माहीँ ॥६३५॥
वेगि सुधारैं इनकी दशा सत्य उन्नति करि ।
शुद्ध न्याय संग वेई सदा सद्धर्म्म हिये धरि ॥३३६॥
होय देश यह पुनरपि सुख पूरित पूरब वत ।
भारत के सब अन्य प्रदेसन पाहिँ समुन्नत ॥६३७॥

अलौकिक लीला

सं० १९७२

श्री अलौकिक लीला

महाकाव्य

प्रथम सर्ग

रोला छन्द

श्री वसुदेव सून है नन्द कुमार कहावत।
यामैं संसय नेक नाहिँ नारद समुझावत ॥१॥
यही देवकी—देवि—गर्भ अष्टम सों जायो।
कौन भाँति किहिनै वाकहुँ गोकुल पहुँचायो ॥२॥
जाकहँ मारन चहत रह्यो मैं मूढ़ जन्मतहिँ।
वन्दी करि राख्यो देवकी वसुदेवहिँ ॥३॥
व्यर्थ भ्रूणहत्या अनेक करि पाप लियो सिर।
पै निज मारन हार मारि न कियो चित्त स्थिर ॥४॥
यद्यपि कियो अनेक जतन वाके नासन हित।
पै न कृतारथ भयो होत सोचत चित चिन्तित ॥५॥
जन्मत ही जिहि मारन हित पूतना पठायो।
निज उरोज विष लाय ताहि ले तिन उर लायो ॥६॥
प्रान पान करि गयो तासु पय पीवन मिस झट।
शिशुपन ही मैं कियो काम जाने या दुर्घट ॥७॥
तैसहिं भंज्यो शकट सहज ही एक लात हनि।
जाहि निरखि वृजवासी गन चकि गये मूढ़ बनि ॥८॥

तृणावर्त सम सुभट असुर लै ताकहँ अम्बर।
पहुच्यो पै तिह ताने मारि गिरयो लहि भूपर ॥९॥
वत्सासुर पद पकरि घुमाय फेंकि जिन मारयो।
प्रवल वृकासुर चोंच फारि जिन उदर विदारयो ॥१०॥
ऊखल सों वंधि जुगल विटप अर्जुन जिन तोरे।
दामोदर कहि भये चकित वृजवासी भोरे ॥११॥
निगलि गयो वह यदपि ताहि पहिले तो बिन श्रम।
सहि न सक्यो पै उगिल्यो तिहि गुनि हुतासनोपम ॥१२॥
भगिनी बन्धु विनासक नासन काज सहज अरि।
प्रवल अघासुर तित सों प्रेरित गयो कोप करि ॥१३॥
धरि अजगर को रूप अनूप भयंकर कारी।
वायो मुँह आकास अवनि छ्वैके छिति सारी ॥१४॥
दन्ता वली श्रृंग श्रेणी पर्वत सी जाकी।
अति प्रशस्त पथ सरिस लखि परत जिह्वा जाकी ॥१५॥
ग्वाल वाल अरु गाय वत्स के संग तासु मुख।
प्रविसे जब, कृष्णहु गवने तव तही सहित सुख ॥१६॥
निज अरि कहँ जब ही जान्यो वह भीतर आयो।
मूद्यो तुरतहिँ तब अपनो विस्तृत मुख बायो ॥१७॥
तब सह सुरभि वत्स गोपाल वाल अकुलाने।
धाय बचावहु कृष्ण आर्त सुर सों चिल्लाने ॥१८॥
सुनतहिं नन्द सून निज तन ऐसो विस्तारयो।
छटपटाय अघ मरयो ग्वाल पसु क्लेस विसारयो ॥१९॥
पाँच वर्ष को वालक महा असुर सहाँरी।
सुनतहिँ अचरज होत न कारन जाय विचारी ॥२०॥

महासर्प कालीय विदित जग परम भयङ्कर।
कालीदह सों पकरि ल्याय नाच्यो तिहि सिर पर ॥२१॥
मर्दित करि तिहि तहँ सों दियो निकारि सिन्धु महँ।
सौ मुखहूँ सो वमित गरल नहिँ परस्यो ताकहँ ॥२२॥
है अग्रज ताको बलराम नाम औरहु इक।
ताहू ने है कियो काज कैयो अमानुषिक ॥२३॥
रासभ रूप असुर धेनुक पद पकरि पछार्‍यो।
प्रबल प्रलम्ब दैत्यादिक मुष्टिक हनि मार्‍यो ॥२४॥
अनुचर और स्वजन उनके जे हे तिन सब कहँ।
हने बने दोऊ शिशु अहीर ज्यों पशु अहेर महँ ॥२५॥
ऐसहिँ असुर अरिष्ट महाबल कृष्ण पछार्‍यो।
केशी अरु व्योमासुर सुभटनि सहज सँहार्‍यो ॥२६॥
ये सब समाचार सुनि मन मैं होत महाभ्रम।
गोपालन तजि गोपालन मैं समर पराक्रम ॥२७॥
सम्भावति अस कैसे कहूँ बिना छत्री सुत।
यदपि अशक्य कर्म्म उनहूँ सों ये अति अद्‌भुत ॥२८॥
ताहीं सों अनुमान रह्‌यो दृढ़ मेरो यामैं।
अहै देवकी सुत इमि प्रबल पराक्रम जामैं ॥२९॥
पै अब संसय नाहिँ अहै बस शत्रु वही मम।
जाहि जन्यों देवकी गर्भ अपने सों अष्टम ॥३०॥
नारद मुनि चकि जासु बड़ाई इती सुनाई।
बरबस रिस मेरे मन मैं उन अति उपजाई ॥३१॥
कहत वाहिं विधि बन्दन करि अपराध छमायो।
बरुन ताहि लखि निज गृह आवत आतुर धायो ॥३२॥

प्रणति पूर्वक पूज्यो तिहि सेवक ज्यों स्वामी।
दियो ताहि सानन्द नन्द ह्वै कै अनुगामी ॥३३॥
तैसैहीं सुनियत सुरपति को मान हानि करि।
कुपित देखि निहि व्रज रच्छ्यो गोवर्धन कर धरि ॥३४॥
लज्जित ह्वै मघवा तब वाके पायनि लाग्यो।
निज अपराध छमायो आप अभय वर माग्यो ॥३५॥
अहै काल तेरो सो, नारद भाषत मो सन।
सावधान रहिये तासों हे नृप सब ही छन ॥३६॥
यदपि होत विश्वास न इन बातन पर मेरो।
तौहूँ करन चहूँ अब याको वेगि निवेरो ॥३७॥
यदपि नीत अस कहत प्रबल अरिसों न भिरन भल।
प्रकृत वीर कँह पै न बिना तिहि हने परत कल ॥३८॥
सात वर्ष को बालक मेरो रिपु कहलावै।
कहो कंस किहि भाँति जगत में मुख दिखलावै ॥३९॥
यदपि नीति अनेकन हने सुभट उन याही पन में।
मम प्रेषित मायावी सुचतुर जे असुरन में ॥४०॥
महा महिष बर बरद वृकहु बहु हनत सहित श्रम।
बाघन पै सहि सकत सिंह नख सिख तीखे तम ॥४१॥
याही सों चाहों मारन मैं तिहि निज कर सन।
सब सुभटन को लै बदलो चुकाय एकहि छन ॥४२॥
याही हित है धनुष यज्ञ को आयोजन यह।
जाके मिस व्रज सों इत आय सकै सहजहि वह ॥४३॥
फिर मेरे हाथन परि बचि सकिहै अरि कैसे।
पंचानन पंजे मैं फँसि मृग सावक जैसे ॥४४॥

अब उन सों तिहि ल्यावन हित इत चहिय चतुर नर।
होय सुहृद शुभ चिन्तक मम जो अहो मित्रवर ॥४५॥
उभय पक्ष विश्वास योग्य सब विधि सम्मानित।
इन गुन सों सम्पन्न तुम्है तजि और न कोऊ इत ॥४६॥
जासों अति अटपट कारज सकौ सिद्ध करि।
ताहीं सों तुमहीं पै अब सब आस रही अरि ॥४७॥
या सो गवनहु तुम वृज वेगि न वेर लगावहु।
करि छल बल कोऊ इतै कृष्ण बलरामहिं ल्यावहु ॥४८॥
चिर वैरी की बलि दै निज मन कसक मिटाऊँ।
ह्वै कृतज्ञ दै धन्यवाद तुमरो गुन गाऊँ ॥४९॥
नन्दादिक जे गोप तिनहुँ मख देखन व्याजन।
आनहु तिन सबहिन तिन के सँग सहित उपायन ॥५०॥
लहिहौ प्रत्युपकार अमोल अवसि पुनि मो सन।
ह्वै जासों कृतकृत्य वितैहौ सुख सों जीवन ॥५१॥
शत्रु सहायक जेते हैं तिन सबन संग हति।
राजकंटकन नासि होइहौं स्वस्थ जबै अति ॥५२॥
विष्णु सहायक लहि सुरपति ज्यों भयो कृतारथ।
तुव सहाय हौं तथा इष्ट लहि सकौ यथारथ ॥५३॥
सुनि अक्रूर कंस मुख सों वर्नित यह वानी।
बोल्यो ह्वै संकित संकुचित जोरि जुग पानी ॥५४॥
अनुजीवी हित नृप अनुशासन को परि पालन।
परम धर्म्म है यामैं संसय नाहिं मान धन ॥५५॥
यद्यपि यह मन सुनत सहज अति लगत मनोहर।
त्यों नहिं याकी सिद्धि सुलभ लखि परत नृपति वर ॥५६॥

सिर धरि नृप आदेस जात हौं वृज प्रदेश अब।
यथा शक्ति नहिं शेष राखिहौं मैं कछु करतब ॥५७॥
है प्रताप सों आप के यही आश सुनिश्चय।
प्रभु सेवा मैं आनि अर्पिहौं मैं उन कहँ लय ॥५८॥
यों कहि कै अक्रूर विदा लै कंसराय सों।
गवनेहुँ निज गृह ओर प्रनमि सूधे सुभाय सों ॥५६॥
तब शल, नोशल, चाणूर, मुष्टिक आमात्यन।
महा मल्ल जे सुभट सराहे शत्रु विनाशन ॥६०॥
महा-वीर बहु अनुभय जे युत चतुर महावत।
तिन सब करि एकत्र कह्यो निज भोजराज मत ॥६१॥
सुनतहि मुष्टिक अरु चाणूर खड़े ह्वै दोऊ।
कह्यो कंस सों ह्वै कुद्धित है भट अस कोऊ ॥६२॥
या जग में जे सन्मुख समर हमारे आवै।
राम कृष्ण बालन हित को बकवाद बढ़ावै ॥६३॥
अबहिँ जात हम तिनहिं मारि मूषक सम आवत।
उन्हैं हतन हित आयोजन व्यर्थ बनावत ॥६४॥
सुनि हर्षित ह्वै कंस कह्यो हंसि अहो बीरवर।
तुम दोउन सन तौ निश्चय नाहिन यह दुष्कर ॥६५॥
पै जौ तुम तित हते तिन्हहिँ तौ कहौ कवन रस।
निरख्यो किन जंगल में भल नाच्यो मयूर जस ॥६६॥
मैं अबहीं इक प्रबल वीर औरो पठयो तित।
कृष्ण और बलदेव दोऊ दुष्टन मारन हित ॥६७॥
जौ न मारि वह सक्यो कोऊ कारन वस तिन कहँ।
सुहृद शिरोमणि अक्रूरहु कहि मैं भेज्यो तहँ ॥६८॥

ल्यावहु इत लौं तिन दोउन कहँ कोऊ व्याजन।
नगर देखिबे अथवा धनु मख निरखन काजन ॥६९॥
जब अक्रूर कोऊ विधि सों तिन कहँ इत ल्यावहिँ।
तब तुम सब रहि सावधान करि करि निज दांवहिँ ॥७०॥
अवसि मारियै तिनहिँ कोऊ विधि भाजि न जावहिँ।
जासोँ निष्कंटक ह्वै कै हम सब सुख पावहिँ ॥७१॥
बहु विधि प्रबोधि यों सबन कहँ, पुरस्कार दै दै नयो।
तब त्यागि गुप्त निज सभा गृह, भोजराज महलनि गयो ॥७२॥

इति कंस अक्रूर परामर्श
प्रथम सर्ग
आषाढ़ शु० ११ सं० १९७२ वै०

अथ द्वितीय सर्ग

बरवै छन्द

प्रातहि संध्या वन्दन कै अक्रूर।
स्यन्दन सब सुख सामग्री सों पूर ॥
पर चढ़ि गवने बृन्दावन की ओर।
चिन्तत चरित चित्त मैं नन्द किशोर ॥
मन मैं कहत सकत को करि अनुमान।
परे बुद्धि सों विधि को अहै विधान ॥
चह्यो जन्मतहि मारन जिहि गुन काल।
अरु जिहि भ्रमबस हने असंख्यन बाल ॥

जा हित कंस व्याहतहिँ वन्दी कीन।
विलपत वनि वसुदेव देवकी दीन॥
कहँ जनम्यो वह अरु कित पहुँच्यो जाय।
वन्दी गृह सों तिहि को सक्यो चुराय॥
जनी देवकी कन्या जिहि जव कंस।
पटकि पछारन लाग्यो परम नृशंस॥
कर छुड़ाय वह पहुंची उड़ि आकास।
वनि देवी वह हँसि तिन कियो प्रकास॥
जिहि सुनि उद्वेजित ह्वै भोज भुआल।
हने वालकन जे जनमें तिहि काल॥
सुनि अष्टम वसुदेव सून वृज माँहि।
अहै नन्द नन्दन वनि तिहि कल नाहिँ॥
यद्यपि तिहि मारन हित सुभट अनेक।
पठय हतास होयहू तजत न टेक॥
व्यर्थहिँ अपने वीरन रहयो नसाय।
रुकत न पै तिन कँह नित भेजत जाय॥
जौ केशीहू सक्यो ताहि नहिं मारि।
अथवा तासों कोऊ विधि भाज्यो हारि॥
तौ वह बधन चहत तिहि तितै वुलाय।
भेज्यो मुहिँ जिहि ल्यावन हित फुसलाय॥
असमंजस अस यामैं मोहिँ लखाय।
सकहुँ न कैसहुँ कछू ठीक ठहराय॥
पर्यो नृपति आदेस जवहिं तैं कान।
तव हीं सो है चिन्तित चित्त महान्॥

अहो कष्ट अति समुझत नहिँ कहि जाय।
परवस सकै कौन विधि धर्म बचाय॥
यदपि जगत मैं बहु दुख दुसह महान्।
पराधीनता के सम तदपि न आन॥
समुझि सकौं नहिं सो अब मैं कित जाँव।
तजहुँ देस यह की गवनहुँ नन्द गाँव॥
क्रूर कर्म्म करि हौं अक्रूर कहाय।
सकिहौं कैसे जग मैं मुख दिखराय॥
निज कुल बालक घालक अरि कर माँहि।
अर्पन करिहौं कैसे जानहुँ नाँहि॥
खोये बहु बालक देवकि वसुदेव।
शेष निधन सुनि मरिहैं वे स्वयमेव॥
करी प्रतिज्ञा मैं तिन ल्यावन काज।
ताहू के त्यागन मैं लागत लाज॥
उभय लोक को शोक सकौं किमि त्यागि।
यासें बचिवे हित जाऊँ कित भागि॥
सोचहुँ जब तिन अतुलित बल की बात।
तब सब संकट स्वयमेव मिटि जात॥
बड़े बड़े वीरन जो मार्‍यो बाल।
अवसि होइहै सो कंसहु को काल।
पुनि अकासबानी अन्यथा न होय।
मिथ्यावादी देवन कहै न कोय॥
देखि पाप को जग पुनि प्रचुर प्रचार।
सम्भव है हरि हैंय मनुज अवतार॥

जव जव होय धर्म्म कीजग मैं ग्लानि।
वढ़हि असुर कुल संकुल अति अभिमानि॥
जव तिनसों दवि दीन सताये जाहिँ।
जवहिँ साधुजन ह्वै व्याकुल चिल्लाहिँ।
तव करुनाकर करुना करि प्रगटाय।
दुष्ट दलन दलि निज जन लेहिं वचाय॥
वैसोई सव जोग जुर्‌यो जव आय।
परिनामहुं तव वैसोई होत लखाय॥
निर्दय कुटिल नीति रत नृपति महान्।
अन्याई अविचारी लोभि निधान॥
हरत प्रजा गन प्रान धर्म धन हेरि।
कुपथ चलावै सवहि सुपथ सों फेरि॥
तैसई मन्त्री अरु सव पुरुष प्रधान।
राज कर्म्म चारी खल दुखद प्रजान॥
जिन अधिकार वढ़यो अति अत्याचार।
मच्चो चहूँ दिसि जासों हाहाकार॥
प्रजा दुहाई की सुनवाई नाहिँ।
चहै न्याय लहि दंड रोय विलखाहिँ॥
मन मैं सवहिँ सरापहिँ हाथ उठाय।
ईस वेगि अव याको राज नसाय॥
जिमि राजा तिमि प्रजा होहि यह रीति।
तासों प्रजा परस्पर करहिँ अनीति॥
लेय जो कोऊ काहूँ से देय न ताहि।
मान धर्म्म निज नहि कोउ सकै निवाहि॥

दारा धन इच्छा करि सकै न कोय।
बिनहिँ परिश्रम हरै प्रबल जो होय॥
पापाचार बढ़्यो सद्धर्म्म दबाय।
जप तप स्वाध्याय नहिँ होत सुनाय॥
नहिँ उपासना ज्ञान योग की बात।
भूलेहुँ कोउ मुख सोँ होत सुनात॥
स्वाहा स्वधा शब्द भूले सब लोग।
फैल्यो जासोँ बिबिध रोग अरु सोग॥
धर्म्म निरत सज्जन कहुँ नाहिँ लखाहिँ।
पाखंडी पापी असंख्य इतराहिँ॥
जिनमें जात लखात अनोखी बात।
सुखद परस्पर सुंदरता सरसात॥
कोउ मैं कोमल किसलय सेज सुहाय।
रहे सुगन्धित सुमन तल्प कहुँ भाय॥
फटिक सिला सिंहासन कहूँ अनूप।
जासु चतुर्दिक बैठक बहु अनुरूप॥
कोउ की तरु शाखा झुकि रही सुहाय।
अति उज्वल कोमल टहनी न विहाय॥
सोवन झूलन कोऊ बैठिबे जोग।
अतिहि लचीली अति प्रलम्ब बिन रोग॥
राजत जिन में कहुँ अनेक कहुँ एक।
सुर बालन सों न्यून कोऊ नहिँ नेक॥
रूप शील गुन भूषन बसन विधान।
सब विधि सब सों सरस सबै सहमान॥

सबै रूप गरबीली युवति सयानि।
सबै प्रेम रँग माती जाती जानि॥
कोऊ सितार बजावत कोऊ बीन।
कोउ सरोद कोउ सुर सिँगार कुच पीन॥
मधुर बजावत गति कोउ कोऊ बोल।
जोड़ तोड़ कोउ करत कलित कर लोल॥
कोमल तेवर सप्त सुरन संधान।
आरोही अवरोही वर बन्धान॥
मधुर मूर्च्छना गन ग्रामन के भेद।
सरस सुनाय देत सारद उर खेद॥
कोउ सुगन्धित सुन्दर सुमन सवाँरि।
बनवत विविध अभूषन सुमुखि सुधारि॥
कोउ सुसज्जित करत नवल सिंगार।
कोउ कोउ मग ताकत झाँकत द्वार॥
मान मानि कोउ तानि भौहँ सतराति।
पास न कोउ तौ हू रिस करि बतराति॥
कोऊ काहू सों मिलि करत सलाह।
कोउ कर जोरि कहत तुअ हाँथ निबाह॥
कोऊ कोउ लखि नैननि रहीं तरेरि।
कछु सुनि कोउ सतरातीं भौंह मुरेरि॥
कोउ कोउ सों मिलि घुलि घुलि बतरात।
भूलि भूलि सुध करि कहि कछु सतराति॥
कोउ कोउ सों कछु पूछति हँस गहि पानि।
सुनत अयान बनत सी सुमुखि सयानि॥

कोऊ जान न पावत बरजत बाल।
कहुँ कोउ छिपत कोऊ लखि गोपत हाल॥
कोउ झिझकारत कोउ कहँ सौ सौ बार।
कोउ विनवत कोउ विरचत सिथिल सिँगार॥
कोऊ सिखावत कोउ कछु अति हित मानि।
कोउ गहत कोउ भागत जानि लजानि॥
कोउ बुलावत कोउ कोउ देत न कान।
कोउ कोउ ताकत जस न जान पहिचान॥
जिनकी लीला लखि लखि रही लजाय।
काम बाम बावरी बनी बिलखाय॥
जो सखि जामैं निवसत ताके नाम।
सोँ प्रसिद्ध ये अहैं कुञ्ज अभिराम॥
कोउ राधा कोउ चन्द्रावली निकुञ्ज॥
कोऊ विशाषा कोउ ललिता छवि पुंज।
ऐसे कहँ लगि नाम गनाये जाहिँ।
सहसन कुञ्ज बने छवि पुंज सुहाहिँ॥
या प्रलम्ब के छोर ओर छवि छाय।
रह्यो महावन अद्भुत सुखद सुहाय॥
जाकी रचना दैवी दिपति दिखात।
विटप विदेशी जामैं सबै सुहात॥
अहै शालवन अति विशाल जा बीच।
अति प्रशस्त पुहुमी कहुँ ऊँच न नीच॥
अति उज्वल जित कहूँ न तृण को नाम।
कबहुँ कछू कैसहु घुसि सकत न घाम॥

जामें कोसन लों खग उड़त लखाहिँ
विचरत गज नहिँ शाखा परसि सकाहिँ ॥
भृङ्गराज खग जित घोसलें बनाय।
विगत व्याल भय निवसत जित हरपाय ॥
बोलत बोल अमोल सरस सुर संग।
सुनि बुलबुल बोसताँ होत जिहि दंग ॥
बोलत हरदो बन कलरवित बनाय।
नाचत मत्त मयूर चिते चकराय ॥
शुक सारिका हरेवा अगिना आय।
श्यामा दामा लाल रहे भल गाय ॥
जिते सुरीले खग संकुल जग माहिँ।
भरत गिटगिरी ते सब तहाँ लखाहिँ ॥
दिन दुपहर जो टहरत विहरन काज।
आवत जुरत जहाँ कै कबहुँ समाज ॥
जाके चारहुँ ओर अनेक प्रकार।
बनि प्राकाराकार बनाय कतार ॥
भोजपत्र कहुँ देवदार तरु ठाढ़।
नारिकेलि खर्जूर ताल मिलि गाढ़ ॥
बीच छोहारा जायफरन तरु राजि।
सुभग सुपारी चन्दन सुखमा साजि ॥

या बिहार अवनी समग्र चहुँ ओर।
लगी कोट प्राचीर सरिस अति घोर॥
बेंतरि गझिन कटीले वृच्छनि केरि।
सब थल अम्बर मनहुं घटा घन घेरि॥
शमी खदिर रीवा बवूल बहु बाँस।
वैर करवन्दे हैंस सिंहोर अनास॥
विछुया सेहुँड़ गज चिंघार जुतखार।
बन्यो दुर्ग मय सटि प्राकार प्रकार॥
जिन पर कंज बनवँसवा की बौरि।
चढ़ी केवाँच करेरुअन संग भरि भौंरि॥
गझिन बनावत अमर बेलि बनि जाल।
वुलवुलखाना बिम्ब सहित फल लाल॥
बाहर मधुर मकोय मकोयचा झालि।
भोला करियारी कौवारी लालि॥
भरभन्डा भटकैया फूले फूल।
नीचे गुखुरू बिछे पथिक पग सूल॥
सोहत बाहर हरित करील कतार।
नीचे फूले फले धतूर मदार॥
भेदि जाय नहिँ सकत जाहि कोउ जीव।
पवन हलै न छुद्रहु छिद्र अतीव॥
बीच द्वार द्वै राजत दोऊ ओर।
इक जमुना दूजो बृजबीथी छोर॥
द्वै २ विटप कदम्ब दुहू दिसि दोय।
गोपुर बनयो दोऊ मिलि इक होय॥

पहुच्यो तहँ रथ त्यागि द्वारसों दूर।
प्रविस्यो भीतर कौतुक वस अक्रूर॥
घूमन लग्यो तहाँ सुधि वुधि विसराय।
द्वै गन्धर्व परे जहँ ताहि लखाय॥
जान्यो जासों सव या थल को हाल।
हरख्यो हिय अति ह्वै कृतकृत्य कमाल॥
सुन्यो परस्पर उनकी वहु विधि वात।
अचरज मय तिन पीछे पीछे जात॥
कह्यो एक है यह वृन्दावन आज।
धन्य धन्य धारे सुभ सुन्दर साज॥
जों सुरपुर हू मैं नहि देख्यो जाय।
सो सव दृश्य अलौलिक इतै लखाय॥
मनहुँ जगत की सव श्री इतै सकेलि।
धरयो आनि विधिनै कोऊ विधि इत मेलि॥
मुसुकुराय वोल्यो दूजो गन्धर्व।
वैकुंठहुँ सो वढ्यो आज या गर्व॥
नन्दन वन त्यों इतर देवगन वाग।
सवै हीन छवि वनयो यह निज भाग॥
ये गोपी सुर वालन रहीँ लजाय।
श्री समृद्धि गुन रूप गुमान वढ़ाय॥
वृन्दावन छवि सहित सकल सुख साज।
क्यों न लहै जहँ निवसत श्री वृजराज॥
आज इति श्री जाकी है हे मित्र।
सुख समृद्धि दिन वीते जासु पवित्र॥

पुनि न होयहैं अब इत रास विलास।
राग रंग आनन्द प्रेम परिहास॥
अन्तिम शोभा लखि लेवे हित आज।
आवत है इत उमड़्यो देव समाज॥
यासों घूमि लख्यो हमहूँ सब ठाम।
पुनि कहँ लखि परिहैं यह छवि अभिराम॥
चलहु कहूँ छिपि देखैं हम इत पास।
होन चहत आरम्भ रसीली रास॥
आइ छये नभ में घन सुन्दर स्याम।
तनि वितान सम निरख्यौ रोके घाम॥
इन्द्र धनुष की झालर चहूँ लगाय।
चमकि चंचला सूचत समय सुहाय॥
यों कहि पीछे घूम्यो नेक निहारि।
लखि अक्रूर कुपित ह्वै दियो निकारि॥
परवस परि अक्रूर तज्यो वह ठाम।
आयो निज रथ पर कछु हित विश्राम॥
लग्यो सोचिवो गन्धर्वन की बात।
बहु समुझ्यो पै समुझ्यो नहि समुझात।
इतने हीं में महा मधुर धुनि कान
परी आनि मुरली की मोहत प्रान।
जय जय शब्द सोर सुनि पर्यो महान्
स्वर्ग सुमन वरषत लखि देव विमान।
अति आतुर ह्वै रथ हाँक्यो तिहि ओर
निरख्यो रच्छुत द्वार सिंह द्वै घोर।

लखि स्यन्दन वे उतै उठे गुराय।
डरपि भजे लै निज वै प्रान पराय॥
छुन हीं मैं रथ वढ़ि पहुँच्यो वहु दूर।
थक्यो निवारत वल करि भल अक्रूर॥
रुक्यो जाय कोउ विधि वह वन कै छोर।
लग्यो सुनन अक्रूर मनोहर सोर॥
वजत सरंगी वहु इसराज सितार।
झाँझ मजीरे मसक समय अनुसार॥
जल तरंग डफ ढोलक चंग मृदंग।
मुरज नफीरी सुर सिंगार मुँह चंग॥
वीन सरोद कवहुँ कोमल सुर मन्द।
कवहुँ दुन्दुभी नाद देत आनन्द॥
लाखन घुँघरू किंकिनि कलरव संग।
सवहिं एक सुर मैं मिलि वजत सुढंग॥
सुनि श्री राग अलापन कंठ हजार।
मोहे नारद सारद शिव रिझवार॥
सकल राग रागिनी तहाँ कर जोरि।
विनवत गान लहन हित मान वहोरि॥
सुर किन्नर गन्धर्व अप्सरन संग।
मोहे निज गुन गर्व त्यागि ह्वै दंग॥
सकल सिद्धि चारन ऋषि मुनि दिगपाल।
मोहे सकल जीव जल थल तिहि काल॥
रवि रथ रुक्यो मन्द परि पवन प्रवाह।
कालिन्दी जल रुक्यो सुनन सुर चाह॥

खोयो सुधि वुधि वेचारो अक्रूर ।
मोह्यो मन परि सुख सागर मैं पूर ॥
रास वन्दहू भये भई वहु वेर ।
है चैतन्य परयो चिन्ता की फेर ॥
निरख्यो नभ मैं नहिं सुर एक विमान ।
तरल ताल नहिं त्यों सुनि सुर सन्धान ॥
भई रास गुनि वन्द चल्यो वृज ओर ।
तर्क वितर्क विविध विधि करत अथोर ॥
मारग मैं चहुँ दिसि लखि छवि अभिराम ।
जान्यो वृज समग्र शोभा को धाम ॥
निरख्यो पूरव सों वदल्यो सव रंग ।
विसमय अति अधिकात भयो मन दंग ॥
यों चलि नन्द गाँव लखि कै कछु दूर ।
चितै चकित चित कहन लग्यो अक्रूर ॥
अहो कहा अचरज कछु कह्यो न जाय ।
जितहि लखौं तित अद्भुत दृश्य दिखाय ॥
लख्यो वार वहु नन्द गाँव मैं आय ।
जिहि छवि लखि चित आज रह्यो चकराय ॥
परम उच्च अट्टालिकानि की रासि ।
धारि रह्यो अलका के सम यह भासि ॥
किधौं भाग कोउ अमरावती उठाय ।
ल्याय दियो सुरगन वृज वीच वसाय ॥
कौन समुझि इहि सकै गोपगन ग्राम ।
वन्यो अहै जो श्री समृद्धि को धाम ॥

इन अचरज काजनि को कारन एक।
है जामै कैसहु नहिँ संसय नेक॥
जाके प्रगटे अकथ अनोखे काम।
भये इतै सोइ निवसन को यह धाम॥

यों वहु प्रकार विचार चित्त मैं करत पुर पैठत भयो।
लखि नन्द की आनन्द मय वर भवन अति छुबि सों छयो॥
कछु दूर पै अक्रूर तजि रथ द्वार दिसि पग द्वै दयो।
मिलि नन्द कियो प्रणाम सादर ताहि निज गृह लै गयो॥

इति श्री अक्रूर वृज्ञ गवन नामक
द्वतीय सर्ग समाप्त

अथ तृतीय सर्ग

करि स्वागत बहु भाय, अति आनन्द उछाह संग।
अक्रूरहि वैठाय, नन्द ल्याय निज द्वार पै॥१॥
आतिथेय सत्कार, अर्घ्य पाद्यादिक दियो।
भोजन रुचि अनुसार,, परस्यो विविध प्रकार के॥२॥
भोजन कीन्यो जानि, प्याय सुशीतल मधुर जल।
अँचवायो सन्मानि, दियो पान लाची अतर॥३॥
स्वस्थ जानि अक्रूर, कुशल प्रश्न पूछन लग्यो।
इतनहिँ मैं कछु दूर, सों वाजी मुरली मधुर॥४॥
सुनि मुरली तजि काम, दौरें सब निज भवन तजि।
वृद्ध वाल नर वाम, निरखन हित घनस्याम छबि॥५॥

नन्द यशोदा संग, चले झपटि अक्रूर हू।
रंगे प्रेम के रंग, इक टक मग लागे लखन ॥६॥
गोधूली गझिनाय, धूली गो पग उड़ि गगन।
रजनी रही बनाय, दै छवि अवनि अकास की ॥७॥
तरइन सो छितिराय, सोह्यो सुरभि समूह सित।
मध्य रह्यो मन भाय, चन्द बन्यो वृजचन्द मुख ॥८॥
हरि वियोग तम रासि, सींचन सुधा संयोग जनु।
लोचन सहस विकासि, दियो मनहुँ कैरव कुलहिं ॥९॥
वृज जन मन हुलसाय, दियो अमित आनन्द भरि।
जनु सागर लहराय, पेखत पूनौ सुधा धर ॥१०॥
लै लै कंचन थार, सजी आरती कै रहीं।
गोपी निज २ द्वार, वार २ मन वारि कै ॥११॥
रुकत चलत गति मन्द, द्वार २ पूजा लहत।
नन्द नदन सानन्द, पहुँचे निज गृह पौरि पर ॥१२॥
वारत राई नोन, जननि जसोदा मुदित मन।
करति आरती सोन, मुहर निछावरि करि कहत ॥१३॥
आवहु मेरे प्रान, उर लगाय चूमत मुखहिं।
चह्यो भवन लै जान, कृष्ण और बलराम कहँ ॥१४॥
पै अक्रूर निहारि, पहुँचे ते ताके निकट।
पूजनीय निरधारि, करि प्रणाम पायनि परे ॥१५॥
उर लगाय अक्रूर, अकथनीय आनन्द लहि।
भर्यो हियो भरपूर, लग्यो असीसन बार बहु ॥१६॥
कह्यो नन्द हरखाय, "चचा तुम्हारे ये अहैं।
इत मथुरा सों आय, कियो कृतारथ आज मुहिं ॥१७॥

अब गृह भीतर जाहु, कर पग मुख धोवहु दोऊ।
स्वस्थ होय कछु खाहु, तब आवहु बातैं करहु ॥"१८॥
पूछ्यो मृदु मुसुकाय, मन मोहन अक्रूर सन।
"कहहु चचा समुझाय, कुशल छेम सकुटुम्ब निज ॥१९॥
परम अनुग्रह कीन, दीन दरस इत आइकै।
अब जो वृत्त नवीन, होय कहहु सो करि कृपा ॥"२०॥
चित चिन्ता सों चूर, संसय विसमय सो भर्‌यो।
कह्यो सकुचि अक्रूर, "अहै कुशल सानन्द सब ॥२१॥
हे मेरे प्रिय प्रान, मधुपुर मैं नृप कंस ने।
सुन्दर सहित विधान, धनुष यज्ञ कीन्यों चहै ॥२२॥
मल्ल युद्ध तिहि संग, क्रीड़ा कौतुक आदि बहु।
उत्सव रंग विरंग, वहाँ होइहै विविधि विधि ॥२३॥
होन सम्मिलित काज, तुम कहुँ आमंत्रित कियो।
जाहित मैं इत आज, आयो प्रेरित नृपति सों ॥२४॥
नन्द आदि गोपाल, सबहिं बुलायो मान धन।
लखि २ होहु निहाल, उत की नव लीला ललित ॥२५॥
तासों मिलि सब लोग, चलहु सकारे हरषि हिय।
मिल्यो अपूरब जोग, नृप दरसन आनन्द लहन ॥२६॥
कह्यो हिये हरखाय, दामोदर अक्रूर सों।
"परम कृपा दरसाय, भोजराज निश्चय हमैं ॥२७॥
उतै बुलायो टेरि, लखिबे हित उत्सव महत।
हरषित ह्वै हैं हेरि, हम सब संग आपके ॥२८॥
बहुत दिनन सों चाह, लखन मधुपुरी की रही।
राज धानि बृज नाह, सुनि जो अतिसय रुचिर ॥२९॥

करहिं आप विश्राम, थाके आये दूर सों।
प्रातहि आय प्रनाम, करि चलि हौं संग आप उत" ॥३०॥

अतिसय विस्मित होय, कह्यो सहमि अक्रूर यह।
"खाहु पियहु सुख सोय, जाहु तात अब तुम भवन ॥३१॥

तब पुनि कियो प्रनाम, लहि असीस अक्रूर सन।
गवने सुन्दर श्याम, निज गृह भीतर जननि संग ॥३२॥

सहम्यो मन अक्रूर, ज्यों अहि सुनि धुनि तूमरी।
अति चिन्ता सों चूर, ह्वै चित मैं चिन्तन लग्यो ॥३३॥

सब अचरज मय बात, सुनत लखत इत आय मैं।
कह्यो कछू नहि जात, सकै न मन अनुमान करि ॥३४॥

यह शिशु परम अयान, होन जोग अति स्वल्प वय।
सो बल बुद्धि निधान, दुसह तेज युत है महत ॥३५॥

जाके जन्म प्रभाय, भई स्वर्ग बृज भूमि यह।
जा छबि मनहि लुभाय, रही मदन मूरति मनो ॥३६॥

धन्य २ बसुदेव, धन्य देवकी देवि तू।
जांन्यो जग नहि भेव, जन्यो अजन्मा जिन सुवन ॥३७॥

धन्य भयो यदुवंश, जाके जन्म प्रभाव सों।
कहा बापुरो कंस, ता बैरी बनि करि सकै ॥३८॥

अति विंचित्र यह बात, जन्यो उतै पहुँच्यो इतै।
नन्द कहायो तात, महरि यशोदा त्यों जननि ॥३९॥

तऊ धन्य ये लोग, लख्यो बाल लीला ललित।
पूरब पुन्य संयोग, गोद खिलायो चूमि मुख ॥४०॥

यों सोचत अक्रूर, नन्दराय अनुचरन सन।
कह्यों निकट अरु दूर, बृज मंडल मैं जाहु तुम ॥४१॥
सब गोपन समुझाय, कहौ नृपति आदेस यह।
पठयो सबन बुलाय, कंस राज मथुरा पुरी ॥४२॥
धनुष यज्ञ को साज, उतै सजायो अति महत।
होन सम्मलित काज, हम सब चलिहैं भोर उत ॥४३॥
लै सब लोग सकार, पलौ विलम्ब न होय कछु।
यथा शक्ति अनुसार, सजहु उपायन नृपति हित ॥४४॥
बसियत जाके राज, ताके गृह कारज पर्‌यो।
चाहे जितो अकाज, होय तऊ सब सँग चलौ ॥४५॥
सुनि सेवक आदेस, चले हरखि चहुँ दिसि तुरत।
बोले तब गोपेश, चिन्तित चित अक्रूर सों ॥४६॥
अहो सुहृदवर एक, बात चहत हम पूछिबे।
कहहु कृपा करि नेक, हित विचारि चित आप अब ॥४७॥
लै बहु विधि उपहार, सकल गोप सँग हम चलैं।
इत लखिवै घर द्वार, राखि कृष्ण बलराम कहँ ॥४८॥
अनुचित तौ कछु नाहिँ कारन नृप को कोप तौ।
आशंका मन माहिँ, विविध उठत चित्त कारनै ॥४९॥
तासों कहहु विचारि, श्रेयस्कर जो होय तिहि।
मैं न सकौं निरधारि, पूछत तुम सों जानि हित ॥५०॥
बोल्यो तब अक्रूर, मुसुकुराय नंद राय सों।
संसय सब करि दूर, चलहु सुतन लै संग तुम ॥५१॥
नहि चिन्ता को काम, कैसेहू यामैं कछू।
लहि सब भाँति अराम, आनन्दित ह्वैहौ सबै ॥५२॥

राम कृष्ण दोउ भाय, अवसि बुलायो भेज नृप।
कह्यो मोहि समुझाय, ल्यावहु तिन कहँ जतन सों ॥५३॥
विविध अलौकिक काज, कीन्यो इन सुनि चाव सों।
चहत मिलन महराज, निज सामन्त समुझि सबल ॥५४॥
कह्यो यदपि समुझाय, विविध भाँति अक्रूर ने।
पै न सके नन्दराय, निज चित चिन्ता दूर करि ॥५५॥
बहु बीती निसि जानि, कह्यो नन्द अक्रूर सों।
बिछी सेज सुख दानि करहु आप विश्राम अब ॥५६॥
हमहूँ सोवन जात, पुनरपि याहि विचारिहैं।
चलिबो उतै प्रभात, कौन कौन संग है उचित ॥५७॥
नन्द गवन गृह कीन, लख्यो यशोदा अनमनी।
कीने वदन मलीन, सोचत मोचत नीर दृग ॥५८॥
यदपि गयो जिय जानि, नन्द राय कारन व्यथा।
निकट जाय गहि पानि, तऊ ताहि पूछन लगे ॥५९॥
नन्दरानि तब रोय, कह्यो कहा पूछन चहौ।
सब सुख साधन खोय, देन चहत यह आइ इत ॥६०॥
कुटिल कुचाली क्रूर, कहवावत अक्रूर जो।
करहु कोउ विधि दूर, याहि निगोड़े निरदई ॥६१॥
नतरु निपूतो प्रात, लै जैहै सँग आपने।
छलबल करि दोउ भ्रात, छगन मगन मम प्रान प्रिय ॥६२॥
ये दोउ मेरे लाल, दोऊ मेरे दृगन सम।
जिन बिन रहति विहाल, बछरन चारन जात जब ॥६३॥
तब मथुरा को जान, भला कौन विधि सहि सकौं।
बरु तजि दैहौं प्रान, जान न दैहौं कैसहूँ ॥६४॥

कहा बुलावत कंस, इन दोउ भोले बालकन ।
होय तासु निरवंस, जो इन लखै कुदीठ सोँ ॥६५॥
कस कछु करहु उपाय, जाय भाजि अक्रूर निसि ।
न तरु अवसि फुसिजाय, लै जैहै वह प्रानधन ॥६६॥
ये दोउ बाल अयान, भलो बुरो जानै न कछु ।
उत्सव सुनत महान, ठान लियो उत जान मत ॥६७॥
समुझायो बहु बार, मैं तिन कहँ सब भाँति सन ।
पै न रुकन स्वीकार, करत कैसहू वे दोऊ ॥६८॥
जातो कोउ विधि मान, कहन सुनन सो बड़ो पै ।
सुनत देत नहिं कान, छोटे हैं खोटो निपट ॥६९॥
लगै युक्ति तव कौन, कहत न भैय्या सोच करि ।
लखि हौं जो सब तौन, तो कहुँ आय सुनाय हौं ॥७०॥
लखी मधुपुरी नाहिं, राजधानि कोउ नृपन मैं ।
तिहि निरखन मन माँहि, अहै लालसा लागि अति ॥७१॥
तिन दोउन लखि संग, उत्सव विविध प्रकार यह ।
खेल कूद बहु रंग, देखि दोऊ सँग आइहौं ॥७२॥
या मैं का डर तोहिं, द्वै दिन जावे मैं उतै ।
सकत जीति को मोहिं, जुद्ध जुरे जोधा जगत ॥७३॥
निपट अटपटी बात, कहत हँसत नटखट निठुर ।
करूँ कहा न सुझात, नहिं बसात वासों कछू ॥७४॥
सुनि यसुदा की बात, नन्दराय ठगि से गये ।
कह्यो कछू नहिँ जात, मोह महोदधि मैं परे ॥७५॥
मनहीँ मन अनुमान, करन कहा तब ह्वै सकत ।
जब चाहत ये जान, कौन रोकि है तब उन्हैं ॥७६॥

त्यों नृप को आदेस, टारि कहाँ हम बचि सकत।
चिन्ता यदपि विशेष, अहै जाइबे मैं उतै ॥७७॥
पै नहिं और उपाय, जब याको कोउ लखि परै।
तब जगदीस सहाय, करिहै निश्चय अवसि कछु ॥७८॥
पै जसुदा किहि रीति, धीर धारिहै ह्वै जननि।
याकी मोहि प्रतीति, प्रान त्यागिहै वह अवसि ॥७६॥
समुझाऊँ कहि काह, यह नहिं समुझाई परै।
अब हरि हाथ निवाह, कहि मन धीरज धारिहिय ॥८०॥
लग्यो कहन समुझाय, जसुमति कहँ नदराय जू।
बारम्बार बुझाय, नहिं चिन्ता को काम कछु ॥८१॥
मैं तिनके संग जात, सब लखाय उत्सव उतै।
लै आवहुं दोउ भ्रात, सहित कुशल तेरे निकट ॥८२॥
द्वै दिन धीरज धारि, हे सुन्दरि तू कोउ विधि।
यह चित माँहि विचारि, गाय चरावन जात वन ॥८३॥
मैं नहिं दे तो जान, उन्हें साथ अक्रूर के।
उत्सव निरखन ध्यान, वे न मानिहैं कोऊ विधि ॥८४॥
तब फिर कौन उपाय, कीजै बतलाओ समुझि।
वे दोऊ मचलाय, जैहैं सँग जैहैं अवसि ॥८५॥
समुझावत बहु भाँति, नँदरानी नँदराय जू।
महामोह मैं मानि, पै न सुनति वह बैन कछु ॥८६॥
चली निसा बरु बीति, चुकी न इनकी बतकही।
समुझायो सब रीति, पै जसुमति समुझी न कछु ॥८७॥
सब वृज मंडल बीच, समाचार फैल्यो यहै।
सबै ऊँच अरु नीच, नर नारी सोचन लगे ॥८८॥

जाँय उतै नँदराय, कृष्ण गमन उत ठीक नहिं ।
कहैं सवै अनखाय, सहस मुखन एकहि वचन ॥८६॥
सुनि गुन गन गोपाल, कंस वुरो मानत मनहिं ।
तासों तित इहि काल, गमन उचित नहिं ता सुअन ॥६०॥
रोको तिय चलि ताहि, कैसेहु जान न पावहीं ।
वहु समझाय सराहि, विविधि भाँति कर जोरि कै ॥६१॥
लै २ कै सिर भार, नृपति उपायन सब कोऊ ।
चलो नन्द के द्वार, मिलि सब सँग समुझावहीं ॥६२॥
यों कहि सब गोपाल, चले नन्द के भवन कहँ ।
उन पीछे वृजवाल, चलीं सवै मन विलखती ॥६३॥
कोउ कहति हे बीर, कैसी यसुदा मंद मति ।
जिन धारचो उर धीर, कृष्ण गमन सुनि मधुपुरी ॥६४॥
कहैं केति सखि प्रान, मैं तजि देहौं जात उन ।
यह निश्चय तू जान, रोकि कोउ विधि नन्द सुत ॥६५॥
कोउ कहति गहि फेंट, राखौंगी मैं स्याम को ।
होनि देहि तौ भेंट, वासों मेरी है भटू ॥६६॥
भाखति कोउ चल बीर, नन्द द्वार अब वेगहीं ।
कहूँ न वह वेपीर, छल वल करि भाजै निकरि ॥६७॥
कहैं किती वृज वाम, अरी निपट वह निरदई ।
जैहै भजि घनश्याम, कैसेहु कछु नहिं मानिहै ॥६८॥
तासों चलि नँद गेह, मरौ सवै विष खाय उत ।
कहा होइहै देह, प्रान जात जब है सखी ॥६६॥
कहत विविध यों बात, व्याकुल ह्वै निज सखिन सों ।
चलीं सवै विलखात, नन्द सदन वृज की वधू ॥१००॥

सुनत प्रजा गन सोर, सोचत समुझत चकिजकति।
रुकवि रुदित करि रोर, भोर होन के प्रथम ही ॥१०१॥

कवित्त

कैसो है विधान विधिना को न जनाय कछू,
जाय मधु पुरी फिर कब इत आइहैं।
नाग सिर नाचि हैं उठाइ धरा धर कर
दावानल पान करि हमहिं बचाइहैं॥
गाइन चराइहैं कदम्ब चढ़ि प्रेमघन,
बाँसुरी बजाइहैं औ रस बरसाइहैं॥
जाके भुजबल बसो रह्यो वैरिहीन वृज,
सोई वृजराज आज वृज तजि जाइहैं॥

दूध दधि माखन को भार कितनेहीं धरे,
सिर पर लठा कितने हीं लिये निजकर।
वृज वनिता की अवली अनेक बिलखति,
बकति परस्पर कहत धरौं वंसीधर॥
प्रेमघन स्याम के वियोग की व्यथा की घटा,
घुमड़ि रही सी वृज मंडल पै घोरतर।
बाल वृद्ध जुआ नर नारिन की एक संग,
भारी भीर जात है जुरति नन्द द्वार पर॥

श्रीकृष्ण सम्मेलन
नामक तृतीय सर्ग।

चतुर्थ सर्ग

पद्धरी छन्द

द्वै घटिका रजनी रही जानि।
तजि सेज संग आलस्य ग्लानि ॥१॥
अक्रूर उठे अतिसय सकार।
करि नित्य कृत्य निज सब प्रकार ॥२॥
निज सारथीहिं आदेश कीन।
तैयार करहु रथ हे प्रवीन ॥३॥
आये जब देखे नन्द द्वार।
जिमि रही भीर तहँ अति अपार ॥४॥
उपहार भार गोपाल वृन्द।
लीनेसि देवै हित नरिन्द ॥५॥
थकि रहे सहस नारीन संग।
ह्वै मतवारे ज्यों पिये भंग ॥६॥
कोउ कहत मन्द मति नन्दराय।
बौरो बनि तू किमि गयो हाय ॥७॥
पठवत मथुरा घन स्याम राम।
अति कुटिल कसाई कंसधाम ॥८॥
बृज जिअत सकल जा मुख निहारि।
जो देत सहस सौ विघ्न टारि ॥९॥
जो है बृज को सब विधि अधार।
हम सब को रच्छा करन हार ॥१०॥

हम कबहुँ न दैहैं ताहि जान।
जब लौं या घट मैं बसत प्रान ॥११॥
कोउ कहति अरी यशुदा अयानि।
तू करति कहा नहिं सकल जानि ॥१२॥
पठवत मथुरा निज द्वै कुमार।
जो हम सब को जीवन अधार ॥१३॥
होतहिं इनके दोउ दृगन ओट।
लगिहै हम कहँ सब जगत खोट ॥१४॥
बचिहै तेरो किहि भाँति प्रान।
का समुझि देत तू तिन्है जान ॥१५॥
धरि सकिहै तू किहि भाँति धीर।
सकिहै सहि कैसे दुसह पीर ॥१६॥
मिलि कहत गोपिका ताहि घेरि।
पैहै नहिं समुझन समय फेरि ॥१७॥
जनि देय उतै तू इन्है जान।
येई हम सब के समुझि प्रान ॥१८॥
कैसो कठोर हिय हाय कीन।
जल बिन जीहैं किहि भाँति मीन ॥१९॥
तू समुझति नहिं ग्वालिन गवांरि।
वेगहि इन जैवे तै निवारि ॥२०॥
कछु देत न उत्तर नन्दरानि।
लेती उसास धरि सीस पानि ॥२१॥
कोउ कहत गोपिका कितै स्याम।
भाग्यो तौ लै नहिं संग राम ॥२२॥

गहि रोको याको कोऊ धाय।
छिपि भजै न वह करि कोउ उपाय ॥२३॥
यों चली ग्वालिनी सखिन टेरि।
वहु रहीं नन्द मन्दिरहिं घेरि ॥२४॥
कोउ कहत जात लखि राम स्याम।
धरि लीजो तिहि मिलि सकल वाम ॥२५॥
बहु गईं जहाँ रथ रह्यो ठाढ़।
लै रश्मि करन सो गहीं गाढ़ ॥२६॥
प्रति आरा चक्रन गहे हाँथ।
बहु नारि रहीं निज पटकि माँथ ॥२७॥
सौ २ सोंईं मग सकल रोंकि।
चिल्लात विकल हिय करन ठोंकि ॥२८॥
कर लै विष कितनी कहत टेरि।
मरि हैं हम ता छन गमन हेरि ॥२९॥
बहु लै कर गर दीने कटार।
कहि रहीं अरे यशुदा कुमार ॥३०॥
नहिं देहुँ अकेली तोहिं जान।
पठवहुँगी मैं तुम संग प्रान ॥३१॥
करुणामय क्रन्दन सुनत नारि।
सँग दृश्य भयंकर यों निहारि ॥३२॥
अति उत्तेजित हम ज्ञान होय।
मुख आंसुन तें निज धोय रोय ॥३३॥
बोल्यो अधीर ह्वै एक गोप।
सहि सक्यो न कैसेहु दुसह कोप ॥३४॥

सोंचत मोचत द्दग दोउ नीर।
गहि मौन मनहि मन ह्वै अधीर ॥३५॥
उठि कह्यो अरे अक्रूर क्रूर।
तू भाग यहाँ तैं तुरत दूर ॥३६॥
नहि फोरौं मैं तेरो कपार।
हम सब कहँ लै तू झोंकि भार ॥३७॥
पै जान न दैहौं उतै श्याम।
कोउ विधि कैसेहू कंस धाम ॥३८॥
तू आयो बृज को प्रान लेन।
सहसन मनुजन दुख दुसह देन ॥३९॥
हे खल नहिं लागति तोहि लाज।
इन बालन सौंपत कंस राज ॥४०॥
कोउ देत वधिक कर धरि मराल।
सौंपत सिंहहि कोउ सुरभि बाल ॥४१॥
जा भाजि वेग ह्वै रथ सवार।
क्यों लेत पाप को सीस भार ॥४२॥
सुनि सकुचानो अक्रूर बैन।
समुझ्यो साँचो यह उचित हैन ॥४३॥
है निज कुल कमल पतंग स्याम।
तिहि देवो कंस नृशंस काम ॥४४॥
सूधो सुनि बृज वासीन बात।
अक्रूर कह्यो हम अबहिं जात ॥४५॥
है तुमरी साचहुँ उचित सीख।
हम कहूँ खायहैं माँगि भीख ॥४६॥

पै लै नहिं जैहैं श्याम राम।
ह्वै सठ पहुँचावन कंस धाम ॥४७॥
सुनि रुचत उचित अक्रूर बैन।
ब्रज वासी लगे आसीस दैन ॥४८॥
तू धन्य सुहृद हित करन हार।
निष्कपट न्यायरत अति उदार ॥४९॥
जिन नाम अर्थ तू सत्य कीन।
हम सब कहँ जीवन दान दीन ॥५०॥
जो इन कहँ मारन चहत नीच।
मुख दिखलैहौं किमि जगत बीच ॥५१॥
कुल बालक घालक जग कहाय।
धिक जीवन सुख संसार पाय ॥५२॥
जगदीस करै तेरो सहाय।
कहि रहे सोर सब कोउ मचाय ॥५३॥
जगि परे श्यामसुन्दर सुजान।
चहुँ दिसि कोलाहल सुनत कान ॥५४॥
बिन पूछे ही सब जानि वृत्त।
कछु भये न चंचल चकित चित्त ॥५५॥
करि आवश्यक आरम्भ कृत्य।
जिहि भाँति करत वे रहे नित्य ॥५६॥
वैसेहीं निकरे आय द्वार।
नित के से ही साजे सिंगार ॥५७॥
बलराम सँग सूधे सुभाय।
मुसुकात सकल जन मन लुभाय ॥५८॥

लखि सब चिल्लाने एक साथ।
दिखरावत तिन्हैं उठाय हाथ ॥५६॥
देखहु वह आये राम श्याम।
भूले सनेह को मनहुँ नाम ॥६०॥
हे कृष्ण कहो तुम किते जान।
चाहत लै गोपी ग्वाल प्रान ॥६१॥
तू ले तो इतनो मन विचारि।
हम सकत कबै तुहि छन विसारि ॥६२॥
कैसेहुँ नहिं देहौं तोहि जान।
तूही हम सब को अहै प्रान ॥६३॥
जैवो चाहै हठ जुपै धारि।
तौ लै असि कर सबहिन सँहारि ॥६४॥
सुनि विवस प्रेम श्री कृष्ण वैन।
सुस्मित युत उत्तर लगे दैन ॥६५॥
कैसी है यह इत भीर भार।
लखि परै न जाको वार पार ॥६६॥
सिर धरे भार सब गोप आय।
गोपीन संग सुधि वुधि गँवाय ॥६७॥
थकि रहे कहा नहिं परै जानि।
मन मैं विन कारन माख मानि ॥६८॥
गोचारन कोउन गयो ग्वाल।
बोले विचित्र लखि परै हाल ॥६९॥
कहुँ बजत मथानी नहिं सुनात।
दधि बेचन कोउ गोपी न जात ॥७०॥

वृज त्यागि न हम हैं कहूँ जात।
कैसी विचित्र तुम कहत बात ॥७१॥
वृन्दावन है मम नित निवास।
या मैं राखहु तुम दृढ़ विस्वास ॥७२॥
तुमरी हम पै जिहि भाँति प्रीति।
तुमहूँ हम कहँ प्रिय तिही रीति ॥७३॥
कैसे तुम कहँ हम सकहिं त्यागि।
सोचहु भ्रम निद्रा तनक त्यागि ॥७४॥
सब सों अति निकट रहैं सदैव।
तब विलखत हौ तुम क्यों वृथैव ॥७५॥
अब जाहु करहु निज काम धाम।
मन सों भुलाय भ्रम शोक नाम ॥७६॥
गंभीर गिरा सुनि या प्रकार।
नहिं सके समुझि अर्थहिं अपार ॥७७॥
अति ह्वै प्रसन्न जसुदा कुमार।
सब लगे असीसन वार वार ॥७८॥
अक्रूर निकट पुनि स्याम जाय।
बोले प्रनाम करि सीस नाय ॥७९॥
निरख्यो तुम इनको चचा हाल।
बेहाल भये हैं सकल ग्वाल ॥८०॥
मथुरा दिसि गवनहु वेगि आप।
इत सुनहु न इनके वृथा शाप ॥८१॥
अस कहि कीनो झुकि कै प्रनाम।
फिर चले नन्द ढिग घनस्याम ॥८२॥

बोले तिन सों मृदु मुसकुराय।
क्यों बाबा रहे विलम लगाय ॥८३॥
मधुपुरी पधारौ तुमहुँ संग।
लै ग्वालन को दल बल सुढंग ॥८४॥
गौवन छोरन हित हमहुँ जात।
वे चरिवे हित व्याकुल लखात ॥८५॥
मुख चूमि नन्द कहि श्री गनेस।
गवने लै सँग ग्वालन असेस ॥८६॥
ह्वै मन प्रसन्न धरि सीस भार।
गवने सब सजि सुन्दर प्रकार ॥८७॥
संग लागे केते ग्वाल बाल।
गावत हरषित कर देत ताल ॥८८॥
यों कह्यो गोप गोपिन बुझाय।
सब करौ काज तुम गृहन जाय ॥८९॥
जै हैं नहिं उत अब राम स्याम।
इतहीं विराजिहैं नन्द धाम ॥९०॥
हम द्वै दिन मथुरा मैं विनाय।
मिलि सबै पहुँचिहैं इतै आय ॥९१॥
ग्वालिनी भईं हरषित महान।
करि श्रवनन सों वच सुधा पान ॥९२॥
मुख पँकज सब के एक संग।
आनन्दित वदल्यो सुरुचि रंग ॥९३॥
पुनि लगे अधर मृदु मुस्कुरान।
लागे चलिवे चख चोख बान ॥९४॥

फिरि होन तनैनी लागि भौंह।
बोली कोउ सों इक खाय सोंह॥ ९५॥
मैं कही न तोसों तबै बीर।
नाहक ही हो जनि तू अधीर॥९६॥
तजि जाय सकै कब नन्दलाल।
हम सबन कहूँ वह तीन काल॥९७॥
मेरे सनेह की सहज डोर।
बँधि रह्यो आज लौं चित्त चोर॥९८॥
चाहत बनिवो करि नयो ख्याल।
धूरतताई करि नन्दलाल॥९९॥
यह नयो निकाल्यो सोचि ढंग।
चलिवो मथुरा अक्रूर संग॥१००॥
सुनि जाहि विकल ह्वै जुरे आनि।
नर नारि इतै तिहि साँच मानि॥१०१॥
खटकत मेरो मन रह्यो बीर।
यद्यपि डरपी कछु ह्वै अधीर॥१०२॥
पै ही सोचत जो भयो सोय।
वह दियो सहज सब ज्ञान खोय॥१०३॥
अब अधिक बढ़ै है मानि मान।
हौंहीं ब्रज जन जुवतीन प्रान॥१०४॥
यों कहत चलीं सब विविध बात।
अपने २ गृह ओर जात॥१०५॥
पै तऊ किती रुकि रहीं बीच।
जो फँसी रहीं अति प्रेम कीच॥१०६॥

लखि सूनो थल से रही बैठि।
लागीं कहिवे भ्रू ऐंठि ऐंठि॥१०७॥
राधा बोलीं ललिता सुनाय।
सखि मेरो हिय तिहि नहिं पत्याय॥१०८॥
वह कहै और कछु करै और।
नाहिन वाको कछु ठीक ठौर॥१०९॥
वह चहै अबहिं कहुँ भाजि जाय।
वासों कोउ की कछु नहिं बसाय॥११०॥
मैं करि न सकौं वाकी प्रतीति।
यह जरै निगोड़ी निठुर प्रीति॥१११॥
हँसि कही विसाखा ठीक वैन।
या मैं संसय रंचकहु है न॥११२॥
वाकी हैं समुझत आय चाल।
है जैसो लङ्गर नन्दलाल॥११३॥
कहि चन्द्रावली सखी सयानि।
तुम सकी न अव लौं ताहि जानि॥११४॥
स्वामिनी दृगन की चहत चोट।
वह यदपि गयो वनि अधिक खोट॥११५॥
पै तऊ रहत हाजिर हुजूर।
मुसुकान मजूरी को मजूर॥११६॥
रुख वदलत हा हा खाय आय।
लागत चरनन मानत मनाय॥११७॥
राधा सुनि चन्द्रावली वैन।
बोली अस कहिबो उचित है न॥११८॥

अपनी सी जानहु सकल बात।
वैसीहि दसा सब दिसि दिखात ॥११६॥
तेरो ही वह बिन मोल दास।
तो बिन लेतो रहतो उसास ॥१२०॥
मिलि यासों बूझी नेक याहि।
चाहत चित सों वह निठुर काहि ॥१२१॥
दे सीख वाहि दृग दया हेरि।
ऐसी लीला नहिं करै फेरि ॥१२२॥
जासों सब व्याकुल होय होय।
तरपै नर नारी रोय रोय ॥१२३॥
वह रहै सदा तेरेहि संग।
पै करै न रस को रंग भंग ॥१२४॥
हम ताकी छवि ही लखि अघाय।
जै हैं जब वह मृदु मुसकुराय ॥१२५॥
दै है कोउ अटपट बोलि वैन।
करि सरस रसीले नैन सैन ॥१२६॥
कबहूँ कुंजन मुरली बजाय।
दैहै तो कानन सुधा प्याय ॥१२७॥
हँस कही सुनै ना मधुर बानि।
तुम कोऊ ताहि नहिं सकीं जानि ॥१२८॥
वह लँगर निठुर अतिसय प्रवीन।
सब कहँ बस बिनहि प्रयास कीन ॥१२९॥
काहू मैं वाको नाहिं प्रेम।
नहिं कहूँ निबाहै नेह नेम ॥१३०॥

जासौ मिलि जैहै कहूँ आय।
मुसक्याय मूढ़ दैहै बनाय ॥१३१॥
कहि है तू ही मम प्रिया प्रान।
है सबहिं भाँति सब सुख निधान ॥१३२॥
बिन तेरे देखे तनिक चैन।
नहिं लहूँ कहूँ कहुँ सत्य बैन ॥१३३॥
तू दया कबहुँ मो पै दिखाय।
निरदई अधिक जनि अब सताय ॥१३४॥
बृज मैं सुमुखी सोरह हजार।
मैं भूलि सबै तुहि चहनहार ॥१३५॥
ये बातैं तौ सूधे सुभाय।
कहि देय सबन बौरी बनाय ॥१३६॥
पै नेकहु निरखि असावधान।
वहु करै हानि बनि पुनि अजान ॥१३७॥
विश्वास करावै सौंह खाय।
वैसहीं करै पुनि दाव पाय ॥१३८॥
लखि दूजी तिय इक सों सनेह।
दिखराय छुआवै आनि देह ॥१३९॥
बदनाम करै तिय नित अनेक।
नहिं राखै कोउ मैं प्रेम नेक ॥१४०॥
लूटै दधि माखन पै न खाय।
देतो बृज बालक गन खवाय ॥१४१॥
वाको चरित्र समुझो न जात।
फल या मैं वाहि कहा लखात ॥१४२॥

तब बोली कोकिल वैनि वैन।
या मैं सखि संसय नेक हैन ॥१४३॥
वह चहत सबै हमसों रिसाय।
जासों न प्रीति कोइ सकै लाय ॥१४४॥
यह है न जसोदा जन्यो बाल।
सब कहत बादि तिहि नंदलाल ॥१४५॥
देवता कोऊ यह मुहि जनाय।
बृज आय रह्यो लीला लखाय ॥१४६॥
इत कियो काज उन आय जौन।
हरि तजि सकिहै करि तिन्है कौन ॥१४७॥
बाकी हैं सबै विचित्र बात।
कारन जिनको नहि कछु जनात ॥१४८॥
बोली सरोजनी भट्ट आज।
मिलि चलौ करौ सब यहै काज ॥१४९॥
गोचारन हित जब इतै स्याम।
आवैं तब गहि तिहि कुंज धाम ॥१५०॥
ल्याओ अरु पूछौ सकल हाल।
बिन कहे न छोड़ो नन्दलाल ॥१५१॥
भाई सब के मन यहै बात।
मिलि भईं सबै तिहि ओर जात ॥१५२॥
इत पहुँचि स्याम सुरभीन पास।
देख्यो उन सब कहँ अति उदास ॥१५३॥
लागे सुहरावन कोउ जाय।
कोउ क्रियो प्यार गर उर लगाय ॥१५४॥

कोउ को मुख चूमत कहत स्याम ।
कोउ सो पूछत लै तासु नाम ॥१५५॥
का कहत अमृतधारा बनाय ।
देऊँ तो बन्धन खोलि आय ॥१५६॥
निजकर छोरयो कोउ आय जाय ।
अरु कह्यो गोपगन सों बुलाय ॥१५७॥
तुम कियो व्यर्थ इनको अकाज ।
छोरयो नहिं अब लौं गाय आज ॥१५८॥
अब छोरहु इन वन वेगि जाँय ।
जल पियैं हरो तृन चरैं खाँय ॥१५९॥
देखहु रजनी चन्दा दुहून ।
छोड़ियो न इन लखि विपिन सून ॥१६०॥
मोती मूँगा सोना चराय ।
अति जतन सहित नित इत लयाय ॥१६१॥
बांधियो ख्याइयो धोय पोंछि ।
निज हाथन माथन सिर अँगौछि ॥१६२॥
ये अतिसय प्यारी मोहि गाय ।
बिलखैं नहिं कैसहुँ क्लेश पाय ॥१६३॥
जा जा धौरी वन चरन काज ।
घूमरी अरी इत कहा आज ॥१६४॥
जा छीर देह री चरि अघाय ।
बछरा तुव रह्यो उतै बुलाय ॥१६५॥
दौरी सुरभी खुलि विपिन ओर ।
भाजे बछरे बहु कियो सोर ॥१६६॥

इतने मैं जसुदा गईं आय।
लीने कंचन थारी सजाय ॥१६७॥
माखन मिसिरी मेवा सँवारि।
पकवान सलोनो संग धारि ॥१६८॥
हँसि कह्यो कलेऊ करहु आइ।
तब लाल चरावन जाहु गाइ ॥१६९॥
चलि आये सँग मिलि दोउ भाय।
रोटी माखन सँग नेक खाय ॥१७०॥
माधव बनाय मुख कही बात।
बासीहू रोटी कोऊ खात ॥१७१॥
जान्यो तेरो घटि गयो प्यार।
तू ढूँढ़ि कोऊ सुत अब गवाँर ॥१७२॥
जो बासी रोटी सकै खाय।
मैं ढूढ़ौं कोऊ और माय ॥१७३॥
जानत जो मैं यह तेरो ढंग।
भाजतो तबै अक्रूर संग ॥१७४॥
हँसि बोली जसुदा अरे लाल।
तू ही नै कीनो मुहिं बेहाल ॥१७५॥
कल कही जो तूने विकट बात।
मेरी बिलखत हीं बिती रात ॥१७६॥
भोरहुँ लौं व्याकुलता बढ़ाय।
तू दियो सकल बृज बुधि बिलाय ॥१७७॥
माखन रोटी किहि सकी सूझि।
यह तौ बिचार निज हिये बूझि ॥१७८॥

मेवा पंकवानहि कछू खाय।
जल पीकर गवने दोऊ भाय ॥१७९॥
गैयन गवने मग दोऊ जात।
वतरात परस्पर मुसकुरात ॥१८०॥
गवन्यो आगे दल रह्यो जौन।
पहुँच्यो वढ़ि आगे कछू तौन ॥१८१॥
आगे आगे हे नन्दराय।
जिन पीछे ग्वाले रहे जाय ॥१८२॥
तिन पीछे शकट अनेक जात।
पीछे सबके स्यन्दन सुहात ॥१८३॥
जा पै अक्रूर रह्यो विराजि।
गवनत मथुरा हिय रह्यो लाजि ॥१८४॥
लखि इत मग फूटत अन्य ओर।
रथ रोकि लियो तिन तहाँ थोर ॥१८५॥
सोचन लाग्यो अब किते जाँव।
मथुरा मैं तो नहिं मोहि ठाँव ॥१८६॥
जा काजहिं भेज्यो कंसराय।
मो सँग न कृष्ण वलदेव पाय ॥१८७॥
मारिहै मोहि लै कर कृपान।
सुनि है न कैसहूँ बात आन ॥१८८॥
या सों चलिबो उत ठीक नाहि।
हैं बहुतेरे थल जगत माँहि ॥१८९॥
जहँ रहि कोउ विधि जीवन विताय।
हम सकहिं भला तव कौन जाय ॥१९०॥

मथुरा मैं मरिवे कंस हाँथ।
विन धरे महा अघ मोट माँथ ॥१६१॥
है ठीक देइबो त्यागि देस।
सहि लेबो और कोउ कलेस ॥१६२॥
पै निपट अनोखी एक वात।
नहिं कारन कछु जाको जनात ॥१६३॥
जो कहो कृष्ण सँग चलन रात।
नटि गये होत हीं वे प्रभात ॥१६४॥
वृजवासी नर नारी विहाल।
लखि भये दयावस नंदलाल ॥१६५॥
पै का वे इहि न सके विचारि।
सुनतहिं जो दीनो वचन हारि ॥१६६॥
मथुरा चलिवे मो सँग प्रभात।
करि सके न वे कहि सहज वात ॥१६७॥
सो का वे अंव कोऊ प्रकार।
जैहैं मथुरा वे कंस द्वार ॥१६८॥
तौ वने मूढ़ हम विनहिं काज।
तजि देस कोप लहि कंसराज ॥१६९॥
या विधि संसय विसमय अनेक।
परि सक्यो न करि वह तऊ नेक ॥२००॥
निश्चय अपनो कर्तव्य काज।
चिंता समुद्र को वनि जहाज ॥२०१॥
उत्पात बात लखि डगमगात।
चलि आवत इत पुनि उतै जात ॥२०२॥

यों सोचत ह्वै व्याकुल महान।
अक्रूर मूँदि दृग खोय ज्ञान ॥२०३॥
चलिवो दूजे मग मन विचारि।
खोल्यो जव दृग चौंक्यो निहारि ॥२०४॥
सँग राम कृष्ण रथ पास आय।
वोले प्रणाम करि मुसकुराय ॥२०५॥
तुम खड़े तात इत कहहु काह।
वादिहि खोटी क्यों करत राह ॥२०६॥
चलिये।जित चलिवो तुमहि होय।
चित के सिगरे भ्रम जाल खोय ॥२०७॥
अक्रूर सक्यो कहि कछू नाहिं।
समुझ्यो देखहुँ तौ स्वप्न नाहिं ॥२०८॥
कव पहुँचे इत वे दोऊ भाय।
चलियै इन कहँ अव कित लियाय ॥२०९॥
जौ मथुरा दिसि ये चहँ जान।
तौ सकल वृत्त को आख्यान ॥२१०॥
करि दैवो इन सों सव प्रकार।
है मम कर्तव्य विना विचार ॥२११॥
यों सोचि कह्यो अक्रूर वात।
चलिवो तुम चाहौ कितै तात ॥२१२॥
आओ वैठो रथ दोउ भाय।
करतव तव निश्चय कियो जाय ॥२१३॥
कल संध्या तुम सो कियो वात।
कछु संछेपहि हम सकुच खात ॥२१४॥

समुझ्यो पुनि अवसर उचित पाय।
कहिहैं सब शेष तुमहि बुझाय ॥२१५॥
जानहु नहिं तुम कछु जासु भेद।
उत जाय तुम्हैं कछु जासु भेद ॥२१६॥
तासों सब देहुँ तुमहि बताय।
ह्वै सावधान तुम दोऊ भाय ॥२१७॥
सुनि लेहु कहत जिहि मैं सखेद।
मथुरेश महीप रहस्य भेद ॥२१८॥
मन मैं तुमसों बहु बुरो मानि।
चाहत छल बल सों उतै आनि ॥२१९॥
तुम नासन कोऊ भाँति प्रान।
धनुयज्ञ आदि उत्सव महान ॥२२०॥
जा हित साज्यो उन बहु प्रकार।
तुम दोउन ल्यावन काज भार ॥२२१॥
दै मों सिर पठयो इतै तात।
यद्यपि न रुची यह मोहि चाल ॥२२२॥
पर नृप शासन सों का बसाय।
आयो इत चित चिन्ता छिपाय ॥२२३॥
भल मन विचारि तुम सकल बात।
सो करो उचित जो मन लखात ॥२२४॥
चाहो जित गवनहु तित बहोरि।
नहिं मोहि लगइयो कछू खोरि ॥२२५॥
उन कीन्यो बन्दी उग्रसेन।
अब चाहत उनको प्रान लेन ॥२२६॥

वसुदेव देवकी दुहुन फेरि ।
कारागृह राख्यो कंस घेरि ॥२२७॥
जो अहैं तुम्हारे बाप माय ।
सहि रहे दुःख जे विविधि भाय ॥२२८॥
मैं हूँ यदुवंशी तासु भ्रात ।
पै करूँ कहा कछु नहिं बसात ॥२२६॥
तुव जननी जसुमति अहै नाहिं ।
नहिं नन्द महर त्यों पिता आहि ॥२३०॥
विस्तृत है वाकी कथा तात ।
संक्षेप कही हम तत्व बात ॥२३१॥
सुनि बोल्यो माधव मुस्कुराय ।
नहिं कारन चिन्ता कछु लखाय ॥२३२॥
विधि जा कर जा विधि लिख्यो अन्त ।
तिहि कहैं अटल श्रुति ज्ञानवन्त ॥२३३॥
जिहि विधि जे होनो जवन काज ।
तब तैसोई सब जुरत साज ॥२३४॥
विधि को विधान अति अटल जानि ।
नहिं पंडित जन मन करत ग्लानि ॥२३५॥
सो चलहु आप रथ उत बढ़ाय ।
देखहिं तो चलि कस कंस राय ॥२३६॥
जाकी कुनीति जग जन कंपाय ।
रव त्राहि त्राहि दीनो मचाय ॥२३७॥
सुनि कह्यो बढ़ावहु रथ प्रवीन ।
अक्रूर हरषि आदेस दीन ॥२३८॥

सारथी हाँकि हय रथ बढ़ाय।
तब चल्यो पवन गति सों उड़ाय ॥२३९॥
गवनत जिहि मग वह रथ महान।
तरु देत मनहु सम्मान दान ॥२४०॥
झरि खिले सुमन सब एक वार।
वृज त्यागि चलत दोउ नँदकुमार ॥२४१॥
सींचत वीथी मकरन्द धार।
माधव वियोग दुख धौं अपार ॥२४२॥
बरसावत आँसुन रहे रोय।
वृन्दावन शोभा सकल खोय ॥२४३॥
शीतल समीर लै सब सुवास।
लै चल्यो रहन जनु स्याम पास ॥२४४॥
खग चले सकल नभ छाय संग।
घन घिरी घटा जनु रँग विरंग ॥२४५॥
सब चले छिपाये धूप जात।
दुहुँ ओर सिखी दौरत सुहात ॥२४६॥
दौरीं मृग माला ह्वै अधीर।
ढारत विशाल दृग भरे नीर ॥२४७॥
जे फिरीं देखि वन होत अन्त।
माधव वियोग दुख दहि दुरन्त ॥२४८॥
रथ पहुँच्यो मथुरा निकट आय।
गोपालन सँग जँह नन्दराय ॥२४९॥
टिकि रहे नगर बाहर सुठौर।
सब निज सुपास कौ करन डौर ॥२५०॥

रथ पैं लखि आवत राम स्याम।
बोले खोटो तुम कियो काम ॥२५१॥
तजि वृज आये तुम दोउ भाय।
नहिं आवन की निश्चय कराय ॥२५२॥
सुनि गोपन की यों महा सोर।
हँसि कै बोले जसुदा किसोर ॥२५३॥
हम आये इत तुम सवन काज।
सुनि तुम पथ भय को गिरत गाज ॥२५४॥
तिहि चहत निवारन इतै आय।
मति मानहु मन मैं कोउ कुभाय ॥२५५॥
सब कह्यो भलो जब गये आय।
तब उतरौ आओ दोऊ भाय ॥२५६॥
तब मन मोहन मृदु मुसकुराय।
अक्रूरहि बोले यों बुझाय ॥२५७॥
मधुपुरी पधारौ आय तात।
मिलि कंसराय सों कहहु वात २५८॥
हम इत उन आदेसानुसार।
आये बसि निसि होतहिं सकार ॥२५९॥
ऐहैं निरखन उत्सव अनूप।
हरखित ह्वै हैं लखि कंस भूप ॥२६०॥
अक्रूर कह्यो बस ह्वै सनेह।
चलि निवसहु निसि मम आज गेह ॥२६१॥
इत सो उत कछु मिलिहै अराम।
ह्वै उचित न अस हँसि कह्यो स्याम ॥२६२॥

ऐहैं कबहूँ उत समय पाय।
नहिं आज संग साथिन विहाय ॥२६३॥
यों कहि उतरे राम स्याम रथ त्यागि कै।
हाँक्यो रथ अक्रूर चले हय भागि कै ॥२६४॥
ग्वाल बाल मिलि दुहुन अनन्दित होय कै।
खान पान करि निसा बितायो सोइ कै ॥२६५॥

इति श्री गोविन्द विनोद श्री कृष्ण वृजपरित्याग
नाम चतुर्थ सर्ग समाप्तः

अथ पंचम सर्ग

गुनि समय ऊषा उठे सब गोपाल गन हरषाय कै।
लागे जुहारन नन्द कहँ सब देव पितर मनाय कै॥
बोले बिलखि तब नन्द शिव कल्यान हम सब को करैं।
सँग कृष्ण अरु बलदेव के सकुशल चलैं पुनिरपि घरैं ॥१॥
कोउ कहत नाहीं राम स्यामहि जीतिबे वारो कोऊ।
मानत बुरो हैं कंस पै लखि इन्हैं सिखि जैहैं सोऊ॥
कोउ कहत मन चाहत अबै इत सों घरैं इन फेरिये।
तौ नटत कोउ कहि क्यों न कारन कोऊ ऐसो हेरिये ॥२॥
लखि भोर नन्द किसोर जागे ग्वाल बालन टेरि कै।
सब चले बन की ओर सोर मचाय स्यामहि घेरि कै॥
करि नित्य कृत्य निवृत्त सब जमुना पहुँचे जाय कै।
अरचन लगे निज इष्ट देवहिं गोप सकल मनाय कै ॥३॥

घनस्याम अरु वलराम सँग मिलि ग्वालवाल अन्हाय कै।
जल केलि विविध प्रकार भल सव करि रहे मन भाय कै॥
कोउ तोरि पुरइन पत्र दै सिर छत्र नृप वनि राजहीं।
कोउ कुमुदिनी के कुसुम कुंडल वनय कानन छाजहीं॥४॥
कोऊ विशाल मृड़ाल के केयूर वलय वनावते।
पहिने करन अरु भुजन पर सहगर्व सवन दिखावते॥
कोउ कमल झूमक कान के वहु भाँति आभूषन वनय।
निज अंग सुग्रर सँवारते मन वारते को छवि चितय॥५॥
कोऊ सनाल सरोज कँह अजतन सहित उपारहीं।
ठाने परस्पर युद्ध लीला एक एकन मारहीं॥
कोऊ उछालत नीर कोउ पिचकारि कर की मारते।
कोऊ न सहि जलधार भाजैं तीर पर जव हारते॥६॥
वूड़त कोऊ तैरत कोऊ कोउ छुअत कोऊ जाय कै।
पकरत कोऊ वूड़ो कोऊ कहि चोर चोर चिलाय कै॥
कोऊ लरत लत्ती चलावत कोउ काहू मारतो।
कोऊ कोऊ के कान्ह चढ़ि कूदत कोऊ है हारतो॥७॥
या भाँति रत जल केलि मैं वालकन लखि नँदराय नै।
यों कह्यो गोपन सों चलतु लै संग सकल उपायनै॥
हम सव प्रथम चलि राजगृह की लखि दसा सव आवहीं।
तव पलटि कै इन वालकन कँह संग लै उत जावहीं॥८॥
हे कृष्ण हे वलराम तुम सव इतै रहियो तहाँ लौं।
हम सव वहाँ की भीर भार विलोकि पलटैं जहाँ लौं॥
यों कहि सवन वालकन नन्द चले सकल गोपाल लै।
मधव कह्यो मुसक्याय सवसों सुनहु अव तुम ध्यान दै॥९॥

आवहु सखा हमहूँ सबै उत चलैं इत रहिवो वृथा।
उत्सव परम रमनीय देखैं सुनि रहे जाकी कथा॥
यों कहि परे हरि निकरि जमुना सों सहित वालकन के।
भूषन वसन सों ह्वै सजित हित चले उत्सव लखन के॥१०॥
मनसुखा, श्रीदामा, सुवल, अरु अंश, अर्जुन संग मैं।
ओजस्वि, वृषभ, विशाल, देवप्रस्थ, भरे उमंग मैं॥
मिलि भद्रसेन, वरुथय, स्तोकादि, वाँधे मंडली।
सव ग्वाल वालन की चली मग मैं मचावत रँगरली॥११॥
भारी लठा कोऊ लिये कोउ लकुट निज कर मैं धरे।
कोउ पाग टेढ़ी वाँधि सिर पर सोहनी डारे गरे॥
माला विविध फल फूल की ओढ़े दुपट्टा कोउ चले।
पहिरे झगा कटि काछनी काछे चले सोभत भले॥१२॥
लागे लखन मथुरापुरी छवि भरे भूरि उमंग मैं।
घनस्याम अरु वलराम लै सँग ग्वाल वालन संग मैं॥
मधु दैत्य ने जा कँह वसायो रुचिर अपने नाम सों।
शत्रुघ्न ने जा कँह सजायो शिल्प कारन काम सों॥१३॥
जिहि भोज राजन ने वनाई राजधानी आपनी।
जाको वनो नृप कंसराय अहै सवै विधि सों धनी॥
प्राकार जाके चहूँ दिसि अति पुष्ट उच्च विराजतो।
आकास चुम्वित गोपुरन तोरन अनेकन धारतो॥१४॥
सब ललित प्रस्थर मय रचित औ खचित विविध प्रकार के।
बहु वेल बूटन मूरतिन सों सजित सहित सुधार के॥
कंकर पिटे पथ स्वच्छ सिंचित नीर चौड़े राजते।
जाके दुहूँ पारश्व पँचमहले महल छवि छाजते॥१५॥

सवहीं सुधा लोपित सवन मैं वसत नर नारी घने।
सवहीं लखात समृद्धिवान वलिष्ठ सुघर सुहावने॥
सव शीलवान सुजान वर विद्वान जन मन मोहते।
सुभ स्वर्णमय भूषन जटित नवरत्न सव अँग सोहते॥१६॥
सव के वसन कौशेय रंग विरंग वय अनुसारहीं।
जरकसी सूईकार के वहु भाँति तन पै धारहीं॥
सव के ललाटन तिलक माला सुमन सव के गर परी।
मुख पान सव के म्यान मैं असि झूलती कटि मैं भरी॥१७॥
सव के सदन के सहन मैं तरु सुमन विकसित सोहते।
सव द्वार वन्दनवार कदली कलस युत मन मोहते॥
सव की अटारिन पै ध्वजा फहरैं पताका वात सों।
सव के घरन मैं राग रंग सुनात आज प्रभात सों॥१८॥
वहु भाँति के वाजे वजैं मचि रह्यो मंगल मोद सों।
जे कंस अत्याचार सों हे गये भूलि विनोद सों॥
सुनि आज ते वसुदेव सुत को आगमन वृज तैं इतै।
नृप कंस के विध्वन्स हित सव प्रजा जन हर्षित चितै॥१६॥
तकि रहे तिनकी वाट नर निज द्वार नारि अटा चढ़ीं।
माधव विलोकन काज मन के मोद सो मानहु मढ़ीं॥
घनस्याम अरु वलराम सँग लखि ग्वाल वालन आवते।
लागे तिनहि के संग वहु नागरिक सोर मचावते॥२०॥
जय देवकी सुत जयति जय वसुदेव सून महा वली।
स्वागत करैं इत आप को हम लोग सव भातिन भली॥
देवी मुखन आकासवानी सुनि रही आसा लगी।
इत लहि उपद्रव कंस दुख सों दहकि वह अतिसय जगी॥२१॥

यह आपको आगमन वाके शमन के हित आज है।
धनु यज्ञ उत्सव हित निमंत्रण तो निरो इक व्याज है॥
तुमरे हतन हित हैं रचे इत इन अनेक समान हैं।
पर एक बाधा करत नहिं जो कोऊ पुरुष प्रधान हैं॥२२॥
कहँ राम कहँ धनु ताड़का खरकुम्भकरनादिक बली।
दूषण तृशिर घननाद रावण पै न काहू की चली॥
त्यों आपहूँ कहँ कोऊ बाधा करि सकै गो इत नहीं।
वरिहै विजैश्री आपहूँ कहँ श्याम सुन्दर तैसही॥२३॥
इहि भाँति सोर अथोर चारहुँ ओर सों बाढ्यो महा।
सुनि जाहि दौरे लोग सब जिहि भाँति सो जो जहँ रहा॥
नारी अटारिन पै चढ़ीं लै लाज कर बरसावतीं।
सुनि धुनि किती तजि लाज काज समाज धावत आवतीं॥२४॥
जे रहीं जैसी आय वे वैसी जुरीं खिरकीन पै।
इक एक के ऊपर परति गिरि निरखतीं तिय तीन पैं॥
कोउ एक दृग आँजी न दूजो आँजि आईं धाय कै।
कोउ लाय जावक एक पग उठि चलीं ताहि वहाइ कै॥२५॥
कोउ एक कुच पै कंचुकी कसि एक कर पकरे चलीं।
कोउ एक चोटी बाँधि कर सों शेष,कच जकरे चलीं॥
कोउ सीस पैं सारी परी सुधि खोय घूँघट चलि परीं।
प्यावत कोऊ शिशु छीरतजि तिहि तहाँ सों इत चलि अरीं॥२६॥
कोऊ हार गर मैं डारती जूरो अरो पर आइ कै।
कोउ किंकिनी गर डारि आईं नारि सुधि विसराय कै॥
कोउ पहिरि बेसर कान मैं हत ज्ञान ह्वै तित धावतीं।
कोउ लिये नूपुर पहिर निज कर वेगसों तित आवतीं॥२७॥

कोउ एक कर कंघी अपर कर लिये दरपन आइ कै।
लखि स्याम मन मोहन मधुर छवि कहत सखिन बुझाइ कै॥
देखौ सखी है यही सुन्दर साँवरो मन भावनो।
सत काम जापैं वारिये अभिराम बहु ऐसो बनो॥२८॥
जा चन्द मुख पै परी लोटैं लटैं जैसे नागिनी।
राजीव लोचन चारु चितवनि चपल मन अनुरागिनी॥
कटि तट कसे पट पीत सिर पर मोर मकुट विराजतो।
ओढ़े उपरना पीत लीने कर कमल छवि छाजतो॥२९॥
निज सखन सँग बतरानि मृदु मुसक्यानि जिन याकी लखी।
मन राखि निज बस ते सकैंगी कहौ किहि विधि हे सखी॥
छवि पुंज बनि गर गुंज माला परी अति मन मोहती।
जनु लाजवर्त शिला जटित चुन्नोन राजी सोहती॥३०॥
सँग पीत पट वारो निहारो रोहनी सुत राम है।
जनु उभय बाल मराल जोरी सोहतो अभिराम है॥
सँग ग्वाल बालन के भले आवत बने मन भावते।
नागरिक नर नारीन के हिय सुधारस बरसावते॥३१॥
सुनि कहति दूजी हे भटू तू कहति, जो सो है सही।
पै एक संका उठि हिये अति मोंहि व्याकुल कर रही॥
रन कँह बुलायो कंस करि संकल्प दुष्ट महान है।
कोउ भाँति छल बल करि चहत इन दुहुन लेवो प्रान है॥३२॥
यह सोंचि कुछ कहि जात नहिं है बात निपट भयावनी।
कहँ अतुल बल नृप कंस कँह ये मूरतैं मन भावनी॥
सहि सकत है अलिभार अलि नहिं पै कबहुँ गजराज को।
लरि लाल मंजुल जानि सकिहैं कबहुँ बहरी बाज सों॥३३॥

सुनि कहति दूजी वीर, तू का बकति यों बौरी भई।
विधि सबैं विधि विरची अनोखी सृष्टि यह अचरज मई॥
छिन मैं जरावत महा वन परि अग्नि चिनगारी तनी।
सहसन सहत घन चोट फूटत पै न हीरन की कनी॥३४॥
चूरत महा गिरि शिखर परि विद्युत किरिच रंचक अली।
कोगी हनत अति सहज ही वनराज केहरि अति बली॥
बसि सदा सागर जलावृत वाडवानल देखियै।
जे तेजवंत न तिन्हैं लघु आकार लखि लघु लेखियै॥३५॥
तैसे न इन बालकन बालक निपट जानहु बावरी।
केशी अरिष्ट अघासुरन गज हन्यो जिन बनि केहरी॥
पय पियत नास्यो पूतना बक व्योम वत्सासुर हन्यो।
धेनुक, शकट, शट तृणावर्त सँहारि अजित अहै बन्यो॥३६॥
जिन कँह पठायो कंस नै इन मारिबे के काज ही।
ते मरे इनके हाथ तिनको देखु बल किन आज ही॥
कालीय नाग कराल नाथ्यो नृत्य तिहि फन पर कियो।
नास्यो पुरन्दर विधि गरब सुनि कंस को काँप्यो हियो॥३७॥
मारयो सुदर्शन शंख चूड़हि पान दावानल कियो।
भंज्यो जमल अर्जुन करहिं पर धारि गोवर्धन लियो॥
कोउ कहति संसय कछू नहिं देवी कही सो है सही।
नृप कंस को जो काल जायो देवकी सो है यही॥३८॥
याके करन सों बचि सकत नहिं आज कैसहु कंस है।
जगदीस पे सोई करै वह नृपति निपट नृशंस है॥
कोऊ कहति धनि है यशोमति इन्है गोद खिलावती।
सुत जानि कै निज पालती औ अमित मोद मनावती॥३९॥

आनन्द की सीमा रही कँह आज लौं नँदराइ के।
जो चन्द सों मुख चूमतो इनको सदा उर लाइ के॥
धनि धन्य वे बृज गोपिका रसरास जिन इन संग में।
राँची रही अभिमान भीनी भूरि भाग उमंग में॥४०॥
सोये रहे हैं भाग अबलौं देवकी वसुदेव के।
जागे रहे इन सबन के बस भटू भावी भेव के॥
अब जग्यो उनके संग हम सब को लखातो आज सों।
इन सबन को सोयो अवसि इत दोऊ आवन ब्याज सों॥४१॥
दिन एक से बीतत बराबर नहिं कोऊ के नित्य हैं।
जो आज सुख सों सोवतो लहि सकल सुख साहित्य हैं॥
कल उन्हैं बेकल देखियत बेकल परे जे आज हैं।
उनही न कल जो देखिये लखि परत सह सुख साज है॥४२॥
बिलखत सदा हीं देवकी वसुदेव के दिन हैं कटे।
अब तो परत है जान जनु दुख दिवस उनके हैं हटे॥
अब ईस करुना कर उन्है सुख देय करुना कर सखी।
अरि हीन ह्वै सम्पत्ति सुत वे लहैं पुनि पर घर रखी॥४३॥
लखि परत लच्छन ऐसही जो सोचि नेक बिचारिये।
चिर दुखित मथुरापुरी बिहँसत आज जिनहिं निहारिये॥
दुख दुसह टारन आगमन कारन इनहि को है अली।
ह्वै रह्यो मंगल साज प्रति घर आज निरखि गली गली॥४४॥
हो कंस को विध्वंस यह सब के हिये की चाह है।
जाके बिना नहि प्रजागन को कैसहूँ निर्वाह है॥
कहि सकै को ये गुत बातैं कौन बिधि सब जानि कै।
आचार मंगल कर रहीं सब प्रजाहित हिय मानि कै॥४५॥

यों नगर निरखत सुनत स्वागत सोर सकल प्रजानि के।
पहुँचे सकल गोपाल वालन सखा सँग हरि आनि के॥
लखि राज महल विशाल शोभा ग्वाल बाल सुहावनी।
जकि से रहे चकि सबै दीखी ही न जस कबहूँ बनी॥४६॥
ऊँची अटारी की कतारी गगन चुम्बित राजती।
शिखर जिनके कनक कलसन की अवलि छवि छाजती॥
सब संख मर्कत शिला बिरचित भवन भिन्न प्रकार के।
चहुँ ओर चित्रित विविधि मनिगन जटित सहित सुधार के॥४७॥
जिन पैं पताका फरहरै बरकार चोबी काम की।
सोही सुनहरी मखमली बहु रंग अरु बहु दाम की॥
जिनके दरन सुवरन किवारे जड़े दरपन दरसते।
सोहत रजत चौखटन बाजुन मध्य मन आकरसते॥४८॥
जिन पर परे परदे सुरँग जरकसी सुन्दर साल के।
कसि रहे रेसम रज्जु तोरन सजे मुक्ता माल के॥
जिन चहूँ ओरन बीच अजिर महान विस्तृत सोहतो।
जा मध्य मंडप उच्च अति सुविशाल बनि मन मोहतो॥४९॥
जिन वर मदन के खम्भ रूपे के ढले सुविशाल हैं।
कंचन लता जिन पर चढ़ी मनिमय मुकुल जुत जाल हैं॥
जिनकी बनी अवनी अमल अस्फटिक मनि पटरीन सों।
त्यों अन्य मनिमय जटित शोभित चित्र पसु पंछीन सों॥५०॥
जिहि जात निरखत हिये हरखत सखन के संग स्याम हैं।
चहुँ ओर स्वागत सोर नारी नर करत अभिराम हैं॥
सारे नगर के सकल टोले हैं बने मन भावने।
राजत अमल थल सकल भवन सबै सुसज्ज सुहावने॥५१॥

है हाट सब सम अवलि मैं इक चाल भवनन सों बनी।
संसार की सब वस्तु उत्तम रहत जित संचित घनी॥
जँह करत क्रम बिक्रम रहत व्यापारि गन लै धन जुरे।
दौरत बया दल्लाल कीन्हे लाल मुख बीरे हुरे॥५२॥
ह्वै रही बोरे बंदियाँ कहुँ ढुलै तुलि तुलि माल हैं।
खुलि रहे तोड़े गिनत रुपये लोग होय निहाल हैं॥
कतहूँ चितेरे स्वर्णकार दुकान कहुँ जड़िये धरे।
कहुँ भिषक पंसारी अलेमारीन बहु औषधि भरे॥५३॥
बढ़ई लोहार कहूँ कसेरे शस्त्र विक्रेता कहूँ।
बेंचत अनोखी वस्तु जस नहिं लख्यो कोऊ कैसहूँ॥
गंधी कहूँ माली कहूँ फल विविधि बेचन हार हैं।
बैठी अटारिन वारि नारि कहूँ किये सिंगार हैं॥५४॥
बहु दीन भिक्षा माँगते त्यों विविध याचक जाँचते।
कोउ निज शरीरहिं कष्ट दै बिन लिये कछु नहिं मानते॥
गावत बजावत तालियाँ कहुँ हींजड़े मेहरे नचैं।
अरि जाहिं जापै वे घिना पैसे दिये कैसे बचैं॥५५॥
जिहि ओर सों जाते चले श्री कृष्ण औ बलराम हैं।
सब दौरि कै इनकी लखैं छबि छाड़ि निज गृह काम हैं॥
कोउ कहैं ये वसुदेव सुत आये हमारे भाग सोँ।
जिन बाट जोहत रहे हम बहु दिनन अति अनुराग सों॥५६॥
जिन आगमन पूरबहि तैं इनके सबै दुख बहि गये।
जे रहे अत्याचारि ते संकित सहमि से रहि गये॥
ह्वै गयो सुख संचार बिनहि प्रयास चहुँ चित सोचिये।
ताके चरन अरचन करन हित नैन नीरहिं मोचिये॥५७॥

स्वागत करत वाको सबै मिलि वेगि सँग ह्वै लीजिये।
तन मन सकल धन देखि कै वापै निछावर कीजिये॥
दिननाथ दर्शन प्रथम ज्यों तमराशि अरुनोदय हरै।
वर्षागमन पूरव यथा वहि वात पूरव सुख भरै॥५८॥
हरि ताप ग्रीषम को बतावै भयो ताको अंत है।
पतझाड़ के पीछे नवल दल यथा देत वसंत है,॥
त्यों कंस के विध्वंस पूरव ही हरयो दुख रासि है।
आनन्द की आभा रही मथुरापुरी परकासि है॥५९॥
उगिल्यो अमिति छित अन्न अवहीं सुखी सव जन ह्वै गये।
सब उद्यमन व्यापार में वहु लाभ सव लोगन लये॥
जै देवकी सुत जयति जय वसुदेव सून महाबली।
जाके दया दृग दीठि सों इतकी सवै बाधा टली॥६०॥
जिन में टंगे वर झाड़ आदिक साज सोभा दै रहे।
जिन डाट कंचन कँवल मनि मय मोल से मन लै रहे॥
टँगि रही हाँड़ी नाद जित वहु रंग अरु वहु मोल की।
वहु चित्र परम विचित्र कारीगरी सहित सुढंग की॥६१॥
सुविशाल दर्पन स्वर्ण चौखटा जड़े भीतन वहु सजे।
ताखन खिलौने धरे बहु अनमोल जनु चाहत भजे॥
जँह कनक पिँजरे टँगे पंछी विविधि वोलैं वोलियाँ।
गावत कोऊ बतरात कोउ कोउ करत किलकि ठठोलियाँ॥६१॥
आगे सवन के शुभ सुमन उद्यान शोभा दै रहे।
जिन लता द्रुम पै भ्रमर गन गुंजार नित प्रति कै रहे॥
जिन चहूँ ओरन बीच अजिर महान विस्तृत सोहतो।
जा मध्य मंडप उच्च अति सुविशाल वनि मन मोहतो॥६२॥

फहरत पताके जितै रंग विरंग विविध प्रकार हैं।
कदलीन के खंभे सदल बँधि रहे जित प्रति द्वार हैं॥
जा मध्य लाल वितान तनि मखमली शोभा दै रह्यो।
सह काम जरदोजी जवाहिर जर्यो जगमग कै रह्यो॥९३॥
जा छोर झालर झूलती चहुँ ओर वर मोतीन की।
लहि चोव चामीकर रुचिर मनिमय कनक कलसीन की॥
त्यों बीच सुन्दर बिछे सोहैं रेसमी कालीन हैं।
कमखाव के परदे हरे छवि रहे छाय नवीन हैं॥

[असमाप्त]

नोटः—प्रेमघन जी इस काव्य को इसी स्थान तक लिख सके थे। १९७२ में उन्होंने यहाँ तक लिख कर बाद में पूरा करने के लिए छोड़ दिया था; पर दुर्भाग्यवश यह काव्य फिर लिखा न जा सका।

दूसरा खंड

स्फुट काव्य

युगलमंगल स्तोत्र

सं० १९३१



बालक प्रेमघन (१५ वर्ष)

युगल मंगल स्तोत्र*

मुरली राजत अधर पर उर विलसत बनमाल।
आय सोई मो मन बसौ सदा रंगीले लाल॥
सीस मुकुट कर मैं लकुट कटि तट पट है पीत।
जमुना तीर तमाल तर गो लै गावत गीत॥
बृज सुकुमार कुमरिका कालिन्दी के तीर।
गल बाँही दीन्हे दोऊ हँसत हरत भवपीर॥

कुंडलिया

लसत ललित सारी हिये मंजुल माल अमंद।
जयति सदा श्री राधिका सह माधव बृज चन्द॥
सह माधव बृज चन्द सदा विहरत बृज माहीं।
कालिन्दी के कूल सूल भव रहत न जाहीं॥
बद्री नारायन भोरहि उठि दोउ पागे रस।
दोउ मुख ऊपर छुटे केश नैनन मैं आलस॥

---

* यह प्रेमघन जी की सर्व प्रथम कविता है। इसके पूर्व की कविताएं गीतों तथा फुटकर सवैया इत्यादि में होती थी पर वे न तो प्राप्त हैं और न उनका उल्लेख ही प्रेमघन जी ने किया है। प्रेमघन जी के द्वारा भी यही कविता प्रथम कही जाती थी। पहले की रचनाओं के विषय में कवि की भी यही धारणा थी।

दूसरी कुंडलिया

दोऊ गल वाहीं दिये ठाढ़े जमुना तीर।
मंगलमय प्रातहिं उठे राधा श्री वलवीर॥
राधा श्री वलवीर दोऊ दुहुँ रस अनुरागे।
झँपत पलक द्रिग अरुन भये घूमत निशि जागे॥
वद्री नारायन छुटि कच शुभ राजत सोऊ।
चुटकी दै ज़मुहात खरे अरसाने दोऊ॥

तीसरी कुंडलिया

लाल लली तन हेरि कै महा प्रमोदित होत।
करि चकोर चख लखत मुख मंगल चन्द उदोत॥
मंगल चन्द उदोत राहु सम केश रहे सजि।
मृग सम जुग द्रिग देखि दुःख काको न जात भजि॥
वद्री नारायन प्रमुदित ह्वै वार्‌यो तन मन।
भाज्यो मन्मथ लाजि विलोकत लाल लली तन॥

मालिनी छन्द

प्रातहि उठि दोऊ राधिका कृष्ण सोऊ।
तर सुभग लता के तीर मैं भानु जाके॥
हरि मुरलि वजावैं राधिका द्रिग नचावैं।
वहु भावैं दिखावैं कोटि कामैं लजावैं॥
हरि प्रिय दिशि जोहैं देखि कै चित्त मोहैं।
कुटिल जुगल भौंहैं सीस पै विन्दु सोहैं॥
अलकावलि काली चीकनी घूँघुराली।
जग मैं अस को है देखि कै जो न मोहै॥

छप्पै

मंगल प्रातहिं उठे दोऊ कुंजनि तैं आवत।
मंगल तान रसाल सुमंगल वेनु बजावत॥
मंगलमय अनुराग भरी हरि वचन वत्यावत।
मंगल प्यारी विहँसि श्याम को चित्त चुरावत॥
मंगल गलबाहीं दिये दोउ दुहून लखि मोहते।
बद्री नरायन जू खरे मंगलमय छवि जोहते॥

छप्पै

मंगल मय हरि सिर ऊपर शुभ मुकुट विराजत।
मंगल प्यारी मुख ऊपर विन्दुली छवि छाजत॥
इत मंगल मुरलिका सहित धुनि सुन्दर बाजत।
उत प्यारी पग नूपुर धुनि सुनि सारस लाजत॥
दोऊ निज २ द्रिग सरन सों हँसि २ दोउन मारहीं।
बद्रीनरायनजू नवल छवि लखि तन मन धन वारहीं॥

छप्पै

मङ्गल राधा कृष्ण नाम शुचि सरस सुहावन।
मङ्गलमय अनुराग जुगल मन मोह बढ़ावन॥
मंगल गावनि भाव सुमंगल वेनु बजावन।
मंगल प्यारी मोद विहँसि मुख चन्द दुरावन॥
मंगलमय प्रातहिं उठि दोऊ कुंजनितें गृह आवईं।
बद्रीनरायन जू तहाँ मंगल पाठ सुनावईं॥

छन्द हरिगीतिका

वृखभानजा माधव सुप्रातहिं भानुजा तट पै खरे।
दोऊ दुहूँ मुख चन्द निरखत चखनि जुग आनन्द भरे॥
मन दिये विनती करत माधव मिलन हित ठाढे अरे।
वद्री नारायन जू निहारत मन निछावर हित धरे॥

नाराच छन्द

कभौ निकुंज सून मैं प्रसून लाय लाय कै।
विशाल माल वाल कों पिन्हावते बनाय कै॥
भले बनी ठनी प्रिया सुश्याम संग राजहीं।
प्रभा निहारि हारि २ काम वाम लाजहीं॥

भुजंगप्रयात छन्द

भले भाल पै विन्द सिन्दूर सोहै, लखे जाहिके कोटि कन्दर्प मोहै।
घन श्याम से ह्याँ घनश्याम राजैं, इतै दामिनी हूँ तिया देखि लाजैं॥

सवैया छन्द

छहरैं मुख पै घनश्याम से केश इतै सिर मोर पखा फहरैं।
उत गोल कपोलन पैं अति लोल अमोल लली मुक्ता थहरैं॥
इहि भाँति सो बद्रीनारायन जू दोऊ देखि रहे जमुना लहरैं।
निति ऐसे सनेह सों राधिका श्याम हमारे हिये मैं सदा विहरैं॥

दूसरी सवैया

इत सोहत मोरन की कँलगी कटि के तट पीत पटा फहरैं।
उत ओढ़नी वैजनी है सिर पै मुख पै नथ के मुक्ता थहरैं॥

बनकुंज मैं बद्रीनारायण जू कर मेलि दोऊ करतैं ठहरैं।
निति ऐसे सनेह सों राधिका श्याम हमारे हिये में सदा विहरैं॥

तीसरी सवैया

हरि गावते तान रसाल खरे, वै नचावती नैननि चित्त हरैं।
इत ई मुरली धुनि पूरि रहैं–कहो ताकी कहाँ उपमा ठहरैं॥
इत भौंह सों बद्रीनारायनजू वे बताय कै देत कड़ी कहरैं।
नित ऐसे सनेह सों राधिका श्याम हमारे हिये में सदा विहरैं॥

सोरठा छन्द

कालिन्दी के तीर–यहि विधि लीला नवल नव।
राधा श्री बलवीर–वृन्दावन मैं करत निति।
मंगल राधा श्याम–मंगल मैं वृन्दाविपिन।
मंगल कुंज मुदाम–मंगल बद्रीनाथ द्विज।
मंजुल मंगल मूल–जुगल सुमंगल पाठ यह।
पढ़त रहत नहिं सूल–जुगल जलज पद अलि बनत।

बृजचन्द पंचक

सं० १९३२

बृजचन्द पंचक

दोहा

श्री शीतल मन बीच के-विहरन हारे श्याम।
जयति २ जय जयति जै-मंगल करन मुदाम ॥१॥

(कुंडलिया)

मुरली राजत अधर पर उर विलसत वनमाल।
आप सोई मो मन बसौं सदा रँगीले लाल॥
सदा रँगीले लाल देहु रंगि मो हिय निज रंग।
टरौ न इन अँखियन तैं-कबहूँ निज प्यारी संग॥
बद्रीनारायन जेहि लखि २ मनमथ लाजत।
आय सोई मन बसौ जासु कर मुरली राजत ॥२॥

(छप्पै)

जय श्री गोकुलनाथ जयति जसुदा के बारे।
जय बृजचन्द अमन्द प्रभा परकासन हारे॥
जय श्री वृन्दा विपिन बीच नित विहरनहारे।
जय त्रिभंग तन श्याम सीस सुभ मुकुट सुधारे॥
जय कंस निकंदन सुख सदन जय २ श्री गिरिवर धरन।
बद्रीनारायन जयति जय-जय २ मुद मङ्गल करन ॥३॥
जय मुकुन्द मधुसूदन माधवमदन लजावन।
जय मुरारि मथुरेश मधुर मुरलीहि वजावन॥

जय बनवारी मनमाली बनमाल सजावन।
जयति बिहारी बालवेस त्रैताप नसावन॥
बद्रीनारायन जयति जै गिरि धरन अनन्दमय।
जय श्यामा श्याम जुगल सदा जय जय जय जय जयति जै ॥४॥
जय जय जय शशि वदन जयति जय वारिज लोचन।
जय श्री कम्बुक ग्रीव सुभुज मिरनाल सकोचन॥
बिम्ब अधर जय वेणु लसित स्वर शोभित रोचन।
जय वनमाला उर धारी जै ताप विमोचन॥
श्री बदरीनारायण जयति जै जै सुसीस सोभित मुकुट।
जै जै जसुदा के लाड़िले गो चारत लैकर लकुट॥ ५॥

कलिकाल तर्पण

सं० १९४०

कलिकाल तर्पण*

ब्रह्मादिक सब सुर मति धाम। आये भारत में केहि काम॥
गवनहु निज गृह लेहु प्रणाम। सन्तोषहि से तृप्यन्ताम॥
विधि केहि विधि औ कौन विधान। रच्यो रुचिर यह हिन्दुस्तान॥
दियौ आरजन बल बुधि ग्यान। विद्या सुमति सकल गुन खान॥
सुखी सराहे सुभट सयान। जब वे जाहिर रहे जहान॥
धन विद्या लहि सहित सुजान। तबै रह्यो उनके हिय ग्यान॥
तब करि सादर तुमहिं प्रणाम। विविध रीति अरचत मति धाम॥
ध्यान यज्ञ तरपण अभिराम। करत रोज उठि तृप्यन्ताम॥
अब तुम और लियो मन ठान। विरच्यो विविध विरुद्ध विधान॥
हरच्यो राज बल विद्या ज्ञान। कियो भलैं भारत अपमान॥
मारि काटि कीने वीरान। दीन हीन अब हिन्दुस्तान॥
पास रह्यो नहि एक छदाम। बिना द्रव्य नहिं सरकत काम॥
दुखी यहाँ के नर औ बाम। देयँ कहाँ तुमको आराम।
अब अतृप्त आपै सब जाम। करैं तृप्त किमि तुमहि अवाम॥
तुम जस कियो भयो सो काम। होहु दशा लखि तृप्यन्ताम॥
विष्णु सुने हम कथा पुरान। सब तुमरो गावत गुन गान॥

---

*यह कवि की तीसरी रचना के रूप में है पर इसके पूर्व एकाध कविताएँ और थीं जिनका अभी तक पता नहीं चला है। यदि वे प्राप्त हो सकीं तो दूसरे संस्करण में लगा दी जाँयगी।

लगी द्रौपदी की पति जान। टेर्यो ह्वै वह विकल महान॥
तब तुम चीर बढ़ायो आन। गज की लगी जान जब जान॥
दौरि ग्राह को मार्यो प्रान। प्रह्लादहु के हित सुखदान॥
खम्भ फारि प्रगट्यो भगवान। मार्‍यो हिरनकशिप बलवान॥
राम कृष्ण ह्वै कोपि महान। हत्यो निशाचर चोखे बान॥
प्रलय पयोनिधि में तुम आन। मीन शरीरहि धारि महान॥
रक्षा वेद कियो भगवान। सुनियत ऐसे लाख बयान॥
पै का ए सब झूठ बखान। नहि तौ विश्वम्भर भगवान॥
रह्यो कहाँ तुम तबै लुकान। जब इन चढ़े यवन मुगलान॥
कियो जबै जै शाह इरान। आयो जबै राज यूनान॥
अलक्षेन्द्र सम्राट महान। जीत्यो पश्चिम हिन्दुस्तान॥
नौशेरवाँ सैन जब आन। वल्लभि पूर कियो वीरान॥
सूर्य्य वंश जो विदित महान। राम सुअन लौं वंश सुजान॥
राज वंश भर एकहि आन। बाला बाल सबन के प्रान॥
लीन्यो जा दिन कोपि महान। हाय दुःख नहिँ जाय बखान॥
जब रणधीर बीर बलवान। महाराज जयपाल सुजान॥
लरि निज बल भरि थाकि महान। कैद भयो नहिँ मूसलमान॥
छुट्यो यदपि पै कै हिय ग्लान। अति प्रतिकूल दैव अनुमान॥
वीरोचित जीवन की आन। लख्यो न जब निर्वाह सुजान॥
साजि तुषानल चिता ललाम। भस्म भयो करि तुमहिं प्रणाम॥
लखे न तुम का तब तेहि ठाम। भये न तब का तृप्यन्ताम॥
जबै अनन्दपाल बलवान। चढ़्यो पिशावर के मैदान॥
लै सँग नृपति अनेक महान। सजे सैन चतुरंग सुजान॥
जैसहिं भिरे दोउ दल आन। भाज्यो चिंघरि मतङ्ग महान॥

हटे अनन्दपाल सब जान। रन तजि के भट लगे परान॥
तब तुम कहा कीन यह जान। अथवा रह्यो नाहिं उर ज्ञान॥
वा ऐसहीं न्याय को बान। कहवायो अब लौं भगवान॥
तिमिर लङ्ग जब पहुँच्यो आन। सांचहुँ किए प्रलय सामान॥
लूटि फूँकि अरु ढाहि मकान। नगर अनेक कीन वीरान॥
मारत काटत बचे बचान। मारग मिले मनुष्य अथान॥
एक लाख जन के अनुमान। दिल्ली पहुँचि सबन को प्रान॥
मारि काटि कीने खरिहान। नगर मध्य फिर कीन पयान॥
प्रथम लगायो आग महान। दावानल की ज्वाल समान॥
जलन लगी दिल्ली जेहि आन। मृग लौं मानुष लगे परान॥
धाय धाय धरि धार कृपान। काटि काटि कीने खरिहान॥
मृतक शरीर असंख्य महान। बन्द कियो मारग सब थान॥
गयो नगर बनि मनहुँ मसान। मची लूट की तब घमसान॥
रूप हेम हीरा मुकतान। बरतन बसन बिना परिमान॥
मुद्रा मोहर न जाय बखान। लिए मनो निज पिता कमान॥
हिन्दुन के असंख्य अज्ञान। सुन्दर बालक औ कन्यान॥
बचे कतल तें जाके प्रान। हित लौंडो गुलाम अलगान॥
बहुतेरे हिन्दू मतिमान। करि यह दशा प्रथम अनुमान॥
पति अरु धरम बचन की आन। जब न लख्यो कोऊ सामान॥
तब स्त्री बालक कन्यान। भरि निज गृह में हा तेहि आन॥
फूँकि दियो होलिका समान। फिर धरि धीर वीर बलवान।
लै कर कलित कराल कृपान। कोपे समर भूमि में आन॥
अरिन मारि मरि गये निदान। सहे न म्लेच्छन के अपमान॥
ऐसहिं पन्द्रह दिन अनुमान। लाखन मनुजन के हरि प्रान॥

जन धन करि निःशेष महान। तव दिल्ली सों कियो पयान॥
इक इक जे सिपाह संग्राम। सौ सौ लौंडी और गुलाम॥
लै संग गये किये इस्लाम। भये तवहुँ नहिं तृप्यन्ताम॥
वावर जीति समर जेहि आन। कैदी हिन्दू गन के प्रान॥
हने दीखि निज दृग दुखदान। मुरदन सों नहि रहै ठिकान॥
रुधिर प्रवाह देखि थल आन। रहि न सकै तव करै पयान॥
या विधि वदलि तीन अस्थान। हरे किते हिन्दुन के प्रान॥
जव या खल की डरन डरान। नगर चन्देरी के हिन्दुआन॥
स्त्री वालकन सहित दै प्रान। जौहर करि राख्यो निज मान॥
मुहम्मद विन कासिम जेहि आन। सिन्ध देश के दर्मीयान॥
लगभग लाखन हिन्दुन प्रान। करि कतलाम हर्‌यो दुखदान॥
लौंडी अरु गुलाम वंधुआन। मनुज पचास हजार प्रमान॥
लै संग गयो हाय दुख दान। करि नगरन अनेक वीरान॥
ऐवक कुतुवुद्दीन महान। मेरठ अरु कोथल दर्म्यान॥
मन्दिर मूरति नासि अयान। हति असंख्य हिन्दुन के प्रान॥
कालिंजर जीत्यो जेहि आन। नर पञ्चास हजार प्रमान॥
करि गुलाम ल्यायो दुख दान। औरहु अनगिनतिन करि हान॥
शाह अलाउद्दीन महान। ह्वै प्रत्यक्ष जव काल समान॥
करि अन्याय को अन्त अयान। कियो नास कुल हिन्दुस्तान॥
जव ताही की डरन डरान। भगी सैन ताकी लै प्रान॥
गहि तिनकी इस्त्रीन लुकान। निज दासनहिं कह्यो जेहि आन॥
सत नासिवे काज दुखदान। तिनके वालक अरु कन्यान॥
तिनही के सिर पटकि परान। मारि सवन कीन्यो खरिहान॥
जय खम्भात कियो जेहि आन। हरि असंख्य हिन्दुन के प्रान॥

लियो लूटि धन बेपरिमान। हेम हीर मुक्ता पन्नान॥
सुन्दरीन जुवती वनितान। बीस हजार जासु परमान॥
दासी लियो बनाय बलान। नहिं संख्या बालक कन्यान॥
तिय धन धरम हरन मन ठान। रोजहिं जुद्ध जुरो दुख दान॥
कियो देस को देस विरान। बार अनेक अनेक स्थान॥
लूटि लूटि धन धर्यो महान। हिन्दुन काटि काटि खरिहान॥
कई लाख जन के हरि प्रान। हाय दियो करि हिन्द मसान॥
या खल की खलता अनुमान। लाखन मनुज होय हैरान॥
आपहिं दियो नासि निज प्रान। राखन हेत धर्म्म अरु मान॥
नितहिं अनीति नई दरसान। नितहिं देश नाशन में ध्यान॥
हा! तुम धर्म्म भक्ति के काम। करि हिन्दुन के आठो जाम॥
उमड़्यो रुधिर समुद्र लमाम। भये तवौं नहिं तृप्यन्ताम॥
हिरनकसिपु हाटकनैनान। कुम्भकरन रावन बलवान॥
कंसादिक राच्छस असुरान। सुने जासु गुन वीच कथान॥
ए उनसै अति अधिक महान। दुष्ट दुराचारी दुख दान॥
तिनसों नहिं कम कोउ विधान। हिंसक सकल जगत अघ खान॥
वे इक वा अनेक दुख दान। ए असंख्य जन हारक प्रान॥
वे दस पाँच किये अघ आन। इन अघ सेस न सकहिँ बखान
तासों तुमहुँ भलैं अनुमान। अति दुर्बल उनहिन कहुँ जान॥
धायो लैकर काढ़ि कृपान। सबसोँ लियो कराय बखान॥
पै इन कहँ लखि प्रबल महान। भाग्यो तुमहुँ अवश्य डरान॥
छिप्यो छीर सागर महँ आन। अहि पर पर्यो होय हत ज्ञान॥
नहिं तौ हियो बनाय पखान। तजि कै न्याय दया की बान॥
सह्यो भला कैसे भगवान। ए अनीति के वृन्द महान॥

गुलवर्गे को महमद रान। काट्यो पाँच लाख हिन्दुआन॥
दूध पियत बालकन अयान। को न दया करि छाँड़िहु प्रान॥
राज कुमार के देस तिलंगान। पकरि कटायो तासु जवान॥
जियतहिं जलत आगि में आन। हाय जलायो काठ समान॥
अहमद जा छुन करै पयान। हिन्दू वीस हजार प्रमान॥
सों जव अधिक कटैं जेहि थान। तहँ दिन तीन मोद मनमान॥
देखै सुनै नाच औ गान। जव फ़र्रुख सीयर दुखदान॥
वन्दे गुरू सिखन को मान। पकरि सहित बालक जेहि आन॥
कह्यो मारु निज सुत को प्रान। पिता न जब अज्ञा यह मान॥
तुरत तासु सुत को हरि प्रान। काढ़ि करेज तासु दुखदान॥
फेंक्यो ता ऊपर जेहि आन। त्राहि त्राहि जव वह चिल्लान॥
तब ताते ताते चमचान। सो तन नोचि नोचि दुखदान॥
मार्यो या दुर्गति सोँ प्रान। सहित सात सौ सिक्स सुजान॥
बस इतने ही सों अनुमान। लेहु तासु मन की गति जान॥
जम्बूराज कुमार महान। गहि तैमूर पूर दुख दान॥
जवै मुवारक शाह बलान। गहि राजा जैपाल सुजान॥
खाल खींचकर मार्यो प्रान। दियो भराय भुस्स दुख दान॥
शिवाराज जग विदित महान। ता सुत सम्भा जी बलवान॥
आलमगीर महा दुखदान। छल सोँ पकरि गह्यो जेहि आन॥
कह्यो म्लेच्छ हो मूसलमान। सुनतहिं कुरुख भयो बलवान॥
तव लै कर लोहा गरमान। काढ़्यो तुरत युगल नैनान॥
ताहू पै फिर काटि जबान। मार्यो या दुर्गति सों प्रान॥
तासों हम पूंछत एहि आन। तुम सों गदाधरन भगवान॥
जिन्हें गिनाए या अस्थान। नहिं कोऊ प्रहलाद समान॥

इनमें रह्यो सुशील सुजान। भक्त धार्मिक तुअ मतिमान॥
वह तो दानव सुत भगवान। ए आरज कुल धरम धुरान॥
गज अरु ग्राह पशून महान। को दुख अरु अन्याय मन आन॥
सहि न सक्यो प्रगस्यो भगवान। क्यों इन हेत रह्यो अलसान॥
ए पशु सैं हूँ हीन महान। दया जोग नहिं करि अनुमान॥
मारि मौन मास्यो भगवान। नहिं तौ कारन कहियै आन॥
नतरु होय का वृद्ध महान। अति बलहीन भयो भगवान॥

पितर प्रलाप

सं० १९४२

पितर प्रलाप

विगत भई वर्षा रही, शरद छटा छित छाय।
चमक चौगुनी चन्द लखि, रहे चकोर लुभाय॥
भईं दिशा सब स्वच्छ अरु, अतिहि अमल अकास।
कास विकासन मिसि मनहुँ, करत मेदिनी हास॥
उदय अगस्त भये लखो, अम्बर अमल सुहाय।
सुमन अगस्त खिले इतै, छिति पै छवि छहराय॥
भये सरोवर ताल जल, अमल नदी औ नार।
खिले कुमुद कल कमल कुल, करि मधुकर गुञ्जार॥
विगत पङ्क लखि राह सब, पंथी कीने गौन।
भई प्रवत्सित नाह तिय, शोकाकुल ह्वै मौन॥
जानि सुभग अवसर चले, मानस त्यागि मराल।
मन रञ्जन खंजन चले, लाजन लोचन बाल॥
चले वनिक व्यापार को, राजा लरिबे काज।
रिपु मारन छित लेन हित, सजे सैन को साज॥
दुर्गा पूजा निकट गुनि, भई अदालत बन्द।
राज कर्मचारी पहुँचि, निज गृह करत अनन्द॥
जानि निकट बलिदान दिन, अजा रही बिलखाय।
हाय मेमने मरहिंगे, कीजे कौन उपाय॥
पितर पच्छ को पर्व्व अब, आयो मन मैं जानि।
चले हीन मति दीन द्विज, नगर मोद मन मानि॥

किते किते लंघन किये, वहु भोजन के लाय।
पूरी मसकन हरख की, हीसन गये मुटाय॥
अकटोटा को घसि तिलक, लम्बी लिये लगाय।
उठि भोरहीं अन्हाय तजि, गृह सों चले पराय॥
लगे उखारन कुश कियो, साचहुँ वाको नास।
निज पुरखा चांड़क्य की, मानहुँ पूरत आस॥
दर्भ गट्ठ दावे वगल, लोटिया लीने हाथ।
चले जात जजमान के, पीछे पीछे साथ॥
कोऊ गंगा तट पहुँचि, तरपन रहे कराय।
मन्त्र न जानै भल रहे, गवड़ गवड़ चतुराय॥
देवालय में वैठि कोउ, पिएडा रहे पराय।
वखत वितावत सूंघि कै, सुंघनी औ मुंह वाय॥
आवे जाय न मन्त्र कछु, पढ़े लिखे हैं नाहिं।
धरु पैसा धरु दच्छिना, इतनो वोलत जाहिं॥
केवल उपरोहित नहीं, सांचे अरथ समान।
खान पान अरु दान मिसि, मूड़त सिर यजमान॥
भोजन कै डकरत चलें, वूढ़े वैल समान।
पाय दच्छिना टेंट मैं, खोंसत कचरत पान॥
वहुतेरे यजमान के, द्वार रहे चिल्लाय।
दे पूरी चएडाल तैं, रहे मूड़ पिरवाय॥
डोम मूस हर नट रहे, सकुल द्वार विललाय।
जूठी पातरि हित रहे, नाउन सों गुर्राय॥
स्वान चाभि निज ग्रास, दूजे हित चल्यो पराय।
काँव काँव करि काक के, वृन्द रहे मड़राय॥

घूमति ग्वालिन गूजरी, दही वेचिवे काज।
मोल लेन वारेन को, मोल लेत मन आज॥
काजर रेख भरे वड़े, नैनन रही गुरेर।
सब वजार सों भाव मैं, वेचत कम एक सेर॥
भोरे गोरे मुख रही, नील वसन छवि छाय।
उभरे उरज उतङ्ग सो, जनु हिय में धँसि जाय॥
लाल तूल की कञ्चुकी, कैसी शोभा देत।
माजि स्वच्छ चमकाय कर, परि का मन हरि लेत॥
झनकारत पैरी चली, घायल करत दुरेर।
करन मोल मिसि हसन लखि, वाढ़त मदन मुरेर॥
धोविन विन धोये वसन, व्याकुल वैठी धाम।
रुजगारी नाऊ रहे, सोय विना कुछ काम॥
रहे पादरी लोग सव, घाटन वाज सुनाय।
भोले भोले हिन्दुअन, सों जनु फाग मचाय॥
लम्वी चौड़ी वात कहि, रहे सवन वहकाय।
उनके पुरखन देवतन, को दै गारी हाय॥
मुसलमान गन देखि यह, पूजनीय त्योहार।
सिच्छा साहजहान की, गुनि जनु लगी कटार॥
देखो तो निज पितर हित, हिन्दू साजे साज।
करत विविधि खैरात क्या भक्ति भरे से आज॥
भारतवासी साचहूँ, तजि जग के व्योहार।
वाह लगत कैसे भले, धरे धरम आचार॥
श्राद्ध करत तरपन कोउ, विप्रन रहे जिमाय।
कोउ पग धोवत देत कोउ, पान द्रव्य सिर नाय॥

तिनकी भामिन आज क्या, सजे अपूरब साज।
स्वच्छ भये गृह शुचि सुमन, धरे पितर गन काज॥
निज कर कल अलकावली, लिये देत जल वाल।
छुटन कालिमा हेतु जनु, धोवत पंकज व्याल॥
अपनी निरछल भक्ति अरु, सहित अटल विश्वास।
अवसि दियो करि तृप्त यह, सहज सुभावन सास॥
अञ्जन रञ्जन विन नयन, नील कञ्ज सम स्याम।
बिना राग वीरीन के, मधुरे अधर ललाम॥
स्वच्छ सेत सारी सहित, साचहुँ रही सुहाय।
मुख मयङ्क मनु झलमलै, गङ्ग तरङ्गन जाय॥
भक्ति भरी इत उत रही, करि प्रवन्ध जेवनार।
मानहुँ मूरति कुल वधू, रचि पठई करतार॥
घर घर याही विधि भयो, हिन्दुन के सब साज।
पितर भक्ति इनकी मनहुँ, जगत लजावत आज॥
कोलाहल वाढ़्यो महा, स्वर्गहु में अब जाय।
अरजी पितरन की परीं, धरमराज ढिग आय॥
द्वै हसा हित द्वै गई, जब रुखसत मंज़ूर।
स्वर्ग नर्क में यह खवर, भई खूब मशहूर॥
हिन्दुन के पुरखा चले, मृत्यु लोक हरखाय।
और जाति लखि विकल है, परी मरी खिसिआय॥
आये जो ये पितर गन, भरत खण्ड के बीच।
देखि यहाँ की दुख दशा, सकुचि किये सिर नीच॥
कोऊ तो सोचन लगे, करि मन महा मलीन।
ठण्ढी साँस भरन लगे, कोउ होय अति दीन॥

कोऊ के दृग सों चलीं बहि आसुन की धार।
कोऊ कहत कराहि कै, कियो कहा करतार॥
नहि अब भारत वह रह्यो, नहिं यामैं वह तत्व।
हाय विधाता ने हरयो, कैसो याको सत्व॥
नहिं वह काशी रह गई, हती हेम मय जौन।
नहिं चौरासी कोस की, रही अयोध्या तौन॥
राजधानि जो जगत की, रही कभौं सुख साज।
सो बिगहा दस बीस में, सिकड़ी सी जनु आज॥
इहँई सूरज वंस के, दानी वीर विशाल।
रहे राज राजेस वे, चक्रवर्ति भूपाल॥
प्रवल प्रतापी निज अरिन, हेत काल विकराल।
किये दिग्विजय जे सहित जगत प्रजा प्रतिपाल॥
जे सुरनायक की किये, बार अनेक सहाय।
दया धर्म्म अरु सत्यता, शुद्ध पथिक पथ न्याय॥
दान किये कै बार जे, सकल जगत एक साथ।
अब लौं जाकी सब प्रजा, गावत नित गुन गाथ॥
इक्ष्वाकु हरिचन्द रघु, अज दिलीप श्रीराम।
रहे न वे अब नाहिं वह, राज साज धनधाम॥
प्रतिष्ठानपुर नाहिं वह, इन्द्रप्रस्थ वह नाहिं।
चन्द्रवंश के नृपति नहिं, अब वे कहूँ लखाहिं॥
भीषम द्रोण न युधिष्टिर, अरजुन बिदुर न भीम।
नांहि सुयोधन करण कृप, योधा विबुध असीम॥
शुचि अग्रछित हेतु जे, रचे घोर संग्राम।
ललकि लरे मरि मिटे ना, लियो दैन को नाम॥

आज तिनहिं के वंस मैं, सूचि अग्र भरि भूमि।
नहिं लखियत आए सकल, जगत हाय हम घूमि॥
रही न वह मथुरा गई, यह लूटी कै वार।
नहिं वह उज्जैनी न वह, महाकाल आगार॥
कहाँ गई वह द्वारिका, अद्वितीय ही जौन।
यदुवंशी श्रीकृष्ण संग, छिपे किते ह्वै मौन॥
नहिं वह गुर्जर अब रह्यो, ढाह्यो खल महमूद।
सोमनाथ को वह न गृह, जो देखहु मौजूद॥
दस करोड़ को रत्न जहँ, पायो म्लेच्छ नरेस।
आरत भारत मैं रह्यो, हाय कहाँ अवसेस॥
नहिं चित्तौर वह जहँ रहे, एक एक से वीर।
भारत अभिमानी महा, राना वंस अखीर॥
लाखन वीर कटे जहाँ, भे अगिनित संग्राम।
नदी लहू की जहँ वही, वार अनेक ललाम॥
कटे अनेकन यवन नृप, सैन सुभट संग खेत।
तहाँ आज यह हाय क्यों, कछु न दिखाई देत॥
पाटलिपुत्र गयो कहाँ, तेरो गजब गरूर।
हाय आज कन्नौज मैं, लखियत धूरहि धूर॥
रह्यो न वह पञ्जाब अब, रह्यो न वह कशमीर।
पूना करि सूना गयो, कितै शिवाजी वीर॥
रहे न वे आरज नृपति, न्याय परायन धीर।
धरम धुरन्धर धनुरधर, प्रजा वन्धु वर वीर॥
अभिमानी छत्री महा, वीर गये नसि हाय।
अस्त्र शस्त्र विद्या गई, धौं कित मनहुँ विलाय॥

कहाँ गये वे विप्रवर, ऋषि मुनि परम सुजान।
याग्यवल्क्य जाबालि मनु व्यास कणाद समान॥
गौतम जैमिनि से विबुध परसुराम से वीर।
हाय देखि मुख कौन को, भारत धारे धीर॥
रहे बुद्ध नहिं स्वामि श्री, शङ्कर सहस सुजान।
मल्ल सेठ नहि वे रहे, धनिक कुवेर समान॥
देत पौसला विप्र अब, खासे बने कहाँर।
रेलन के स्टेसनन, डोलत डोलन धार॥
अस्त्र शस्त्र ढोवत रहे, जे सब छत्री लोग।
बोझा ढोवत आज लखि, तिन्हें होत अति सोग॥
वैश्य बरण सब घूमते, मांगत भीख मुदाम।
शूद्र द्विजन उपदेशते, कहि कहि कथा ललाम॥
लिये वेद अब वांचहो, तेली और कुम्हार।
रामायण भारत कहत, हैं कलवार चमार॥
वैरागी गोस्वामि सब, राखे द्वै द्वै राँड़।
निज चेली सुरभीन के, हित तौ मानौ साँड़॥
बने गृहस्थ सबै अबै, रँडुआ त्यागी दीन।
अपने पेटन की फिकर, मैं धावत लौ लीन॥
रह्यो न धन बल बुद्धि अरु, विद्या को अब नाम।
हाय अविद्या छाय करि, दियो याहि वे काम॥
जो सिगरे संसार को, रह्यो तत्व सम देस।
इन्द्र लोक अलका सरिस, जाकी छटा हमेस॥
जँह के नृप जग नृपन सन, सादर वन्दित पाय।
जासु प्रताप दिगन्त लौं, रह्यो सूर सम छाय॥

जँह के सासन सों रह्यो, शासित सब संसार।
जँह की सिच्छा से भयो, सिच्छित जगत गवार॥
विद्या सबै प्रकार की, निकरी जँह सो आदि।
दरसन को दरसन कियो, प्रथम जहीं के बादि॥
गने गनित सों गति सहित, तारा गन गुन मान।
प्रथमैं ग्रहन हिसाब ह्याँ, ई के किये सुजान॥
उग्यो सभ्यता लता को, बीज प्रथम जा ठाँव।
सुन्यो सकल जग प्रथम जँह, आर्य शिल्प को नांव॥
धर्म्म दिवा कर के प्रथम, कर को भयो प्रकास।
जहाँ जगत सों प्रथम यह, वह भारत आकाश॥
ग्यान चन्द्र की चन्द्रिका, छितरानी छित जौन।
ह्याँई की फूली प्रजा, प्रथम कुमुद सुख भौन॥
सो ऐसी लखि परति नहिं, दीन दशा कहुँ और।
सकल जगत सों हीनता, लखियत याही ठौर॥
लुटत कटत दिन दिन फुँकत, रह्यो बहुत दिन जौन।
होत महाभारत रहो, नित यह भारत तौन॥
जहँ अशेष विद्यान के, ग्रंथ ढेर के ढेर।
जलत रहे ज्यों सैल के, दावानल की घेर॥
देवालय फूटे सकल, गईं मूरतें टूटि।
पकरि पुजारी जे परैं, यवन बनै भल कूटि॥
राजकुमारी सुन्दरनि, के सत नासन काज।
लाखन मनुज कटे यहाँ, धरम त्यागिबे काज॥
सुन्दर बालक बालिका, लौंड़ी बने गुलाम।
म्लेच्छ देस मे बिके जे, द्वै द्वै मुद्रा दाम॥

बिना धर्म्म आचार के, बिन विद्या अभ्यास।
रहे कई सौ बरस लो, ऐसे सत्यानास॥
पर अब तो ये और हू, लटे गिरे से जात।
खाए जे आघात सो, अब जनु इन्हैं पिरात॥
पैर विवशता की परी, बेरी अति मज़बूत।
असत धरम के जेल मे, बैठे धारि सकूत॥
ढोवत सिर नीचे किये, सदा बोझ दासत्व।
भूलि गये ये आपनो, अगिलो हाय महत्व॥
टिकस नाग तापै डँस्यो, एक एक को टोय।
कैसे बचे न पास जब, शक्ति औषधी होय॥
फ़स्त तिज़ारत की लगी, बद्ध डोर कानून।
द्रव्य हीन तासों भये, ए पागल मजमून॥
कहा करैं ए निबल कछु, करिबे लायक नाहिं।
लिख्यो विधाता नाहि सुख, इनके भालन माहिं॥
नहीं वीरता प्रथम जब, तब दूजी क्या बात।
कला कुशलता बुद्धि वा, विद्या धन न लखात॥
फिर कैसे कारज सरे, जब ये सब सों हीन।
गिनै कौन इनको भला, हौ तेरह की तीन॥
गई वीरता जौन दिन, राज गयो दिन तौन।
राज बिना विद्या गई, बिन विद्या बुध कौन॥
बुद्धि बिना धन हीन ह्वै, मान प्रतापहि खोय।
रोय रोय के हाय ए, रहे और मुँह जोय॥
त्रस्त भये ए तबहिं के, थर थर काँपत जाँय।
अब लौं डाढ्ये दूध के, छाछ छुअत सकुचायँ॥

दुःख निशा बीती यदपि, पै ए जागैं नाहिं।
यदपि धूप नहिं पै लिये, ए छाता रहि जांहि॥
ए न विचारैं हाय कुछ, अपनी दसा अचेत।
नहिं देखैं का जगत में, होत स्याह वा सेत॥
देखैं जो कुछ और सो, करैं न तासु विचार।
चलैं भूलि नहिं ए कवौं, खलता के अनुसार॥
औरन की जौ गहैं तो, चुनि कै परम कुचाल।
जामैं हानि न लाभ लहि, होत सदा पामाल॥
सुनत न ए कोऊ कहै, इनके हित की वैन।
करैं विचार न मन कछू, अस उरझैं सुरझै न॥
करैं न ए उद्योग कछु, महा आलसी होय।
आस करम आधीन सव, राखे मन मैं गोय॥
यद्यपि याही चाल सों, होत जात वरवाद।
पै ये जड़ जानैं नहीं, हा उद्यम को स्वाद॥
विद्या उपकारी जिती, ताहि पढ़ै कोउ नांहि।
कथा कहानो सिखन हित, इस्कूलन मैं जाहिं॥
कला कुशलता शिल्प की, क्रिया न सीखन जाँय।
करैं अनत व्यापार नहिं, नित घर वैठे खाँय॥
याही चालन सों दिये, राज पाट सव खोय।
पर खोवन की चाल को, इनसों त्याग न होय॥
सव कछु खोए अव नहीं, रह्यो कछू जव पास।
तव ए लागे अधम पशु, करन धरम को नास॥
औरन के खोटे धरम, भले किये स्वीकार।
पर जव याहू सों गये, निलज नीच ए हार॥

तौ आपै विचरन लगे, मन माने वहु धर्म्म।
जाको जो भायो लगे, सोई सेवन कर्म्म॥

वरण विवेक रह्यो न कछु, रह्यो न नेक विचार।
धरम वही सबको रह्यो, जो जेहि सुख दातार॥

नहीं वेद अरु शास्त्र को, नाहिं पुरान प्रमान।
धरम कहावे एक अब, निज मन को अनुमान॥

सन्ध्या कोऊ नहिं करत, अतिथि न पूजे जाहिं।
बली वैश्व नहिं होत अरु, अग्नि होत्रहू नांहिं॥

कौन श्राद्ध तर्पण करत, अब या भारत माहिं।
देव दरस पूजन कभौं, ए जड़ जानहिं नाहिं॥

प्राणायाम करैं भला, ए कब साधि समाधि।
जोग जुगुत जिनके मते, विरथा वाधा व्याधि॥

सीखे इक निन्दा करन, सब की आठो जाम।
जगत पनाला को वनो, देत जासु मुख काम॥

अपनी तुच्छी बुद्धि सों, जगत तुच्छ जिन कीन।
अपने दुष्ट प्रलाप सों, कहे सवहि मति हीन॥

केवल कहिवे कों वने, दम्भ धारमिक नीच।
करनी कछु नहिं देत जग, सिच्छा को इरशीच॥

कितने पापी खल वने, फिरैं ब्रह्म खुद आप।
कोऊ अब चाहत बनो, स्वयम ब्रह्म को वाप॥

तिन कहँ आतम ज्ञान क्यों, होय करहु अनुमान।
ए पूरे पशु यदपि नहिं, सहित पूंछ अरु कान॥

ए ईश्वर के कोप के, अनल जलत दिन रैन।
निज प्रभु सों ह्वै विमुख ए, पावैं नेक न चैन॥

तासों हम सब अब चलो, चलैं यहां सों भाग।
लागी भारत भूमि मैं, प्रवल विपति की आग॥

जो हम लोगन के घरन, वेद ध्वनि नित होत।
यज्ञ धूम सो द्विज सदन, प्रगटित चिन्ह उदोत॥

चूना कलई तहँ भई, छेड़ैं कसवी तान।
तवलन की घुटकन सुनत, जात दियो नहिं कान॥

दुन्दुभि शंख धुंकार जहँ, होत सोम रस पान।
सोडावाटर बटल की, का कहि फोरत कान॥

मद्यपान सो मूर्छित, चुहकत सवै सिंगार।
हा या भारत की करी दसा कवन करतार॥

जहँ हम संध्या श्राद्ध अरु, तरपन पूजन कीन।
तहाँ रोज कुकरम करत, ये पशु पाप प्रवीन॥

चलहु करैय्या कोउ नहीं, इत हमार सत्कार।
नहिं इनको अवकाश रत, रहत अधम व्यापार॥

फिर इन नीचन नास्तिकन, पाप परायण हाथ।
लेय कौन जल पिन्ड को, मारै असि निज माथ॥

चलहु चलहु भागहु तुरत, नहि याँ ठहरन जोग।
भयो प्रबल भारत अटल, अब कलजुग को भोग॥

देहिं कहा निज वंश कों, हाय और हम शाप।
जस कछुये करिहैं अवसि, फलहु भोगिहैं आप॥

देत बनै न कुचाल लखि, इनको कुछ आसीस।
देय सुमति इनको कोऊ, विधि जगदीश्वर ईश॥

विद्या बुधि बल राज सुख, लहि फिर होहिं सुजान।
सांचहुँ ए वैसे यथा, कह्यो कोउ विद्वान॥

नहिं विद्या नहिं बाहु बल, नहिं खरचन को दाम।
दीन हीन हिन्दून की, तू पति राखै राम॥

शोकाश्रु विन्दु

सं० १९४२

शोकाश्रु विन्दु*

"फ़िराक़े यार में रोने से क्या तस्क़ीन होती है।
जिगर की आग बुझ जाती है दो आँसू जहाँ निकले ॥"

सवैया

अथयो हरिचन्द अमन्दसो भारत चन्द चहूँ तम छाय गयो।
तरु हिन्दुन के हित उन्नति को वढ़तै अबहीं मुरझाय गयो ॥
गुनराशि जवाहिर की गठरी अनमोल सो कौन उठाय गयो।
नित जाके गरूर से चूर रह्यो वह हिन्द ते हाय हेराय गयो ॥

दोहा

श्री राजा हरिचन्द सो भारत चन्द अमन्द।
हा हरिचन्द समान सो अथै गयो हरिचन्द ॥१॥
रहे अहैं फिर होयँगे सुकवि चन्द हरचन्द।
हिन्द चन्द हरिचन्द सो नहि कवि चन्द अमन्द ॥२॥
जाके कर के कलम के कर के करे प्रकाश।
जगमगात जाहिर रह्यो भारतवर्ष अकाश ॥३॥
चतुर चकोर सदा सवै जीवत जाहि निहार।
कविता सरस सुहावनी सत्य सुधा को सार ॥४॥
राज खुशामद तें प्रजा दूखद स्वारथी चोर।
जा प्रकाश उर दवि रहैं लखि न परै कोउ ओर ॥५॥

---

*भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी की मृत्यु पर विरचित

देश हितैषी कुमुद गन के विकास को हेत।
देश धर्म्म वैरीन कुल कमल नाश कर देत ॥६॥
अमल एकता औषधी को जो पोषक नित्त।
वैर तिमिर को नाश ही जासु प्रकाश निमित्त ॥७॥
राज अनीति सरूपतन ताप मिटावन हेत।
छुद्र तरैयन हाकिमन की दवाय दुति देत ॥८॥
योग्य परम प्रिय पुत्र भारत माता को जौन।
रह्यो खरो वाचाल जो सो क्यों साध्यो मौन ॥९॥
जननि भक्ति अरु बन्धु वत्सल जो रह्यो महान।
तिन के दुख के कथन मैं रुकी न जासु जवान ॥१०॥
धर्म्म धुरन्धर धर्म्मध्वज सत्य धर्म्म को नेम।
भक्त शिरोमणि दृढ़ महा जाको अविचल प्रेम ॥११॥
महावीर वर वैष्णव रहस कथा जो जान।
युगल उपासक राधिका माधव को उर ध्यान ॥१२॥
युगल प्रेम जाके रह्यो रोम रोम में पूरि।
दृग आगे जाके नचत सदा सेई सुख मूरि ॥१३॥
वल्लभ कुल के शिष्य गन मैं शोभा को हेत।
अष्ट छाप को नौ करन कविता भक्ति निकेत ॥१४॥
दीनन को जो कल्प तरु रघु वलि करन समान।
जाको विदित जहान मैं चित के बाहर दान ॥१५॥
दुखियन के दुख मेटिवे में नित जाको ध्यान।
परजन दुख भंजन करन विक्रमसिंह समान ॥१६॥
गुन गाहक गुनि जनन को पण्डित जन को मीत।
बन्दी चारन याचकन दाता दान सप्रीत ॥१७॥

वारवधू कल कामिनी सरस रसीली वाम।
तिन मनमोहन मैं मुरत मनहुँ मनोहर काम ॥१८॥
नायक नव नागर सकल गुन आगर चित चोर।
हाय! हाय!! हरिचन्द सो चलो गयो किहिं ओर ॥१६॥
धर्म्म अर्थ अरु काम सो सांचहु नाहिं अघाय।
त्यागि सबैं तैं अवसि प्रिय! लयो मोक्षपद जाय ॥२०॥
अथवा रसिक शिरोमणे! जानि जवानी अन्त।
सरस रसीले रूप को वीतत देखि वसन्त ॥२१॥
मूरति मान सिंगार लौं सब सिंगार को अंग।
नायक नवल चले लिये सकल भाव रस रंग ॥२२॥
नवल वनावन हित वनक साँचहु चले पराय।
जामैं प्रेमी प्रेम यह नेकहु नहिं मुरझाय ॥२३॥
पै जो यह सिद्धान्त तुव तौ तू भूल्यो मीत।
अभै हुतो नायक नवल उपजायक जब प्रीत ॥२४॥
काल कला पूरन विना भए हाय हर चन्द।
काल राहु ने ग्रस लियो हिन्द चन्द हरिचन्द ॥२५॥
प्रेमिन को जो प्रान धन रसिकन को सिरताज।
कविता को तो डूबि गो मानहु आज जहाज ॥२६॥
कविजन को जो मित्रवर विद्वानन को वन्धु।
पूरन विद्या को मनहु हाय सुखानो सिन्धु ॥२७॥
हिन्दुन को जो मणि मुकुट अग्र गरय जन हाय।
ताहि आज या हिन्द तैं कालैं लियो उठाय ॥२८॥
जीवन दाता जो रह्यो हिन्दी लता अधार।
तिहि तरु काट्यो हाय हनि काल कराल कुठार ॥२६॥

नित नव ग्रन्थन सुमन के परकाशक तरु हाय।
मध्य समय ऋतु राज के सो कस गयो सुखाय ॥३०॥
नीरस भाषा पत्र फल भये सबै जनु आज।
गयो वाटिका हिन्द तैं सोभा को ऋतु राज ॥३१॥
राजनीति को मर्मवित् कोविद परम सुजान।
देश हितैषी खगन को जो विश्राम ठिकान ॥३२॥
उन्नति आशा लता को एकै आह अलम्ब।
किय अभाग भारत पवन तोरत तेहि न बिलम्ब ॥३३॥
लेखक तुल्य गनेश के शेष सरिस विद्वान।
भाषा को तो भारती लौं कविराज महान ॥३४॥
गुरु समान जो विज्ञवर दाता करन समान।
रूप अनूपम जासु लखि होत मदन अनुमान ॥३५॥
अपकारी जे देस के तृण कुल अग्नि समान।
धर्म्म विरोधी जन लखत जाहि काल अनुमान ॥३६॥
खल मुख निज निन्दा सुनत हँसि साधत जो मौन।
सहनशील इमि जगत मैं पृथ्वी को तजि कौन ॥३७॥
सतपथ गामी जो रह्यो साँचहु धर्म समान।
विपत काल धीरज धरन सिन्धु समान सुजान ॥३८॥
चन्द सरिस प्रिय लखनि मैं तिहि सम सुयश प्रकाश।
दीपति दीनी जिन अमल या भारत आकाश ॥३९॥
जनक सरिस दुहुँ लोक के कारज मैं लवलीन।
नारद लौं हरि भक्ति या जग दिखाय जो दीन ॥४०॥
परहित साधन में रह्यौ राज दधीच समान।
सो किन लोमस लौं भयो चिरजीवीहु सुजान ॥४१॥

सुन्दरता के सुमन को खासो हाय मलिन्द।
रस के सरवर को रह्यो जो प्रफुलित अरविन्द ॥४२॥
सज्जनता को सिन्धु सो सूखि गयो क्यों हाय।
शैल शीलता को ढह्यो ढूंढ़ेहू न लखाय ॥४३॥
प्रीतिपात्र गन के भये सत्य भाग्य अति मन्द।
चन्द अमन्द समान सो अथै गयो हरिचन्द ॥४४॥
सत्य मित्रता आज सो जग मैं रही न हाय।
ना तो नातो नेह को देखे कहूँ लखाय ॥४५॥
हाय! प्रेम को आज सो बन्द भयो टकसाल।
हाय! रसिकता मानसर को उड़ि गयो मराल ॥४६॥
स्वच्छ हृदय दरपन गयो काल शिला ते टूटि।
मटका प्रेम खरो भरो अरे गयो क्यों फूटि ॥४७॥
सत्य धर्म्म को दधकती बुझि सो गयो कृशानु।
साचहुँ सत्य उदारता को तो अथयो भानु ॥४८॥
दया भवन को साँचहू भयो हाय दर बन्द!
पर उपकार अपार यश लै भाज्यो हरिचन्द ॥४९॥
सत्य सभ्यता की लता आज गई मुरझाय।
राजभक्ति को साचहूँ सरवर गयो सुखाय ॥५०॥
साँचहुँ देशहितैषिता को तरुवर गो टूटि।
सच सुदेश अभिमान की गई गढ़ी जनु छूटि ॥५१॥
ब्रह्मा की कारीगरी को जो रह्यो प्रमान।
सोई ताकी चूक दरसावत कियो पयान ॥५२॥
जा मुख चन्द अमन्द दुति करत चन्द दुति मन्द।
जो दुचन्द हरि चन्द सो रहो अहो हरिचन्द ॥५३॥

मान छीन करि हिन्द को काशी को करि दीन।
काशिराज की सभा को जिन कीनी छुवि छीन ॥५४॥
भारतेश्वरी को गयो भक्त प्रजा सिर मौर।
भारत माता को भयो भयो शोक इक ओर ॥५५॥
राज रिपन से रतन को एक जवहिरी हाय।
दीन हीन हिन्दून की एकै करन सहाय ॥५६॥
हिन्दी पत्रन के मनो रञ्जकता को हेत।
देशबन्धु अलसीन को कारन करन सचेत ॥५७॥
देश उन्नती को खरो दरसायक शुभ पंथ।
जाके सुगम उपाय मिस लिखे अनेकन ग्रन्थ ॥५८॥
जो जाके उद्योग में यावत् जीवन लीन।
युक्ति अनेक निकारि जग सिद्धक परम प्रवीन ॥५९॥
पत्रन के सम्पादकन को जो एक सहाय।
सब प्रकार उत्साह दाता तिन के मन भाय ॥६०॥
सभा सरोवर को रहो जो वह कलित मराल।
आरज आपति शस्त्र को बनो रहो जो ढाल ॥६१॥
हिन्दी ग्रन्थ नवीन को जो नित बहत प्रवाह।
आदि अन्त लौं नद सोई सूखि गयो क्यों आह ॥६२॥
यंत्रालयन अनेक को जो नित कारन काम।
जो मणि दीपक लौं रह्यो विमल बनारस धाम ॥६३॥
हिन्दी भाषा गद्य को लेखक शुद्ध सुजान।
प्रथम पुरुष साँचो सोई सुन्दर सुकवि महान ॥६४॥
नाटक विद्या को रह्यो जीवन दाता जौन।
कविता के सब देश को मनहुँ सरस्वति भौन ॥६५॥

सरस राग के सुरन को जो सांचो उन्मत्त।
सब से गीत कलानि को काढ़ि लियो जनु सत्त॥६६॥
केलि कला को जो रह्यो पण्डित परम प्रवीन।
सरिता रस के बीच को विहरन वारो मीन॥६७॥
जो सिंगार श्रृङ्गार को रहो बीर को वीर।
ताके करुणा सिन्धु को मिलत नाहिं अब तीर॥६८॥
जाके कविता चमन के छन्द प्रबन्ध प्रसून।
ग्रन्थ विटप जा भार सो दमकावति द्युति दून॥६९॥
शब्द सुगन्ध अमल अरथ मय मकरन्द लुभाय।
जामैं मत्त मलिन्द मन रसिकन को ह्वै जाय॥७०॥
नौरस की नव क्यारियां सजी अनोखी चाल।
अलंकार सो अलंकृत रविश विचित्रित जाल॥७१॥
व्यंगि बावरी में भरो बाचक बारि ललाम।
अमल कमल कुल लच्छना निरखत अति सुखधाम॥७२॥
हाव भाव सञ्चारि जो स्थाई आदिक भेद।
बहु भांतिन के मीन जहँ विहरि रहे तजि खेद॥७३॥
जा तट वासी सुकवि जन सैलानी कल हंस।
ओज प्रसाद अरु मधुरता को सोपान प्रसंग॥७४॥
हिन्दी भाषा की रुचिर भूमि परम सुधार।
देश दोष शोधन विषय की घेरी दीवार॥७५॥
दृश्य श्रव्य के भेद से द्वै फाटक सुख धाम।
बरनन नायक नायिका राह अनूप ललाम॥७६॥
माली ताही बाग को सुन्दर सुघर प्रवीन।
नाटक विद्या को रहो जो थल रंग नवीन॥७७॥

पिंजर सुजन समाज को जो शुकवर वाचाल।
ताहि झपटि खायो तुरत खल विलाव सम काल ॥७८॥
जो या हिन्द समाज को परम पुष्ट पतवार।
हा पश्चिम उत्तर प्रभा कर अथयो इक बार ॥७९॥
हा काशी कुल कामिनी को सोलहु सिंगार।
हा आरत भारत प्रजा को तूं एक अधार ॥८०॥
हा हिन्दू धर्म्मेतरन को तू काल कराल।
हा हरि भक्तन मन महा मानस मंजु मराल ॥८१॥
हा गुन गाहक गुनिन को हा दीनन आधार।
हा गोवध के बन्द हित उद्यम करन अपार ॥८२॥
हा श्री माधव राधिका युगल चरन अरबिन्द।
सरस भक्ति मकरन्द मन मोह्यो मत्त मलिन्द ॥८३॥
हा हिन्दी प्रिय दूलहिन के सोभादर सन्त।
गुनन आगरी देव नागरी नागरी कन्त ॥८४॥
हा मम प्राणोपम सुहृद हा प्यारे हरिचन्द।
बिन तेरे या हिन्द की लगत आज दुति मंद ॥८५॥
कहाँ भज्यो तू किल गयो भयो कहा यह आज।
दियो काहि तू देश हित करन भार को साज ॥८६॥
स्वर्गहु सों यह जन्मभूमि प्रिय तो कहँ मित्र।
रही तऊ तजि तू गयो कारन कौन विचित्र ॥८७॥
देशबन्धु गन त्यागि कै चल्यो किते तू हाय।
इनकी कुटिल कुचाल लखि भाज्यो वेगि रिसाय ॥८८॥
अथवा भारत भूमि को होनहार अति मन्द।
देख चल्यो चुप चाप तू चतुर हाय हरि चन्द ॥८९॥

अथवा जग हित कै लह्यौ जो विपाक विपरीत ।
देन चल्यो विधि सों किधौं तू उलाहनो मीत ॥९०॥
अथवा जो कर्तव्य तुव रही जगत के बीच ।
सो सब करि तू चल बस्यो रह्यो व्याज इक मीच ॥९१॥
हिन्दी की उन्नति करत कै तू होय निरास ।
हार मानि हरिचन्द तू कीनो अनत निवास ॥९२॥
हिन्दू के हित की रही यहाँ नहीं जब आस ।
तब तू पहुँच्यो धाय धौं श्री जगदीश्वर पास ॥९३॥
अथवा ज्यौं प्रिय जगत को रहो खरो तू हाय ।
तैसे हरि प्रिय जानि तोहि बेगहिं लियो बुलाय ॥९४॥
मैं नहिं जानत ठीक है इनमें कारन कौन ।
तू ही आय बताय दै सत्य भेद हो जौन ॥९५॥
काह कहूँ कहि जात नहिं लखि तेरो यह हाल ।
कुटिल काल धिक तोहिं यह कीनो कौन कुचाल ॥९६॥
धिक सम्वत उनईस सौ इकतालिस जो जात ।
चलत चलत हिन्दुन हिये दियो कठिन आघात ॥९७॥
धिक साँचहु ऋतु शिशिर जिहिं कहत जगत पतझार ।
अब के भारत विपिन तौ आवत दीन उजार ॥९८॥
माघ मास धिक तोहि अरु कृष्ण पक्ष धिक तोहि ।
जिन दीनो या जगत सो श्री हरिचन्द विछोहि ॥९९॥
सकल अमंगल मूल धिक तो कँह मंगलवार ।
धिक षष्ठी तिथि तोहिं जो कियो अमित अपकार ॥१००॥
धिक धिक पौने दस घड़ी बिती अरी वह रात ।
जो न अड़ी एकौ घड़ी भारतेन्दु के जात ॥१०१॥

धिक वह पल अरु विपल जब अस्त भयो वह चन्द।
श्री हरि चन्द अमन्द सो जो हरिश्चन्द दुचन्द ॥१०२॥
जाके अथये रुदत सब हिन्दू जाति चकोर।
कोलाहल बाढ्यो महा भारत मैं चहुँ ओर ॥१०३॥

कवित्त

रोवैं क्यों न गुनी जाके रहे गुन वाहक ना,
पण्डित सुकवि रोय सुख सेज सोवै ना।
रोवैं क्यों न पत्रन प्रचारक हितैषी देश,
सभा को करैया कैसे हिय हरखु खोवैना॥
दीन मीन दान सिन्धु सूखे किन रोवैं,
रोवै भारत समस्त दूजो सत्य प्रिय जोवैना।
मित्र क्यों न रोवैं तेरो शत्रु क्यों न होवे तऊ,
पूरो पशु होवे ना तो क्या मजाल रोवैना ॥१०४॥

सोरठा

श्री हरि चन्द दुचन्द, जाके यश की चन्द्रिका।
कियो चन्द दुति मन्द, सो वह हाय कितै गयो ॥१०५॥

कवित्त

उन निज राज पर काज दान दीन इन,
सर्वसहीन ताही हेत चेत ह्वै गयो।
उन तन बेंचि हठि राख्यो निज सत्य इन,
सत्य सत्य पर काज करि तन दै गयो॥

उन एक गुन यश पायो। इनके अनेक,
गुन गान करि पार कौन जन लै गयो।
भारत को साँचो चन्द साँचो हरिचन्दसम,
सांचो चन्द सम हरीचन्द सो अथै गयो ॥१॥

कवित्त

सींचि कवि वचन सुधा के सुधा सों जहान,
कवि कुल कैरव विकासमान कै गयो।
हरिश्चन्द्र चन्द्रिका की चन्द्रिका प्रकाशि नभ,
हिन्दी ते तिमिर उर्दू को करि छै गयो॥
कविता कलानि को बढ़ाय रसिकन चकोर,
ललचाय हिन्द सिन्धु को उछाह दै गयो।
भारत को साँचो चन्द साँचो हरिचन्द सम,
साँचो चन्द सम हरीचन्द सो अथय गयो ॥२॥

कवित्त

राजा औ सितारे हिन्द राय बहादुर,
आनरेबिल खिताब लै खराब जग ह्वै गयो।
लेकचरर् एडीटर सेकरेटरी रिफार्मर,
जाय कौंसल मैं कोऊ निज नाम कै गयो॥
पेट द्रव्य काज भये हाकिम अनेक याने,
निदरि सवैई देश हित करतै गयो।
भारत को सोभा सिन्धु भारत को बन्धु साँचो,
भारत को चन्द हरी चन्द सो अथै गयो ॥३॥

छप्पय

हा तेरो वह मंजु मनोहर मुख मयंक सम।
हा जासों निकरत नित नव कविता अमृतोपम॥
हा तेरो कर ललित लेख लेखत जो हरदम।
हा तेरो हिय जित छायो दुख देश सघन तम॥
हा तेरो धन साँचहु सुफल, जो लाग्यो पर काज मैं।
हा उपकारी तुव तन सुफल, जीवन भारत राज मैं॥४॥

छप्पय

हा भारत हित लरन अपूरव एक वीर वर।
हा भारत हित हेत करन करवाल कमलधर॥
हा भारत हित कारन, हा भारत भय हारन।
हा भारत भूमी सों मूरखता तम टारन॥
हा भारत चन्द अमन्द नृप, हरीचन्द सम जौन हो।
हा अथै गयो हरिचन्द सो, हाय हाय हरिचन्द सो॥५॥

छप्पय

हा हिन्दी सज्जित करि जिन निज हाथ सँवारे।
हा हिन्दी जीवन दाता हिन्दी हिय हारे॥
हा हिन्दी प्यारी सुकुमारी के पिय प्यारे।
हा हिन्दी के यौवन दुति दरसावन हारे॥
हा हिन्दी के आधार तुम, हा हिन्दी के मनहरन।
हा हिन्दी के हिय हार वर, हिन्दी छवि कारन करन॥६॥

छप्पय

हाय हाय हरिचन्द हाय हिन्दुन हितकारी ।
हा हिन्दू बैरीन हेत साँचहु भय भारी ॥
हा हिन्दुन के हक्क धर्म्म रच्छन प्रनकारी ।
हा हिन्दुन के दुःख दलन अवगुन गन हारी ॥
हा हिन्दुन उत्साहित करन, हा हिन्दुन उन्नति करन ।
हा हिन्दुन के सुभ सदन मैं, सुख सोभा साँचहु भरन ॥७॥

दोहा

अब मैं तो कहँ देत हूँ अन्त यहै आसीस ।
सत्य आतमा आप हित देय शान्ति जगदीश ॥

होली की नकल

सं० १९४२

होली की नकल या मोहर्रम की शकल*

"जब से लागल इ टिकस हाय उड़ा होस मेरा।
रोवै के चाही हँसी ठीठी ठठाना कैसा॥"

इन्कम् टैक्स

रोओ ! सब मुँह बाय बाय। हय हय टिकस हाय हाय॥
रोज कचहरी धाय धाय। अमलन के ढिग जाय जाय॥
रोओ सब मुँह बाय बाय। हय हय टिकस हाय हाय॥
रोकड़ जाकड़ ल्याय ल्याय। लेखा वही मिलाय आय॥
घर घाटा दिखलाय हाय। उजुर माजरा गाय गाय॥
घुड़की उत्तर पाय पाय। खिसियाने घर आय आय॥
रोओ सब— । है है टिकस— ॥
आमला सब हरखाय हाय। दूना टिकस बताय हाय॥
स्वान सरिस मुँह बाय बाय। घूस भली विधि खाय हाय॥
पीछे घता बताय हाय। टिक्कस ले धरि धाय धाय॥
रोओ सब— । हय हय टिक्कस— ॥
कैसे केव बचि जाय हाय। तसिलदार ढिग आय हाय॥
सौ सौगन्धैं खाय हाय। निर्धनता दिखलाय हाय॥
धक्का मुक्की खाय हाय। हवालात भारि जाय हाय॥
रोओ सब— । हय हय— ॥
भूख लगे बिलखाय हाय। प्यास लगे चिल्लाय हाय॥

---

* इन्कम् टैक्स के लगने पर लिखित।

सांसत सहस सहाय हाय। लाखन दुःख दिखाय हाय॥
वे इज्ज़ती कराय हाय। लहना लेय चुकाय हाय॥
रोओ सब— । हय हय— ॥
पास कलक्टर जाय हाय। अरजी भी लिखवाय हाय॥
मुखतारन सिर नाय हाय। हाथ भले गरमाय हाय॥
अमला लोग मिलाय हाय। पीछे पीछे धाय हाय॥
रोओ सब— । हय हय— ॥
हिन्ती विन्ती गाय हाय। कागद पत्र देखाय हाय॥
घर को भरम गंवाय हाय। औरो द्रव्य ठगाय हाय॥
दस दिन समय नसाय हाय। गरज न कुछ सुनि जाय हाय॥
रोओ सब— । हय हय— ॥
व्यापारी बिलखाय हाय। नफ़ा नहीं दिखलाय हाय॥
ब्याजौ नहीं समाय हाय। मूरौ से कुछ जाय हाय॥
घटी घटी ही पाय हाय। कर मीजे पछिताय हाय॥
रोओ सब— । हय हय— ॥
रकम दे वाले जाय हाय। सो नहिं मोजरे पाय हाय॥
हरख न कैसे जाय हाय। तापर टिकस सुनाय हाय॥
रुपिया लेंये गिनाय हाय। दया न कँहू लखाय हाय॥
रोवैं सब मुँह बाय बाय। हय हय— ॥
दास बृत्ति करि खाय हाय। द्रव्य काज सिर नाय हाय॥
वा जूती चटकाय हाय। करै दलाली धाय हाय॥
जो मिहनत कर खाय हाय। सब टिक्कस दै जाय हाय॥
रोओ सब— । हय हय— ॥
पांच सौ तलक जाकी आय। कोऊ भाँति द्रव्य कमाय॥

चाहे आधे पेटे खाय। लड़का बिन ब्याहे रह जाय॥
करज होय वा घर बिनसाय। पर तो भी टिक्कस देइ जाय॥
रोओ सब— । हय हय— ॥
लूटि विलायत भारत खाय। माल ताल बहु विधि फैलाय॥
ताको मासूली छुटि जाय। जामैं लागै लाभ दिखाय॥
देसी मालन इहाँ बिचाय। घाटा भारत के सिर जाय॥
रोओ सब— । हय हय— ॥
रहै विलायत जो हरखाय। भारत सौं धन रोज कमाय॥
चैन करै जो मजे उड़ाय। तिसका टिक्कस भी छुट जाय॥
यह अचरज देखो तो आय। सोचत बुद्धि बिकल हो जाय॥
रोओ सब— । हय हय— ॥
माल गुजारी दीन्ह बढ़ाय। तापर एकर और लगाय॥
रात दिना जब खूब कमाय। मेहनत से जब देंह थकाय॥
तबै खेत में अन्न देखाय। पाला पाथर नासै आय॥
रोओ सब— । हय हय— ॥
इन बिपतन सों जो बचि जाय। तो कुरकी बैठावैं आय॥
करजा लेकर देंय चुकाय। बेचन जाय नगर जब धाय॥
तब वापर चुंगी लग जाय। देयँ बिसार टिकस धरि खाय॥
रोओ सब मुँह— । हय हय— ॥
रिपन गये जब सों उत हाय। तब सों बिपत परी उतराय॥
डफूरिन लाट भये इत आय। प्रथम परे अति सरल सुनाय॥
पर इत आय किये मन भाय। करनी कछू कही नहिं जाय॥
रोओ सब— । हय हय— ॥
रावल पिण्डी खूब सजाय। माल दरबार कीन्ह हरखाय॥

दिल्ली कृत्रिम युद्ध करवाय। जग से सूरन सुभट बुलाय॥
न्यौता भलविधि तिन्हैं जिवाँय। भरल खजाना दिहिन लुटाय॥
रोओ सब मुँह— । हय हय— ॥
अंगरेजन के हित चित चाय। ब्रह्मा पैं बाजे अरराय॥
वेचारे थीवा धरि धाय। कैद किये भारत में ल्याय॥
करैं हाकिमी गोरा जाय। खर्चा भारत सीस बिसाय॥
रोओ सब मुँह— । हय हय— ॥
सुनियत रूस पहूँच्यो आय। ताहू पर नहिं नेक डराय॥
भारत की सी भूमी पाय। दिहिन टिक्कस एक और चढ़ाय॥
सीमा करि मजबूत बनाय। टेवत मोछ हँसत हरखाय॥
तुम सब कहत रोय मुंह वाय। हय हय— ॥
प्रजा मेमना सी चिल्लाय। वनै रोय नहिं आवै गाय॥
अक्की वक्की गईं भुलाय। इनकी ईश्वर करो सहाय॥
महरानी उर दया बसाय। इन्हैं न सूझै और उपाय॥
कहि रोवैं मुंह बाय बाय। हय हय टिक्कस हाय हाय॥

मन की मौज

सं० १९४४

मन की मौज

कुछ मत पूँछो

मन की मौज मौज सागरसी सो कैसे ठैराऊँ।
जिस्का वारापार नहीं उस दर्या को दिखलाऊँ॥
तुमसे नाजुक दिलको भारी भौंरों में भरमाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
काली जखम कलेजे ऊपर कैसे उसे दिखाऊँ।
दर्द जिगर का मन्त्र हमारा सो किस तरह वताऊँ॥
वैद कोई ऐसा नहिं जिस्से दिल की सैन वुझाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
ढूंढ़ जगत को पाया कैसे उसै तुरत प्रगटाऊँ।
विन परखैया चतुर जौहरी किसको इसै दिखाऊँ॥
या अमोल मानिक बिन मोलहिं मूढ़न संग गवाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
दोनों जग के कानों से गर किसी को खाली पाऊँ।
तुरत जलज रज जुगल चरन की उस्को सीस चढ़ाऊँ॥
पर कोऊ मिलता नहिं ऐसा जिसको गले लगाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
पड़ा जो याँ हम पर गुन उसको दिल में चुप हो जाऊँ।
देखा जो कुछ इश्क चमन में कैसे किसे दिखाऊँ॥

हानि लाभ की कुछ मन पूंछो कहने में शरमाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
यह अचरज अति चरित अनूपम कैसे सहज लखाऊँ।
छेम मूल यह मन्त्र प्रेम को कैसे तुरत बताऊँ॥
कहन चहत जिय जोहि जमत गति फिर २ मन समझाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
गो नादान, कुटिल, खल, मूरख, दुनिये में कहलाऊँ।
काम न सुख, दुख, भले, बुरे निज निन्दा सुन न लजाऊँ॥
दिल में जो कुछ पकता उसको किस विधि किसै खिलाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
कोई गुरू न चेला मेला अजब लगा क्या गाऊँ।
कोई दिलबर यार नहीं गमख़ार किसै ठहराऊँ॥
खुद गरजे तो बहुत न सच्चा दिल का कोई पाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
दूं दिल जान माल बल्के सौ सौ सदके हो जाऊँ।
जरा नहीं मुतवज्जह तिस पर हजरत को मैं पाऊँ॥
गैर मुफ्त में यार बने मैं बेगाना कहलाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
आप बड़े औ छोटा मैं फिर कैसे बिधी बताऊँ।
मालिक तुम बन्दा बन्दा किस तरह भला बर आऊँ॥
आप न मानैं एक बात मैं लाख तरह समझाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
कर दिल के सौ सौ टुकड़े मैं दर्पन सा दिखलाऊँ।
परम प्रेम पीयूष सरिस कल कविता रस बरसाऊँ॥

तौ भी बकरी सा पागुर करता जो तुमको पाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
मैं अपने दुखड़े के पचड़े का करुणा रस लाऊँ।
कहनी अन कहनी बातैं कह भारी भरम गवाऊँ॥
चिलम सरिस मुख बाये हँसता तिसपर तुमको पाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
सौ झंझट में उलझों को कैसे कै सुलझाऊँ।
बे दिल के बहलाव भला दिल कैसे कर बहलाऊँ॥
ये ही अनोखापन यांका तो देख देख पछताऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
हार गया जब तुमसे तब फिर क्या वीरता दिखाऊँ।
डाँट के जो कुछ कहिए सुनकर गरदन क्यों न हिलाऊँ॥
बुरा चहे कितनहूँ लगे सुन शरबत सा पी जाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
तिरछी तिउरी देख तुम्हारी क्योंकर सीर नवाऊँ।
हौ तुम बड़े खबीस जानकर अनजाना बन जाऊँ॥
हर्फ़े शिकायत ज़बां पर आए कहीं न यह उर लाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊं॥
लूट रहे हो भली तरह मैं जानूं वले छुपाऊँ।
करते हो अपने मन की मैं लाख चहे चिल्लाऊँ॥
डाह रहे हो खूब परा परबस मैं गो घबराऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
रोज तुमारे देने को मैं कहाँ से रुपया लाऊँ।
बिना लिए तुम पिण्ड न छोड़ो फिर क्या जुगत लगाऊँ॥

यह दुखड़ा तजि ईस और सों कहकर क्या फल पाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
बहुत तंग तुमने कर डाला कब तक रंज उठाऊँ।
सहने का भी कोई दरजा इससे अधिक न पाऊँ॥
ठान लिया है हमने भी कुछ क्यों उसको समझाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
धोखा दिया अजब तुमने वल्लाह खूब सरमाऊँ।
होकर मैं बदनाम गैर संग देख तुमैं दुख पाऊँ॥
लोग पूंछते हैं बाइस बस सुनकर चुप हो जाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
मरजे मुबारक का मरीज तब क्या अहवाल सुनाऊँ।
अजी डाक्टर साहब शक्ल तुमारी देख डराऊँ॥
जो कुछ किया भले भर पाया सोच २ सकुचाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
जाऊँ रोज मजा लेने को अगर माल दे आऊँ।
बिन देखे कल नहीं न बिन रुपये के घुसने पाऊँ॥
कहाँ मिले दुनिया की दौलत जिससे उन्हें रिझाऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
मूं देखी बातैं भी उनकी सुन सुन कर मुसुकाऊँ।
साफ़ जवाब लाख अर्जी पर भी जब हाय न पाऊँ॥
झूठी फ़िक्रे बाज़ी की बौछारों से घबराऊँ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ॥
हजार आशिक अपने ही से जब मैं उसको पाऊँ।
सब के संग बरताव जियादा अपने से लख पाऊँ॥

मगर व अपना ही सा जचता है तब क्या बस लाऊँ ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ ॥
उस दिलवर के फ़िराक़ में चित चूर रहै गुन गाऊँ ।
गो हमसे वह रहे न खुश पर आशिक तो कहलाऊँ ॥
इसका सबब कोई पूछे तो कहकर क्या फल पाऊँ ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ ॥
दिल के गुलशन की बहार में मस्त रहूँ सुख पाऊँ ।
नहीं है ख्वाहिश और किसी से जिससे सीस नवाऊँ ॥
जो इस मजे से ना वाकिफ़ हैं उनको क्या समझाऊँ ।
कहो प्रेमघन प्रेम कहानी कैसे किसे सुनाऊँ ॥

प्रेम पीयूष वर्षा

सं० १९४७

प्रेम पीयूष वर्षा

मंगलाचरण

लसत सुरँग सारी हिये हीरक हार अमन्द।
जय जय रानी राधिका सह माधव बृजचन्द॥
नवल भामिनी दामिनी सहित सदा घनस्याम।
बरसि प्रेम पानीय हिय हरित करो अभिराम॥
यह पियूष वर्षा सरस लहि सुभ कृपा तदीय।
साँचहु सन्तोषैं रसिक चातक कुल कमनीय॥

दोउन के मुखचन्द चितै, अँखिया दुनहून की होत चकोरी।
दोऊ दुहूँ के दया के उपासी, दुहूँन की दोऊ करैं चित चोरी॥
यों घन प्रेम दोऊ घन प्रेम, भरे बरसैं रस रीति अथोरी।
मों मन मन्दिर मैं बिहरैं, घनस्याम लिये वृषभान किशोरी॥

आनन चन्द अमन्द लखे, चकि होत चकोरन से ललचो हैं।
त्यों निरखे नवकंज कली कुच, मत्त मलिन्दन लौं मन मोहैं॥
सो छबि छेम करै बृज स्वामिनि, दामिनि सी दुति जा तन जोहैं।
चातक लौं घन प्रेम भरे, घनस्याम लहे घनस्याम से सोहैं॥

हेरत दोउन को दोऊ औचकहीं, मिले आनि कै कुंज मझारी।
हेरतहीं हरिगे हरि राधिका, के हिय दोउन ओर निहारी॥
दौरि मिले हिय मेलि दोऊ, मुख चूमत ह्वै घनप्रेम सुखारी।
पूरन दोउन की अभिलाख, भई पुरवैं अभिलाख हमारी॥

पान सन्मान सों करैं विनोद विन्दु हरैं,
तृपा निज तऊ लागी चाह जिय जाकी है।
जाचैं चारु चातक चतुर नित जाहि देति,
जौन खल नरनि जरनि जवासा की है।
प्रेमघन प्रेमी हिय पुहमी हरित कारी,
ताप रुचिहारी कलुषित कविता की है।
सुखदाई रसिक सिखीन एक रस से,
सरस वरसनि या पियूप वर्षा की है॥

प्रार्थना

ही में धारे स्याम रंग ही को हरसावै जग,
भरै भक्ति सर तोषि कै चतुर चातकन।
भूमि हरिआवै कविता की हरि दोष ताप,
हरि नागरी की चाह वाढ़ै जासो छन छन॥
गरजि सुनावै गुन गन सों मधुर धुनि,
सुनि जाहि रसिक मुदित नाचै मोर मन।
बरसत सुखद सुजस रावरे को रहै,
कृपा वारि पूरित सदाही यह प्रेमघन॥

आस पूरिवे की याही आस है तुही सों तासो,
आन सो न जाँचिवे की आन ठानी प्रन है।
तेरे ही प्रसाद पाई सुजस बड़ाई तूही,
जीवन अधार याहि जीवन को धन है॥
दीजै दया दान सनमान सों कृपा के सिंधु,
जानि आपनो अनन्य दास खास जन है।

चूक ना बिचारो या विचारे की सु एकौ प्यारे,
इच्छा वारि वाहक तिहारो प्रेमघन है॥

पालै जग सकल सदाहीं जगदीस जोई,
सिरजत सहजहीं त्यों चाहि चित छन मैं।
दूध दधि चाखन को जाँचै ग्वालनीन ढिग,
नाचै दिखराय रुचि रंचक माखन मैं॥
प्रेमघन पूजत सुरेस औ महेस सिद्धि,
नारद मुनीस जाहि ध्यावैं सदा मन मैं।
गोकुल मैं सोई ह्वै गुपाल गऊ लोक वासी,
गैयन चरावत विलोको वृन्दावन मैं॥

रानी रमा को बिसारि पतिव्रत, दै मन गोपी सनेह बिसाहो।
रीझि लखौ रत्नाकर त्यागि कै, वास करील के कुंज को चाहो॥
त्यों सुर सेवा न भाई गुपालन, मीत बनै घन प्रेम निवाहो।
जो रखवारो रहो जग को, सो बनो ब्रज गैयन को चरवाहो॥

वारौं अंग अंग छवि ऊपर अनंग कोटि,
अलकन पर काली अवली मलिन्द की।
वारौं लाख चन्द वा अमन्द मुख सुखमा पै,
वारौं चाल पै मराल गति हूँ गइन्द की॥
वारौं प्रेमघन तन धन गृह काज साज,
सकल समाज लाज गुरुजन वृन्द की।
वारौं कहा और नहि जानौ वीर वापै अब,
बसी मन मेरे बाँकी मूरति गोविन्द की॥

टेढ़ो मोर मुकुट कलङ्गी सिर टेढ़ी राजैं,
कुटिल अलक मानो अवली मलिन्द की।
लींन्हे कर लकुट कुटिल करै टेढ़ी बातैं,
चलै चाल टेढ़ी मद मातेई गइन्द की॥
प्रेमघन भौंह वंक तकनि तिरीछी जाकी,
मन्द करि डारै सबै उपमा कविन्द की।
टेढ़ो सब जगत जनात जबहीं सो आनि,
बसी मन मेरे बाँकी मूरति गोविन्द की॥

मोहन कामहुँ के मन को, जग की जुवतीन को जो चित चोर है।
सेवक जाके सुरेसहुँ से, सोइ चाहत तेरी दया दृग कोर है॥
भाग भली तू लही ये अली, घन प्रेम कियो बस नन्दकिशोर है।
है घनस्याम बनो तुव चातक, जो बृजचन्द सो तेरो चकोर है॥

नव नील नीरद निकाई तन जाकी जापै,
कोटि काम अभिराम निदरत वारे हैं।
प्रेमघन बरसत रस नागरीन मन,
सनकादि शंकर हू जाको ध्यान धारे हैं॥
जाके अंस तेज दमकत द्युति सूर ससि,
घूमत गगन मैं असंख्य ग्रह तारे हैं।
देवकी के बारे जसुमति प्रान प्यारे,
सिर मोर पुच्छ वारे वे हमारे रखवारे हैं॥

वेद बने बरही बर बृन्द, रटै शुक नारद से जस जायक।
व्यास विरंचि सुरेस महेसहु, के हिय अम्बर बीच बिहारक॥

भक्तन के अघ ओघ भयङ्कर, ग्रीषम को त्रय ताप विनासक।
सोई दया बरसै घन प्रेम, भरो घन प्रेम रटै तुव चातक॥

लहलही होय हरियारी हरियारी तैसैं,
तीनो ताप ताप को संताप करस्यो करै।
नाचै मन मोर मोर मुदित समान जासों,
विषय विकार को जवास झरस्यो करै॥
प्रेमघन प्रेम सों हमारे हिय अम्बर मैं,
राधा दामिनी के संग सोभा सरस्यो करै।
घनस्याम सम घनस्याम निसिवासर,
सदा सो निज दया बारि बुन्द बरस्यो करै॥

वा जग वन्दन नन्द को नन्दन, जो जसुदा को कहावन वारो।
जीवन जो ब्रज को घन प्रेम जो, राधिका को चित चोरन हारो॥
मंगल मंदिर सुन्दरता को, सुमेर अहै दया सिन्धु सुधारो।
मंजु मराल मेरे मन मानस, को सोई साँवरी सूरति वारो॥

सम्पति सुयस का न अन्त है विचार देखा,
तिसके लिये क्यों शोक सिन्धु अवगाहिये।
लोभ की ललक में न अभिमानियों के तुच्छ,
तेवरों को देख उन्हें संकित सराहिये॥
दीन गुनी सज्जनों में निपट विनीत बने,
प्रेमघन नित नाते नेह के निवाहिये।
राग रोष औरों से न हानि लाभ कुछ,
उसी नन्द के किसोर की कृपा की कोर चाहिये॥

हमें जो हैं चाहते निबाहते हैं प्रेमघन,
उन दिलदारों हीं से मेल मिला लेते हैं।
दूर दुदकार देते अभिमानी पशुओं को,
गुनी सज्जनों की सदा नेह नाव खेते हैं॥
आस ऐसे तैसों की करैं तो कहो कैसे,
महाराज वृजराज के सरोज पद सेते हैं।
मन मानी करते न डरते तनिक नीच,
निन्दकों के मुँह पर खखार थूक देते हैं॥

कुच कठिनाई की कहौ तौ कौन समता है,
करद कटाछन की काट किहि तौर है।
मृदु मुसक्यानि की मजा औ माधुरी अधर,
पिय को सजोग सुख और किहि ठौर है॥
प्रेमघनहूँ को त्यों पियूष वर्षा विनोद,
अनुभव रसिक विचारैं करि गौर है।
रहनि सहनि सुमुखीन की सुजैसैं और,
वैसैं सुकवीन की कहनि कछु और है॥

काली अलकावलि पैं मोर पंख छवि लखि,
विलखि कराहैं ये कलाप मुरवान के।
पीत परिधान दुति दाब्यो दामिनी दुराय,
लखि मोतीमाल दल भाजे बगुलान के॥
प्रेमघन घनस्याम अति अभिराम सोभा,
रावरी निहारि लाजे घन असमान के।

गरजन मिस करैं दीनता अरज ढारै,
अँसुवान ब्याज वारि विन्दु बरसान के॥

(स्फुट)

लाज न बुद्धि सो काज कछू, बनई सब बात विचित्र नवीनी।
काह कहूँ घनप्रेम तुम्हें, करताहूँ के नाम की लाज न लीनी॥
अष्टमी के निसि को ससि खास, अकास प्रकासन के हित दीनी।
वा सुकमारी सुहासिनी की, अलकावलि की ककही नहिं कीनी॥

सांवरी सूरति मूरति मैन, मयंक लखे मुख जासु लजो है।
मोर पखौवन को सिर मौर, गरे वन माल धरे मन मोहै॥
सीकर सोभा सुधा वरसाय कै, आय हिये घनप्रेम अरो है।
वावरी मोंहि बनाय गयो, मुसकाय के हाय न जानिये को है॥

आनन इन्दु अमन्द चुराय, चकोर चितैं ललचाय न टालो।
ठोढ़ी गुलाब प्रसून दुराय, मलिन्दन लोचन सोचन सालो॥
ह्वै घनप्रेम दया बरसी, रस के बस बानि अनीति सँभालो।
रूप अनूपम देहु दिखाय, दया करि हाय न घूँघट घालो॥

पावस

रट दादुर चातक मोरन सोर, सुने सजनी हियरा हहरैं।
जुरि जीगन जोति जमात अरी, विरहागिन की चिनगीन झरैं॥
घनप्रेम पिया नहिं आये चलौ, भजि भीतरैं काली घटा घहरैं।
लखि मैन बहादुर बादर के, कर सों चपला असि छूटी परैं॥

सावन समान करि आयो री महान,
मैन मीत बलवान साजे सैन बगुलान की।
धनु इन्द्रधनु बान बुंद बरसान बन्दी,
विरद समान कल कूक मुरवान की॥
प्रेमघन प्रान पिय बिन अकुलान लाग्यो,
लखत कृपान सी चलान चपलान की।
धीरज परान हहरान हिय लाग्यो सुन,
धुन धुरवान घोर घुमड़ी घटान की॥

चंचला चौंकि चकी चमकै, नभ बारि भरे बदरा लगे धावन।
कुंजन चातक मंजु मयूर, अलाप लगे ललचाय मचावन॥
छाय रह्यो घनप्रेम सबै हिय, मानिनी लाग्यो मनोज मनावन।
साजन लागीं सिंगार सजोगिन, आवत ही मन भावन सावन॥

नभ घूमि रही घन घोर घटा, चमू चातक मोर चुपातै नहीं।
सनकै पुरवाई सुगन्ध सनी, छिन दामिनि दौर थिरातै नहीं॥
घन प्रेम जगावन सावन है, पर हाय हमैं तो सुहातै नहीं।
मुखचन्द अमन्द तिहारो जबै, इन नैन चकोर दिखातै नहीं॥

कूकैं कोकिलान हिय हूकैं देत आन,
बिरहीन अबलान सोर सुनि मुरवान की।
दादुर दलन की रटान चातकन की,
चिलात छन छन चमकान चपलान की॥
बैठी मान तान भौन भौंहन कमान,
भूलि प्रेमघन बान बीर पीतम सुजान की।

कैसे कै बचैहै प्रान बीर बरखान लखि,
घुमड़ि घमड़ि घन घेरन घटान की ॥

खिलि मालती वेलि प्रफुल कदम्बन,
पैं लपटी लहरान लगी ।
सनकै पुरवाई सुगन्ध सनी,
बक औलि अकास उड़ान लगी ॥
पिक चातक दादुर मोरन की,
कल बोल महान सुहान लगी ।
घन प्रेम पसारत सी मन मैं,
घनघोर घटा घहरान लगी ॥

उड़ैं बक औलि अनेकन व्योम,
विराजत सैन समान महान ।
अरे घन प्रेम रटैं कवि चातक,
कूकि मयूर करै जस गान ॥
छनै छनहीं छन जोन्ह छुवै,
छिन छोर निसान छटा छहरान ।
बलाहक पै जनु आवत आज,
है पावस भूपति वैठि बिमान ॥

नभ घूमि रही घन घोर घटा,
चहुँ ओरन सों चपला चमकान ।
चलै सुभ सावन सीरी समीर,
सुजीगन के गन को दरसान ॥

चमू चँहकारत चतक चारु,
कलाप कलापी लगे कहरान ।
मनोभव भूपति की वर्षा मिस,
फेरत आज दोहाई जहान ॥

सजि सूहे दुकूलन झूलन झूलत,
बालम सों मिलि भामिनियाँ ।
बरसावत सो रस राग मलार,
अलापत मंजु कलामिनियाँ ॥
बितिहैं किहि भातिन सावन की,
यह कारी भयंकर जामिनियाँ ।
घन प्रेम पिया नहिं आये दसौ
दिसि तैं दमकैं दुरि दामिनियाँ ॥

नाच रहे मन मोद भरे,
कल कुंज करैं किलकार कलापी ।
गाय रहे मधुरे स्वर चातक,
मारन मन्त्र मनोज के जापी ॥
झिल्लियाँ यों झनकारि कहैं,
मन मैं घन प्रेम पसारि प्रतापी ।
आय गयो विरही जन के बध
काज अरे यह पावस पापी ॥

चंचला चोखी कृपान बनी,
अवली बगुलान की सैन रही जुर ।

सारँग सारँग है सुर नायक,
जय धुनि दादुर मोरन को सुर ॥
वे घन प्रेम पगी विरहीन पैं,
व्याज लिये वरसा अति आतुर।
आवत धावत वीरता वारि,
भरे वदरा ये अनंग वहादुर ॥

जेवर जराऊ जोति जीगन जनात किल,
किंकिनी लौं कूकनि मयूरन की डार डार।
सारी स्यामताई पै किनारी चंचला की लखि,
प्रेमी चातकन गन दीनो मन वार वार ॥
पुरवाई पवन प्रभाय छहराय छवि,
देखो तो दिखात औ दुरत चंद वार वार।
बदन विलोकन कों रजनी रमनि,
वस प्रेमघन घूघटैं रही हैं जनु टार टार ॥

वक पाँति पताका उड़ैं नभ सिन्धु मैं,
चांप सुरेस धरे छवि छाजत।
जाचक चातक तोपत मोतिन
लौं झरि बुन्दन की वरसावत ॥
देखिये तो घन प्रेम भरे,
प्रजा पुंज से मोर हैं सोर मचावत।
आज जहाज चढ़े महराज,
मनोज मनो घन पैं चढ़े आवत ॥

विरह बढ़ावन या सावन की रजनी मैं,
जीगन के गन को अकास मैं प्रकास है।
चंचला चपल चमकत चहुँ ओर चख,
चितवन हूँ को ना मिलत अवकास है॥
प्रेमघन घन की घटा है घोर घहरात,
घहरात बूँदें उपजाय उर त्रास है॥
पी कहाँ पपीहा साँची कहन भटू है अब,
परदेसी पिय की न आवन की आस है॥

वनी वर्षा की वहार विलोकिवे
काज अटान चढ़ी वह वाल।
दवी दुति दामिनि देखत दीपति,
सुन्दर देह लजाय कमाल॥
उदय घन प्रेम करै मुख मंडल,
सोहत सूहे दुकूल रसाल।
लखौ जनु घेरि लियो चहुँ ओर सों,
चन्द अमन्दहि नीरद लाल॥

शरद

सुभ सीतल सौरभ सों सनि मन्द, वयारि वहै मन भावनी है।
जल ताल सरोवर स्वच्छ खिली, कुमुदावली सोभा बढ़ावनी है॥
वरसावत सी घन प्रेम सुधा, निसि सारद सोक नसावनी है।
चलिये मिलिये वृजचन्द अली, यह चाँदनी चारु सुहावनी है॥

उदोत है पूरव सों वह पूरव, सो पै न जान्यो परै छल छन्द।
अपूरब कैसो अपूरब हूँ तैं, लखात जो पूरो प्रकास अमन्द॥

दोऊ बरसैं घन प्रेम सुधा, चित चोर चकोरहि देत अनन्द।
निसा सुभ सारद पूनव माँहि, लखे जुग सारद पूनव चन्द॥

सौन्दर्य्य

न होतो अनंग अनंग हुतासन,
कोपहु मैं दहतो न महान।
कोऊ कहतो यहि को नहिं मार,
न मारतो साँचहुँ शम्भु सुजान॥
घिरी घन प्रेम घटा रति की,
चित चाहि कै मूरखता मन आन।
अनूपम रूप मनोहर को तुव,
जौ न कहूँ करतो अभिमान॥

लखतै वह रूप अनूप अहो,
अँखिया ललचाय लुभाय गई।
मन तो विन मोल बिक्यो घन प्रेम,
प्रभावित बुद्धि बिलाय गई॥
अब चैन परै नहिं वाके विना,
पढ़ि कौन सी मूठ चलाय गई।
वह चन्दकला सी अचानक आय,
सुहाय हिये मैं समाय गई॥

लखत लजात जलजात लोयननि जासु,
होत दुति मंद मुख चंदहि निहारी है।
रति मैं रतीहू राती जाकी ना विरंचि रची,
सची मेनका मैं ऐसी सुन्दरी सुधारी है।

नागरीसकल गुन आगरी सुजाकी छवि,
लखि उरवसी उरवसी सोच भारी है।
बेगि बरसाय रस प्रेम प्रेमघन आय,
तो पैं बनवारी वारी बरसाने वारी है॥

मृगलोचनि मंजु मयंक मुखी,
धनि जोवन रूप जखीरनी तू।
मृदुहासिनी फाँसिनी मोहन को,
कच मेचक जाल जँजीरनी तू॥
धन प्रेम पयोनिधि वासिहि बोरनि,
नेह में नाभि गंभीरनी तू।
जगनायकै चेरो बनाय लियो,
अरी वाह री वाह अहीरनी तू॥

नख सिख

चितै दृग मीन मलीन कियो,
मद हीन भये गज चाल मराल।
छवी द्युति दन्तन दामिनि ढोढ़ी,
लखे पियरे भये डाल रसाल॥
भुजा छबि त्यों घनप्रेम लखो,
दियो वास उदास कै ताल मृणाल।
लगाय मसी मुख डोलत मंद सो,
चन्द विलोकत भाल विसाल॥

मुख मंडल पै कल कुन्तल को,
कहि रेसम के सम दूसत हैं।

अलि चौर सिवार औ राहु वृथा,
यमपास मिसाल मसूसत हैं ॥
कवि भूलैं सबै घन प्रेम सुनो,
सुधा सम्पति को मिलि मूसत हैं ।
जनु सारद पूनव के निसि मैं,
जुरि व्याल सबै ससि चूसत हैं ॥

पीन पयोधर शम्भु नहीं कल,
काम कमान भ्रुवैं छवि छाजत ।
है विपरीत जु नासिका कीर,
लखे अलकावलि जालन भाजत ॥
देखिये तौ घनप्रेम दोऊ दृग,
आनन पैं कहिवे की न हाजत ।
है जहँ पूरन इन्दु प्रकास,
विकास तहीं अर्विन्द विराजत ॥

कुन्दन सी दमकै द्युति देह, सुनीलम सी अलकावलि जो हैं ।
लाल से लाल भरे अधरामृत, दन्त सुहीरन सों सजि सोहैं ॥
रत्न मई रमनी लखि कै, घन प्रेम न जो प्रगटै अस को हैं ।
वाल प्रवालन सी अँगुरी, तिन मैं नख मोतिन से मन मोहैं ॥

खम्भ खरे कदली के जुरे जुग,
जाहि चितै चित जात लुभाई ।
हेम पतौअन सों लदि कै,
लतिका इक फैलि रही छवि छाई ॥

देखियै तो घन प्रेम नही पैं,
खिले जुग कंज प्रसून सुहाई।
हैं फल बिम्ब में दाड़िम बीज,
दई यह कैसी अपूरवताई॥

भरो जल सुन्दर रूप अनूप,
सरीरहि है सर स्वच्छ नवीन।
मृणाल भुजा त्रिवली है तरंग,
तथा चकवाक पयोधर पीन॥
सजे घन प्रेम भरी रमनी सिर,
वार सवार सिवार अहीन।
अहो यह नाचत हैं मुख पैं दृग,
ज्यों इक वारिज पैं जुग मीन॥

मुख

न हेरहु व्यर्थ कोऊ उपमा, मन में न मसूलहु मानि अयान।
सुनो घन प्रेम प्रवीन नवीन, गिरा मन मोहिनी पै धरि ध्यान॥
दोऊ दृग वान धरे मुख मंडल, भूपित भौंहन को कलतान।
मनो अलकावलि राहु विलोकत, मारत चन्द चढ़ाय कमान॥

प्रभात जम्हात उठी अँगिराय,
उठाय दोऊ कर पुंज उदोति।
मिली जुग पंजन की अँगुरी भुज,
मध्य उगी मुख की जगि जोति॥
रसै वरसै रमनी घन प्रेम,
सुधा सुखमा की वनी मनो सोति।

किधौं जनु दामिनि मंडल ह्वै,
ससि घेरत कैसी सुसोभित होति ॥

थकी विपरीत की जीत रनै,
न सकी स्रम सों सुकुमारि अँगेज।
लियो अवलम्ब अनूपम आनन,
लाल तकीयन पैं सजी सेज ॥
लगी बरसै सुखमा घन प्रेम,
मनो लरि लाख गुनो लहि तेज।
धरे सिर के तर राहु को सोय,
रह्यो है कलानिधि काढ़ि करेज ॥

अधर

मन्द महा मधु माधुरी कन्द,
नवात न वात की आवै विचार मैं।
ईख न लोची नहीं सरदा,
नहिं जामुन सेव कै तूत हजार मैं ॥
चूसि लह्यो रसना घन प्रेम,
जो वा मधुराधर के सुधासार मैं।
सो रस के रस को नहिं लेसहु,
पाइये आम अँगूर अनार मैं ॥

नेत्र

अनुराग पराग भरे मकरन्द लौं,
लाज लहे छवि छाजत हैं।

पलकैं दल मैं जनु पूतली मत्त,
मलिन्द परे सम साजत हैं॥
घन प्रेम रसै बरसै सुचि सील,
सुगन्ध मनोहर भ्राजत हैं।
सर सुन्दरता मुख माधुरी वारि,
खिले दृग कंज विराजत हैं॥

दुरे दृग घूंघट की पट ओट सों, चोट कियो करैं लाखन धूल।
लिये जुग भौंहन की घन प्रेम, दिखाय रहे तरवार अतूल॥
भला मतवारे महा जुलमीन, नवीन उपद्रव के नित मूल।
तिन्हैं धनु अंजन रेख में हाय, दई दै दई बरुनी सत सूल॥

बिरह

सीर उसास मसूसनि सों सब,
सैल समूहन देखिये ढाहत।
त्यों ससि सूर सितारन सागर,
हूँ उर पीर की ज्वालिका दाहत॥
है घन प्रेम प्रभाय महान,
वियोग को वेग कहा को सराहत।
ए घन सी उनई अँखियाँ,
असुवान हीं सों जग बोरिबो चाहत॥

वा दिन अकेली जो नवेली मिली कुञ्ज जिहि,
मोह्यौ तुम बाँसुरी बजाय मीठे सुर सों।
प्रेमघन प्रेम दरसाय रस बरसाय,
मन्द मुसक्याय कै लगाई जाहि उर सों॥

नित मिलिबे की आस दै के सुधहू ना लई,
मरन चहत अब सो बिरह ज्वर सों।
मीत मन मोहन के मिलै मन मोहन तौ,
टेरि कहि दीजै एती बात वा निठुर सों॥

बादिहि बढ़ाओ बकवादिहि छुटै ना प्रीति,
चन्द की चकोर और सुमन मलिन्द की।
लागी मोहिं चाह की चुड़ैल कुछ ऐसी भगी,
भभरि कै जासों लाज गुरजन वृन्द की॥
प्रेमघन प्रेम मदिरा की मतवारी होय,
खोय बुधि चेली भई मैं मनोज रिन्द की।
भूल्यो उभय लोक सोक वीर जबहीं सो आनि,
बसी मन मेरे बांकी मूरति गुबिन्द की॥

जाकी आय सुधि बुधि विकल बनाय देत,
कुंजनि की कोऊ पतिया जो कहूँ खरकी।
रोम उलहत मन बूड़ै बिथा बारिद मैं,
प्रेमघन बरसि बहावै उर घर की॥
जकरी हूँ लाज की जंजीरन सों ऐंची लेय,
मानो मीन वारी बंसी धीमर के कर की।
धरकी हमारी फेरि छतिया कहूँ धौं बीर,
बाजी हाय बंसी फेरि वाही बाजीगर की॥

डारै मोहनी की मूठ मीठे सुर को सुनाय,
हरै बुधि बस कै सुजान नारी नर की।

मारै तान जब मार मारै प्रान व्याकुल कै,
चितहिं उचाटै सुधि भूलै देहुं घर की ॥
आकरपै प्रेमघन अपने ही ओर त्यों,
विद्वेपै मन वैरी के चवाइनै नगर की।
जोर जादूगर से कैसे जादू को जनाय हाय,
बाजी कहूँ वंसी फेरि वाही बाजीगर की॥

कुच

शम्भू कहैं कवि दाड़िम श्रीफल,
कंज कली पै अली छुविया है।
दुन्दुभी दोय धरी उलटी,
चकई चकवा की मिसाल दिया है॥
त्यो घन प्रेम कहैं घट हेम कोऊ,
पर झूठी सवै वतिया है।
काम के बान की ढाल बनी,
छतिया पै दोऊ कुच ये फुलिया है॥

यद्यपि छार कियो ही हुतो,
छिन मैं करि कोप जवै जिहि रुटे।
पै तिहि ज्याय खिस्याय भयो,
शरणागत ब्याहि विवाह अनूठे॥
ये घन प्रेम न चूचुक हैं,
कुच के अरु नाहि कहैं हम झूठे।
शम्भु के सीस पै जाय रह्यो है,
दोऊ कर काम दिखाय अँगूठे॥

केश

उमंग सों संग अलीन अन्हाय,
कढ़ी तजि गंग तरंगन वाल।
लसैं जल भीज दुकूल अनंग से,
अंगन की छबि छाय कमाल॥
पयोधर पीन पैं यों लटकी,
घन प्रेम घिरी घन सी लट जाल।
लखो लहि प्यार अपार महेसहिं
चूमि रहे जनु व्याल विसाल॥

चढ़ी भौंह कमान समान लसैं,
उभै लोचन वान करालन सों।
वर बज्र पयोधर पीन महा,
बरुनी के वुझे विष भालन सों॥
वरसै घन प्रेम सुधा ससि आनन,
तौ मधुराधर लालन सों।
बचि पाय सकै कहो कैसे कोऊ,
पै दई अलकावलि व्यालन सों॥

मान

पाँय परे पिय कों झिझकारत,
तानत भौंहन मानि मनावन।
सावन मैन जगावन है,
सुन सोर लगे वन मोर मचावन॥

छाय रह्यो घन प्रेम प्रभाय,
चहूँ विरही हियरा हहरावन।
छाड़ि सकोच औ सोच सबै,
बलि वेगहि बीर मिलो मन भावन॥

मान कही तजि मान लसौं, शुभ सूहे दुकूल सिंगार सजीजै।
सावन मैं मन भावन के हिय, सों लगि कै अधरामृत पीजै॥
यों बरसैं घन प्रेम रसै, हरसैं हिय ह्वै बस पीय पसीजै।
सीख सयानी सुनो सजनी, यहि मास मैं सीरी उसास न लीजै॥

बसन्त

आग जनु लागी गुले लाला अवलीन,
कचनार औ अनारन पैं बरसि रहे अँगार।
बौरी अमराई कर बौरी सी दई धौं दई,
सुमन पलास नख केहरि सों करैं वार॥
प्रेमघन छायो बनि वधिक वसन्त प्रान,
विरही बचैंगे बिधि कौन करिये विचार।
टूकैं कै करेजे हिय हूकैं दै अचूकैं हाय,
लागी काली कोकिलैं कहूँके बैठि डार डार॥

बगियान वसन्त बसेरो कियो,
बसिये तिहि त्यागि तपाइये ना।
दिन काम कुतूहल के जे बने,
तिन बीच वियोग बुलाइये ना॥
घन प्रेम बढ़ाय कै प्रेम अहो,
बिथा बारि बृथा बरसाइये ना।

चितै चैत की चाँदनी की चाह भरी,
चरचा चलिवे की चलाइये ना ॥

मनकन लागीं मंजु मंजरी रसालन पैं,
काली काम पाली त्यों मृदंग लाग्यो ठनकन ।
गनकन लागी राग फाग अनुराग,
सरसान वगियान चुरियान लागी खनकन ॥
अनकन लागीं प्रेमघन प्रेम वस ज्यों
गुलाबन पैं आय भौर भीरैं लागीं भनकन ।
सनकन लाग्यौ मन वनिता वियोगिन को,
सौरभन सानी ज्यों समीर लाग्यौ सनकन ॥

जाके वल सकल कँपायो जगजन सोई,
पाय कै वियोग व्यथा सिसिर समन्त को ।
हाहाकार सोर चहुँ ओर सों करत घोर,
लीने धूरि आवत उड़ावत दिगन्त को ॥
प्रेमघन अवलोकिये तौ वन वागन,
उजारै तरु पुंज छीनि छवि छविवन्त की ।
तोरत परन झकझोरत लतान आज,
डोलै वावरी सी वनी वैहर वसन्त की ॥

वने वेलन के वँगले वगियान,
प्रसूनन की झरि लावती हैं ।
विछि फूलन सेज पैं चान्दनी चंद की,
चौगुनो चित्त चुरावती हैं ॥

घन प्रेम सुगन्धित सीतल मन्द,
समीर सुखैं सरसावती हैं।
हमैं सौ गुनी सारद सों सजनी,
रजनी ये वसन्त की भावती हैं॥

बन बागन फूले प्रसून सुगन्धित,
सीतल वायु बहावती हैं।
मद माते मलिन्दन की भनकैं,
भल कोकिल कूक सुनावती हैं॥
घन प्रेम पसारन काम कुतूहल,
चाँदनी चित्त चुरावती हैं।
सुख साँचो सँजोग सँजोइवे को,
रतियाँ ये वसन्त की आवती हैं॥

रसाल की मंजुल मंजरी पै,
किलकारत कोकिल औ कल कीर।
पसारत सों घन प्रेम रसै,
शुभ सीतल मन्द सुगन्ध समीर॥
बस्यो बन बागन बीच वसन्त,
रही छबि छाय विलोकियो बीर।
विकास प्रसूनन पुंज तें कुंज,
गलीन गलीन अलीन की भीर॥

चुम्बन कै कलिका मुख गुंजत,
मंजु मलिन्दन की समुदाई।

प्रेम सिखाय रहीं घन प्रेम,
लता तरु जूहन सों लपटाई ॥
मान की बान बिसारि मिल्यौ,
सुनिये रही कोकिल कूक सुनाई।
आज भयो ऋतुराज को राज,
फिरै सिगरे जग काम दुहाई ॥

मद माते भिरे भँवरे भँवरीन,
प्रसून मरन्द चुचातन सों।
किलकारत कोइलैं मंजु रसालन,
मंजरी सोर सुहातन सों।
घन प्रेम भरी तरु तैं लपटी,
लतिका लदि नूतन पातन सों।
मन वौरैं न कैसे सुगन्ध सने,
वन वौरे वसन्त की वातन सों ॥

वरखा विताई सारी सरद सकेलि आई,
दुखदाई रजनी बियोगिन बिचारे की।
बिलखि हिमन्तहूं को अन्त कियो कोऊ विधि,
सिसिर सिरान्यो आस आवनि अवारे की ॥
उमड्यो उदधि रस जाग्यो अनुराग राग,
पाई ना खबर अजौं प्रेमघन प्यारे की।
कैसे धरों धीर वलवीर बिन बीर लखि,
बनी बांकी बनक वसन्त वजमारे की ॥

घूँघट उघारत ललित लतिकान कों,
बजाय मंजु पैंजनी भँवर भनकन्त की।
मुसकाय कुसुम विकासन के मिस,
दाड़िमन दरकाय दिखरावै दुति दन्त की॥
न्हाय मकरन्दन पराग पट धारि हरै,
परसत प्रेमघन मति मति मन्त की।
ल्यावन मनोज निज मीत काज आज चली,
बाल गजगामिनी लौं बैहर वसन्त की॥

महकन लागीं अमराई मौर मंजुल सों,
खिलि गुलेलाला औ गुलाब लागे गहकन।
जहकन लागीं कूर कोइलैं अमन्द चन्द,
लखि चहुँ ओर सों चकोर लागे चहकन॥
अहकन लागीं बरसन रस प्रेमघन,
लखि विरहागि की दवारि लागी दहकन।
बहकन लागी ज्यों ज्यों बैहर बसन्त त्योंही,
बनिता वियोगिनी अधीर लागीं बहकन॥

स्फुट

फाग मैं सोही सुहाग भरी,
सखियान के संग सों जैसहि छूटी।
त्यों घनप्रेम भरे गह्यो मोहन,
ऐंचत मोतिन की लर टूटी॥
बाल रँग्यो तन लाल गुलाल सों,
गाल मल्यो रस सम्पति लूटी।

नैननि सों अँसुवा बरसै,
सिसकै सिकुरी जनु बीर बहूटी ॥

जग बाढ़्यो विरुद्ध विधान बखानि,
न वैर विरोध बढ़ावनो है।
कुल रीति अचार विचार सबै,
गुन गौरव भूरि भुलावनो है ॥
लखि तुच्छता और सठता घन प्रेम,
हिये न व्यथा उपजावनो है।
अब तो नर नीचन बीचन मैं,
बसि कै यह वैस वितावनो है ॥

झलकि निहारि हारि मनहिं लग्यो जो संग
छूटत छिनत मानो मनि विन व्याल भो।
घेरे प्रेमघन रहै नेरे तबहीं सो मेरे,
देखत हो धावै आवै निपट निहाल भो ॥
चारो ओर चरचा चलत अब आली याको,
सुनि सुनि सोचि सोचि मों मन कमाल भो।
हेरी वाहि वादिन जो नेक हंसि हेरी सो तो,
हाय वा गुपाल मेरे जिय को जवाल भो ॥

आव महताव झुकी झाँकन झरोखे नेक,
चितै चित प्रेमिन लगाय देत दावा सी।
कब हूँ दुरत अंग दीपति दुराय फेरि,
प्रगटे करत गढ़ धीर पर धावा सी ॥

प्रेमघन रस बरसाय लचकाय लंक,
चकित मृगी सी थिरकन देत कावा सी।
परी मृग नैनन गुरेरि भौंहन मुरेरि,
भागी|कित जात हाय छलकि छलावा सी॥

सिसकीन सुधा बरसावै मनौ,
मुरि मारत मोहनी मूठ भरी।
कर दोऊ दबाय कै नीवी उरोजन,
जंघन जोरि जनौ जकरी॥
घन प्रेम घिरी पिय अंक मैं आय,
ससङ्क मयङ्क मुखी निखरी।
जनु जाल मैं जाय परी सफरी,
सी परी उघरै सजी सेज परी॥

भूलत सकल काम धाम त्यों अराम सबै,
आठो जाम काम रहि जात एक ओही सों।
राम की दुहाई भूख प्यास हूँ हराम होत,
अपने बिगाने लखि पात बटोही सों॥
कही नहीं आवै यह प्रेम की कहानी मोंहि,
जान परी प्रेमघन हाय दिन दो ही सों।
लोक लाज त्यागि जात सबै भय भागि जात,
जब मन लागि जात काहू निरमोही सों॥

सोहत सिंदूर भरी मांग तै मरु कैशचि,
अलकावली के जाल जाय उरझानो जात।

मन्द मुसक्यानि औ मधुर बतरानि पर,
मोहि २ मानो बिना मोलहि बिचानो जात॥
प्रेमघन उरज उतंग के कँगूरन सों,
गिरि त्रिवलीन के तरंग अकुलानो जात।
हेरनि तिहारी हरिनी के दृगवारी हाय,
हेरत हीं हेरत सु मो मन हिरानो जात॥

मोर के मुकुट की लटक अटक्यो कै आइ,
अलकावली के जाल जाय उरझाय गो।
अरविन्द आनन बस्यो कै चोखे चखनि,
चितौन भय आय बन बरुनी समाय गो॥
प्रेमघन मुसक्यानि माधुरी पग्यो धौं बलि,
प य तौ बताय वाकी कौन छवि छाय गो।
हेरी हरिनी के दृगवारी हरि नीके हेरि,
हेरत हीं हेरत सु मो मन हिराय गो॥

साँसति मिलान की दसा त्यों जुग फूटिबे को,
देखि सीख लेहु चहे चौंसर नरद सों।
प्रेमघन हैं जे प्रेम भाजन ते एक जानैं,
लेन मन मारि कै कटाछन करद सों॥
फेरि प्रेमी चातकनि छाया न छुआवै,
ललचावै नेह नीर सूने नीरद सरद सों।
चाह की न चाह मैं छलावै चित भूलि जासों,
दिल न लगावै हाय काहू बेदरद सों॥

मान करि तान जुग भौंहन कमान,
जाय सूती सेजियान चढ़ि ऊपर अटान की।
थाक्यो मन भावन मनाय पै न मानी कान,
मानिनी दियो ना वीनतीन पै सुजान की॥
ताही समय कहरान लागे मुरवान,
प्रेमघन उमड़ान चमकान चपलान को।
डरन डेरान चौंकि परी छुतियान,
लगी प्रीतम सुजान सुन धुन धुरवान की॥

जनु जुग जंघ कछू भार लौं लये हैं हा हा,
दौरिवे मैं मेरे पाय ससकि ससकि जाय।
ख्याल ही भुलानो कछु खेल को भयो धौ कहा,
नैनन मैं मानो नींद कसकि कसकि जाय॥
प्रेमघन तेरी सौंह लोम उलहत आवै,
लीन्हे हूँ उसास चोली मसकि मसकि जाय।
क्योंहू बान्हि राखूं कसि कसि बन्द घांघरी के,
तौ हूँ देखु बीर चीर खसकि खसकि जाय॥

मन मानिक लइबे मैं तो प्रवीन, कै दीन दया दरसाते नहीं।
अनरीत हजार हमेस करै, हँसि प्रीति की रीत की बातै नहीं॥
कपटीन सों क्यों घनप्रेम करैं, हमैं ओछो सनेह सुहाते नहीं।
दिल देय तों देखत ही पै कोऊ, दिलदार तो हाय दिखाते नहीं॥

बौधन के हांथ वुधि वेचु ना जइन होय,
नान्हक कबीर दादू पंथ जनि गहुरे।

कीनाराम सालिग्राम राजा राम मोहन औ,
आलकट दयानन्द के न दुख दहुरे॥
मूसा औ मोहम्मद सों मूसा जनि जाय तैसे,
भूले पादरीन को न भूलि सीख लहुरे।
प्रेमघन धारि प्रेम घन मन मेरे नित्य,
राधाकृष्ण राधाकृष्ण राधाकृष्ण कहुरे॥

गोल कपोलन पै मन हारी, लसैं लट काली लटैं छुटि छूटी।
लागिहै डीठि कहूँ न कहूँ, मन मैन की मूठि न जासु है चूटी॥
मान कही घन प्रेम न तो, धन जोवन सों वनि जाइहौ लूटी।
सारी न सूही सुगन्ध सनी, सजि प्यारी चलो वन वीरबहूटी॥

जामिनी नेह के चन्द अमन्द, सु या दुखियाँ अँखियान के तारे।
चित्त चकोर लौं मानत नाहिं, विना तुव रूप अनूप निहारे॥
चातक लौं घन प्रेम तुम्हैं, लखते ही वजावै चवाव नगारे।
श्याम सयान अलीन वचाय कै, आइये ह्यां की गलीन मैं प्यारे॥

प्यारे पिया परदेस वसे, वर वैस वियोग मैं खोवती हैं।
अँखिया घन प्रेम भरी मग जोहत, आसुन तैं तन धोवती हैं॥
निसि पावस में वड़भागिनी वै, सुख साजे संजोग संजोगती हैं।
सुथरी सेजिया सजि सूहे दुकूलन, सों पिय के संग सोवती हैं॥

समस्या पूर्ति

प्रीति वर्षा की औरै रीति वर्षा की,
मानवारी प्रानहारी नीति यार वर्षा की है।

साचहूँ उमंग है अनंग पान भंग,
मन मोहन मलार ललकार वर्षा की है।
प्रेमघन नाचत मयूरन को माल,
चमू चारु चातकन की पुकार वर्षा की है।
प्यार वर्षा की क्या खुमार वर्षा की,
घेरघार वर्षा की क्या वहार वर्षा की है॥

नैनन सों जबही ते दुरे, विरहानल ते नित तावन वारे।
साचहुँ मानत है घन प्रेम, लखे मन तौ छल छन्द तिहारे॥
आस नहीं मिलिवे की दुखी अब, प्रान बचै इमि कैसे पियारे।
मोम के मन्दिर माखन को मुनि बैठो हुतासन आसन मारे॥

ग्यारहें अम्बर पै लहरै बढ़ो सिन्धु कुहू निस में दुति धारे।
कागद की एक भारी जहाज पै, राजत मेरु कई कजरारे॥
देखत हैं घनप्रेम भरे तहां बाँझ के पूत बिना दृगवारे।
मोम के मंदिर माखन को मुनि, बैठो हुतासन आसन मारे॥

खूब समस्या दई तुमने, कब के रहे वैर छली हिय धारे।
हारे सदाई अहैं तुमसे, तुम्है लाभ कहा पै कवीन के हारे॥
ज्यों तुमरी बतियान को नाहीं, पत्यानि परै सुनि तैसे विचारे।
मोम के मंदिर माखन को मुनि, बैठो हुतासन आसन मारे॥

मित्र कियो अनुरोध हमैं इक, त्यों कसमैं हमहूँ अब खा ली।
हेतु यही जिय में निरधारि, सवैया कई तुरतैं रचि डाली॥
यद्यपि है घन प्रेम प्रयास, समस्या निरी यह नीरस वाली।
पूरी करैं पै तऊ अब तो, केहि कारन कौन बनाय है जाली॥

न्हाय कै हाय सुहाय दुकूल, सुखावत है अलकावलि आली।
नीर चुअैं बरसावत ज्यों, सुधा लै ससि सों सिव ऊपर व्याली॥
है घनप्रेम मनोहरता, मुखि की दुति तामैं दिखाय निराली।
ऐसी प्रभा निरखेहूँ भला, केहि कारन कौन निकालिहै जाली॥

घूमत बाग भरी अनुराग, सुहाग लसी चहुँ ओर तू आली।
त्यागि कै चित्र विचित्रित भौन, झरोखन कुंजन मैं चलि हाली॥
छाई लतान के जालन सो, कढ़ि अंग अनंग की ज्योति उजाली।
लखि मोहे सबै घनप्रेम तबै केहि कारन कौन निकालिहै जाली॥

भीतर भौन में बैठी अरी, तू जबै निखरी मुख जोन्ह रसाली।
ग्रीषम के दिन दोपहरी हूँ, कढ़ी झंझरीन सों ज्योति उजाली॥
घनप्रेम प्रकास को काज नहीं, तो झरोखो बनावनो लाभ से खाली।
× × × केहि कारन कौन निकालि है जाली॥

तार्‍यो कृपा करि आप सदाहिं, अजामिल आदि अधीन घनेरे।
पै नहीं पापी जु पायहौ और, तिहूँ पुर में तुम मों सम हेरे॥
जो अधमीन उधारन हो, घन प्रेम तो नाथ दया दृग देरे।
धारन मन्दर सुन्दर साँवरे, आय बसो मन मन्दिर मेरे॥

तजि साज सिंगार इकन्त बसी, भरै सीरी उसास ज्यों भोगिनी है।
दृग मूँदेहि ध्यान में लीन सदा है, मनो घन प्रेम प्रयोजनी है॥
नहिं बूझै बुझाये झिपैं झिझिकै, वह कौन से रोग की रोगिनी है।
न विचारत कैसहूँ जानि परै, वह जोगिनी है कि वियोगिनी है॥

औरन की जनि आस करो वनि, हीन न दीन से वैन उचारो।
नाँहि कोऊ के बनाये बनै, बिगरै न कहूँ बिगरे हिय धारो॥

संकट शत्रु सबै नसि है, बद को बदि होत सदा सुख कारो।
माखन चाखन हारो वही, सब को घनप्रेम है राखन हारो॥

विषय बिधान विष संचय बिचार हिय,
प्रेमघन कहा मन भरमाइबे में है।
लाभ को न लेस लिखे भाल सों अधिक,
धन मान जस काज देस देस धाइबे में है॥
साधन कठिन जोग जप जेते प्रेमघन,
समय गँवाय कहा पछताइबे में है।
तजि और आस जनि होय तू निरास,
सुख राधिका रमन के सरन जाइबे में है॥

बरसत नेह यह बरसत रूप वह,
बरसत मेह सांझ समय दूर धाम है।
प्रेम घन मन उपजावै ललचावै यह,
मन्द मुसकाय छबि धरि सत काम है॥
गरजि २ वहु त्रास उपजावै उर,
निपट अकेली दूसरी न कोऊ वाम है।
कहा करूं कैसे जाऊं जानि ना परत,
उतै घेरे घनस्याम इतै घेरे घनस्याम है॥

आई पुरवाई की चलनि चँहकार चारु,
चातक चमू की निसि द्यौस चारो पहरन।
अम्बर उड़त बगुलान की अवलि कुंज,
नाचि २ मुदित मयूर लागे कहरन॥

कलित कदम्बन सों लपटी लवंग लता,
छिपि छन छन छन छवि छवि छहरन।
प्रेम घन मन उपजाय सरसाय हिय
घेरि घन सघन घनेरे लगे घहरन॥

अतसी कुसुम सम शोभा मैं लसत,
विज्जु लता कै वसत पट पीत अभिराम है।
अवली भली है वगुलान की विराज रही,
गर मैं मनोहर कै मोतिन को दाम है॥
प्रेमघन मधुर मधुर धुनि गरजनि,
बाजत कै बांसुरी रसीली सुधा धाम है।
रंचकहि निहारे चित चोरे लेत आली मेरो
यह घनस्याम है कि वह घनस्याम है॥

भरे अनुराग सों खेलत फाग, उछाहित गोपिन सों मिलि ग्वाल।
उड़ावैं अबीर कबीरहि गाय, बजै डफ झांझ कहूं करताल॥
भई वर्षा रंग की घन प्रेम, भरी चपला सी चलीं बहु बाल।
रहे चकि चौंधि सबै तिहि काल, गई मलि लाल के गाल गुलाल॥

सूर्य स्तोत्र

सं० १९४९

श्री सूर्य स्तोत्र प्रारम्भ

दोहा

जगत प्रकासत जागरित, करत हरत भय अंस।
जय जय दिनकर देव मो, मन मानस के हंस ॥१॥
जय प्रत्यच्छ परब्रह्म प्रभु, प्रथम जागती ज्योति।
जोहि जाहि भय खोय सब, सृष्टि जागरित होति ॥२॥
जय जय जगदाधार भय हरन भानु भगवान।
पाहि पाहि असरन सरन, मंगल मोद निधान ॥३॥
जय जय देव दिनेश जय, कृपासिन्धु जगदीस।
बारंबार प्रनाम करि तोहिं नवावहुँ सीस ॥४॥
जयति जगत रंजन करन, हरत दोष दुख नित्य।
जय जय असरन सरन प्रभु, पाहि देव आदित्य ॥५॥
जय दिनेश जगदेक प्रभु, सृष्टि स्थिति लय हेतु।
देहु दया दृग दास पर, हे दुख सरिता सेतु ॥६॥
जय जय मुद मंगल करन, हरन अखिल अघ क्लेस।
पाहि प्रेमघन दया करि, जगपति देव दिनेस ॥७॥
द्रवहु दिवाकर दास पर, अब निज कृपा प्रकासि।
पाहि २ असरन सरन, हरन सकल रुज रासि ॥८॥
दीनबन्धु तुम बिन सुनै, कौन दुहाई दीन।
अभय थान को दान को, देय सिन्धु तजि मीन ॥९॥

द्रवहु दया कर दास पर, हे प्रभु करुना ऐन ।
दीनबन्धु तुव चरन तजि, सरन मोहि अब है न ॥१०॥
द्रवहु दीन पर दयानिधि, करहु कृपा विस्तार ।
हरहु रोग दुख दोष सब, सविता जगदाधार ॥११॥
छमहु सकल अपराध अब, हे प्रभु कृपा निधान ।
रोग दोष दुख दास के, हरहु भानु भगवान ॥१२॥
अखिल लोक रंजन करत, हरत सकल तम रासि ।
प्रभु दिनेस त्यों दास के, देहु दोष दुख नासि ॥१३।
हरहु नित्य जग अघ तिमिर, रोग शोग दुख आप ।
मेरो दिनकर देव कर देव दूर त्यों ताप ॥१४॥
जप तप धर्म अनेक करि, तोपि सकत को तोहि ।
दया दीठ निज फेरि प्रभु, तुमहिं बचावहु मोहिं ॥१५॥
कर्म धर्म जप ज्ञान बल, औरहिं निज निस्तार ।
मो कँह तौ प्रभु आपकी, कृपा एक आधार ॥१६॥
जय जय दिनकर देव कर देव दोष दुख दूरि ।
या निज दास अनन्य के, हरहु नाथ भय भूरि ॥१७॥
मैं पापी पामर परम, तप्यो पाप के ताप ।
द्रवहु दया वारिद छमहु, नाथ सरन अब आप ॥१८॥
निज दुष्कर्म समूह फल, पाय बन्यौं मैं दीन ।
दीनबन्धु करि कृपा अब, बनवहु प्रभु दुख हीन ॥१९॥
तुम तजि और न सरन मोंहि, कहूँ भानु भगवान ।
द्रवहु दया करि नाथ यह, हरहु दोष दुख दान ॥२०॥
यद्यपि कृपा असंख्य तुव, पावहु आठहु जाम ।
नूतन जाचन हितन मैं, लखौं और कहुँ ठाम ॥२१॥

देव दिवाकर दास पर, द्रवहु दया करि नाथ।
रोग सोग दुख दोष मम, दूरि करौ इक साथ ॥२२॥
तुम तजि जाचौं और किहि, अहो भानु भगवान।
अब तुमरे या दास को, नाहिं सरन कहुँ आन ॥२३॥
हरहु दीनता दास की, दीन बन्धु दिन नाथ।
करहु कृपा विनवहुँ सरन, आप नवावहुँ माथ ॥२४॥
बर्यो रोग आरत सरन, आयो तुव दिन नाथ।
अब तो याकी लाज प्रभु, अहै आप के हाथ ॥२५॥
तुमहिं दिवाकर देव, रोग सोग दुख दल दरन।
मम चिन्ता हरि लेव, त्राहि त्राहि असरन सरन ॥२६॥

श्री सूर्य्य स्तोत्र प्रारम्भ

(रोला छन्द)

जय जय परब्रह्म परतच्छ सरूप सोहावन।
जय जय आदि ज्योति साकार ईस दरसावन॥१॥
जय जय जय जग सृष्टि स्थिति लय कारन कारन।
जय जय जय जग जनक जयति जय जग दुख हारन॥२॥
जय पूषा, जय सूर्य्य, सहस्र अंशुमाला धर।
जयति भानु भगवान, भास्कर देव, दिवाकर॥३॥
जय जय जगदाधार, जयति सब देव नमस्कृत।
जय जय असरन सरन, हरन दुख दोष अपरमित॥४॥
जय आदित्य अशेष शक्तिधर, जन मन रंजन।
जय सुपर्ण, जय तपन, जयति जय प्रभु जग वन्दन॥५॥
जय जय जगत प्रदीप, अर्य्यमा, भग, त्वष्टा रवि।
जयति गभस्तिमान, अज, अर्क तमोनुद, नभ छवि॥६॥
आदि देव, जय द्वादशात्मा, जगत चक्षु नित।
सविता, धाता, विवस्वान, वेदाङ्ग, वेद कृत॥७॥
जयति विभावसु विश्वकर्म्म हरिदेश्व विभाकर।
जय पतङ्ग ग्रहपति विहंग खग नारायण नर॥८॥
जयति अंशुमाली प्रद्योत, सुरथ कमलाकर।
एकचक्र जय गायत्री जय प्रिय जोगीश्वर॥९॥

ओंकार जय, जातवेद, अक्षर जय अच्युत।
दुःख व्याधिहर, सुमनप्रिय, वैद्यवर अद्भुत ॥१०॥
जय जगकर्म्मसाक्षी, जय मार्तन्ड, तमनाशन।
दहन हिरण्यरेत, कुन्डली, कृपालु प्रतर्दन ॥११॥
जय जय कश्यप गोत्र विभाकर; अरुण, सुरथ धर।
जय जय विभव, विष्णु, जय वेद निलय विश्वम्भर ॥१२॥
जय प्राची तिय तिलक भाल सिन्दूर सुशोभित।
जयति प्रतीची भामिनि गाल गुलाल सुरंजित ॥१३॥
जय तैरत नभ निर्मल ताल मराल मनोहर।
जयति प्रफुल्लित कैधो कमल सहस दल सुन्दर ॥१४॥
जय आकास सिन्धु के मानहुँ दीप स्वर्णमय।
कैं तिहि मथत सुहात सुमणि मय मन्दर अभिनय ॥१५॥
जयति अनादि ज्योतिमय अम्बर महल झरोखे।
जयति ब्रह्म प्रतिबिम्बित दर्पन दिपत अनोखे ॥१६॥
जय जय नभ आराम कल्पतरु कंचनमय भल।
देत उठाये निज़ कर शाखा मनमाने फल ॥१७॥
जय जय नभ वन चारिनि कामधेनु ज्योतिर्मय।
हेम थाल मानहुँ चारौ फल परिपूरित जय ॥१८॥
कनक कलस जय उभय लोक सम्पति जलपूरित।
जयति सुदर्शन चक्र भक्त दुख दल दानव हित ॥१९॥
जय जनु महास्वर्ण सम्पुट सब सिद्धिन संयुत।
जय अम्बर सागर वड़वानल कुण्ड सुअद्भुत ॥२०॥
जय नभमण्डल पट मंडप वर कलस कनक मय।
सूरज मुखी सुमन शुभ नभ वाटिका जयति जय ॥२१॥

तुम विरंचि तुम विष्णु, तुमहिं प्रभु महारुद्र हर।
सिरजत पालत जग संहारत तुमहिं निरन्तर ॥२२॥
सिरजत जग दै निज ऊपनता जीव जियावत।
दै प्रकास पालत पोषत परिपुष्ट बनावत ॥२३॥
त्यों लय करत सृष्टि तुमहीं प्रभु प्रलय काल महँ।
पुनि आरम्भ करत सिरजन हरि महा तिमिर कहँ ॥२४॥
हे प्रभु तुमहिं सकल जग के प्रधान रखवारे।
तुमहिं सकल जग जीवन के जीवन धन धारे ॥२५॥
तुमहिं असंख्य लोक रंजन तुमहीं अधिनायक।
तुमहिं जनक तुमहीं अधार तुमहीं परिपालक ॥२६॥
निज ऊपनता दै जग बीजन तुम उपजावत।
निज प्रकास दै सुन्दर विधि तिन कहँ परिपालत ॥२७॥
तुव प्रकास कहँ पाय जीव जग के सब जीवत।
तुव प्रकास कहँ पाय जगत सब होत कर्म्म रत ॥२८॥
निज करसन करसन करि पंकिल भूमि सुखावहु।
जग जीवन जीवन हित जग जीवन बरसावहु ॥२९॥
तुमहिं जगत सों अंधकार अधिकार निकारो।
सीत भीति अरु रोग कष्ट ह्वै उदय निवारो ॥३०॥
तुव प्रकास लहि तारावलि ससि निसा प्रकासत।
दीपतिधारी सकल वस्तु निज निज दुति भासत ॥३१॥
तुव प्रकास लखि संकित जन मन त्रास बिसारैं।
तुव प्रकास लखि अधम मनुज निज कृत्य निवारैं ॥३२॥
तुव प्रकास लखि छुद्र जीव निज हिंसक को भय।
तजि विचरत स्वच्छन्द अहार करत निज संचय ॥३३॥

तुव प्रकास खल कैरव संकोचत भय सों भरि।
भृंगन मुक्त करत अर्विन्द अवलि प्रफुलित करि ॥३४॥
तुव प्रकास लहि निशा अन्त मैं मिलि खग संकुल।
चितवत प्राची दिसि विनवति करि कलरव मंजुल ॥३५॥
तुहिं लखि उपस्थान सह अर्घ्यप्रदान विप्रगन।
करत वेद निज शाखा मन्त्रन सह प्रसन्न मन ॥३६॥
तुव प्रकास लखि कै खूसट उलूक लुकि कोटर।
चमगीदर गेदुर गरहित खग भरे भूरि डर ॥३७॥
तुव प्रकास लहि ओस विन्दु मोतिन छवि छीनी।
चटकीं कली गुलाब मोहि मधुकर मन लीनी ॥३८॥
तुमरी ही ऊषणता सों सव अन्न वनस्पति।
होत पुष्प फल युक्त वढ़ति पाकति अरु उपजति ॥३९॥
तुव प्रकास लहि सोम तिनहिं पोषण यस पावत।
तुव प्रकास लहि पौन समय पर तिनहिं सुखावत ॥४०॥
महा महा दुख दुखी लोग तुहि आराधत जे।
तुव प्रसाद सब क्लेश खोय कै सुखी होत वे ॥४१॥
राज कोप भाजन जे कारागार निवासी।
मुक्त होत तेऊ विनु संशय तुमहिं उपासी ॥४२॥
जे जे जब जग दुख आरत ह्वै तुम कहँ ध्यायो।
ते तब मनोभिलासित, तुरत फल तुमसन पायो ॥४३॥
महामहिम राजर्षि संकटापन्न भये जब।
पूजि तुमैं ते सकल मनोरथ सिद्ध किये सब ॥४३॥
महाराज श्री रामचन्द्र प्रभु तुव प्रसाद लहि।
सब सुरगन सों अजित हन्यो रन मध्य रावनहि ॥४४॥

धर्म्मराज कुन्तीसुत तुव प्रसाद बहु विप्रन।
चिर दिन लौ बन मैं करि सक्यो नाथ परिपालन ॥४६॥
जे आराधत तुमहिं तिनहिं नहिं उभय लोक भय।
मन माने फल लहत सहज हे प्रभु बिनु संसय ॥४७॥
रोग सोग रिपु पाप ताप तिनकहुँ सपनेहुँ नहिं।
जे नर वर प्रभु भक्ति सहित तुम कहँ आराधहिँ ॥४८॥
नमस्कार जे तुम कहँ करत नाथ प्रति वासर।
सहसहु जन्मन दुखी दरिद्र वे होत कबहुँ नर ॥४९॥
जे षष्ठी सप्तमी दिवस रवि हे प्रभु तुम कहँ।
पूजत भक्ति सहित दुर्लभ न तिन्हें कछु जग महँ ॥५०॥
पापी परम सुरापी निज कृत कर्म्म फलन लहि।
दुखित सरन तुव आय नसावत निज सन्तापहि ॥५१॥
रोग सोग दुख दारिद सों आरत ह्वै जे नर।
तुमहिं अराधत जे प्रभुतिन सों भय भजि जात दूरतर ॥५२॥
भ्रूण निहन्ता भूसुर हू के जीवन हारी।
मित्र द्रोह विश्वासघात कृत पातक भारी ॥५३॥
तेऊ तुव आराधन करि निज पाप नसावत।
तुम्हरी कृपा पाय सहजहिं चारौ फल पावत ॥५४॥
महापाप फल कुष्ठ आदि जे रोग भयंकर।
तुहि आराधत होत सहज तिन सो विमुक्त नर ॥५५॥
औरहुँ भाँति भाँति के जे जग में दुख भारी।
तिन सब कहँ प्रसन्न ह्वै सकहु सहज तुम टारी ॥५६॥
तासों अब हे नाथ ! त्यागि औरन की आसा।
आयो तुमरी सरन लहन मन की अभिलासा ॥५७॥

हे प्रभु यह दासानुदास तुव परम तुच्छतर।
भूलि तुम्हैं तुव दुस्तर माया को बनि अनुचर ॥५८॥
बिना बिचार बिना डर त्यों ह्वै तासों प्रेरित।
मानि परम सुख दियो पापही मैं अपनो चित ॥५९॥
मम कृत पापन की संख्या कोउ सकै नहीं गनि।
तिन कहँ हे प्रभु सकौं भला मैं कौन भाँति भनि ॥६०॥
महा महा उत्कट अघ करतहिं रह्यौं निरन्तर।
काम क्रोध मद मोह लोभ बस ह्वै निसिवासर ॥६१॥
जिन फल भोगन की चिन्ता कबहुँ न उर आन्यौं।
हँसी खेल सम निपट तुच्छ जा कहँ अनुमान्यौं ॥६२॥
पै अब तिनके फलन लेखि बाढ़ी उर चिन्ता।
जिनको हे प्रभु तुमहिं छाड़ि नहि और निहन्ता ॥६३॥
हे प्रभु यह गुनि कै तुव चरन सरन अब आयो।
निज दुख मेटन काज जोरि कर सीस-नवायो ॥६४॥
या सरनागत दीन दास पर दया दीठि दै।
सफल मनोरथ करहु सकल दुख दोष दूरि कै ॥६५॥
हे हे करुना ऐन रैन सुख सब मनोरथहिं।
हरहु दास के सकल दोष दुख दायक पापहिं ॥६६॥
हे हे करुणागार एक आधार जगत के।
हरहु दास के दुख प्रभु दायक फल अभिमत के ॥६७॥
त्राहि त्राहि हे दीनबन्धु करुणा के सागर।
त्राहि त्राहि त्रयताप हरन, तिहुँ लोक उजागर ॥६८॥
तासों अब हे नाथ ! त्यागि औरन की आसा।
आयो तुमरी सरन लहन मन की अभिलासा ॥६९॥

मंगलाशा

सं० १९४९

मंगलाशा अथवा हार्दिक धन्यवाद

रोला छन्द

धन्य ! दिवस यह जानहु भारतवासी भाई ।
धन्य ! भूरि भागन सों आज घरी यह आई ॥
धन्य धन्य जगदीश सच्चिदानन्द दया मय ।
सदा सबै थल परिपूरन करुना बरुनालय ॥
सब के पालक रच्छक सुहृद समान न्यायधर ।
दियो मंगलाशा भारत कहँ धन्य कृपाकर ॥
धन्य भूमि भारत सब रतनन की उपजावनि ।
वीर विबुध विद्वान ज्ञानि नर बर प्रगटावनि ॥
यदपि सबै दुखसों सब भाँति भई है आरत ।
तऊ अनन्य अनेक सुतन अजहूँ लौं धारत ॥
यथा एक सोई है जाकी सुयश पताका ।
फहरत आज अकास प्रकासत भारत साका ॥
लखत जाहि जग कौतुक लौं अचरज सों मानत ।
अहैं मनुज भारत मैं अजहूँ लौं जिय जानत ॥
तासों धन्यवाद परमेसहिं देहु अनेकन ।
करहु सफलता हेतु बिनय सब ह्वै विशुद्ध मन ॥

जाकी कृपा प्रभाय गयो भारत को दुरदिन।
यह अंगरेजी राज इते आयो प्रयास विन॥
स्वस्थ भये स्वच्छन्द स्वाद लहि हर्षित हम सब।
पाय ज्ञान विद्या नव उन्नति लखन लगे अब॥
हरे अनेकन दुख राजा विन कहे हमारे।
बचे अहैं, वा नए भए जे टरत न टारे॥
वे विन जाने अहैं, करैं का वे विन जाने।
हमहुँ कहैं किमि वसत दूर वै देश विराने॥
गयहुँ न राज सभा में हम सब पैठन पावैं।
कहत कर्म्मचारी गन ये सब इतै न आवैं॥
राज सभा में काज कहा है जित जातिन को।
दुःख यहै जो नहि उपाय अब है कछु इनको॥
अहै ईस माया विचित्र नहिं जाय बखानी।
पूरब जन्म कर्म्म हूँ को फल मन अनुमानी॥
बृटिश राज की प्रजा बृटिन औ हिन्द उभय की।
लखहु दशा पर युगल भाग के अस्त उदय की॥
वै निज देश हेतु विरचत हैं नीति नियम सब।
विन उनकी सम्मति कछु राजा करत भला कब॥
राज बृटिश को अति विशाल जाकहँ तुम जानत।
जामैं अस्त न होत भानु यह निश्चय मानत॥
तिन सब को वेई निज प्रतिनिधि द्वारा शासत।
राज शक्ति साँचहुँ उन परजनहीं मैं भासत॥
राजा नामै हेतु करत सब प्रजा प्रबन्धहिं।
पर उन कहँ इतनेहूँ पैं सपनेहुँ सँतोषनहिं॥

औ हम भारतवासी गन निज दशा कहन को।
जाय सकत नहिं तहाँ भूलि कै एकौ छन को॥
तब हमरी सब दुःख कथा को कथन वहाँ पर।
रह्यो वहीं के सभ्यन के आधीन सरासर॥
कह्यो कबहुँ जो दया कियो कोउ धर्म्म परायन।
बिना यथारथ ज्ञान सोऊ नीके कहि जायन॥
तासों कोऊ भारतवासी के बिना वहाँ पर।
भारत के दुख मिटिबे की आशा अति दुस्तर॥
यह बिचारि कै कई सुजन भारत के वासी।
दुखी देखि निज देश दशा विद्या गुन रासी॥
गए धाय इङ्गलैण्ड यही आशा उर धरि कै।
पहुँचैं राजसभा मैं युक्ति नई कछु करिकै॥
निज विद्या बुधि बचन चातुरी को दिखायकै।
बृटिन प्रजा के हमहुँ बनै प्रतिनिधी जायकै॥
नहिं उपाय इहि के सिवाय कछु और अहै अब।
राज सभा मैं पहुँचि दुःख निज गाय कहैं तब॥
दयावान धारमिक सभासद जे उदार चित।
हिन्द हितैषी अँगरेजन सो हिल मिलि कै नित॥
दै सहायता उन्हैं ग्रहन कै उनकी सिच्छा।
करैं यही मिसि यत्न और प्रारब्ध परिच्छा॥
यदपि रह्यो यह परम असम्भव कठिन मनोरथ।
उट्यो कोऊ नहिं कण्टकमय गुनि विकट जासु पथ॥
तदपि चले ये वार वार कसिकै निज परिकर।
हारि हारि थकि बैठे आकर लौटि २ घर॥

पै दादाभाई नौरोजी महा वीर वर।
हार्‌यो थक्यो न करत रह्यो उद्योग निरन्तर॥
विजय रूप उद्योग सुफल पायो सो अब के।
जासों रही नहीं सुख की सीमा हम सब के॥
धन्य देश है ग्रेट वृटिन इङ्गलेण्ड खण्ड धनि।
जहाँ स्वच्छ स्वच्छन्दता रहति है चेरी बनि॥
राजति त्यों स्वाधीनता सरस सीमा के अन्तर।
राजा प्रजा दुहूं के सुखहिं सवाँरि परस्पर॥
धन्य धन्य तहँ सेन्ट्रल फिन्सबरी मण्डल अति।
धनि धनि लिबरल असोसिएशन जो उत राजति॥
यदपि धन्य है सब लिबरल अंगरेज़न को दल।
जाके कारन है वृटेनियाँ को यश उज्वल॥
तऊ धन्य है धन्य सभासद ए लिबरल वर।
प्रगट दिखायो जिन उदारता यह साँची कर॥
अचरज मान्यो अनहोनी गुनि सबै जाहि सुनि।
चहुँ ओरन सों धन्य धन्य की पूरि रही धुनि॥
भारत मैं तो मानो घर घर आनन्द छायो।
लखियत है हर एक नरन को हिय हरखायो॥
ह्वै कृतज्ञ सब कहत प्रेम सोँ अतिशय विह्वल।
'अहो धन्य! तुम फ़िन्सबरी के साँचे लिबरल॥
धन्य तुमारी यह उदारता औ धनि साहस।
सत्य प्रतिज्ञा पालनता तुमरी धनि धनि बस॥
धन्य धन्य तुमरी दृढ़ता औ गुन ग्राहकता।
पक्षपात सो रहित धन्य पर उपकारकता॥

नहिँ यासों तुम निज उदारता ही दिखरायो।
इङ्गलिश जाति भरे को गौरव जगत जनायो॥
महरानी की करी प्रतिज्ञा तुम सच कीन्यो।
भारत को साँची हितैपिता को यश लीन्यो॥
परम उच्चपद-अधिकारी अँगरेज़ अनेकन।
महा मधुर कहि वचन हमारे मोहि लिये मन॥
दिये अनेकन आशा जाहि रहे हम ताकत।
ह्वै निराश थकि गये मौन गहि मन मैं माखत॥
पै जो उन सब कह्यो ताहि तुम करि दिखरायो।
जासों हम सब के मन में विश्वास अस आयो॥
सब विधि उन्नति करिहै इँङ्गलिश जाति हमारी।
जामें दृढ़ प्रमाण है पहिली कृत्य तुमारी॥
कारन सो गोरन की घिन को नाहिँ न कारन।
कारन तुमहीं या कलङ्क के करन निवारन॥
कारनहीं के कारन गोरन लहत बड़ाई।
कारनहीं के कारन गोरन की प्रभुताई॥
कारनहीं है कारन को गोरन गोरन में।
कारन पै जिय देन चहत गोरन हित मन मैं॥
कारन की है गोरन मैं भगती साँचे चित।
कारन की गोरन हीं सोँ आशा हित को नित॥
कारन को गोरन की राजसभा मैं आवन।
को कारन केवल कहिकै निज दुख प्रगटावन॥
कारन क्रन नहीं शासन गोरन पै मन मैं।
कारन के तौ का कारन घिन जो कारन मैं॥

गोरन को जो कहत नकारन कारन रोकौ।
नहिं वैठैं ए गोरन मध्य कहूँ अवलोकौं॥
महा मन्त्रि को कथन मेटि तुमहीं विन कारन।
गोरन राजसभा मैं कारन के वैठारन॥
के कारन तुम अहौ, अहौ प्रिय साँचे लिवरल।
कारन के अब तौ तुमहीं कारन कारन बल॥
सारदूल दल मैं तुमहीं यह थाप्यो हाथी।
त्यों तुमहीं सरवस वाके रच्छा के साथी॥
कियो काम तुम तौन जौन कोउ न कहुँ सोच्यो।
साँचहुँ कारन के जिय की तुम कसकहि मोच्यो॥
पाव अरब जन मैं तैं चुन्यों एक तुम ऐसो।
जैसो ढूँढ़ि न लहै कोऊ काहू विधि वैसो॥
दियो मान तुम वाहि अधिक निज प्रतिनिधि करिकै।
कन्सर्वेटिव के दल को कोलाहल हरिकैं॥
नौरोजी को आप पार्लिमेण्ट सभ्य करि।
साँचहुँ लियो सवै भारतवासिन को मन हरि॥
भारत को धन राज लियो औरै अँगरेजन।
पै निश्चय हम सव को लीन्यो तुमहिं आज मन॥
गुनि अपार उपकार आप को हुलसत हिय अति।
धन्यवाद किमि देहिँ तुमैं? न विचारि सकत मति॥
धन्य! धन्य! प्रति रोम कहत आपुहिँ सोँ वरवस।
भारतवासी कवहुँ नहीं यह भूलि सकत जस॥
नवल कृपा तुमरी भावी मङ्गल की आशा।
उपजावति वहुभाँति हिए दै दृढ़ विश्वासा॥

सो निज करतव लाज राखियो सदा विचारत।
भारत के दुख हरहु वेगि जो है अति आरत॥
देखि तुमारी दया दयामय ईसहु तुम पर।
दया कियो दै दियो राज लिवरल दल के कर॥
कलियुग कँह वहु लोग कहत करजुग इमि प्यारे।
साँझ समय जो देय सोई पुनि लहै सकारे॥
करहु दया औरहु भारत पर औ फल पाओ।
वृटिश राज पर सदा तुमहिं सब हुक्म चलाओ॥
मिस्टर ग्लैडस्टन वजीर आज़म ह्वै गाजैं।
लिवरल दल की राजसभा मैं विजय विराजैं॥
दया आपकी रहै सदा भारत के ऊपर।
भारत भूमी पैं बरसैं सुख सलिल निरन्तर॥
यहै देत आसीस तुमैं हम ह्वै प्रसन्न मन।
सत्य करैं जगदीश सच्चिदानन्द दया घन॥
ए भाई! दादाभाई नौरोज़ सुघर वर।
आवहु प्यारे तुमहिँ तुरत भेंटहि लगाय गर॥
धन्य मातु जिन जन्यो तुमैं धनि पिता तुमारे।
धन्य गाम धनि धाम जाम जन्म्यो जित प्यारे॥
धनि पारस के पारसीन को कुल जित पारस।
प्रगट रूप सों प्रगट भयो प्रगटावन को जस॥
जो भारत को साँचो आज सुपूत कहावत।
सब भारतवासी जापैं अभिमान जनावत॥
हे दादाभाई। तुमरी किमि करैं वड़ाई?
दई जाहि दै दई वड़ाई वड़ो वनाई॥

कहत सबै भारतवासी गन हिय हरखाई।
भारतवासिन के तुम साँचे दादाभाई॥
साँचे दादा हौ तुम साँचे दादाभाई।
भाईहू सो दीनी. जानै अमित बड़ाई॥
हे प्यारे नौरोज़ जी निपट नवल साज सों।
भारत को नौरोज़ कियो तुम अवसि आज सों॥
शोक 'ब्राडला' के वियोग को तुमहिँ मिटायो।
मुरझी आशा लता हरित करि पुनि लहरायो॥
विजय तुमारी अहै विजय जातीय सभा की।
सिगरे भारत की तासों गौरव अति याकी॥
करतव अपने हीं को पायो नहिं तुम यह फल।
भारतवासी कारन को कीन्यो मुख उज्वल॥
कारे करन जोग सब कारन के प्रगटायो।
अहैं नकारे कारे यह भ्रम दूर बहायो॥
जे निज देश प्रबन्धहु के हित परम नकारे।
कहे निकारे कारे रहे सोई तुम प्यारे॥
चुने गये गोरन सों गोरन के देशै हित।
करन प्रबन्धहि काज सुराज सभा मैं थापित॥
भए जु तुम तब सब कारे किमि होहिं नकारे।
कारे यह गुनि फूले अँग समात नहि प्यारे॥
कारो निपट नकारो नाम लगत भारतियन।
यद्यपि कारे तऊ भागि कारी बिचारि मन॥
अचरज होत तुमहुँ सन गोरे बाजत कारे।
तासों कारे कारे शब्दहु पर हैं वारे॥
अरु बहुधा कारन के हैं आधारहि कारे।
विष्णु कृष्ण कारे कारे सेसहु जग धारे॥

कारे काम, राम, जलधर जल बरसन वारे।
कारे लागत ताही सन कारन को प्यारे॥
तासों कारे ह्वै तुम लागत औरहु प्यारे।
यातै नीको है तुम कारे जाहु पुकारे॥
यहै असीस देत तुम कहँ मिल हम सब कारे।
सफल होहिं मन के सबही संकल्प तुमारे॥
वे कारे घन से कारे जसुदा के बारे।
कारे मुनिजन के मन मैं नित विहरन हारे॥
मङ्गल करैं सदा भारत को सहित तुमारे।
सकल अमङ्गल मेटि रहैं आनन्द विस्तारे॥
कारे गोरन की महरानी को सुख साजैं।
गोरन के मन कारन के हित काज विराजैं॥
सत्य करै जगदीस सबै आसीस हमारी।
राजसभा मैं देहिं सदा जय तुमहिं मुरारी॥

प्यारे अरे कारे तुही उज्जल किये है मुख,
कारन को गोरन मैं करि प्रभुताई है।
कबहूँ न कोऊ जाहि सोच्यो हुतो,
होनहार ताहि लरि करि विजय ध्वजा फहराई है॥
बदरी नरायन नरायन दया सों,
नवरोज़ नवरोज़ छवि भारत लखाई है।
भारत निवासी कहैं भारत निवासिन कों,
दादाभाई साँचहूँ तू भयो तू दादाभाई है॥

धन्यवाद के सहित यह कवित्त को उपहार।
बदरी नारायन समर्पित कीजै स्वीकार॥

हास्य बिन्दु

सं० १९५५

हास्य बिन्दु

भजन

एक समय सूसा* के मन्दिर नोकराज* महराज सिधारे।
शेक हेंड कै तुरत सूस जी इजी चेर पर लै वैठारे॥
आइस मिश्रित सोडा वाटर भरि टमलर दै चुरुट निकारे।
सुलगायो घँसि मैच बिहसि कहि इक प्याली टी पीअहु प्यारे॥
ब्रेक फ़ास्ट पुनि टिफ़िन खाय अरु डिनर चाभि श्रम सकल विसारे।
आज भये कृत कृत्य देखि प्रभु तुमहिं भाग निज गुनि वहु भारे॥

खेमटा

कहनवा मानो हो मियां टट्टू*।
गेंदा खेलो फिरहिरी नचावहु हाथ से छुओ न लट्टू॥

ग़ज़ल

चपत खाने को सर झुकाये हुये हैं।
भरतदास से लौ लगाये हुए हैं॥
कड़ी चोट क्या दिल पै खाये हुए हैं।
जो घामड़ की सूरत बनाए हुए हैं॥
अजब देव मलऊन काशी† शुकुल हैं।
वहुत इसको हम आज़माये हुए हैं॥

---

* ये प्रेमघन जी के भतीजे हैं, जिनको वे उन नामों से पुकारा करते थे।

† ये मिर्जापूर में प्रेमघनजी के कृपापात्रों में से थे। आप आनन्द कादम्बिनी प्रेस के मैनेजर भी पहले थे।

पद

नोको काव कहों मैं तोकों।
अस मन आवत चार तमाचे इन गालन पै ठोंकों॥

कथा वार्ता दिल्लगी के प्रचारी।
सवै शास्त्र तत्वज्ञ औ चित्त हारी॥
अचारी[1] अहैं याचते अन्न कन्नः।
स वै पातु यूष्मान पड़्क्का प्रपन्ना॥

रामदीन सुतो जातः गौरी नक्षत्र सूचकः।
तस्य पुत्रो अभूत धीमान् ज्वाला[2] दत्तेति ज़ारजः[3]॥

देवप्रभाकर[4] प्रखर पंडित हैं महान्।
त्यों पद्मनाभ[5] हैं पाठक बुद्धिमान्॥
करते सदैव संकर्षण[6] हैं विचार।
ह्वै हैं परास्त ये दोऊ भट किस प्रकार॥

श्रीराम राम भज लो श्रीराम* राम।
विश्वेश्वरार्चन† करो उठि सुवह शाम॥

---

१ इनका नाम नारायणदत्त आचारी था आप प्रेमघनजी के यहाँ पंडित थे।

२ ये प्रेमघन जी के पुरोहित हैं, अब भी आप मिर्जापुर में रहते हैं।

३ इसका अर्थ है दोगला।

४, ५, ६, ये तीन शीतलगंज ग्राम के विद्वान पंडित थे।

* ये दो भृत्य थे।

† ये प्रेमघनजी के एक कारिन्दा थे।

श्रीमन् महेन्द्र* को करो झुकि कै प्रणाम।
शिवदत्त निर्मल करो तब और काम॥
माया की उलझन लगी संता पड़ा बेहाल।
लट्ठा छुट्टा पंडित कै कतहूँ काट न लीन्यो गाल॥

कवित्त†

भगवती प्रसाद के प्रमाद को ठिकानो नाहिं,
बूढ़ो गौरीशंकर भयंकर कहायो है।
माताभीख लाल की गोटी सदा लाल रहे,
लाल को बिहारी ह्वै अनारी पछुतायो है॥
माताबदल पांड़े अदल को बदल करैं,
राजाराम कृपा करि सब को सुरझायो है।
बाछाजू के जेते हैं मुसाहेब समझदार,
लाल घिसिआवन सबही को घिसिआयो है॥

शिवबर्द‡ लाल महिमा विशाल।
मेटी यस जेकर लाल गाल॥
तालन में भूपाल ताल है, और ताल तलैया।
बर्दन में शिवबर्द लाल हैं और बरद सब गैया॥
ज्वालादीन मलीन मति बिन्दादीन प्रवीन।
आय अलीगढ़ में भये पूरी खाय वे दीन॥

---

* ये प्रेमघनजी के वंश के हैं और प्रेमघनजी के म्यानेजर थे।

† इस कवित्त में प्रेमघनजी ने अपने भाइयों से विभाग के समय विभाग करने वाले कार्यकर्त्ताओं का नाम तथा उनकी पटुता का वर्णन है।

‡ ये प्रेमघनजी के रसोइया थे।

भरा क्रोध मः का वृथा आय गर्जः
सुसा शास्त्रि वर्यः सुसा शास्त्रि वर्यः

पगाले[1] बंगाले[1] रहत हैं साले दिहल के,
मनोहारिन वारिन जुगल भमनी जिनकी युवा।
तिन्हैं तो व्याहा है अनत ले जाकर के कहूँ,
बची जो थी वृद्धा दिहल[1] के माथे मढ़ दियो॥

सुनो जी टट्टू जी महराज।
कि तुम बदमाशों के सिरताज॥
तमाचे खाओगे तुम आज।
करोगे फिर जो ऐसा काज॥

श्री बाबू बेणी प्रसाद। यद्यपि नहिं जानत कवित स्वाद॥
श्री बदरीनाथ प्रसाद। और नहीं नो बाद विवाद॥

है अजब कुदरत खुदा के शान की।
जान की दुशमन हुई है जानकी॥
कहाता था जमाने में जो एक दिन हूर का बच्चा।
वही क्या बन गया अब देखिए लंगूर का बच्चा॥

आये अनखाये संकष्टहरण[2] शर्मा।
गुर के घर जाय जाय पढ़त मार खाय खाय।
संध्या को संध्या करि लौटे हैं घर माँ॥

---

१ नौकर थे।

२ एक ब्राह्मण विद्यार्थी।

हार्दिक हर्षादर्श

सं० १९५७

हार्दिक हर्षादर्श

अर्थात्

महारानी बिक्टोरिया की हीरक जुबली के अवसर पर विरचित

कवित्त

संकित सत्रु उलूक लुके लखि जासु प्रताप दिनेसहि जानी।
फूली रहै प्रजा कंज सुखी सर देस मैं न्याय के नीर अघानी॥
कीरति, वय, परिवार औ राज दराज मैं है 'घन प्रेम' को सानी ?
देख्यो निहारि विचारि भलैं जग तो सम जाई तुही महरानी॥

दोहा

बिजयिनि श्री विक्टोरिया देवी दया निधान।
करै तिहारो ईस नित सहित ईसु कल्यान॥
सपरिवार सुख सों सदा रहित आधि अरु व्याधि।
राजहु राज सुनीति संग प्रजा परम हित साधि॥
कीरति उज्वल रावरी और अधिक अधिकाय।
सारद पूनौ जोन्ह सम रहै छोर छिति छाय॥

रोला छन्द

धन्य दीप इंग्लेण्ड, नगर लण्डन सुन्दर वर।
राज प्रसाद "केनसिंगटन" धनि जाके अन्दर॥

धन्य 'कैंट की डचेज़' "ड्यूक एडवर्ड" नामधर।
लह्यो सुता जिन तुम सी, लाख सुतन सों बढ़कर॥
धनि अट्ठारह सौ उन्नीस ईसवी को सन।
धनि चौबीस मई तुव जन्म दिवस मन रञ्जन॥
धन्य बीसवीँ जून अठारह सौ सैंतिस की।
बृटेन राज लहि जबै जगाई भाग बृटिश की॥
तुम सों प्रथम उतै राजे बहु रानी राजे।
रहे बीर, न्यायी प्रतापिहू बाजे बाजे॥
पै तुम सों सम्बन्ध कहा उनको महरानी।
भयो ग्रेट है ग्रेट बृटेन लहि तुहिँ अभिमानी॥
कहत "एलिज़ाबेथ" रानी कहँ कोऊ आप सम।
पै अनेक अंशन मैं रही आप सोँ वह कम॥
कहँ परिवार, प्रताप, राज, बय, तुम सम पायो।
कहँ सब प्रजा बृटेन को हित चित बनि अपनायो॥
शान्ति सुखहिं कब लह्यो दूर करि कलह लराई।
रानी छोड़ि राज राजेसुरि कब कहवाई॥
तेरे हित सुख फल बीजन बोए विधि उन दिन।
उन्नति अँकुर तासु बड़ाई देय ताहि किन॥
नहिँ यूरप नहिँ एशिया लही तोसी रानी।
अमेरिका अफ़रिका आदि की कौन कहानी॥
तुव गुन नामहुँ सों अति अधिक "अलेक्ज़ेन्ड्रीना।
विक्टोरिया महरानी तुव सम नृपती ना॥
भयो सिकन्दर हिन्द राज नहिं मरयो गुवाही।
तेरी विजय पताका जग सब दिसि फहराई॥

मिटी राज राजत तेरे सब कलह लराई।
जाति भेद, मत भेद, नीति हित, जो चलि आई॥
राजा प्रजा दुहूँ को दृढ़ विश्वास दुहुँन पर।
भयो तिहारेहि समय भूलि भय लेस परस्पर॥
तेरे साधु सुभाय, दयामय नीति विगत छल।
माता लौं सुत सरिस प्रजा हित करन बानि बल।
भई विलाइत प्रजा अभय, स्वच्छन्द अनन्दित।
चढ़ि उन्नति के सिखर जगत जन कियो चकितचित॥
पूरन विद्या, कला, शिल्प व्यापार, मान, धन।
लहि अघाय हूँ गई लहै तौ हूँ नित नूतन॥
जासों वृटिश प्रजा तो कहँ चित सोँ महरानी।
अपनी मानी, राजभक्ति तो मैं दृढ़ आनी॥
लह्यो और नृप देसराज छल, बल, कौसल सोँ।
पै निज दया सुभाय, न्याय निर्मल के बल सोँ॥
प्रजा हृदय पर कियो राज तुम सदा विगत भय।
कियो प्रजा दुख दूर, कियो तिनहित सुख सञ्चय॥
राज्यो कौन राज राजा बिन दोष इते दिन।
साँचहुँ साठ बरिस राजीँ इक तुम कलंक बिन॥
तेरो प्रबल प्रताप सकल सम्राट दबायो।
खीस बायकै फ़रासीस जातैं सिर नायो॥
जरमन जर मन मारि बनो जाको है अनुचर।
रूम रूम सम रूस रूस बनि फूस बराबर॥
पाय परसि तुव पारस पारस के सम पावत।
पकरि कान अफ़गान राज पर तुम बैठावत॥

दीन बनो सो चीन पीन जापान रहत नत।
अन्य छुद्र देशाधिप गन की कौन कहावत॥
जग जल पर तुव राज, थलहु पर इतो अधिकतर।
सदा प्रकासत, जामैं अस्त होत नहिं दिनकर॥
तिन सब मैं है मुख्य राज भारत को उत्तम।
जाहि विधाता रच्यो जगत के सीस भाग सम॥
जहाँ अन्न, धन, जन सुख, सम्पति रही निरन्तर।
सबै धातु, पसु, रतन, फूल, फल, बेलि, वृच्छ बर॥
झील, नदी, नद, सिन्धु, सैल, सब ऋतु मन भावन।
रूप, सील, गुन, विद्या, कला कुसल असंख्य जन॥
जिनकी आसा करत सकल जग हाथ पसारत।
आस्रित औरन के न रहे कबहूँ नर भारत॥
वीर, धर्म्मरत, भक्त, त्यागि, ज्ञानी, विज्ञानी।
रही प्रजा सब पै निज राजा हाथ विकानी॥
निज राजा अनुसासन मन, वच, करम धरत सिर।
जगपति सो नरपति मैं राखति भक्ति सदा थिर॥
सदा सत्रु सों हीन, अभय, सुरपति छवि छाजत।
पालि प्रजा भारत के राजा रहे विराजत॥
पै कछु कही न जाय, दिनन के फेर फिरे सब।
दुरभागनि सों इत फैले फल फूट बैर जब॥
भयो भूमि भारत मैं महा भयंकर भारत।
भये बीरबल सकल सुभट एकहि सँग गारत॥
मरे विबुध, नरनाह, सकल चातुर गुन मण्डित।
बिगरो जनसमुदाय बिना पथ दर्शक पण्डित॥

सत्य धर्म्म के नसत गयो बल विक्रम साहस।
विद्या, बुद्धि विवेक विचाराचार रह्यो जस॥
नये नये मत चले नये झगरे नित बाढ़े।
नये नये दुख परे सीस भारत पै गाढ़े॥
छिन्न भिन्न ह्वै साम्राज्य लघु राजन के कर।
गयो परस्पर कलह रह्यो बस भारत मैं भर॥
रही सकल जग व्यापी भारत राज बड़ाई।
कौन विदेसी राज न जो या हित ललचाई॥
रह्यो न तब तिन मैं इहि ओर लखन को साहस।
आर्य राज राजेसुर दिग विजयिन के भय बस॥
पै लखि वीर विहीन भूमि भारत की आरत।
सबै सुलभ समझ्यो या कहँ आतुर असि धारत॥
निज सीमा सन्निकट सिन्ध पञ्जाब पाय कै।
पारस को सम्राट लपकि बैठ्यो दबाय कै॥
इहाँ परस्पर कलह रचे आपस के जय हित।
नृपति उपेछे परदेसी अरि लघु गुनि गर्वित॥
निज भाई न लरैं अरि संग मिलि संक सकाने।
उचित समय की करत प्रतिच्छा रहे भुलाने॥
भर माला भारत को या विधि खुल्यो सकल दिस।
औरन कहँ भारत जय आस भई दृढ़ या मिस॥
ताहि जीति ताको सब देस लेन के ब्याजन।
सीधो आयो चलो सहायक लहि खल राजन॥
प्रबल राज यूनान जगत जेता भारत पर।
विजय पाय लघु तऊ समझि बल रुक्यो सिकन्दर॥

वहुरि और यूनानी रहे इतै लौ लाये।
पैन राज करि सके लौटि घर गये खिस्याये॥
पुनि शक लोग अनेक वार आये अरराने।
जीति राज कछु किये, अन्त पै हारि पराने॥
राह खुली लखि फिर तौ चढ़े अरब के राजे।
लरि जीते कोउ कहूँ, लूटि कोऊ कहुँ भाजे॥
कवहुँ तुरुक अफ़गान मुगल आये भारत पर।
लूटि, मारि नर नारिन लै भागे अपने घर॥
कोऊ राज इत किये निपट अन्याय मचाई।
दीन प्रजान सँहारि रुधिर की नदी वहाई॥
हरे मान, धन, धर्म्म, अमित तोरे देवालय।
अनाचार की सीमा नहिँ राखी वे निर्दय॥
अमल प्रफुल्लित देस वनाय मसान भयंकर।
पशु समान करि दियो मूढ़ ह्याँ के सुविज्ञ नर॥
कछु उदारता और न्याय अकवर दिखरायो।
ता कहँ औरंगजेव धोय के दूरि वहायो॥
तिहि दिन तैं भारत मैं फैल्यो असन्तोप अस।
छिन्न भिन्न ह्वै यवन राज विनसन लाग्यो वस॥
वेराजी सी मची रही वहु दिवस यहाँ पर।
वन्यो निपट छवि हीन दीन यह देस निरन्तर॥
तऊ वड़ाई याकी रही दिगन्तन छाई।
धन लालच यूरोपियन गनन हूँ गहि ल्याई॥
चले सवै लै लै जहाज सागर जल नापत।
अगम सिन्धु मैं विन जाने मग थरथर काँपत॥

मरे कोऊ पहुँच्यो कोऊ पाताल देस पर।
भारत हेरत पायो नूतन जगत सविस्तर॥
हरषे यदपि न पै लालच भारत की छोड़ी।
चले इतै फिरि फिरि जहाज पतवारहिँ मोड़ी॥
भूले भटके कोऊ कई टापू कोऊ पाये।
रुके तऊ नहिँ सहि सौ सौ साँसत इत आये॥
प्रथम फिरंगी पुनि पहुँचे नर वलन्देज इत।
आये पुनि अँगरेज सकल विद्या गुन मण्डित॥
फरासीस वासी आये फिरि तौ उठि धाये।
सब यूरप वासी भारत हित अति अकुलाये॥
सवहिँ व्याज व्यापार, चित्त पै राज करन पर।
सवहिँ सवन सोँ लाग ईरषा, द्वेष परस्पर॥
लरे देस वासिन सोँ और परस्पर ये सब।
कियो भूमि अधिकार कछू जँह जो पायो जव॥
रह्यो नहीं पै राजभोग औरन के भागन।
निज इच्छा अनुसार ईस दीन्यो अँगरेजन॥
'ईस्ट इण्डिया कम्पिनी' कियो राज काज इत।
कियो समित उत्पात होत जे रहे इहाँ नित॥
उचित प्रवन्ध अनेक प्रजा हित वाने कीन्यो।
आरत भारत प्रजा जियन कछु ढाढ़सु दीन्यो॥
पै वाकी स्वारथपरता अरु लोभ अधिकतर।
राख्यो चित नितहीँ निज राज वढ़ावन ऊपर॥
अरु व्यापार द्वार सोँ लाभ अपार लेन मैं।
उद्यम हीन दीन दुख पै नहिँ ध्यान प्रजा देन मैं॥

ह्याँ की मूढ़ प्रजा के चित को भाव न जान्यो।
हठ करि सोई कियो, जबै जस वा मन मान्यो॥
दियो त्रस्त करि, पूरब डरे मानवन के मन।
समझ्यो जिन ये चाहत नासन जाति, धर्म्म, धन॥
देसी मूढ़ सिपाह कछुक लै कुटिल प्रजा सँग।
कियो अमित उत्पात रच्यो निज नासन को ढँग॥
बढ़्यो देस में दुख बनि गई प्रजा अति कातर।
फेर्यो तब तुम दया दीठ भारत के ऊपर॥
लैकर राज कम्पिनी के कर सों निज हाथन।
किय सनाथ भोली भारत की प्रजा अनाथन॥
रही जु भारत प्रजा कहावत प्रजा प्रजा की।
सो कलंक हरि लियो इन्हैं दै समता वाकी॥
धन्य ईसवी सन् अठारह सौ अट्ठावन।
प्रथम नवम्बर दिवस, सितासित भेद मिटावन॥
अभय दान जब पाय प्रजा भारत हरषानी।
अरु लहि तुम सी दयावती माता महरानी॥
राज प्रतिज्ञा सहित, सान्ति थापन विज्ञापन।
मैं अधिकार अधिक निज पुष्ट विचारि मुदित मन॥
अति उन्नति आसा उर धरि बिन मोल विकानी।
तेरे हाथनि, मानि तोहि निज साँची रानी॥
करी प्रतिज्ञा जो बहु साँची करि दिखराई।
मुरझी भारत लता फेरि तुमहीँ विकसाई॥
बहुत दिनन सों दुखी रही जो भारतवासी।
प्रजा दया की भूखी, न्याय नीर की प्यासी॥

पसु समान बिन ज्ञान, मान बनि रही भरी डर।
फेरि तिन्हैं नर कियो आप लघु दिवस अनन्तर॥
दियो दान विद्या अरु मान प्रजान यथोचित।
अभय कियो सुत सरिस साजि सुख साज नवल नित॥
शुद्ध नीति को राज प्रजा स्वच्छन्द बनायो।
साँचे न्याय भवन मैं खरो न्याय दिखरायो॥
देस प्रबन्ध चतुर, दयालु, न्याई, दुखहारी।
विद्या विनय विवेकवान शासन अधिकारी॥
जे नित हम सब प्रजा हेत नूतन सुख साजत।
हेरि हेरि दुख हरत डरत जासों भय भाजत॥
सत प्रबन्ध दिनकर दिनकर नास्यो रजनी दुख।
धूप सान्ति की फैली लखि विकस्यो सरोज सुख॥
सूझ्यो साँचो स्वत्व प्रजा को भूलि सीत भय।
अत्याचारी चोर पराने निज परान लय॥
धन्य तिहारो राज अरी मेरी महरानी।
सिंह अजा सँग पियत जहाँ एकहि थल पानी॥
जहँ दिन दुपहर परत रहे डाके नगरन मैं।
तहँ रच्छक निरखियत पथिक जन के हित बन मैं॥
जहाँ काफ़िले लुटत रहे तौ यतन किये हूँ।
जिन दुरगम थल माहिँ गयो कोऊ नहिँ कबहूँ॥
रेल यान परभाय अँधेरी रातहुँ निधरक।
अंध, पंगु, निसहाय जात अबला बाला तक॥
माल करोरन को बिन मालिक पहुँचत निज थल।
अन्य दीपहूँ पहुँचावत धूम्राँकस चलि जल॥

डाक, तार को जो प्रवन्ध तेहि जगत सराहत।
लाखन रोगी रोज़ डाक्टर लोग जियावत॥
जिहि वन केहरि हेरत मत्त मतंगहि डोलत।
तहाँ वन्यो नव नगर सुखी नर नारि कलोलत॥
पर्वत अधित्यका जे रहीं कवहुँ कंटक मय।
तहाँ शस्य लहरात बालकहु विहरत निर्भय॥
जल विहीन थल वीच नहर वनि गईं अनेकन।
सड़क हजारन कढ़ीं छाँह को वृच्छ करोरन॥
महा महा नद माहिँ सेतु सुन्दर वँधवाए।
तड़ित गेस परकास राजपथ रजनि सुहाये॥
वने विश्व विद्यालय विद्यालय पाठालय।
पावत प्रजा अलभ्य लाभ जिनतेँ विन संसय॥
योँ वहु भाँतिन करि भारत उन्नति मन भावनि।
तव उन्नति अपनी कीनी तुम हिय हरषावनि॥
हिन्द राजराजेसुरी वनी तुव महरानी।
राजसूय के हरष उमड़ि दिल्ली इतरानी॥
भारत के जेते मानी रईस अरु राजे।
महराजे, नव्वाव, राव राने छवि छाजे॥
आय जुरे तहँ साम्राज्य अभिषेक विलोकन।
राजभक्ति के भाय भरे अतिसय प्रसन्न मन॥
तुव अनुसासन लाट "लिटन" प्रतिनिधि के मुख सुनि।
सीस चढ़ाये सवै स्वत्व निज अधिक पुष्ट गुनि॥
निज अधीसुरी तुमहिँ सवै चित सोँ करि माने।
भये राजराजेसु अधीन जानि हरषाने॥

जौन हिन्द हेरन हित "हेनरी राजा सप्तम"।
प्रथम यतन करि मर्‍यो पता न लह्यो, गुनि दुर्गम॥
समझि सोई "अष्टम हेनरी" हेर्‍यो नहिं वाको।
नृपति "षष्ट एडवर्ड" खोज पायो नहिं जाको॥
पता लहनि हित जासु मरी "मेरी" ललचानी।
करि करि यतन अनेक "एलिज़ावेथ" महरानी॥
पता लगायो जासु, पठायो राज दूत इत।
लहन राज अनुमति प्रजान व्यापार करन हित॥
नाम "ईस्ट इण्डिया कम्पनी" धरि हरषाई।
निज व्यापारी प्रजन जोरि मन्डली बनाई॥
पठ्यो तिहि व्यापार करन के हित भारत महँ।
इतने हीँ मैं धन्य मानि उन लियो आप कहँ॥
जिहि व्यापार लाभ लतिका को बीज सुअवसर।
बोयो बिबिध उपाय "एलिज़ावेथ" अपने कर॥
"प्रथम जेम्स" जिहि यतन अनेकन करि लखि पायो।
होत बीज अंकुरित दूत निज सोँ हरषायो॥
"प्रथम चार्ल्स" मन मुदित होत जिहि लख्यो पल्लवित।
प्रजा तन्त्र मैं युगल "क्रामवेल" निरख्यो बर्धित॥
नृपति "चार्ल्स दूसरो" पुष्ट जाकहँ अनुमान्यो।
पाय दहेज बम्बई दीप हिये हरषान्यो॥
यदपि दच्छिना पै सासन आरम्भ मानि मन।
गुन्यो अलभ्य लाभ सत मुद्रा साल स्वल्प धन॥
जाहि 'दूसरो जेम्स' नृपति 'बिलियम' अरु 'मेरी'।
तैसहिँ रानी "एन" मरी भारत दिसि हेरी॥

"प्रथम जार्ज" राजहु नहिँ लाभ और कछु पायो।
सोई व्यापार लता फैलत लखि जनम गँवायो॥
जाहि "जार्ज दूसरो" नृपति बहु दिवस निहारत।
लख्यो हरषि हिय लपटत लपकि विटप वर भारत॥
"जार्ज तीसरो" निरख्यो जिहि फैलत सब साखन।
भारत तरुवर पर प्रयास विनहीं छनहीं छन॥
"चौथो जार्ज" जाहि मान्यौँ हर्षित भारत पर।
फैलि गई दृढ़ रूप नहीं अब सूखन को डर॥
महाराज "विलियम चतुर्थ" निज भाग सराहत।
जिहि लतिका मैं लख्यो कलित कलिकावलि लागत॥
पै सो राजत राज तिहारे ही साँची विधि।
फैली पूरन रूप होय प्रफुलित फलि फल निधि॥
भारत तरु अपनाय कै दियो सौंपि तेरे कर।
"ईस्ट इण्डिया कम्पनी" चातुर मालिनी सुघर॥
निज घर गई पराय त्यागि निज सकल मनोरथ।
तेरो प्रबल प्रताप दिखायो तिहि सूधो पथ॥
"बृटिश इण्डिया" नाम कियो चरितारथ साँचहु।
भारत राज अखण्ड लियो, नहिँ राख्यो अरि कहुँ॥
मरे डेढ़ दरजन जिहि ललचि बृटेन अनुशासक।
पै नहिँ भारत राज भये कोउ सुयस प्रकासक॥
ताकी नहिँ रानी महरानीही तुम केवल।
भईँ राज-राजेसुरी यतन विना भाग्य बल॥
धन्य ईसवी सन् अट्ठारह सौ सतहत्तर।
प्रथम जनवरी दिवस नवल दिन जो प्रसिद्ध वर॥

किये नयो दिन जो भारत को बहुत दिनन पर।
दियो स्वतन्त्र देस को नाम फेरि याको कर॥
भई राज-राजेसुरी अलग आप हमारी।
गई सुतन्त्र नाम सों हम सब प्रजा पुकारी॥
यह नहिँ न्यून हमारे हित, गुनि हिय हरपानी।
लगीँ असीसन तोहि जोरि ईसहिँ युग पानी॥
जिन असीस परभाय जसन जुबिली दिन आयो।
पुनि इन भक्त प्रजन को मन औरो हरपायो॥
देनि लगीं आसीस फेरि यै होय मुदित मन।
यथा एक बदरी नारायन सुकवि "प्रेमघन"॥
ईस कृपा सों और एक जुबली तुव आवै।
फेरि भारती प्रजा ऐस हीं मोद मनावै॥
धन्य धन्य यह दिवस जु पूजी आस हमारी।
भई दूसरी हीरक जुबिली आज तिहारी॥
अब पचास वत्सर ह्न सुख सों ईस बितैहैं।
जाके अन्तर अवसि कई जुबिली फिरि अइहैं॥
भारत राज भोग की जुबिली होय तिहारी।
ताकी हीरक जुबिली होय अधिक सुखकारी॥
भारत साम्राज्य की जुबिली तब पुनि होवै।
ताकी हीरक जुबिली ह्वै सब संसय खोवै॥
मानव पूरन आयु सहित यह जुबिली चारो।
को सुख भोगौ तुम, करि भारत देस सुखारो॥
जब इक अंस असीस ईस दीनी साँची कर।
तब पूरन की आसा होत अधिकतर॥

यासों अतिसय हरप हिये हमरे मनभावनि।
यह जुविली है और चार जुविली की ल्यावनि॥
यदपि सहजहीं यह हीरक जुबिली अति प्यारी।
लह्यो न जेहि नृप कोउ विलायत शासनकारी॥
नहिं कोउ भारत राज विदेसी देख्यो यह दिन।
इतो राज इतने दिन सुख सों कव भोग्यो किन॥
धन्य तिहारो भाग, नाहिं यामैं कछु संसय।
नहिं तो सम नृप और प्रजा हितकारी निश्चय॥
तव तेरे सुख मैं जौ तेरी प्रजा सुखारी।
होय, भला तो अचरज की है वात कहा री॥
अरु पुनि साँचे राजभक्त भारत वासिन के।
रहै हरप की सीमा किमि? नृप ही वल जिनके॥
यही हेतु आनन्द मगन सो भासत भारत।
ईति भीति अरु रोग, सोग सों यद्यपि आरत॥
पर्‍यो अकाल कराल चहूँ दिसि महा भयंकर।
जस नहिं देख्यो, सुन्यो कवहुँ कोउ भारतीय नर॥
कहैं अन्न की कौन कथा? जव कन्द, मूल, फल।
फूल साग अरु पात भयो दुरलभ इन कहँ भल॥
हरे हरे वन तून चरि सूखे वीज घास के।
खाय अघाय न सके किये थल स्वच्छ पास के॥
दूर दूर के कानन कढ़ि तरु पातन चूसे।
तिनकी छालनि छोलि चले जनु सम्पति मूसे॥
पहुँचे घर लै ताहि कूटि अरु पीसि पकाये।
रुदत वृद्ध वालकन ख्याय कोउ भाँति चुपाये॥

या विधि पसु गन के जीवन आधार हाय हरि।
विन चारे पसु मारि, जिए कछु दिन सँतोष करि॥
पै जब याहू सों निरास ये भये अभागे।
लंघन करि करि त्राहि, त्राहि हरि टेरन लागे॥
कृषिकारन की होय भयंकर दसा जवै इमि।
भिच्छुक गन के रहैं प्रान फिर तौ भाषौं किमि॥
पेट चपेट चोर, डाकू वनि कितने धाये।
लूटि पाटि जिन किते धनिक जन दीन वनाये॥
मरे किते धन सोच किते विन अन्न विना जल।
विना वसन गृह शीत रोग सों ह्वै अति निर्वल॥
हाहाकार मच्यो चारहुँ दिसि महाप्रलय सम।
वचे भारती नरन जियन की रही आस कम॥
खोय मध्यवित लोग, वसन, भूषन, पसु, गृह थल।
मान विवस मरिवो मान्यो भिच्छाटन सों भल॥
सहि न सके जब भूख पीर कातर हिय ह्वै करि।
सपरिवार करि आतमघात गये सुख सों मरि॥
मरत असंख्य मनुज लखि तेरो धर्म्म आय वस।
मेकडानल के व्याज दियो जीवन को ढाढ़स॥
उमड़ि मनहुँ पावस घन अन धन वरसन लाग्यो।
सूखे धान समान प्रजा हिय हरसन लाग्यो॥
जिहि जल के वल वढ़े उमड़ि ज्यों नद्दी नारे।
काज अकाल सँहारक दीन सहायक सारे॥
लहि जीवन आधार धाय जीवन हित आये।
चहुँ ओरन सों दीन मीन संकुल अकुलाये॥

जिहि जीवन विन जीवन की आसा जिय त्यागे।
रहें सोई जीवन लहि सुख सों जीवन लागे॥
सोइ जीवन भरि उतिराने सर, ताल, झील सम।
ठौरहि ठौर बने अनेक दीनालय उत्तम॥
बहु जीवन सम जिन मैं जीवन लागे।
अन्ध, पंगु, असहाय, दीन, दुर्बल दुख त्यागे॥
सुन्दर, भोजन, पान पाय विनहीं प्रयास के।
खाय अघाय असीसन लागे प्रति रोमन ते॥
विन दल तरु नहिं रह्यो ठौर जिहि ठाढ़ होन कहँ।
पाँय पसारे सोवत वे सुख सौं भवनन महँ॥
कम्पित गात, सीत सिकुरे जे रहे दिगम्बर।
जीये तेऊ पाय गरम अम्बर अरु कम्बर॥
भूख, सीत सौं कातर ह्वै जे भये रोग बस।
चारु चिकित्सा लहत तौन हित जौन चहत जस॥
राह चलत असमर्थ दीन जन दीन अन्न धन।
लटे गिरेहू लादि ल्याय कीनो परिपालन॥
सपनेहूँ तजि याहि काम जिनके कछु नाहीं।
चैन करत दिन रैन असीसत औ तुम काहीं॥
त्यों असंख्य अज्ञान दीन बालकन अनाथन।
किये जननि लौं तेरे अनाथालय परिपालन॥
प्याय दूध अरु खाय अन्न जिन धाय खेलावत।
देख भाल हित मेम और मिस जिनके आवत॥
खेलत खेलन योग्य खेल, झूलत चढ़ि झूलन।
पढ़त लिखत, गुन सिखत गुरुन सों आनन्दित मन॥

निज घरहूँ मैं रहि ते यह सुख कवहुँ न लहते।
मातु पिता तिनके कव या विधि पालन करते॥
खुले चिकित्सालय वहु ऐसे दीनन के हित।
घरसों अधिक सुपास लहत रोगी जन जँह नित॥
करत डाक्टर औपधि अरु सेवक सव सेवा।
पावत, पथ्य दूध सागू मिस्री अरु मेवा॥
खोयं रोग अरु सोग सुखी जाके रोगी गन।
देत असीस अघात नाहिँ तो कहँ प्रसन्न मन॥
जे धन हीन कुलीन दीन विन काज परे घर।
विना आय कोउ भाँति खाय विन अन्न रहे मर॥
निराधार विधवा परदा वारी जे नारी।
विना अन्न, धन विन गति भूखन विलखन वारी॥
कुल मर्य्यादा वस अनसन व्रत मानहुँ ठाने।
विना प्रकासे भेद मरन निज भल जिन जाने॥
घर वैठे विन काज, विना माँगे प्रति मासहिँ।
दै दै द्रव्य दियो तुम तिन जीवन की आसहिँ॥
तृप्त आतमा तिनकी आसीसत न अघाती।
साँझ, प्रात, दुपहर, निशीथ सव दिन अरु राती॥
क्यों न देहिँ आसीस, दुखी गन ईस मनावैँ?
क्यों न प्रसन्न प्रजा सव सुयश तिहारो गावैँ॥
जौ न दया करि आप दान दरियाव वहातीँ।
कोटिन प्रजा हिन्द की अन्न विना मर जातीँ॥
तासोँ नहिँ यह अन्न दान धन दान तिहारो।
है असंख्य जन प्रान दान को सुयश सुखारो॥

अति विसाल यह धरम नहीं कोऊ जाके सम।
याको फल तोहि ईस देइहै अवसि अनूपम॥
पर उपकार विचार प्रजा पालन हित केवल।
नहिं भूलेहुं यामैं कहुं लखियत स्वारथ को छल॥
नहिं काहू की जाति, धरम लेवे को आसय।
नहिं तेरो निज मत प्रचारिवे को या विधि नय॥
नहिं तौ पेट चपेट परी परजा भारत की।
किती न वनि कृस्तान दसा खोती आरत की॥
पकी पकाई रोटी निज हाथनि दिखरावत।
सहज पादरी लोग दुखिन के चित ललचावत॥
कुलाचार, मर्य्याद, जाति, धर्म्महुँ प्रयास विन।
लै लेते उनके द्वै द्वै रोटी दै द्वै दिन॥
कहते सब सों "हम कोटिन कृस्तान बनाये।
प्रभु ईसू को मत भारत मैं भल फैलाये"॥
यूरप, अमेरिका वासी कब गुनते यह बल।
समझत वे तो "यह इनके उपदेसहि को फल"॥
अन्न हीन, धन हीन, पसुन सों हीन, हीन गति।
कृषिकारन की दीन दसा लखि करि करुना अति॥
तिनहिं फेरि कृषि काज चलावन हेतु विपुल धन।
दियो लेन हित मोल वैल हल वीज आदिकन॥
वीज वपन, जल सिञ्चन के हितहू दीन्यो धन।
या विधि उजरे फेरि वसायो तुम कृषिकारन॥
दीनन दान रूप धन दीन्यो नहिं फेरन हित।
लटे समर्थन कहँ दीन्यो ऋन रूप यथोचित॥

दियो जिमीदारनहिं न केवल कृषिकारन कहँ।
बाँध बँधावन, कूप खुदावन हित चाहत जहँ॥
नहिं औरनहीं दै सहायता आप चुपाईं।
निजहु असंख्य जलासय प्रजा हेतु वनवाईं॥
नहर, अनेक, असंख्य सरोवर, कूप खुदाये।
अनावृष्टि दुख रोकन हित वहु बाँध वँधाये॥
फिर इन उपकारन को वारापार कहाँ है।
तेरो निर्मल यश जहँ लखियत भरो तहाँ है॥
क्यों न होय कृत कृत्य प्रजा लखि यह प्रवन्ध सव।
फेरि न यों अकाल व्यापन भय वे समझत अव॥
याहू सों अति भारी विपति महामारी की।
जिन दच्छिन पच्छिम भारत मैं अति ख्वारी की॥
हर्‌यो हजारन मनुज प्रान यह उत उतरत हीं।
हाहाकार मचाय दियो निज पायँ धरत हीं॥
वस्यो वम्बई नगर उजार्‌यो विन मानव करि।
दियो केराँची अरु पूनाहू मैं विपत्ति भरि॥
तिहिं प्रदेस मैं तौ फैल्यो याको डर भारी।
पै काँपी भारत की सारी प्रजा तिहारी॥
ताहू के नासन मैं आप ध्यान अति दीन्यो।
करि २ विविध उपाय वढ़त वल ताको छीन्यो॥
प्रजा प्रान रच्छा हित व्यय करि आप अधिक धन।
करि प्रवन्ध वहु भाँति दियो तेहि इत नहिं आवन॥
देस देस से प्रवल डाक्टर लोग वुलाये।
भाँति भाँति के नये नये औषध प्रगटाये॥

उचित औषधी औषधकारी लखि हरषानी।
जीवन की निज आस प्रजा पुनि मन मैं आनी॥
होत देखि निर्मूल महामारी इन यतननि।
लगीं असीसन प्रजा तोहि साँचे सुख सों सनि॥
या विधि प्रजा पालनी जव है वानि तिहारी।
भारत प्रजा जाय नहिं तव क्यों तुझ पर वारी॥
लांख दुखी हू तेरे हरख न क्यों हरखावैं।
औरहु तेरी वृद्धि हेतु किन ईस मनावैं॥
राजभक्ति की सहज वानि विधि नै जिहि दीनी।
दुखहू लहि जिन नृप विरोधिता कवहुँ न कीनी॥
सो तेरे उपकार भार सों दवी अधिकतर।
लखत न तो सम सुखद राज हू जो पुहुमी पर॥
तेरे हरष वीच तिनके हिय हरष कहानी।
कहो कौन सों जाय भला किहि भाँति वखानी॥
नहिं धन इनके पास जाहि व्यय करि प्रगटावैं।
पै मन सों सव भाँति सवै आनन्द मनावैं॥
कछुक धनी धन खरचत राजभक्ति दिखरावत।
हीरक जुविली को अस्मारक चिन्ह वनावत॥
लिखि अभिनन्दन पत्र प्रतिष्ठित जन पण्डित गन।
पठवत सेवा मैं तेरी अति ह्वै प्रसन्न मन॥
प्रति नगरन की प्रजा बधाई तार पठावत।
कवि गन कविता विरचि ताहि तुम पर प्रगटावत॥
कोउ साजत निज भवन कलस कदली तोरन सों।
ध्वजा पताका चित्र लगाये चहुँ ओरन सों॥

नाच करावत कोऊ, इष्ट अरु मित्र जिमावत।
कोऊ, अग्नि क्रीड़ा मिसि कोऊ निज हरष दिखावत॥
पै यह कोड़ी कोटि तिहारी प्रजा विचारी।
दीन, हीन सब भाँति तुमैं दिखरावन वारी॥
नहिं राखत वह सामग्री मेरी महरानी।
केवल निज हिय राजभक्ति पूरित लासानी॥
जामैं लाखन धन्यवाद, आसीस करोरन।
राजत तेरे हित हे जननि! हरप सँग थोर न॥
जो उन ऊपर कथितन सों नहिं कोऊ विधि कम।
जो सम सत नृप काज उपायन और न उत्तम॥
लेहु ताहि फल ईस सदा याको तुहिँ दैहैं।
दीनन की आसीस व्यर्थ कबहूँ नहिं ह्वैहैं॥
चारहु जुविली कथित और भोगहु तुम अब सों।
बिना विघ्न, बिन रोग, रहित सोगादिक सब सों॥
सपरिवार सुख सों राजहु जग राज दराजहिं।
निज प्रजानि के हेतु और साजहु सुख साजहिं॥
आरत भारत दसा अहै जो बची बचाई।
ताहि दूरि करि वेगि करहु आनद अधिकाई॥
यदपि तिहारे राज भयो भारत अति उन्नत।
आगे सों अब सब कोऊ सब विधि सुख पावत॥
पै दुख अति भारी इक यह जो बढ़त दीनता।
भारत मैं सम्पति की दिन दिन होत छीनता॥
महँगी बढ़तहि जात, घटत है अन्न भाव नित।
जातैं कोऊ सुख सामग्री नहिँ सुहात चित॥

बढ़त प्रजा नित यहाँ, घटत पै उद्यम सारे।
बिन उद्यम धन मिलै न, बिन धन मनुज बेचारे॥
सुख सुकाल हू जिन्हैं अकालहि के सम भासत।
कई कोटि जन सहत सदा भोजन की साँसत॥
एकहि समय आध ही पेट लहत जे भोजन।
मोटो सूखो रूखो अन्न लोन बिन रोज न॥
तेरे राज करमचारी न्यायी उदार मत।
साँची भारत दसा ससंकित ह्वै अस भाषत॥
बहु संकीरन हृदय जाहि हठकै झुठलावैं।
ह्वै स्वारथ सों अन्ध बेसुरी तान लगावैं॥
मनहुँ उभय दल मत सच झूँठ तुमहिँ समझावन।
हित कराल दुष्काल को भयो अब के आवन॥
जिहि तैं प्रगट भयी तुम पर भारत की दुर्गति।
लखि निज प्रजा दुखी त्यों भई दुखित चित सों अति॥
अब सोचौ जो भयो एकही बरस अबरसन।
लगी भारती प्रजा अन्न दरसन कहँ तरसन॥
रही अन्न सों भरी पुरी जो भूमि सदाहीँ।
कैयो बरस अबरसन सों जो रीतत नाहीँ॥
तामैं अन्य दीप सों अन्न नहीं जौ आवत।
तौ अबके भारत मनुजन कहँ कौन जियावत॥
त्यों धन मोल लेन हित दीनन जौ नहिँ देतीं।
दान, सहायक काज ब्याज सुधि आप न लेतीं॥
भूखन मरिकै प्रजा सेष बचती चौथाई।
सूनी सी यह भारत भूमी परत लखाई॥

कै सुछन्द व्यापार जोग नहिँ भूमी भारत।
जो यहि दियो बनाय इते दिन मैं यो आरत॥
यह अति सूछम भेद आप ऊपर प्रगटावन।

× × ×

कै स्वारथ रत अन्य दीप वासी व्यापारी।
के हित आयो देन सत्य सिच्छा यह भारी॥
जो ढोवत धन अन्न यहाँ सों ह्वै अति निर्दय।
नहिँ राखत याके मरिबे जीवे को कछु भय॥
उद्यम लेस न रहन देत इत भूलि एकहू।
बची खुची जो कारीगरी न ताहि नेकहू॥
पैठन देत देस अपने मैं करि बहु छल बल।
अपनी कारीगरी सकेलत इत न लेत कल॥
या विधि जिन निःसत्व दियो करि हाय देस यह।
जाही के परभाय चैन दिन रैन करत वह॥
नहिँ जानत जब जे ह्वै है भारत ही आरत।
याके आश्रित रूप तुरत ह्वै हैं वे गारत॥
शिल्प और विज्ञान मिलित उद्यम सब उनके।
सारथ होत अन्न धन भारत ही के चुनके॥
सो जब भारत आपहि पेट पीर सों मरिहै।
तब उनके कर कहौ काढ़ि कौड़ी को धरिहै॥
अथवा बीत्यो तुमहिं राज राजत इतने दिन।
भारत पैं हे राज राज रानी! विवाद बिन॥
कियो सबै विधि तुम उन्नति याकी बिन संसय।
दै विद्या, सुख समग्री, हरि कै दुष्टन भय॥

न्याय राज-थाप्यो, परजन स्वच्छन्द वनायो ।
सिच्छित जन अरु धनिकन के मन जो अति भायो ॥
रामराज सम राज तिहारो जिन कहँ दीसत ।
दै दै धन्यवाद वे तुम कहँ रोज असीसत ॥
पै जेते जन दीन हीन धन और हीन मति ।
जिनहिं दियो विधि भिच्छाटन तजि और नाहिं गति ॥
जिन नहिं जान्यो सुखद राज तेरे को कछु सुख ।
नहिं जिन खोल्यो तुमहिं असीसन काज कबहुँ मुख ॥
राज गहन दिन सों आसा जिनकी ही लागी ।
साम्राज्य पद गहन महा उत्सव सुनि जागी ॥
पै वराटिका लहि न एकहू जो मुरझानी ।
बीती जुबिली मैं जो सूखी सी दरसानी ॥
हरित करन फिरि आसालता न उनकी केवल ।
आयो यह दुष्काल देन तिन माहिं फूल फल ॥
इतने दिन की कसर सहित आसीस देन हित ।
ब्याज सहित बहु धन्यवाद देवे को नित नित ॥
उन दीनन की अधिक दीनता आनि बढ़ाई ।
तुम सों उनकी जननि प्रान रच्छा करवाई ॥
जामै हीरक जुबिली मैं तेरी भारत की ।
सकल प्रजा इक संग हुलसि हिय सों सब मत की ॥
देहिं बधाई तोहि अनन्दित ईस मनावै ।
नवल कृपा तुव पाय बचे सब दुख बिनसावै ॥
लखियत तैसे हीं सब के उर आनन्द भारी ।
पैयत सबहिं कृतज्ञ बनो तेरो इहि बारी ॥

वीते सब उत्सव सों तेरे इहि अवसर पर।
प्रमुदित परम लखात भारती प्रजा नारि नर॥
जिनके उर उत्साह भार को सकि न सँभालत।
काँपत है भूकम्प व्याज यह भूमी भारत॥
किधौं राजराजेसुरी तुमहिं सी सुखदानी।
की हीरक जुविली मैं मोद महा मनमानी॥
सुभग समय पर उचित उछाह जगहि दरसावन।
जोग न जानत निज सुत गन के पास विपुल धन॥
मानहानि अनुमानि हहरि यह थर थर काँपत।
कहा करै, सोऊ कछु थिर न सकत करि निज मत॥
कै तुव सासन समय भेद लखि भाग देस गति।
जामैं ग्रेट वृटेन कीन्यो अपनी अति उन्नति॥
भयो रंक सों राव संक जग मैं थाप्यो जिन।
भर्‌यो भूरि धन, वल, विद्या, गुन, कला क्लेस विन॥
जाकी प्रजा मान, अभिमान भरी सुख सम्पति।
सों प्रफुलित मन विहरत जानत जगत हीन मति॥
अरु पुनि वाही समय वीच निरखति गति अपनी।
दीन हीन ह्वैं वनी विलखि भारत की अवनी॥
काँपि काँपि यह लेत उसास होय अति कातर।
जानि दैव प्रतिकूल आनि उर मैं विसेष डर॥
साठ वरस की आस निरासा करि जनु मानी।
अरु पुनि दयावती तुम सी अनहोनी रानी॥
के सासन सुविसाल वीच जव गयो दुःख नहिँ।
तव हरिहै को नहिँ जानत अव सेष कलेसहिँ॥

यह गुनि कै यह आपुहि अपनो ही तन ताड़ति।
आँसुन की झरि लावति औ सिर छार उड़ावति॥
कैधौं अपनी उन्नत पूरव दसा विचारी।
रह्यो प्रताप जबै याको फैल्यो दिसि चारी॥
अजहूँ लौं आस्रृत जग याको रह्यो बराबर।
काहू की यापैं कृतज्ञता रही न तिल भर॥
सो दुर्दैव प्रभाय हाय! बनि गयो भिखारी।
जग सों भिच्छा लियो खोय भरमाला भारी॥
पाय और सों दान प्रान राख्यो यह अबके।
खोय मान अभिमान कान करि सनमुख सबके॥
चहत न सो भारत रहि कोऊ सँग आँख मिलावन।
ढाढ़ मारि भू फारि चहत पाताल सिधावन॥
किधौं चहत हिय चीरि देवि! तुम कँह दिखरावन।
उर अन्तर की राज भक्ति यह सहज सुभायन॥
साधारन भूकम्प जाहि कारन बिन जाने।
कहैं लोग विज्ञान आदि मत मानि पुराने॥
कै तुव हरष हरषि यह विहँसि उठी ठठाय कै।
करत निछावरि बहु गृह भूपन गन गिराय कै॥
होय जु कछु कारन सो तो वहई जिय जानत।
पै हम तो बस निश्चय एक यही अनुमानत॥
लखि तुव सुखदानी रानी को आनद भारी।
आनन्दित ह्वै काँपत भारत भूमी प्यारी॥
जब याके सुत सबै भये इहि छन आनन्दित।
होय भला तब यह क्यों नहिँ अतिसय प्रसन्न चित॥

निश्चय सुभ अवसर यह हम सब कँह सुखदायक।
जो आनन्द मनावैं हम, है वाके लायक॥
देहिँ जु कछु बकसीस आप, लायक यह वाके।
माँगै जो हम, लायक यह देवे के ताके॥
चहत न हम कछु और, दया चाहत इतनी बस।
छूटैँ दुख हमरे, बाढ़ै जासों तुमरो जस॥
जिहि ममत्व अरु जिहि प्रकार सोँ ग्रेट बृटेन पर।
कियो राज तुम अब लगि दया दिखाय निरन्तर॥
ताही विधि, ताही ममत्व तिहि दया भाव सन।
अब सोँ राजहु भारत पर दै और अधिक मन॥
कीनी सब प्रकार जिमि ग्रेट बृटेन की उन्नति।
तैसहिँ भारत की करियै भरि कै सुख सम्पति॥
वाकी प्रजा समान स्वत्व, आयुध अधिकारहिँ।
विद्या, कला, नीति, विज्ञान, प्रबन्ध विचारहिँ॥
हम भारत वासिन कँह देहु दया करि, देवी।
उभय प्रजा सम होहिँ सुखी, सम सासन सेवी॥
भारत के धन अन्न और उद्यम व्यापारहिँ।
रच्छहु, वृद्धि करहु साँचे उन्नति आधारहिँ॥
बरन भेद, मतभेद, न्याय को भेद मिटावहु।
पच्छपात, अन्याय बचे जे तिनहिँ निवारहु॥
पूरब सासन समय साठ वत्सर को भारी।
पाय भयो कृत कृत्य बृटेन अति कृपा तिहारी॥
भारत की बारी आवै अब अति सुखदाई।
उत्तर सासन या हरिक जुबिली सोँ पाई॥

करहु आज सों राज आप केवल भारत हित।
केवल भारत के हित साधन में दीनैं चित॥
पूरन मानव आयु लहौ तुम भारत भागनि।
पूरन भारतीन की करत सकल सुख साधनि॥
उमड़ै भारत में सुख, सम्पति, धन, विद्या, वल।
धर्म्म, सुनीति, सुमति, उछाह व्यापार ज्ञान भल॥
तेरे सुखद राज की कीरति रहै अटल इत।
धर्म्म राज, रघु, राम प्रजा हिय में जिमि अंकित॥

आनन्द बधाई

सं० १९५८

आनन्द बधाई

रोला छन्द

आज अरी यह घरी बड़े भागिन सों आई।
देव नागरी देवि देहुँ जो तोहि बधाई॥
निरखत हीन अपूरब पूरब दसा तिहारी।
सोचि २ सुभचिन्तक तेरे होयँ दुखारी॥
हा २ खाय बीनती बहु विधि करत रहे नित।
पै न भूलिहूँ कोऊ कबहुँ वापैं दीनो चित॥
ह्वै विहीन उत्साह बैठि सब रहे मारि मन।
अनहोनी गुनि उन्नति तेरी, तऊ अनेकन—
सुवन तेरे बहु भाँति जतन मैं लगे निरन्तर।
करत रहे उद्योग हटे नहिं कसिकै परिकर॥
यदपि आस दृढ़ रही नाहिं उनहुँन कहँ ऐसी।
वेगि विजय बहु दिन पीछें पाई तुम जैसी॥
राज सभा सों अलग कई सौ बरस वितावत।
दीन प्रवीन कुटीन बीच सोभा सरसावत॥
बरसावत रस रही ज्ञान, हरिभक्ति, धरम नित।
सिच्छा अरु साहित्य सुधा सम्बाद आदि इत॥
कियो न वदन मलीन पीन बरु होत निरन्तर।
रही धीरता धारि ईस इच्छा पर निरभर॥

करि राखी अधिकार लाभ की आस अकेली।
फूली ताही सों सहजहिं आसा की वेली॥
चकित भये लखि जाहि आर्य्य सन्तान मधुप गन।
धन्यवाद गुञ्जार मचायो मिलि प्रमुदित मन॥
जानि सुरभि आगमन दसा उपवन पर तेरे।
अतिसय आनँद मगन विबुध पिक वृन्द घनेरे॥
करि कलरव कोलाहल लीला विविध लखाये।
देखि जाहि सब अचरज सों वोले चकराये॥
आज कहा आनन्द उमड़ि सो रह्यो चहूँ दिसि।
पश्चिम उत्तर देस अवध विहँसत सो किहि मिसि॥
ईति भीति अरु रोग सोग दुष्काल दवाई।
महँगी सों मन मलिन प्रजा सब दुख बिसराई॥
हरखानी सी आज कहा घूमत इतरानी।
अतिहि अपूरव अनुपम सुख सों मानहुँ सानी॥
एक एक सों मिलत मिलत गर लागि परस्पर।
जय! जय! मंगल! मंगल! सोर मचाय निरंतर॥
छोड़त नहिं गर लगि कहत—"धनि भाग हमारे।
यहु दिन पर हे मित्र! भये हम साँच सुखारे॥
धन्य घरी यह आज! वड़े भागिन सों आई।
परम उचित जु परस्पर मिलि हम देहिं वधाई॥
जाकी सपनहुँ आस रही नाहीं मन सोचत।
सोई सुख को साज आज इन आँखनि दीखत॥
धन्य धन्य जगदीस धन्य करुना वरुनालय।
सुखी कीन हम भारतीन तुम आज सुनिश्चय॥

धन्य राज महरानी विक्टोरिया तिहारो।
जामैं न्यायहि होत अन्त जब जात विचारो॥
नित प्रति उन्नति होति प्रजा सुख सामग्री की।
विद्या, ज्ञान, सान्ति, स्वच्छन्दतादि विधि नीकी॥
पावत साँचो स्वत्व सबै चाही जो कहँ।
राम राज सम कहैं तऊ अनुचित नहिं या महँ॥
धन्य लाट करजन! परजन मन रञ्जनहारे।
राजत राज न्याय जाके सुविचार सहारे॥
जाके सुभ अधिकार बीच अधिकार परम हित।
पाय प्रजा कृतकृत्य भई अनुमानत प्रमुदित॥
धन्य मनुज मण्डल मण्डल मनि मुकुट मनोहर।
महिपति मेकडानल महात्मा महा मान्यवर!
धन्यवाद किहि भाँति देहिँ तुम कहँ सुखरासी।
हम सब पच्छिम उत्तर वासी अवध निवासी॥
सहजहिँ सोचत समझि परत अतिसय जो दुस्तर।
तव उपकार पहार भार गुरु तर गुनि सिर पर॥
है ठानत हठ यदपि कहे बिन नहिँ मन मानत।
पै बानी चुपचाप रहत सकुचात बखानत॥
थरथर काँपत रसना बसना अपनी जानी।
सरन दसन के जात बात की बात भुलानी॥
डरत डरत कर गहत लेखनी जौ साहस कर।
तौ मसि मैं डूबत वह निकरन चहत न सक भर॥
सौ सौ जतन निकारेहूँ कारो मुख नीचे।
कीनेहीं रहि जात चलत नहिँ बल करि खींचे॥

खींचि खींचि हू चलत चलाये चिरचिरान मिसि।
देत दुहाई मनहुँ पत्र ऊपर सिर घिसि घिसि॥
तव केवल मनहीं कछु अनुभव करत हमारे।
को तुम? कैसे, काज कौन कीने तुम प्यारे॥
आनन्द उर न अमात गात भरि निकरत वाहर।
हर्षित ह्वै रोमावलि उठि उठि सोचत सादर॥
सव मिलि सौ २ मुखनि सहस सहसन रसननि सों।
लाख २ अभिलाखन कोटि कोटि जतननि सों॥
अरव खरव वरु पदुम वरखहु जु पै निरन्तर।
नील संख संख्यकहु देहिँ जौ तुम कहँ प्रभुवर॥
धन्यवाद तौ हूँ तेरे हित लागत थोरे।
यह गुनिकै वेऊ नत ह्वै सन्मान निहोरे॥
मनहुँ निवेदन करत रावरी सेवा माहीं।
धन्यवाद तुम कहँ देवे की समरथ नाहीं॥
पै हाँ, है हमरी संख्या जितनी हे प्रभुवर।
तितने वत्सर कै जुग लौं या भारत भू पर॥
रिनी आर्य्य सन्तान तिहारे निश्चय रहिहैं।
तेरी जसु गुन गाथा सादर सव दिन कहिहैं॥
जे कृतज्ञ स्वाभाविक सव दिन के पे प्यारे।
भला भूलिहैं कैसे वे उपकार तिहारे॥
सुनहु! सहस वरसन सों हम सव भारत वासी।
रहे निरन्तर सहतहि दुसह दुखन की रासी॥
यवन राज अन्याय अनोखिन की सुधि आवत।
अजहूँ लौं हम भारतीन को हिय हहरावत॥

वच्यो कण्ठगत प्रान होय जाकर सन भारत।
लहि अँगरेजी राज फेरि सम्हरत सो आरत॥
पुनि यह नई नई उन्नति अब करिबे लाग्यो।
बहु दुख तजि पुनि निज जीवन आसा अनुराग्यो॥
परिवर्तन निसि दिवस तुल्य ह्वै गयो अपूरव।
पूरवहीँ सो पूरव न्याय दिवाकर को जब॥
फैल्यो सुभग प्रकास स्वच्छ स्वच्छन्दता चमकि।
बिनसी अत्याचार निसा भय भरी सहज थकि॥
निखर्‌यो नीति प्रभात अविद्या तिमिर दुरायो।
सिच्छा दच्छिन अनिल प्रवाह प्रबोध करायो॥
जगो जगत उद्योग फेरि भय आलस त्यागी।
प्रजा विहँग अवली प्रबन्ध जस गावन लागी॥
चल्यो पथिक व्यापार स्वत्व पथ पर्‌यो लखाई।
लुके उलूक लुटेरे भजे चोर अन्याई॥
विकसो विद्या पंकज पुञ्ज सरोवर देसन।
राजभक्ति मकरन्द सु पूरित ज्ञान परागन॥
सुभग सान्ति सौरभ सञ्चार सुहायो सुन्दर।
मच्यो मञ्जु गुञ्जार अनन्द मलिन्द मनोहर॥
पै दुर्भागी देस अवध अरु पच्छिम उत्तर।
पच्छिम उत्तर ओर रह्यो जो भारत मैं पर॥
जो पूरब सों दूर दूर दच्छिन हूँ सो भल।
उभय दिसा प्रतिकूल होय, प्रतिकूल लहत फल॥
दोउ सुभाव नियमानुसार तैं बिलम लगावत।
दच्छिन वात प्रभात प्रकास भानु इत आवत॥

तासों इतै अजहुँ हे प्रभु! छायो दरसाई।
प्रवल अविद्या तिमिर स्वत्व पथ ज्ञान दुराई॥
अन्याई चोरहु लखात निज घात लगाये।
उर्दू को वुरका ओढ़े निज गात छिपाये॥
पै तुम धन्य! धन्य! हे प्रजा प्रान तैं प्यारे।
अरुन सरिस रवि न्याय दरस दिखरावन वारे॥
हरन अविद्या तिमिर कमल विद्या विकसावन।
अहो धन्य! गुञ्जार आनन्द मलिन्द मचावन॥
प्रादेसिक सासक बहु लाट लोग पूरव इत।
आये, किये प्रवन्ध राज निज काज यथोचित॥
पै साँचे राजा के प्रतिनिधि तुमहिँ लखाने।
साँचे प्रजा वन्धु सासक तुमहीँ गे माने॥
भारत प्रभु जैसे महात्मा रिपन मनुज वर।
सुभ अँगरेज राज प्रतिनिधि इक प्रजा मनोहर॥
दूजे तुमहीं प्रादेसिक प्रभु त्यों इत आये।
जिन प्रजान सन्तप्त हृदय दै हर्ष जुड़ाये॥
बृटिश राज की महिमा तुमहिँ प्रगट इत कीनी।
उदारता साँची सबहिन दिखाय दृग दीनी॥
नहिं अट्ठारह सौ सतानवे सन् ईसा मैं।
तुम तजि और कोऊ जौ सासक होतौ यामैं॥
तौ नहिँ पच्छिम उत्तर देस रहत यह ऐसो।
नहिँ जानत कब को ह्वै गयो होत यह कैसो॥
तबही सोँ दैवी नर हम सब तुम कहँ माने।
परजन दुख भञ्जन मनरञ्जन साँचहु जाने॥

अरु नहिँ केवल हमहीं सब तुम कहँ अस जानत।
जहाँ विराजे तुम तहँ सब ऐसहिँ अनुमानत॥
सबै प्रदेस निवासी अटल तिहारो सासन।
चहत रहे निज देस माहिँ सह सहस हुलासन॥
इत आवन की चली बात जब तुमरी प्यारे।
बंग वासि गन तुमहिँ लहन हित वहुत पुकारे॥
पै न भाग जागे उनके न तुमहिँ उन पायो।
हम सब पर करि दया ईस तुहिँ इतहिँ पठायो॥
पूरब पुन्य प्रभाय पाय तुव पाय परस अव।
पच्छिम उत्तर देस निवासी प्रजा जाहि कब॥
रही भला ऐसी आसा जैसो कछु पायो।
बृटिश राज को साँचो सुख लहि सोक नसायो॥
नहिँ केवल कराल दुष्काल प्रबन्ध मनोहर।
करिकै तुम बनि गए प्रजा के साँचे हियहर॥
कियो प्रबन्ध महामारी को अतिसय उत्तम।
जासों नहिँ अन्याय मच्यो इत और देश सम॥
परम प्रचण्ड पुलिस पच्छिम उत्तर अन्याई।
दै दै दुष्टन दण्ड दण्ड मम सीध बनाई॥
और अन्य आधीन जिते ऐसे अनुसासक।
साहसीन भय लेस हीन अन्याय उपासक॥
दमन कियो तिन सहज सुभाय ससंक बनायो।
समन प्रजा आतंक भयो सुख सुभग सुहायो॥
जान्यो सब प्रधान अनुसासक है कोउ हम पर।
जो सब के हित हेत करत चिन्तन प्रवीन वर॥

हेरि हेरि दुख हरत हमारे महि दुख निज तन।
धरम परायनता न तजत अपनो पै पल छन॥
परम असिच्छित प्रजा पेखि पच्छिम उत्तर की।
सिच्छा सुभग सुधार हेतु तेरी मति भरकी॥
आरम्भिक सिच्छा प्रचार में बहु बल दीन्यो।
सिच्छा उच्च सुधार तैसहीं न्यून न कीन्यो॥

किये विश्व-विद्यालय को संसोधन सुन्दर।
मेवर कालिज मैं विज्ञानालय वनय वर॥
ये सब हमरे हित के हित कर्तव्य तुमारे।
कबहूँ कैसेहूँ किमि हम पैं जाहिँ विसारे?

सौ सौ धन्यवाद जौ देहिँ तऊ कम लागत।
पै तेरी हित करनि वानि हठ तनिक न त्यागत॥

नित नव न्याय नीर बरसत घेरे घन के सम।
कौन कौन के हेतु देहिँ अब धन्यवाद हम?
सब सों भारी कृपा तिहारी जो अति प्यारी।
जाहि बिचारी बनत बावरी बुद्धि बिचारी॥
तेरे सासन सुखद समय को जो वसन्त बनि।
संचारत सुवास तव सुजस सुभग दिसि विदिसनि॥
दच्छिन दच्छिन बात बात मैं रस बरसावत।
वदल प्रजा दल तरु दुख दल मन सुमन खिलावत॥
विद्वेषी सहकार जासु कारन बौराने।
गावत कवि कोकिल कल कीरति गान रिझाने॥

साँचहु जाकी रही आस कवहूँ कछु नाहीं।
तिहि सुख की सामग्री लही सहज तुम पाहीं* ॥
धन्य आप हे प्रभु प्रियवर प्रवीन मेकडोनल।
धन्य न्याय परता को वाने तिहारी निःछल ॥
वहु दिवसन लौं राजसदन सों रही निकारी।
सहत अमित अन्याय निरन्तर वनी विचारी ॥
भारत सिंहासन स्वामिनि जो रही सदा की।
जग में अब लौं लहि न सक्यो कोऊ छवि जाकी ॥
जासु वरन माला गुन खानि सकल जग† जानत।
विन गुन गाहक सुलभ निरादर मन अनुमानत ॥
होय अलग जो रही अजौ लौं देवनागरी।
गुनि गुनगन गुनवाव न्याय रत आप आदरी ॥
यवन राज के समय न अखर्यो याहि निरादर।
रह्यो सुभायहिँ जो अनीति आगार उजागर ॥

---

*न्यायालयों में नागरी वर्णावली स्वीकार विषयक अनुशासन पत्र ता० १८ एप्रिल सं० १६०० का।

†प्रोफेसर मोनियर विलियमस कहते हैं कि "स्थल रूप से यह कहा जा सकता है कि "इन देवनागरी अक्षरों से वढ़कर पूर्ण और उत्तम अक्षर दूसरे नहीं हैं।" प्रोफेसर साहिव ने तो इन्हें देवनिर्मित तक कह दिया है।

सर आइज़ेक पिटम्यान ने कहा है कि "संसार में सर्वाङ्गपूर्ण यदि कोई अक्षर हैं तो वे हिन्दी के हैं।"

पायनियर पत्र ने भी १० जुलाई सन् १८९२ ई० के पत्र में लिखा है कि "नागरी अक्षर धीरे में लिखे जाते हैं, परन्तु जब एक वार लिख गये तो छपे हुए के समान हो जाते हैं, यहाँ तक कि उसमें लिखे हुए पद को एक ऐसा पुरुष भी जिसे उसके अर्थ की आभामात्र भी नहीं ज्ञात है उन्हें शुद्धता पूर्वक पढ़ लेगा।"

अरु पुनि रीति सहज यह निज वस्तुहि जग भावत।
तासों नृप भाषा अरु बरन दोऊ कहरावत॥
भये पारसी भाषा संग अरबी के अच्छर।
प्रचरित यवन राज संग राज काज अभ्यन्तर॥
राजसदन बाहर पै तऊ चारिहू ओरन।
राजत रही नागरी ही गृह प्रजा करोरन॥
एकै कायथ जाति राज सेवा के लोभन।
पढ़त पारसी रही जानि अपनी जीवन धन॥
पै भागनि सों जब भारत के सुख दिन आये।
अँगरेजी अधिकार अमित अन्याय नसाये॥
लह्यो न्याय सबहिन छीने निज स्वत्वहिँ पाई।
दुरभागनि बचि रही यही अन्याय सताई॥
लह्यो देस भाषा अधिकार सबै निज देसन।
राज काज आलय विद्यालय बीच ततच्छन॥
पै इत बिरचि नाम उर्दू को "हिन्दुस्तानी"।
अरबी बरनहुँ लिखित सके नहिँ बुध पहिचानी॥
"हिन्दुस्तानी" भाषा कौन? कहाँ तें आई।
को भाषत किहि ठौर कोऊ किन देहु बताई॥
कोउ साहिब खपुष्प सम नाम धर्‍यो मनमानो।
होत बड़न सों भूलहु* बड़ी सहज यह जानो॥

---

*जिसे जब स्वर्गीया महाराणी ने इम्प्रेस आफ़ इण्डिया की उपाधि ग्रहण की तो उसका अनुवाद उर्दू में क़ैसरि हिन्द किया गया और हिन्दी में राज-राजेश्वरी के स्थान पर हिन्द का क़ैसर। जिसका व्यवहार राज कार्य्यालय के अतिरिक्त आज तक और कहीं नहीं हुआ !!!

हरि हिन्दी की बोली* अरु अच्छर अधिकारहिँ।
लै पैठारे बीच कचहरी बिना बिचारहिँ॥
जाको फल अतिसय अनिष्ट लखि सब अकुलाने।
राज कर्म्मचारी अरु प्रजा वृन्द बिलखाने॥
संसोधन हित बारहिँ बार कियो बहु उद्यम†।
होय असम्भव किमि सम्भव, कैसे खल उत्तम॥

---

* शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर ने सन् १८७७,७८ की रिपोर्ट में लिखा है कि "हिन्दी ही इस प्रदेश की देश भाषा है।"

प्रसिद्ध डाक्टर राजेन्द्र लाल मित्र बङ्गाल एशियाटिक सौसाइटी के जरनल १८६४ ई० में "हिंदवी भाषा की उत्पत्ति और उर्दू बोली से उसका सम्बन्ध" शीर्षक लेख में लिखते हैं कि "भारतवर्ष की देश भाषाओं में हिन्दी सब से प्रधान है। बिहार से सुलेमान पहाड़ तक और विन्ध्या से तराई तक यह सभ्य हिन्दू जाति की मातृ भाषा है। गोरखा जाति ने इसका कमाऊँ और नैपाल में भी प्रचार कर दिया है और यह पेशावर के कोहिस्तान से आसाम, और काश्मीर से कुमारी अन्तरीप तक के सब स्थानों में भली भांति से समझी जा सकती है।"

मिस्टर बीम्स ने भी इसी मत का समर्थन किया है तथा रेवरेण्ड केलाग लिखते हैं कि "पचीस करोड़ भारतवासियों में एक चौथाई वा ६ या करोड़ मनुष्यों की हिन्दी मातृ भाषा है।"

मिस्टर पिनकाट लिखते हैं कि "उत्तर भारतवर्ष की भाषा सदा से हिंदी थी और अब भी है।"

† बोर्ड आफ़ रेवन्यू को बार बार आदेश पत्र निकालना पड़ा और उसमें बार बार इस बात पर ज़ोर दिया गया कि कचहरियों की कार्रवाई

हिन्दी भाषा सरल चह्यो लिखि अरबी बरनन।
सो कैसे ह्वै सकै* बिचारहु नेक विचच्छन?
मुगलानी, ईरानी, अरबी, इङ्गलिस्तानी।
तिय नहिँ हिन्दुस्तानी बानी सकत बखानी॥
ज्यों लोहार गढ़ि सकत न सोने के आभूषन।
अरु कुम्हार नहिँ बनै सकत चाँदी के बरतन॥
कलम कुल्हाड़ी सों न बनाय सकत कोउ जैसे।
मूजा सों मल मल पर बखिया होत न तैसे॥
कैसे हिन्दी के कोउ सुद्ध सब्द लिखि लैहै।
अरबी अच्छर बीच, लिखेहुँ पुनि किमि पढ़ि पैहै?
निज भाषा को सबद लिखो पढ़ि जात न जामैं।
पर भाषा को कहौ पढ़ै कैसे कोउ तामैं॥
लिख्यो हकीम औषधी मैं 'आलू बोखारा'।
उल्लू बनो मोलवी पढ़ि 'उल्लू बेचारा'॥

फ़ारसी-पूरित उर्दू में न लिखी जाय, वरञ्च ऐसी "भाषा में लिखी जाय जैसी कि एक कुलीन हिंदुस्तानी फ़ारसी से पूर्णतया वंचित रहने पर भी बोलता हो"। ऐसी ऐसी आज्ञाएं निकलते प्रायः चौथाई शताब्दी समाप्त हो गई परन्तु कुछ भी फल न हुआ वरञ्च भाषा नित्य और भी कड़ी ही होती गई!

* पायनियर अपने १० जनवरी सन् १८७६ ई० के पत्र में लिखता है कि 'फ़ारसी लिपि और शब्दों में इतना घनिष्ट सम्बन्ध है कि इस विषय (भाषा) का सुधार तब तक पूर्णतया हो ही नहीं सकता जब तक गवाही हिन्दी (नागरी) अक्षरों में न लिखी जायगी।

साहिव 'किस्ती' चही पठाई मुनसी 'कसवी'।
'नमक' पठायो, भई 'तमस्सुक' की जब तलवी॥
पढ़त 'सुनार' 'सितार' 'किताब' 'कबाब' बनावत।
'दुआ' देत हूँ 'दगा' देन को दोष लगावत॥
मेम साहिवा 'बड़े बड़े मोती' चाह्यो जब।
'बड़ी बड़ी मूली' पठवायी तसिल्दार तब॥
उदाहरन कोउ कहँ लगि याके सकै गनाई।
एकहु सबद न एक भाँति जब जात पढ़ाई॥
दस औ वीस भाँति सों तौ पढ़ि जात घनेरे।
पढ़े हजार* प्रकारहु सों जाते वहुतेरे॥
जेर, जबर, अरु पेस, स्वरन को काम चलावत।
बिन्दी की भूलनि सौ सौ विधि भेद बनावत॥
चारि प्रकार जकार, सकार, अकार, तीन विधि।
होत हकार, तकार, यकार, उभय विधि छल निधि॥
कौन सबद केहि बरन लिखे सों सुद्ध कहावत।
याको नियम न कोऊ लिखित लेखहिँ लखि आवत॥
कोऊ पारसी बरन, कोऊ अरवी के बाजैं।
टेढ़े मेढ़े अतिसय सर्पाकृति से राजैं॥
साँचे मैं ढलि सकै ठीक अजहूँ लौं जो नहिँ।
लिखि लिखि पत्थरहीं पै छपत लखौ किन सहजहिँ॥
अरवी, तुरकी, तथा पारसी, हिन्दी सानी।
अँगरेजी, संस्कृत, मिली भाषा मुगलानी॥

---

*भारतेन्दु वाबू हरिश्चन्द्र ने फारसी अक्षरों में लिखे हुए 'सर' शब्द को १००० प्रकार से पढ़ा जाना सिद्ध किया है।

को पढ़ि परिडत होय ताहि प्रभु नेक विचारौ।
लिखै शुद्ध किहि भाँति कौन हिय मैं निरधारौ॥

बरु पारसी प्रचार रह्यो यासों अति सुन्दर।
एकहि भाषा लिखी जाति निज अच्छर भीतर॥

यह विचित्रताई जग और ठौर कहुँ नाहीं।
पँचमेली भाषा लिखि जात बरन उन माहीं॥

जिनसे अधम* बरन को अनुमानहुँ अति दुस्तर।
अवसि जालियन सुखद एक उर्दू को दफतर॥

जिहि तैं सौ सौ साँसति सहत सदा बिलखानी।
भोली भाली प्रजा इहाँ की अतिहि अयानी॥

पै नहिँ जानि परे यह कौन मोहनी डारी।
निज प्रेमी बनयो बहु अँगरेजन अधिकारी॥

---

* प्रोफ़ेसर मोनियर विलियम्स ने ३० दिसम्बर सन् १८५८ ई० के टाइम्स नाम के पत्र में फ़ारसी अक्षरों के दोष पूर्ण रूप से दिखाये हैं। उनका कथन है कि "इन अक्षरों को सुगमता से पढ़ने के लिये वर्षों का अभ्यास आवश्यक है" वे कहते हैं कि "इन अक्षरों में चार 'ज' होते हैं तथा प्रत्येक अक्षर के उसके प्रारम्भिक, मध्यस्थ, अन्तिम वा भिन्न होने के कारण चार भिन्न २ रूप होते हैं।" अन्त में प्रोफेसर साहिब कहते हैं कि "चाहे ये अक्षर देखने में कितने ही सुन्दर क्यों न हों, पर न कभी पढ़े जाने योग्य हैं, न छपने योग्य हैं और पूरब में विद्या और सभ्यता की उन्नति में सहायक होने के तो सर्वथा अयोग्य हैं।" डाक्टर राजेन्द्रलाल, प्रोफेसर डासन और मिस्टर ब्लाकमैन तथा राजा शिव प्रसाद आदि बड़े २ विद्वानों ने भी दृढ़ता पूर्वक प्रोफेसर मोनियर विलियम्स के इस मत का समर्थन किया है।

वारहिँ वार निहारि अमित औगुन जिन थाके।
कियो प्रचार न वन्द करत प्रतिकारहि थाके॥
अतिसय अचरज होत गुनत यह वात विचित्रहिँ।
भाषा अरु अच्छर दोऊ दोउनहूँ के नहिँ॥
नहिँ राजा के और प्रजा* हू के जे नाहीं।
तऊ सहत दुख दोऊ काज नित करि तिन माहीं॥
दोउ नहिँ लिखि पढ़ि सकत न समुझत† जाहि भली विधि।
रहे तैरि पै तऊ दोऊ दुर्भाग पयोनिधि॥
यह अन्धेर मचत इत वीते पैंसठ वत्सर।
थकी पुकारत प्रजा सुन्यो पै कोउ न ध्यान धर॥

---

* मिस्टर ग्राउस इसी विषय पर लिखते हैं कि—"आजकल की कचहरी की वोली वड़ी कष्टदायक है क्योंकि एक तो यह विदेशी है और दूसरे इसे भारतवासियों का अधिकांश नहीं जानता। ऐसे शिक्षित हिन्दुओं का मिलना कोई असाधारण वात नहीं है, जो स्वतः इस वात को स्वीकार करेंगे, कि कचहरी के मुन्शियों की वोली को वे अच्छी तरह विल्कुल नहीं समझ सकते और उसके लिखने में तो वे निपट असमर्थ हैं। इसका वड़ा भारी प्रमाण तो यह है कि क़ानूनों और आज्ञाओं के सर्कारी भाषानुवाद को कोई भी भलीभांति नहीं समझ सकता, जब तक एक व्यक्ति अँगरेजी से मिलाकर उन्हें न समझा दे।"

† मिस्टर फ्रेडरिक पिनकाट लिखते हैं कि "भारतवासियों को जिनकी यह मातृभाषा मानी जाती है, अंगरेजों की तरह इसे स्कूलों में सीखना पड़ता है और भारतवर्ष में यह विचित्र दृश्य देख पड़ता है कि राजा और प्रजा दोनों अपने कार्य्यों का निर्वाह ऐसी भाषा द्वारा करते हैं जो दोनों में से एक की भी मातृभाषा नहीं है।

उच्च राज अनुसासक हू कै बार सुधारन।
चाहे याके दोष, दूरि करि सके न पै कन॥
बोयो बिटप बबूर चहत चाखन रसाल रस।
वेतस वेलि बढ़ाय मालती मुकुल मोद जस॥
चहत बार वनिता सों पतिव्रत को प्रन पालन।
सो कैसे ह्वै सकै काक जिमि होत मराल न॥
जो जो जतन सुधार हेतु याके अनुसासक।
लोग कियो सो भयो दोषही को परिवर्धक॥
यवन राज तैं लिखत पारसी जे चलि आये।
अँगरेजी समय हुँ ते तैसे हीं लौ लाये॥
लिखत पारसी रहे कचहरिन बहुत दिनन सन।
तेई राज सेवक लहिकै अनुसासन नूतन॥
जहँ भाषा सँग अच्छर हू बदले इक बारहिँ।
तहँ बहु लेखकहू बदले लिखि सके जौन नहिँ॥
नव बरनहिँ नव भाषा सँग नव लेखक आये।
चले बरन भाषा सँग तहँ बिन कछु स्रम पाये॥
इत भागनि सों भाषा ही बदली नहिँ अच्छर।
दोऊ सुभावहि सों विरुद्ध सहजहिँ अति दुष्कर॥
तासों फल विपरीत भयो औरहु अचरज मय।
बदल्यो इन अच्छरन भ्रष्ट भाषा करि अतिसय॥
सोई पारसी लेखक लोग सोई बरनन मैं।
सोई सबद सोइ रीति भरत निज निज लेखन मैं॥
मिलि मुन्सी मोलवी बनायो इहि मुगलानी।
हिन्दी भाषा जो न जाय कोउ विधि पहिचानी॥

निज विद्या अधिकार विज्ञता दिखरावन हित।
लहन लेख लालित्य कहन मैं चोरन हित चित॥
लगे पारसी अरबी सवद अधिक नित मेलन।
रह्यो पारसी उर्दू बीच कृया तजि भेद न॥
अरु पुनि इन अच्छरन सवद दूजी भाषा के।
लिखन कठिन अति * पठन असम्भव सव विधि थाके॥

* शकुन्तला नाटक के दो उर्दू अनुवादकों ने विवश हो कण्व को कन और माढव्य को माधो लिखा ऐसे ही जिन शब्दों के लिखने में कठिनता होती प्रायः उसका रूप वदल देते जैसे ब्राह्मण को वरहमन, व्यापार को व्योपार। स्कूल को इस्कूल, स्टेशन को इस्टेशन ज्वाइण्ट मैजिस्ट्रेट को जन्ट मजस्टरैट, स्टाम्प को इस्टामप इत्यादि। ख़ालिक़बारी के चाल की एक मसन्वी "अलफ़ाज़ अँगरेज़" नामक मुन्शी ज्वालानाथ ने वेगम भूपाल की सहायता से उर्दू अच्चरों में वनाई है, जिसमें उनकी और बेगम साहिबा की भी पूरी उपाधि अँगरेज़ी शब्दों के आने से कोई नहीं पढ़ सकता। उसके कई छन्द जिन्हें उन्होंने शुद्ध शुद्ध उच्चारण के लिए ज़ेर ज़वर को छोड़ अनेक नवीन चिन्ह भी देकर लिखे हैं तो भी कोई मोल्वी चाहे वह अँगरेज़ी भी जानता हो वेखटक शुद्ध शुद्ध नहीं पढ़ सकता। उदाहरणार्थ यहाँ लिखते हैं—

ख़ुदा (गाड) है (लार्ड) है होशमन्द।
(क्रियेटर) सिरजनहार दानिशमन्द॥
वना फादरे मुतलक़ (आलमायटी)।
फ़रिश्तैं मलिक जान है (डेटी)॥
(रेवेलेशन) इलहाम है नूर (लाइट)।
(रिपेन्टेन्स) तोवा है और रस्म (राइट)॥
(डवोटी) है आविद समझ रास्त रास्त।
रियाज़त (पेनेन्स) और रोज़ा है (फ़स्ट)॥

तासों बाँचन सुविधा हित पारसी सबद सब।
लेखक लोग लिखैं, परिचय बस बाँचि सकैं तब॥

यह अँगरेजी राजहिँ मैं बाढ़ी कठिनाई।
खिचड़ी भाषा लिपि घसीट मैं जब स्रों आई॥

पूरब यवन प्रधान पुरुष निज नैनन देखत।
भाषा बरन अभिज्ञ जहाँ कोऊ त्रुटि पेखत॥

करत रहे प्रतिकार सुधार तिरस्कृत लेखक।
जासों लिपि अरु भाषा बिगरत रही न भर सक॥

सुद्ध पारसी भाषा नस्तालीक* लेख सँग।
यवन राज के होत पत्र तब सुपठ औ सुढँग॥

अब अँगरेजी सासक भूलिहु लखत न ता कहँ।
दसखत ही करि देत सिरिस्तेदार कहत जहँ॥

अरु जौ लखैं तऊ पढ़ि सकत न एकहु सब्दहिँ।
सुनहिँ और के मुखहिँ सुनेहुँ नीके नहिँ समुझहिँ॥

जासों चली खुलासा।लिखिबे की अब चाली।
याही रीति चलत सब राज काज परनाली॥

राज कर्म्मचारी गन विज्ञ न समुझत जा कहँ।
मूढ़ प्रजा के तब आवै किहि भाँति समझ महँ॥

देत प्रजा इजहार गँवारी हिन्दी भाषत।
मुनसी करि अनुवाद ताहि पारसी बनावत॥

---

* नस्तालीक़ सुस्पष्टलिपि।

पुनि सुनि समुझि सकत नहिँ जिहि वे दीन विचारे।
"समझि लियो" कहि देत सदा ही डर* के मारे॥
कारन याको यहै पढ़े विन जो नहिँ आवत।
पढ़े हुँ भिन्न भाषन सों मिलि कठिनाई ल्यावत॥
उर्दू नाम राज सेना विपिनी की बोली।
तिमिर लिंग वंसज नृप यवन संग जब, टोली॥
यवन जाति की भिन्न २ निवसी दिल्ली महँ।
निज आवश्यक काजन हित सब सैनिक जन जहँ॥
दिल्ली वासी वनिकनि सों मिलि जुलि नित भाषत।
टूटी फूटी हिन्दी संग कछु सबद मिलावत॥
निज २ भाषा हू के समुझ न लगे जाहि जन।
इमि जो बोली बोली गई हाट कछु दिवसन॥
सो विगरी हिन्दी भाषा उरदूइ-मुअल्ला।
साहजहाँ के समय पुकारन लगे मुसल्ला॥

---

*एक बार सेशन जज के इजलास में मैंने स्वयम् देखा, कि एक जङ्गली कोल अपराधी से वकील सरकार ने पूछा कि तुम्हारे ऊपर इलजाम दफ़ा ३०७ ताज़ीरात हिन्द का, यानी इक्दिाम क़त्ल का लगाया गया है, क्या तुमको उससे इक़बाल है? उत्तर मिला "हाँ"। जज ने कहा, कि उसे फिर समझाओ। वकील ने कहा कि अमुक व्यक्ति को तुमने क़त्ल करने की नीयत से जरर शदीद पहुँचाया? फिर कहा "हाँ"। तब फिर जज ने चपरासी से समझाने को कहा। और जब उसने कहा कि फ़लाने के तूँ मारि डारै के ख़ातिर लाठी मारे रह्यः कि नाहीं? तब उसने समझकर "नाहीं" कहा। यदि जज ऐसा धीर और सुचतुर न्याई न होता तो वह बिचारा व्यर्थ ही कठिन दण्ड का भागी हुआ था।

पै वह यवन चक्र मैं निवसत रही निरन्तर।
केवल सम्भाषन अरु कविता के अभ्यन्तर॥
लेख पारसी अच्छर अरु भाषा मैं केवल।
राज काज गृह काजहु मैं होते उनके दल॥
जन साधारन प्रजा न पै उन सों अनुरागी।
हिन्दी बोली बरन दुहुन की प्रेमन पागी॥
दिल्ली मैं बसि बनी रही यह सीधी सादी।
आय लखनऊ गई कठिन सब्दन सोँ लादी॥
ह्वाँ के लोग सदा प्रचलित भाषा मैं बोले।
ह्वां निज मति अनुरूप विविध भाँतिन तिहि छोले॥
उन चाह्यो सब समुझैं जामैं उनकी भाषा।
इन्की समझ न सकै कोऊ ऐसी अभिलाषा॥
भरि भरि सदा सबद अरबी पारसी कठिनतर।
उर्दू भाषा को जेठी पारसी दियो कर॥
रही तऊ यह भाषा पुस्तक ही के भीतर।
पढ़े लिखे जन भाषतहू मिलि रहे परस्पर॥
पै ह्वां के अधिवासी बोलत तिहि न कदाचित्।
समुझि सकत नहिँ नेक सुनत जाकहँ वै नित प्रति॥
रही न कोऊ भाषा की गिनती में यह तब।
कछु न पूछ ही रही यवन को राज रह्यो जब॥
पै अँगरेजी राज पाय बढ़ि बहुत मुटानी।
चेरी सों औचक हीँ यह बनि बैठी रानी॥
आधे भारत के सब न्याय भवन के भीतर।
लगी चलावन राज काज सासनहिँ निरन्तर॥

नवल गढ़े, अरु अँगरेजी आदिक बहु सबदन।
सों भरिकै औरौ कठोर अरु कुटिल गई बन॥
बहु पुस्तक बहु भाषन सों बहु विषयन केरी।
अनुबादित ह्वै गईं, बनी त्यों नवल घनेरी॥
अनुसासक अनुसासन वस, लगि लाभ लोभ जन।
विरच्यो जनु निज देस काज दुर्गति के साधन॥
प्रचरित ह्वै जे विविध पाठसालन के द्वारा।
प्रजा बृन्द मैं महा मूढ़ता पुञ्ज पसारा॥
जानि राज भाषा इहि राज काज हित साधन।
लागे उर्दू पढ़न लोग तजि निज निज भाषन॥
इने गिने नव बने ग्रन्थ पढ़िवे तैं थाके।
पूरन भाषा ज्ञानहुँ होत न, तब पुनि ताके—
पुष्टि काज पारसी पढ़त जन हारि अन्त पर।
वाहू को पढ़ि पै न लाभ कछु लहत अधिक तर॥
होत अधिक इक भाषा ज्ञान अवसि पढ़ि ता कहँ।
पै नहिँ विद्या ग्रन्थ कोऊ इन दोउ भाषन महँ॥
तासों विद्या पढ़िवे काज पठन अरबी को।
अति आवश्यक पंडित बनिवे काज सवी को॥
पढ़ि अरबी अति कठिन चहै मोलवी कहावै।
पर इतनेहूँ पै उर्दू नहिँ ताकहँ आवै॥
अँगरेजी, हिन्दी, तुरकी, संस्कृत सबद जब।
आवत नहिँ कछु चलत मोलविन हूँ की कछु तब॥
अब कहियै जो फँस्यो फन्द उर्दू के जाई।
कितनी भाषा पढ़े सकै पण्डित कहलाई॥

सिच्छा हित जे बनी पाठशाला बहुतेरी।
तिन महँ उरदुहि उपयोगी गुनि प्रजा घनेरी॥
पढ़त छाँड़ि हिन्दी भाषा भूषित देवाच्छर।
सुगम, सुपठ, सुन्दर, साँचहुँ सब गुन के आगर॥
अँगरेजिहु के संग देस भाषा के नाते।
उरदुहि अधिक पढ़त जन सेवा हित ललचाते॥
विद्यालय मैं पहुँचि पारसी पास पहुँचि करि।
करत परिच्छा पास सुगम हित साधन हिय धरि॥
जासों सब सिच्छित बनि गये मनहुँ परदेसी।
निज भाषा को ज्ञान जिन्हैं नहिँ उन सोँ बेसी॥
निज आचार विचार धरम को मरम न जाने।
परम्परा विपरीत नीति कुल रीति भुलाने॥
बदल्यो सहज सुभाव रुची रुचि नई नई तब।
प्रचरित भईं कुरीति मई बहु जिहि लखियत अब॥
सिच्छित सँग सों अज्ञहु करत अनुकरन तिन को।
इहि विधि औरै रूप भयो भारत बासिन को॥
बिना ज्ञान निज भाषा बिन जाने निज अच्छर।
रहत अज्ञ औरन भाषा पढ़ि भारतीय नर॥
छूटि जात सम्बन्ध संस्कृत सों पुनि सब विधि।
जो जग भाषा जननि सकल विद्या की जो निधि॥
जो प्रधान भाषा भारत की आदि समय सन।
दुहूँ लोक हित जो भारतियन को जीवन धन॥
जाके बिन कछु धरम करम को मरम न जानत।
अरु आचार विचार विविध व्यवहार क्रमागत॥

विद्या, दर्सन, कला, नीति विज्ञान ज्ञान तिमि।
निज इतिहास जाति मर्य्यादा परम्परा इमि॥
बिन जाने भारत सन्तान विविध निति प्रति।
त्यागि शील कुल रीति नीति बनि गये हीन गति॥
नहिँ केवल हिन्दुनहीं की यह अवनति कारिनि।
मुसल्मान गनहूँ की साँचहुँ उन्नति हारिनि॥
तऊ विज्ञ हिन्दू जन जब जब दियो दुहाई।
याहि बदलिवे काज राज दरबारहिँ जाई॥
तब तब कियो विरोध यवन गन बिना विचारे।
निज चेला लाला लोगन सँग लै हठ धारे॥
निज स्वारथ संकोच समय स्रम हित हित हानी।
सकल देस की करत न आन्यो जिन मन ग्लानी॥
धन्य भाग्य भारत बहु दिन सोँ जित ऐसे जन।
जनमत जे नित करत हानि आपनी निज हाथन॥
हितहु करत सासक गन के मन भ्रम उपजावत।
सहज सुभावहिँ तिहि कर्तव्य त्रिमूढ़ बनावत॥
जो निज दुख को हेतु सुखद कहि ताहि सराहैं।
परमानन्द अलभ्य लाभ लखि बिलखि कराहैं॥
जासोँ दसा जथारथ प्रजा वृन्द की जानी।
जात नहीं कोऊ भाँति परत उलटी पहिचानी॥
तुम से मति आगार उदार न्याय रात प्रभु बिन।
समझि सकै को भला विलच्छन अति लीला इन॥
बरिस पचासन लौं कोरिन अनुसासक आये।
सो २ साँसति सहे न कछु उपाय करि पाये॥

समुझि ताहि श्रीमान सहज तृन के सम तोर्‌यो।
सुनि २ विविध विरोध न्याय सोँ मुख नहिँ मोर्‌यो॥
दुख कण्टक नहिँ कियो यद्यपि निमूँल देस हित।
तीखी खुरपी तऊ प्रजा कर कियो समर्पित॥
बोयो अति सुभ सुखद बीज ता शक्ति नसावन।
सींच्यो भारत प्रभु सम्मति के सलिल सुहावन॥
नित निराय कण्टक परिवर्धन की अधिकारी।
देस प्रजा को कियो आप अति उचित विचारी॥
यद्यपि तिनकी दसा छिपी नहिँ नेक आप सन।
बुधि विद्या उद्योग हीन सब जाके कारन॥
पूरववत सो बीच कचहरी उर्दू बीबी।
बैंठी ऐँठी करत अजहुँ सौ सौ विधि सीबी॥
लखि आवत नागरी नागरी बरन बरन तकि।
नाक सकोरति, भौहँ मरोरति औचकहीं चकि॥
धरकत छाती, मन मैं समुझि सोचि सकुचाती।
निज अपमान दिवस नेरे गुनि २ अकुलाती॥
तऊ धरत उर धीर जानि अपनो वह छल बल।
जासों छुटि न सकत चतुर चाहक चित चञ्चल॥
वह नख़रे चोंचले नाज़ अन्दाज़ बला के।
वह शीरीँ गुफ़्तार अजब सब ढंग अदा के॥
सदक़े सौ २ बार हुए लाखों हैं जिन पर।
दीवाना फिर कौन न होगा उन्हें देख कर॥
यों सोचती समझती है मन को समझाती।
परम भयंकर प्रेम जाल अपना फैलाती॥

फँस जाते हैं दाना जिसमें दाना पाकर।
वेदाना वेदाना दाड़िम सा मुँह वाकर॥
फँसे दाम में जो वे दाम .गुलाम हुए वह।
वंन आशिक़ हर चलन प' उसके वाह! २ कह॥
आशिक वह जो गला काटने पर भी राज़ी।
मुन्शी मुल्ला मुफ्ती क़ाज़ी बनकर गाज़ी॥
इन सबके मन को वेढव है वह भड़काती।
निज वियोग संका की विरह पीर उपजाती॥
कहती,—यह औरत है अजब ख़बीस पुरानी।
चढ़ती जिस पर आती है हर रोज जवानी॥
गो इश्वे, ग़मज़े इसमें हैं नहीं ज़ियादा।
पर भोलापन करता है दिल को आमादा॥
गो सज धज रंगीन मिज़ाजी कब है आती।
मगर सादगी ही है इसकी आफ़त लाती॥
है यह मेरी सौत मुई मक्क़ारि ज़माना।
ग़ाइब थी जो अब तक वह अब वेबाक़ाना—
शाही महलों से मुझको निकाल देने को।
आती है, ख़ुद क़ब्ज़ा इन पर कर लेने को॥
पस, देखो हर्गिज़ यह इधर न आने पाये।
योंहीं वाहर पड़ी निगोड़ी चक्कर खाये॥
ख़बरदार, गर किसी तरह याँ घुस आयेगी।
विला तरद्दुद काम व अपना कर जायेगी॥
सुनि वाके सव प्रेमीगन इक सँग अकुलाये।
याकी राह रोकिबे के हित हैं उठि धाये॥

जातैं यदपि प्रवेस लेसहू मैं कठिनाई।
कोरिन हैं अवसेस परीं जो नहिँ कहि जाई॥
पै हमरो वह काज, करहिँगे हम तिहि कोउ विधि।
दियो आपनै अवसि सकेलि हमैं दुर्लभ निधि॥
जिहि बल हम मैं सक्ति काज करिबे की आई।
जिहि बल हम करि सकत दूरि अब सब कठिनाई॥
जिहि तैं दिन दिन दूनी उन्नति अवसि हमारी।
ह्वै है निश्चय नाथ! सकल दुख के दल टारी॥
करि न सकी जो काज आज लौं किञ्चित कोऊ।
बहुत कियो तिहि आप हमैं हित कम नहिँ सोऊ॥
निज उज्वल जस अटल आप थाप्यो या थल पर।
तासु प्रसाद सरूप दियो औरनहुँ जसी कर॥
जिनकी सेवा सफल भई तुव न्याय पाइ कै।
कनक बनत ज्यौं लोहा पारस पास जाइ कै॥
धन्य कहत सब तिनहिँ सराहति उनके काजहिँ।
धन्य धन्य कहि इक सुर भारत वासी गाजहिँ॥
कहत सबै कोउ धन्य! २ साँची हितकारिनि।
कासी की तू सभा अरी नागरी प्रचारिनि!
धन्य दिवस शुभ घरी जन्म तू जब उत लीन्यो!
सिसुताही मैं सुभग नाम निज सारथ कीन्यो॥
धन्य! सभ्य संथापक सकल सहायक तेरे।
धन्य परिस्रम प्रेम अटल उछाह उन केरे॥
अहो मदन मोहन मालवी धन्य तुम दिज वर!
जीवन कीन्यो सुफल जननि तुम भारत भू पर॥

जदपि निरन्तर करत देश सेवा तुम आये।
निज भापा हित साधन मैं तन मन धन लाये॥
जिहि कारन वहु मान लह्यो तुम यदपि यथारथ।
तऊ सुनिश्चय रूप भये हौ आज कृतारथ॥
आज आप को मान मानिवे जोग जगत के।
आज सुपूत भये हौ तुम साँचे भारत के॥
माननीय पद चरितारथ अव भयो आज तैं।
यथा कह्यो हरिचन्द किये उपकार काज तैं॥
"मान्य योग नहिँ होत कोऊ कोरो पद पाये।
मान्य योग नर ते जे केवल पर हित जाये॥"
विपुल कष्ट लहि जो सेवा तुम कीन देस हित।
ताहि भूलिहै को भारत सन्तान कदाचित?
को कृतज्ञता पास वद्ध तेरो नहिँ रैहै?
कोटिन धन्यवाद आसिख को तोहि न दैहै?
हे प्रिय राधा कृष्ण दास! विश्वास न ऐसो।
रह्यो तिहारे साहस तैं देख्यो हम जैसो॥
अहो स्याम सुन्दर सुन्दर विधि करि कारज भल।
तुम अतिसय अलभ्य मङ्गलमय जो पायो फल॥
ताके हित वहु वड़े लोग अगिले ललचाये।
कीने जतन अनेक न पै पाये पछिताये॥
राजा सिव प्रसाद कहि २ स्रम करि २ हारे।
भारत ससि हरिचन्द जासु हित लरि २ हारे॥
कन्नूलाल तथा हनुमान प्रसादादिक जन।
दियो दुहाई टेरि लाभ पै लह्यो नाहिं कन॥

रचि कासी प्रसाद हिन्दू समाज वकि थाके।
फुटकर सभा अनेक भईं विनईं हित जाके॥
तोता राम रटत जाके हित रहे निरन्तर।
जीवन जा हित हरखि समर्प्यो गौरी संकर॥
जाहित हिन्दी पत्रन के सब सम्पादक गन।
घिसत लेखनी रहे विराम न लहे एक छन॥
कहँ लौं नाम गिनावैं देस विदेसिन केरे।
जे बहु भाँतिन बार २ याके हित टेरे॥
को सज्जन जो याके हित कछु स्रम न उठायो?
दुर्भागिन सों तऊ नहीं कछु उन फल पायो!
बये बीज ऊसर मैं वै गरजनि ह्वै आतुर।
जिहि कारन कोउ निरखि सके नहिं ऊगत अंकुर॥
तुम सब अति उरवरा भूमि भागनि सों पाये।
वेगि मनोरथ सुमन परिस्रम करि विकसाये॥
कैं जो उचित परिश्रम करि राखे वै पूरब।
लहि तुमरो उद्योग वारि फल देत सहज अब॥
कै तुव फलद यज्ञ को कारन विवुध पुरोहित।
जाके विन फल सिद्धि लह्यो किन कहो कबै कित?
किधौ अग्रनी रह्यो अग्र जन्मा तुम सब को।
जा विन अच्छर मग चलि पछितायो नहिँ कब को?
शर्म्मा वर्म्मा गुप्त किधौँ मिलि कीने कारज।
तुमहुँ लह्यो फल, जथा लहे अबलौँ द्विज आरज॥
किधौँ देत उद्योग अवसि फल समय पाइ कै।
लवत अन्न जो बोवत सींचत मन लगाइ कै॥

करत जाति जो जाति परिस्रम सत्य निरन्तर।
अवसि असम्भव हू कारज साधत विधि सुन्दर॥
लह्यो जु हम वहु दिन पीछैं यह मनमानो फल।
निश्चय सो तुम सव के सत्य परिस्रम के वल॥
धन्य अहो तुम! धन्य सहायक सकल तुमारे!
धन्य सकल अनुचर! जिन कारज सुघर सँवारे॥
जासों हम मिलि देहिँ तुमैं "आनन्द वधाई!"
देखि कृतारथ तुमहिँ हरष अव उर न अमाई॥
रहौ निरोग सदा सुख सों चिरजीवहु प्यारे!
निज भापा हित साधन के हित नित प्रन धारे॥
लहौ नवल उत्साह औरहू अधिक आज सन।
पूरन कृतकारज ह्वै जाहु वेगि जिहि कारन॥
अवहिँ कामना पूजी तुम सव की चौथाई।
सेस काज हित अधिक परिस्रम सेस लखाई॥
तासों विलम न करहु उठहु कसिकै परिकर पुनि।
हिये सुमिर हरि, करि मेकडोलन की जय जय धुनि॥
उनके अरु अपने कीने की लाजहिँ राखहु।
करि प्रचार नागरी यथारथ श्रम फल चाखहु॥
जनि विराम छिन गहौ अलभ्य लाभ पायो गुनि।
न तौ धूरि में मिलिहै सव कतूति करी पुनि॥
अस न करहु असहाय जानि पुनि जाय निकारी।
वहु दिन पीछे वैठी हू नागरी विचारी॥
रही निरासा जव तव स्रम करि तुम फल पायो।
अव तो आसा को वसन्त चहुँ ओर सुहायो॥

देसी राजा लोग सहायक बने तुमारे।
निज २ राज काज मैं निज अच्छरन सँचारे॥
निश्चय समुझहु अवसि एक दिन ऐसो ऐहै।
भारत देस अनेक बीच एक रहि जैहै॥
यहै देव नागरी अलौकिक बरन मालिका।
यहै नागरी भाषा जो संस्कृत बालिका॥
को सुवरन कहँ छाड़ि और धातुहिँ अपनैहै?
क्रय करि है को काच रतन राजी जब पैहै?
सुनि कोकिल कलकूज कौन काकन की करकस—
काँव २ पै कान देइहै मूढ़ मनुज अस?
भानु उदय लखि दीप बारिकै कौन देखिहै?
कौन मन्दमति कन्द छाँड़ि गुर ओर लेखिहै?
जब याके गुन जानि जाइहैं तब सब ही नर।
यहै बोलिहैं बोली लिखिहै एई अच्छर॥
जथा संस्कृत रही राज भाषा सब केरी।
होइहि त्यों नागरी नाहिँ अब है बहु देरी॥
राज, रेल, अरु डाक सबै थल एक बनाये।
भिन्न देस वासिनहिँ एक कै मेल मिलाये॥
जब एकै मति, गति, सिच्छा, दिच्छा, रच्छा विधि।
एक हानि औ लाभ एक सासक सोँ है सिधि॥
एक चाल व्योहार संग सब एक होत जब।
इक अच्छर इक भाषा विन किमि काम चलै तब॥
सो न सकति करि अँगरेजी बहु दिवस अनन्तर।
और कौन करि सकत नागरी तजि विधि सुन्दर?

आपुहि समय प्रवाह सहज या कहँ विस्तारत।
चारहुँ ओर चाह सोँ सब कोउ याहि निहारत॥
तासोँ जो या समय सहायक याके ह्वैहैं।
थोरेहू स्रम किये अधिक जस के फल पैहैं॥

हरिगीती

गुनि यह न विलम लगाय हिय हरखाय सब कोऊ अहो।
निज जननि भाषा जननि हित हित चेति चित साहस गहो॥
करि जथारथ उद्योग पूरन फल अमल जस जग लहो।
लहिकै कृपा जगदीस जय २ नागरी नागर कहो॥

लालित्य लहरी

सं० १९५९



नाटककार प्रेमघन (३० वर्ष)

Krishna Press, All'd.

लालित्य लहरी*

वन्दना

दोहा

जयति सच्चिदानन्द घन, जगपति मंगल मूल।
दयावारि वरसत रहो, सदा होय अनुकूल ॥१॥
जय २ मानव रुप धर, सकल जगत करतार।
जयति दुष्ट दल दलन श्री, कृष्ण हरन भूभार ॥२॥
जय जय जगजीवन करन, भक्तन को प्रतिपाल।
जय राधा रानी रमन, सदा विहारी लाल ॥३॥
शोभा सत सौदामिनी, सहित सदा अभिराम।
श्री राधा संग प्रेमघन, हिय राजहु घनश्याम ॥४॥
जय वृजचन्द अमन्द मुख, राधा चन्द चकोर।
जयति श्याम घन प्रेम घन, जीवन धन चित चोर ॥५॥
जय २ जय घन श्याम छवि, छाजै नव घन श्याम।
जय जय नट नागर सरस, गुन आगर सुख धाम ॥६॥
नवल नील नीरद रुचिर, रुचि मोहत मन मोर।
दामिनि दुति कमिनि सहित, फेरि दया दृग कोर ॥७॥
वरसाने वारी सहित, वरसत रस चहुँ ओर।
सदा सहायक प्रेमघन, जय जय नन्द किशोर ॥८॥

---

*प्रेमघन जी इस दोहावली को ७०० दोहों से विभूपित करना चाहते थे पर यह अन्थ भी असमाप्त रह गया।

बसहु सदा घनश्याम हिय, सौदामिनी सरूप।
जय राधा माधव मिली, जोरी जुगुल अनूप ॥९॥
बरसाने वारी सहित, बरसत रसहिँ अथोर।
हिय अम्बर अरु प्रेमघन, लखि नाचय मन मोर ॥१०॥
सुभग श्याम घन कीजिये, कृपा वारि बरसात।
हँसि हेरौ हिय हरित घन, प्रेम शस्य लहरात ॥११॥
राधा रानी दामिनी, सहित श्याम घन श्याम।
बरसहु रस निज प्रेमघन, हिय हरषहु अभिराम ॥१२॥
अलख अनादि अनन्त अरु, निर्विकार निर्द्वन्द।
जग निवास जग जनक जय, जयति सच्चिदानन्द ॥१३॥
जय रस बरसन प्रेमघन, परम प्रेम अभिराम।
राधा रानी मुख कमल, मधुकर सुन्दर श्याम ॥१४॥
जय जय नव घनश्याम द्युति, धारी तन घनश्याम।
जय २ नट नागर सकल, गुन आगर सुख धाम ॥१५॥
जै जय २ वृजचन्द जै, राधा वदन चकोर।
जय ३ वृजराज वृज, चन्द मुखिन चित चोर ॥१६॥
जोहत जोगादिक यतन, करि जब जाहि अथोर।
लहि छाया घनश्याम तब, नाचत मुनि मन मोर ॥१७॥
मोर मुकुट सिर पीतपट, कटि उर वर वन माल।
अधर धरे मुरली सुभग, टेरत सुरन रसाल ॥१८॥
कुञ्ज कदंब कलिन्दिजा, कूल केलि अभिराम।
करत हरत मन परस्पर, लखि राजत रति काम ॥१९॥
सरस सुरन टेरत रटत, राधा राधा नाम।
प्यारी मुख निरखत किये, चक चकोर अभिराम ॥२०॥

या बानक मन मोहनी, सो मन मोहन लाल।
विहरहु मेरे आय मन, मानस मञ्जु मराल ॥२१॥
सोहत मन मोहन सदा, वरसत प्रेम अथोर।
जेहि जुगुत जोगादि ज्यहि, नाचत मुनि मन मोर ॥२२॥
जरत जवाहिर भूषननि, सारी सजे सुरंग।
गुनन आगरी नागरी, राधा रानी संग ॥२३॥
रहे सदा ही एक रस, मन मेरे यह ध्यान।
कवहूँ चिन्ता आनि नहिँ, आवे कोऊ आन ॥२४॥
बरसाने वारी सहित, वरसत रस इहि ओर।
जयति प्रेमघन सो सदा, मो मन मोहन मोर ॥२५॥
राधा राधा रटत हीं, बाधा हटत हजार।
सिद्धि सकल लै प्रेमघन, पहुँचत नन्द कुमार ॥२६॥
राधा राधा रट लगी, माधव माधव टेर।
सहित प्रेमघन परम सुख, सञ्चय साँझ सवेर ॥२७॥
नवल भामिनी दामिनी, सहित सदा घनस्याम।
वरसि प्रेम पानिय हिय, हरित करहु अभिराम ॥२८॥
सुभग एक रस नित नवल, सोभा अति अभिराम।
दया वारि वरसत रहै सदा सोई घनस्याम ॥२९॥
नवल नील नीरद सुछवि, बृज़ युवती चित चोर।
मम जीवन धन प्रेमघन जै श्री नन्द किशोर ॥३०॥
वरसि सरस रस प्रेमघन भक्ति भूमि हरियाय।
तोपि रसिक चातक रहै सदा सवै सुख दाय ॥३१॥
गोचारन हित गोकुलहिं, आय वस्यो गोपाल।
रानी रमा विसारि तजि, निज गोलोक विशाल ॥३२॥

राधा राधा रट लगी, माधव माधव टेर।
दोउन के उर ध्यान तें, दुहूँ लोक सुख ढेर ॥३३॥
श्री गौरी सुत गज बदन, गण नायक उर ध्यान।
एक रदन अघ करन शुभ, मंगल करन मनाय ॥३४॥
जयति भारती देवि कर, वीणा पुस्तक साज।
जासु जुगुल पद ध्यान सों, सिद्धि होत सब काज ॥३५॥
श्रीराधा राधा रमण, जुगुल चरन अरविन्द।
शमन सकल बाधा सरस, गुनि मन होहु मलिन्द ॥३६॥
श्री राधा राधा रटत, हटत सकल दुख द्वन्द।
उमडत सुख को सिंधु उर, ध्यान धरत नद नन्द ॥३७॥
जय गणेश मंगल करन, हरन सकल दुख द्वन्द।
सिद्धि सलिल नित प्रेमघन, पर बरसहु सानन्द ॥३८॥
मंगल मूरति गजानन, गौरी लीने गोद।
शङ्कर सँग राखैं सदा, सह बर बधू बिनोद ॥३९॥
ब्रह्मचारी बनि कै लियो, सकल जगत जिन जीत।
सब विधि सों मंगल करैं, श्री बावन उपनीत ॥४०॥

धर्म

सत्य जथारथ जाहि मन, कहै कीजिये ताहि।
विनु विलम्ब के प्रेमघन प्रण पूरो निर्वाहि ॥४१॥
जा कहँ अन्तर आत्मा मानत मिथ्या बैन।
भूलि न बोलौ प्रेमघन ताहि जो चाहो चैन ॥४२॥
अन्तरात्मा प्रेमघन कहै जो तुहि निःशंक।
करु तिहि डरु जनि जगत के, लहि कै कोटि कलंक ॥४३॥

नीति

साज बाज मुद्रा मनुज, निज गुन दोष तुरन्त।
बोलत प्रगटत प्रेमघन, समुझत सुन गुनवन्त।।४४।।
या असार संसार में, सज्जन संगति सार।
जासों सुधरत प्रेमधन, उभय लोक व्यवहार।।४५।।
सज्जन मन दरपन दोऊ, स्वच्छ रहे छवि पूर।
नेकहु चोट न सहि सकत, रंचक ही में चूर।।४६।।

ज्ञान

सरिता सागर मिलि गई, सागर भेद मिटाय।
तथा जीव यह ब्रह्म सों, मिलत ब्रह्म बनि जाय।।४७।।
घटाकास घट फूटतहिं, महाकास मिलि जात।
जीव ब्रह्ममय होत त्यों, माया सों बिलगात।।४८।।
मन मंदिर में लखि अलख, सोई जीति जनाति।
जाकी आभा अंस लहि, यह सब सृष्टि विभाति।।४६।।
जो भीतर सोई प्रेमघन रह्यो दसो दिशि पूरि।
रम तासों मन आप मैं क्यों भरमत कढ़ि दूरि।।५०।।
उभय लोक संपति भरी मन मंदिर के माहिं।
तासों पंडित प्रेमघन, तिहि तजि अनत न जाहिं।।५१।।
निज सुन्दरता सार जौ, मन तू लेहि विचारि।
तौ भूलेहूँ प्रेमघन सकै न अनत निहारि।।५२।।
भूलि न बाहर भरम तू, ए मन मीत अयान।
लखि भीतर घुसि प्रेमघन, पैठ्यो प्रिय सुखदान।।५३।।

भरो अहै रस ईख मैं छीलि चूसि तौ चाखि।
त्यों भीतर है प्रेमघन ईस न तू मन मांखि ॥५४॥
पय मैं घृत पाहन अनल, नभ मैं शब्द समान।
पूरि रह्यो जग प्रेमघन ब्रह्म परखि पहिचान ॥५५॥
जहँ खोदे खोजे मिलत जगत रतन दै दाम।
सेतहिं चाहत प्रेमघन हरि हीरा अभिराम ॥५६॥
बाहर तू ढूंढत मिले कहाँ यार दिलदार।
घुसि भीतर तो प्रेमघन लख उसका दीदार ॥५७॥
या असार संसार मैं, सत्य धर्म इक सार।
लह्यो न ताहि जो जग जनमि भयो व्यर्थ भूभार ॥५८॥
सौखट पट संसार की, अटपट नेक लगैं न।
चौघट में रट राम की, लगी रहै दिन रैन ॥५९॥
देत दया दृग दीठ जो, करत सकल दुख नास।
भूलि ताहि जनि प्रेमघन, करि औरन की आस ॥६०॥
गाठ परत जाकी कृपा, जाँचत बिलखि खिसहाय।
पाय प्रेमघन सुख समय, मन सो तिहु न भुलाय ॥६१॥
जाकी अंस विभूति लहि, राजत जगत अनन्त।
पूरन आसा प्रेमघन, अन्य कौन श्रीमन्त ॥६२॥

फुटकर

सुरँग बसन साजे सुमुखि, हौंसन चढ़ी अटान।
छनक छबीसी निखरी खरी, निरखत घिरी घटान ॥६३॥
नेह नगर में पैठतहिं लागे दृग दल्लाल।
बिना मोल बिन तोल के, लूटि लियो मन माल ॥६४॥

नेह नगर के हाट की, कहि न जाय कछु हाल।
बिना भाव बिन ताव के, बिकत सदा मन माल ॥६५॥
सोभा सिन्धु अपार मैं अरी नैन की नाव।
परी प्रेम के भँवर अब और न लागत दाव ॥६६॥
नेह जुआ की खेल मैं, ठेल धर्‌यो मन दांव।
हटत न हारे हूँ गुनत, लाभ लोभ के चाव ॥६७॥
दुरै न घूंघट मैं बदन, चन्द अमन्द लखाय।
दीपक लै फानूस के, जाहिर जोति जनाय ॥६८॥
मेरे मन मोहन सरस, बंसी बहुरि बजाय।
जो निज गुन बस कय लियो, मो मन मीन फँसाय ॥६९॥
जब सों मुरली तान तुव, आन परी है कान।
धुनि सुनि कैसी हूँ कहूँ, परत आन नाहिं जान ॥७०॥
स्याम सौंह स्यामा नहीं, भूलत तेरे बोल।
करत कान मैं प्रेमघन, मानहुँ काम कलोल ॥७१॥
सखि मनायो मरु करि, त्यों प्रिय हाहा खाय।
चल्यो चित्त चलिबे तऊ, आगे परत न पाय ॥७२।
बिना फकीरी दिल भये, मजा अमीरी नाहिं।
यथा त्याग बिन लाभ नहिं, यह विचार जिय माहि ॥७३॥
चारि बार दिन रैन मैं, भोजन चारि प्रकार।
कीजै लघु परिमान सों, नित घनप्रेम सुधार ॥७४॥
क्रम सों उर पग पीठ पुनि, स्रवन बचाइय सीत।
सदा प्रेमघन सीख यह मन मैं राखौ मीत ॥७५॥
युगल जाम प्रति मध्य कछु कीजै अवसि अहार।
लघु लघु पीजै प्रेमघन बारि बारहिं बार ॥७६॥

यंत्र घड़ी इनजिनहुँ संग न्यून देह जनि जानि।
सब सुख मूल सरीर प्रिय सब सों अधिक सुजान ॥७७॥
नाक नाभि तरवान सिर, नित प्रति तैल विधान।
कन्ध कुत्त न तु कर नखन, कबहुँ प्रेमघन जान ॥७८॥
डेढ पहर पैं अवसि कछु, भोजन सहज विधान।
तदुपरि आधे पहर पैं, उचित स्वल्प जलपान ॥७९॥
लालटेन, छाता, छड़ी कूंड़ी सोटा भंग।
धन अहार लै भवन सों चलिये सज्जन संग ॥८०॥
जे समझैं ते आदरहिं जैसे सुधा सुजान।
आय सुमुखि वनितान त्यों सरस सुकवि कवितान ॥८१॥
हर्षित ह्वै मलवाइए, गालन लाल गुलाल।
रंग भले डलवाइए देय जो कोई डाल ॥ (अ)
सुनिए गाली दीजिए भर उछाह निःशंक।
या होली की हौस में यथा राव तिमि रंक ॥ (ब)

नेत्र

करत काम निज नाम सम, प्यारी तेरे नैन।
कहैं सबै सुख अैन पर, हमैं भए दुख दैन ॥८२॥
हित अनहित सत असत हूं लहिये हाट की हाल।
बुध व्यापारिन सो कहत, मिलतहि द्दग दल्लाल ॥८३।
चितै करत औचक चितै, ए सांचहु वेचैन।
चंचल चोखे र.खन की, अजब तिहारी सैन ॥८४॥
प्यासे ही तरपत रहे बने विचारे दीन।
रूप सुधा की चाह मैं ये दोऊ द्दग मीन ॥८५॥

दृग दरजी गहि मन वचन ब्योंतत हट के हाट।
करत ब्योत जानत न कछु सीधी सूखी काट ॥८६॥
नाचत चन्द अमन्द मुख पैं दोऊ दृग खञ्ज।
किधौं उभय अलि गुञ्जरत पाय प्रफुल्लित कुंज ॥८७॥
घूंघट के पट ओट मैं, चलत चखन की चोट।
खेलत मार सिकार मन, मृग मारत बिन खोट ॥८८॥

केश

बिथुरे बार सिवार सों उघरयो मुख अरविन्दु।
राहु ग्रास तैं छूटि जनु सोहत सारद इन्दु ॥८९॥

कुच

रति समुद्र मैं बूड़ि कहु को तिरती किहि साथ।
युगल कलश कुच तुव नहीं जु पै लागती हाथ ॥९०॥
एक बार काहू जगुनि, दिखरायो वह बाल।
मीठो अरु भर कठौती कैसे लहिए लाल ॥९१॥
है बरसाइत की भली बरसाइत यह आज।
बरसाइत करि प्रेमघन मिलि सजनी वृजराज ॥९२॥

गति

गरे गरूर गयन्द तजि भाजे ताल मराल।
ललकि चले मन मनुज लखि तुव मतवाली चाल ॥९३॥
कुच नितम्ब के भार सों लचत लंक लचकाय।
अठखेलिन की चाल सों चली जात चित हाय ॥९४॥
तने भौंह तिरछी तकनि तनिक मन्द मुसकाय।
चली लंक लचकाय धँसि गई करेजे आय ॥९५॥

इन्द्रासन चाहत न मैं नहि कुबेर को धाम।
सनमुख सुमुखि समूह के ठाढ होन की ठाम ॥९६॥
लखि कुसंग कंटक हमैं सुन्दर मुख अरविन्द।
ललकि मिलत ए लालची लोचन युगल मलिन्द ॥९७॥
वे का जानै प्रेम के, मरम मातमी लोग।
लहे न जे दुख विरह के, त्यों सुख सुमुखि सँयोग ॥९८॥
वृथा जिए जग ते न जे लखे सहित सतरानि।
वंक भौंह की मुरनि कै मधुर अधर मुसक्यानि ॥९९॥
मीत काम ऋतुपति दियो चूत वाग वौराय।
बौराने नर ज्यों कहा अचरज फागुन पाय ॥१००॥
वौराने वन आम लखि वौराने वस काम।
ही हारे नर हेर ते वाम लोचना वाम ॥१०१॥
मौरे मंजु रसाल पैं लखि मलिन्द गुंजार।
मनहुँ कराहैं कोइलैं पंचम सुरहि सुधारि ॥१०२॥
कुटिल भौंह निरखी न जिन लखी न मृदु मुसक्यानि।
सकहिं प्रेमघन प्रेम रस ते कैसे अनुमानि ॥१०३॥
बिँध्यो न उर जिनके कभौं नैन सैन के तीर।
वे बपुरे कैसे सकैं जानि प्रेम की पीर ॥१०४॥

भारत बधाई

स० १९६०

भारत बधाई

सम्राट श्री सप्तम एडवर्ड के भारत साम्राज्याभिषेक के शुभ अवसर पर

दोहा

ईस दया सों वहु वरिस, जियहु सहित सुख साजि।
हे सप्तम एडवर्ड तुम नव महराज धिराज॥

हरिगीती छन्द

मंगल दिवस वह धन्य अति सुभ जब दया दृग फेरिकै।
जगदीश करुना सिन्धु भारत दसा आरत हेरिकै॥
अन्याय मय दुस्सह दुखद अति निंद्य राज निवेरिकै।
सुभ सुखद सासन पार सात समुद्र हूँ तैं टेरिकै॥
आन्यो एतै व्यापार के मिसि वनिक बनक बनाइकै।
अँगरेज मनुजन को सहजहीं लाभ लोभ लगाइकै॥
करि शक्ति साहस वृद्धि सासन आस उर उपजाइकै।
अन्धेर दृश्य दिखाय विनहिँ प्रयास विजय कराइकै॥
धनि दिवस वह पुनि अवसि चमकी भाग भारत भाल की।
विनसन कुराज सिराज सठ संगहि कुनीति कुचाल की॥
विहँसी पलासी भूमि सीमा निरखिन कष्ट कराल की।
जब वीरबर क्लाइव लही बाँकी विजय बंगाल की॥

दोहा

ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सुखदायक राज।
धन्य जाहि लहि देस यह खोयो दुख के साज॥

हरिगीती

धनि दिवस वह जब आप की माता महारानी भईं।
इहि देस की पालिनि सहज सब भूलि अपराधहिं गईं॥
सुत जननि लौ हरखाय इहि निज छत्र छाया तर लईं।
निज दया विस्तारत भईं आरति हरनि मैं मन दईं॥

रोला

धन्य ईस्वी सन अट्ठारह सौ अट्ठावन।
प्रथम नवम्बर दिवस, सितासित भेद मिटावन॥
अभय दान जब पाय प्रजा भारत हरषानी।
अरु लहि उनसो दयावती माता महरानी॥
राज प्रतिज्ञा सहित सान्ति थापन विज्ञापन।
मैं अधिकार अधिक निज पुष्ट विचार मुदित मन॥
अति उन्नति आसा उर धरि बिन मोल बिकानो।
श्रीमति हाथनि, मानि उन्हैं निज साँची रानी॥
बहुत दिनन सों दुखी रही जो भारत वासी।
प्रजा दया की भूखी, न्याय नीर की प्यासी॥
पसु समान बिन ज्ञान मान बन रही भरी डर।
फेरि तिन्हैं नर कियो सहज लघु दिवस अनन्तर॥
दियो दान विद्या अरु मान प्रजान यथोचित।
अभय कियो सुत सरिस साजि सुख साज नवल नित॥

श्रीमति भई राज राजेसुरि जबै हमारी।
गईं सुतंत्र नाम सों हम सब प्रजा पुकारी॥
यह नहिँ न्यून हमारे हित गुनि हिय हरषानी।
लगीं असीसन उन्हैं जोरि ईसहिँ जुग पानी॥
जिन असीस परभाय जसन जुबिली दिन आयो।
पुनि इन भक्त प्रजन को मन औरो हरषायो॥
देन लगी आसीस फेरि यै होय मुदित मन।
यथा एक बदरी नारायन सुकवि प्रेमघन॥
ईस कृपा सों और एक जुबिली तुव आवै।
फेरि भारती प्रजा ऐस ह्याँ मोद मनावै॥
धन्य धन्य वह दिवस, जु पूजी आस हमारी।
भई दूसरी हीरक जुबिली आनन्दवारी॥
परयो अकाल कराल इतै जब महा भयंकर।
जस नहिँ देख्यो, सुन्यो कबहुँ कोऊ भारतीय नर॥
कहैं अन्न की कौन कथा? जब कन्द मूल फल।
फूल साग अरु पात भयो दुरलभ इनका भल॥
जौ न दया करि देवि दान दरियाव बहातीं।
कोटिन प्रजा हिन्द की अन्न बिना मर जातीं॥
पर उपकार विचार प्रजा पालन हित केवल।
नहिँ भूलेहुँ जामैं कहुँ लखियत स्वारथ को छल॥
नहिं तौ पेट चपेट परी परजा भारत की।
किती न बनि कृस्तान दसा खोती आरत की॥

हरिगीती

ऐसो नृपति जौ मिलै धरम धुरीन उपकारी महा।
अन्याय पूरित देस को दुख दुसह सों जो भरि रहा॥
बाके निवासी नर जु तापैं प्रान धन वारन चहा।
तौ लखहु नेक विचारि यामैं बात अचरज की कहा॥

दोहा

सबै गुनन के पुञ्ज नर भरे सकल जग माहिँ।
राज भक्त भारत सरिस और ठौर कहुँ नाहिँ॥
याको अधिक बखानि अति आवश्यक न लखाय।
निरखि गये जिहि आप निज नैन हीं इत आय॥
जब जुवराज स्वरूप मैं स्वागत हित हरखाय।
उमड़्यो भारत सिन्धु ससि तुव मुख दरसन पाय॥
तन मन धन वार्‌यो प्रजा तुम ऊपर अवनीस।
दियो सबन के संग जब हमहूँ यह आसीस॥

सवैया

लहि नीति भलें प्रजा पालिकै आछे बनो सदा भारत प्रान पियारे।
जीयो हजार बरीस लौं द्योस हजार बरीस समान जे भारे॥
बद्री नारायन होय प्रताप अखंड महा महराज हमारे।
यौं चिरजीवी सदाईं रहो सुखसों विक्टोरिया देवि दुलारे॥

हरिगीती

इन सकल सुभ अवसरन पर भारत प्रजा हरखाय कै।
निज राजभक्ति दिखाय दीन्यो सकल जगत लजाय कै॥

किमि चूकतीं जो दुख सहत वहु दिन रहीं बिलखाय कै।
सब भाँति सुख ही लहीँ सासन श्रीमती जिन पाय कै॥

दोहा

कियो राज राजेसुरी जो भारत उपकार।
ताहि भला कैसे कोऊ कहिकै पावै पार॥

हरिगीती

यह सकल उन्नति औ सुगति लखि परत है जो इत भई।
उन कीन उनविंसति सताबदि संग पूरन सुख मई॥
अरु बीसवीं की वची उन्नति भार भारत की नई।
धरि सीस पैं श्रीमान् के संगहि अनोखी ठकुरई॥
सुख भोगि राजदराज राख्यो एकहूँ नहिं अरि कहीं।
परिवार सुन्दर सहित पूरन आयु सत कीरति लहीं॥
परजन सकेलि असीस गुनि निःसार इहि संसार हीं।
पद ईस अरचन देवि विक्टोरिया सुरपुर पथ गहीं॥

सोरठा

समाचार यह आय, हाहाकार मचाय अति।
भारत को अकुलाय, कियो अधिक आरत महा॥
पै लखि तुम कँह देव, केवल धार्‌यो धीर पुनि।
तुम उनमें नहिं भेव, समझि, सहज सन्तोष गहि॥

हरिगीती

जो समुद तासु तरंग सोइ, जो कनक कंकन सो अहैं।
जो मातु पितु सुत सो, विटप जो वीज सुइ सब कोउ कहैं॥

जो वै रहीं सोइ आप तासों गुनहु सब समहीं चहैं।
जो आस उनसों रही तब श्रीमान् सों सोइ सकल हैं॥

द्रुत विलम्बित

अधिक ही उनसों बरु आप तैं।
करत भारत आस हुलास तैं॥
नृपति राज विराजत रावरे।
न रहिहैं दुख सेस जुहैं अरे॥
समुझि आपु गए जिहि आइकै।
निरखि भक्ति प्रजान अघाय कै॥
अब न क्यों तिनकी सुधि आइहै।
सकल भारत उन्नति पाइहै॥
प्रथमहीं निज बानि दयामयी।
जननि लों जग को दिखला दयी॥
समर पूअर बूअर बन्द कै।
अभय के धन बीसन कोटि दै॥

दोहा

तासों जाके हित रह्यो, बहु दिन सों लौं लाय।
आजु पाय दिन सो हरखि, फूलो अँग न समाय॥
करत प्रजा उपकार नृप, राज मुकुट सिर धारि।
तुम पीछे राजा भये, प्रथम दया विस्तारि॥
जो जस ससि परकास तुव, रह्यो दिगन्तन छाय।
जोहत जिहि जग राजकुल, कमल गए सकुचाय॥

गुन अनुरूपहि गुन दियो, ईस अधिक अधिकार।
सुनि गुनि सुनि गुनि पाय जिहि चकित भूप संसार॥

रोला छन्द

साँचे नृप भारत के रहे सकल नृप ऊपर।
फिरत दुहाई सदा रही इनहीं की भूपर॥
सदा सत्रु सौँ हीन, अभय, सुरपति छबि छाजत।
पालि प्रजा भारत के राजा रहे बिराजत॥
पै कछु कही न जाय, दिनन के फेर फिरे सब।
दुरभागिन सौँ इत फैले फल फूट वैर जब॥
भयो भूमि भारत मैं महा भयंकर भारत।
भये बीरबर सकल सुभट एकहि संग गारत॥
मरे विवुध, नरनाह, सकल चातुर गुन मण्डित।
विगरो जन समुदाय बिना पथ दर्शक पण्डित॥
सत्य धर्म्म के नसत गयो बल, विक्रम साहस।
विद्या, बुद्धि, बिवेक, विचराचार रह्यो जस॥
नये नये मत चले, नये झगरे नित बाढ़े।
नये नये दुख परे सीस भारत पैँ गाढ़े॥
छिन्न भिन्न ह्वै साम्राज्य लघु राजन के कर।
गयो, परस्पर कलह रह्यो बस भारत मैं भर॥

बरवै

तब सौं भारत की गति अति विपरीत।
जाकी कहँ लगि गावैं गन्दी गीत॥

वहु दिन की यह आरत भारत भूमि ।
बची कोऊ विधि जननी तुव पद चूमि ॥
जो इहि पालि जियायो करि पुनि पुष्ट ॥
मारि सकल दुखदायक याके दुष्ट ।
पठयो तुमहिं याहि पति वरिवे काज ।
मोह्यो तव तुम याको मन महराज ॥
लगन लगीं तवहीं सों तुम सन जासु ।
वहु दिन पीछे पूजी है अव आसु ॥
मन भायो पति पायो तुम कँह आज ।
किन रसराती साजै मंगल साज ॥

हरिगोती

धनि दिवस यह साँचे जु भारत भूमि स्वामी तुम भये ।
इहि सम न भूपती न तुम सम भूपती कहुँ जग जये ॥
पागी परस्पर प्रेम जोरी जुगल लहि सुख नित नये ।
वहुँ वरिस लौं नीके रहौ आनन्द निज परजन दये ॥

बरवै

दिल्ली वनी दूलहिन सजि सुभ साज ।
जग मन मोहनि सोभा वाकी आज ॥
नगरी सकल सहेली सखी सयानि ।
लगीं सजीले साजन सजि सतरानि ॥

दोहा

अटक कटक के बीच को सिगरो आरज देस ।
अति आनन्द लखि परत जनु रहो न दुख को लेस ॥

द्वार द्वार यव कलस युत, तोरन वन्दनवार।
कदली खम्भ सजे धजे सुभ सूचक व्यवहार॥
ध्वजा पताका फहरहिं मानहुँ मेघ समान।
चमक चंचला सी परैं आतस वाजी जान॥
वारवधू मिलि गावतीं सबै बधाई आज।
कथक कलामत नट गुनी, करत मुबारक साज॥
कवि कोविद पण्डित सबै, नाना कवित बनाय।
राजभक्ति जनि साँचहूँ, देते प्रगट दिखाय॥
जय जय जय है सुनि परत, भारत में चहुँ ओर।
मंगल मंगल को रह्यो आज महा मचि सोर॥

तोटक

घरही घर मंगल मोद मच्यो।
सबही जनु व्याह विधान रच्यो॥
सबही उर आज उच्छाह महा।
सबही अति आनँद लाहु लहा॥

बरवै

दिल्ली के दरवाजे सजी बरात।
जमु जगजन जुरि आये इतै लखात॥
लण्डन सों सँग लैके कैयो लाट।
सहिवाले सजि आये ड्यूक कनाट॥
भारत के प्रभु आये वाइसराय।
कलकत्ते सों दल बल सँग हरखाय॥

सेनापति बर किच्चनर भारतदेस।
लाँघि समुद्र आये गुनि अवसर वेस॥
मन्द्राज पति और बम्बई नाथ।
ब्रह्म देश पालक, बंगेसर साथ॥
युक्त देस पति, सासक मध्य प्रदेस।
सीमा देसेसर अरु आसामेस॥
वङ्ग और पञ्जाबी सेना नाथ।
आये सब धाये निज सेना साथ॥

दोहा

रसीडंट एजंट सब देस देस तै धाय।
राजे महराजे सकल आये हिय हरखाय॥
गैकवार सेना सजे चले भूप मैसोर।
लै निजाम भट अरब संग, भूपति ट्रावंकोर॥
जम्बू अरु कश्मीर के नृप कश्मीरी सैन।
चले सजाये साथ निज निरखत अरि दुखदैन॥

भुजङ्ग प्रयात

चले सेंधिया संग लै सैन भारी।
चले होलकर, ओरछा छत्रधारी॥
महाराज रीवाँ, नृपी दत्तिया के।
चले धार, देवास, चर्खारि ताके॥
चले भूप जैपूर, बूँदी नरेसा।
चले टोंक नव्वाव कीने सुवेसा॥

सिरोही प्रजानाथ लैकै सिरोही।
भजै सैन जा सैन को देखि द्रोही॥

दोहा

नृपति करौली तैसहीँ कोटा बीकानेर।
अलवर, झालावार, नृप लै दल जैसलमेर॥
चले राजगढ़, नृसिंहगढ़, छत्रपूर महराज।
कासिराज, अवधेस लै तालुकदार समाज॥

भुजङ्ग प्रयात

नवाबौ चले धायकै रामपूरी।
बहावल पुरी हू लिए सैन रूरी॥
चले झींद, नाभा, नृपौ पट्टियाला।
कपूरथला, कोटला साजि माला॥

दोहा

चले फरीदी कोट नृप तथा राज सिर मौर।
पहुँचे खान खिलात के सजि सेना तिहि ठौर॥
लिमड़ी, कोल्हापूर नृप, कच्छ, खैरपुर रान।
सहेर मोकला के चले सजे सैन सुलतान॥
टिपरा नृप, करि कूच नृप पहुँचे कूच विहार।
मनीपूर नृप, सिकम के आये राजकुमार॥

भुजङ्ग प्रयात

कहाँ लौं भला नाम सूची सुनावैं।
कहै कौनहूँ भाँति क्यों पार पावैं॥

वचो भूप को आज है देस माँही।
सजे सैन जो हैं इहाँ आय नाहीं॥
धनी औ गुनी देस के जौन मानी।
सबै हैं जुरे राजधानी पुरानी॥
सबै सक्ति के बाहरै साज साजे।
परैं जानि साधारनौ लोग राजे॥
सबै देस औ दीप के लोग आये।
न जाने परैं आपने औ पराये॥
चले हाथियों के जथै झुण्ड कारे।
मनौ मेघ माला धरा आज धारे॥
जुरी लच्छ सेनासिधारा चमंकैं।
भुजों बीजुरी बोजवा के दमंकैं॥
सबै सूर सामन्त धारे उमंगैं।
कलापीन के से नचावैं तुरंगैं॥
सजे जान हैं वे प्रमान आज आये।
मनौ मेदिनी स्यामही सस्य छाये॥
छुटैं तोप की बाढ़ कै सोर भारी।
गरज्जैं मनौ मेघ आकास चारी॥
उड़ी धूरि धूआँ मिली व्योम जाई।
दिनै पावसी जामनी सी बनाई॥
अलंकार भूपाल के रत्न राजी।
चमंकै लखैं जोगिनी जोति लाजी॥
वढ़े वन्दि वानी विरद्दैं उचारैं।
सुजीमूत को ज्यों पपीहे पुकारैं॥

कई लच्छ की भीर भारी भई है।
धरा धन्य या भार को जो लही है॥

दोहा

लगी चाँदनी चौक मै ह्वै लाहौरी द्वार।
लौटी जवै वरात यह जाको वार न पार॥
करि स्वागत सत्कार वहु जासु लाट पञ्जाव।
जनवासो मैदान में दीनों सजित सिताव॥

हरिगीती

सोभा निरखि कै वात कछु कहि जात नहिं अचरजमयी।
पुहुमी पचीसन मील की जनु वनि गई नगरी मयी॥
तम्बू तने अनगिनित स्रेनी वद्ध भागन में कई।
सव देस देस नरेस, सासक, निवसि जित सोभा दई॥

भुजङ्ग प्रयात

सिंची चारु वीथी नई ही नई हैं।
वनी फूलवारी कहीं पर कहीं हैं॥
खिले फूल हैं ढेर के ढेर सोहैं।
भ्रमैं भौंर भूले जहां चित्त मोहैं॥
कहूँ पैं हरी दूव हैं खूव सोही।
कहूँ कुंज छाजे मनैं लेत मोही॥
कहूँ कुण्ड के वीच छूटैं फुहारे।
वने धाम केते प्रभा धौल धारे॥

नाराच

ठौर क्रीडनादि के बने अनेक हैं कहूँ।
विश्व वस्तु सों भरी लगी सुहाट हैं कहूँ॥
नीरबाहिनी नलें सुठौर ठौर हैं बनी।
दीप दामिनी प्रभा सुश्रास पास हैं घनी॥
तार डाक औषधालयादि हैं बने कहूँ।
भाँति भाँति के अराम साज बाज हैं कहूँ॥
रेल ठौर ठौर दौरती छटा दिखावती।
जाति एक, दूसरी तहीं तुरन्त आवती॥
है प्रदर्शनी जहाँ खुली धरित्रिसार लौं।
लाख बस्तु हैं तहाँ परी जु देखि ना कभौं॥
जासु साज बाज को बखान कौन कै सकै।
विश्व मोहनी प्रभा निहारि हारि ही रहै॥
लाखनै ध्वजा पताक वृन्द फरहरात हैं।
लाखनै प्रकार कौतुकौ जहाँ लखात हैं॥
बाजने विचित्र भाँति भाँति के बजैं तहाँ।
किन्नरौ लजात साज संग के सुने जहाँ॥
बाल नाच को विलोकि अप्सरी भुलाति हैं।
राग रंग हाव भाव रूप सों लजाति हैं॥
देखि सुन्दरीन के विलास हास वेस को।
भूषनादि जासु खार देत हैं धनेस को॥
अग्नि क्रीडनादि छूटि छूटि कै विलायती।
व्योम बीच मैं बसन्त बाटिका बनावती॥

अस्त्र शस्त्र भाँति भाँति के जहाँ चमंकते।
छूटि अग्नि बान बज्र नाद से घमंकते।

दोहा

सिबिर सकल भूपाल के अलग अलग दरसाहिं।
सकल देस सोभा जहाँ एकहि ठौर लखाहिं॥
एक एक डेरे जिन्हैं हेरे बुद्धि हेराहिँ।
जिनकी श्री लखि देव गनहूँ ललचैं मन माहिँ॥
तिन सब को सिर मौर जो साम्राज्य दरबार।
हित, महान मण्डप सजो सोभा को आगार॥
भये सुसोभित आय जहँ चुने जगत के लोग।
महराजे, नव्वाब, राजे, राने दै जोग॥
सबै धनी, मानी, गुनी, अतिथि, मित्र अरु इष्ट।
सचिव, दूत, सासक, सुभट, पंडित आदि प्रविष्ट॥
सब से ऊँचे राजसिंहासन वर पर आय।
जाय विराजे नृपन सों सेवित वाइसराय॥
आज भाग्य उनके सरिस किन पायो जग और।
सम्मानित ऐसो भयो कब को जन किहि ठौर॥

हरिगीती

मन हरन परजन लाट करजन तहँ पुरोहित से बने।
भारत अवनि मन हरनि संग श्रीमान को सुख सों सने॥
सुभ गाँठि जोरी; जुगल जोरी की कुसल चहि सब जने।
मङ्गल कुलाहल करत "मङ्गल जयति जय जय जय" भने॥

दोहा

अनुसासन श्रीमान् को श्रीमुख सबहि सुनाय।
सभासदन गन के मनहिँ सुखन दियो हुलसाय॥
भारत पति नवराज राजेसर तुम कहँ मानि।
सुनि सासन सादर चलन नाये सिर शुभ जानि॥
छुटीं तोप, फहरीं ध्यजा, बजे बधाई बाज।
भारत अवनि बधू मनौ, जानि सुअवसर आज॥

हरिगीती

देती बधाई ब्याज सों करिकै सगाई आप सोँ।
सन्मान जग दुर्लभ लहन हित बिनहिं श्रम सन्ताप सोँ॥
धरि आस दृढ़ विस्वास छूटन सेस निज दुख पाप सोँ।
चाहति सनेह बिसेस तुव सबही सपत्नि कलाप सों॥

दोहा

हुलसि हिये सारी प्रजा दया दुहाई देति।
अरज करन को जोरि जुग करन रजायसु लेति॥

रोला छन्द

निश्चय सुभ अवसर यह हम सब कहँ सुखदायक।
जो आनन्द मनावैं हम, है वाके लायक॥
देहिँ जु कछु बकसीस आप लायक यह वाके।
माँगे जो हम, लायक यह देवे के ताके॥
चहत न हम कछु और, दया चाहत इतनी बस।
छूटैं दुख हमरे, बाढ़ै जासों तुमरो जस॥

भारत के धन अन्न और उद्यम व्यापारहिँ ।
रच्छहु, वृद्धि करहु साँचे उन्नति आधारहिँ ॥
वरन भेद, मत भेद, न्याय को भेद मिटावहु ।
पच्छपात, अन्याय बचे जे तिनहिँ निवारहु ॥
पूरन मानव आयु लहौ तुम भारत भागनि ।
पूरन भारतीन की करत, सकल सुख साधनि ॥
उमड़ै भारत मैं सुख, सम्पति, धन, विद्या बल ।
धर्म्म, सुनीति, सुमति, उछाह, व्यापार ज्ञान भल ॥
तेरे सुखद राज की कीरति रहै अटल इत ।
धर्म्म राज रघु राम प्रजा हिय मैं जिनि अंकित ॥

स्वागत पत्र

सं० १०६२

स्वागत पत्र*

बरवै

भारत देश हितैषी भाई लोग,
आवहु प्यारे साँचे स्वागत जोग।
स्वागत स्वागत तुम कहँ वारम्वार,
आगत के हित स्वागत सुभ सतकार॥
तासों स्वागत सादर देत सुवेस,
नम्र भाव सों पश्चिम उत्तर देस।
जानि परम प्रिय तुम कहँ पूजन जोग,
अतिथि रूप सों आए जे इत लोग॥
करन देश उद्धारहिँ काज न आन,
सबै सबै गुन रासी सबै सुजान।
बहुत दिनन सों आरत भारत देस,
सहत प्रजा नित जित की कठिन कलेस॥
तिनके दुख हरिवे कहँ तहँ के लोग,
उठे बाँधि निज परिकर यह शुभ जोग।
ताहि देखि अस को जो नहिँ हरखाय,
और मिलैं जब वे घर बैठहिं आय॥
कहौ हरख की तब किमि सीमा होय,
बनैं प्रेम मतवालें किन सुधि खोय।

---

* भारत की आठवीं जातीय सभा प्रयाग में आये हुए प्रतिनिधियों की सेवा में विरचित।

नैन नीर पग धोवैं तौ अति थोर,
लखैं जो तुमरे उपकारन की ओर॥
अहो बंगबासी! वर विबुध महान,
अहो बम्बईवासी धन गुनवान।
मध्य देश वासी मदरासी मित्र!
गुजराती सिन्धी सब सुजन विचित्र॥
राज स्थानी अरु पञ्जाबी वीर!
भारत माता के सब सुवन सुधीर॥
पश्चिम उत्तर देसी हम सब दीन,
तथा अवध के वासी हू अति हीन।
सब विधि तुम सब सों हम पीछे आहिं,
तऊ पाय सँग तुमरो नहिं अकुलाहिँ॥
याते भूल जो कछु हमतैँ ह्वै जाय,
आय छमैं तेहि गुनि निज छोटे भाय।
चलैँ आप आगे हम पीछे लाग,
चलिहैं तुम्हरे पद पर सह अनुराग॥
तन मन धन दै वेगि उबारौ देस,
काटहु दुखियन परजन केर कलेस।
मिलि सब दुख अपने की करौ पुकार,
महरानी माता सों बारम्बार॥
वृटिश-प्रजा सों त्यों जो दयानिधान,
अवसि अभय को दैहैं वे सब दान।
करहु यतन उत्साहित विस्वा बीस,
सफल मनोरथ करिहैं तुमरे ईस॥

सादर स्वागत रूप यह कविता को उपहार।
बदरी नारायन समर्पित कीजै स्वीकार॥

---

(२)

सुहृद स्वागत !

मङ्गल मय जगदीश कृपा सों अति मङ्गल मय।
चिर दिन को चित चाहथो आयो आज यह समय॥
जब जातीय जागृति लखियत निज स्वजनन महँ।
उत्साहित उद्धार आत्महित एकतृत तहँ॥
जहाँ प्रकृति अतिशय पवित्र थल विरचि बनायो।
सरस्वती गंगा यमुना सन आनि मिलायो॥
तीनौ तीनौ पाप हरनि चारौ फल दानी।
सब विघ्ननि को हरनि सकल मुद मङ्गल खानी॥
जिन संगम सों तीरथ राज प्रयाग कहायो।
जासु नास नहिं कल्प अन्त हूँ वेद बतायो॥
राजत अक्षयवट जहँ सकल मनोरथ दायक।
कल्प अन्त मैं जो हरिहू को होत सहायक॥
पूर्व समय मैं जप, तप, योग, यज्ञ बहु करि जहँ।
ऋषि मुनि सुरगन पाय मनोरथ हरपे मन महँ॥
ऋषिवर भरद्वाज जो पूरब पुरुष तुम्हारे।
तिन के आश्रम पर जौ तुम सब आज पधारे॥
तौ निश्चय जानहु कै सिद्धि आप को मिलिहै।
तीर त्रिवेनी तुरत मनोरथ कलिका खिलिहै॥

कृत कारजता तुव आशा द्विजराज निहारे।
है आनन्द उदधि उमड़त उर आज हमारे॥
निज २ वर्ग अभ्युदय लखि को नहिं हरषाई।
निज हितकर प्रिय के हित निज घर जानि अवाई॥
को नहिं दैहै सौ २ स्वागत सहज सुभायन।
यथाशक्ति सत्कार जोरि कर सहित उपायन॥
उचित जुपै दृग नीरन सों मारगहिं सिचावैं।
पूरन प्रेम दिखाय पलक पाँवड़े बिछावैं॥
तासों उत्साहित हिय अतिशय आज हमारो।
करत निवेदन यह लखि शुभ आगमन तिहारो॥
स्वागत स्वागत सरयूपारी विप्र वन्धु वर।
अतिशय पूजन जोग अतिथि हितकर दुर्लभ तर॥
गौतम, गर्ग, शांडिल्यादिक ऋषि वंशज सब।
सोये बहु दिन के जागे बांधत परिकर अब॥
हीन दशा निज जाति देखि अतिशय अकुलाने।
उठे करन उद्धार हेतु जो आज सयाने॥
तौ निश्चय अब होत जानि उन्नति को हम कहँ।
लखि समान उत्साह सकल वन्धुन के मन महँ॥
यदपि तुम्हारे अन्य वन्धु कबहीं के जागे।
निज उन्नति पंथ पथिक बने पहुँचे बढ़ि आगे॥
तऊ यथा बुध जन भाष्यो सिद्धान्त वाक्य यह।
नहि बिलम्ब कबहूँ तिहि जो जन काज कियो यह॥
तासों विलम लगावहु जनि ह्वै अति उत्साहित।
सत्य प्रतिज्ञा करि सब सुजन होय एकत्रत॥

हरहु दीनता अरु हीनता जाति अपने की।
करहु अविद्या अनुत्साह सम्पति सपने की॥
तजि मिथ्या अभिमान परस्पर मिलहु मिलावहु।
वैरि फूट अरु कलह काढ़ि कै दूरि वहावहु॥
वेगि उठावहु गिरी जाति अपनी कह वेगहिं।
जाकी दशा निहारि दया आवत अब केहि नहिं॥
तब निश्चय उद्धार जाति अपने की जानहुँ।
तासों या सीखहिं अब मन्त्र सजीवन मानहुँ॥
देवि त्रिवेणी तुम्हें सिद्धि अति वेगहि दैहैं।
माधव मधुसूदन करि कृपा विनोद वढ़ैहैं॥
अक्षयवट अक्षय उद्योग वनैहैं तुम्हरे।
तुव विघ्नन कह खैहैं वैठि वासुकी सवरे॥
सोमेश्वर सिंचन करि दया सुधा सों नित प्रति।
उन्नतिं अंकुर की नित करैं तुम्हारे उन्नति॥
देत यहै आसीस प्रेमघन सहित प्रेम घन।
सफ़ल मनोरथ करैं ईश तुम कहँ हे सज्जन॥

सरयूपारीण-सभा के अवसर पर विरचित।

शुभ सम्मिलन*

दोहा

स्वागत ! स्वागत ! बन्धुवर ! तुम हित सौ सौ बार ।
भारत जननि सुपूत जे मति-गुन गन आगार ॥
जिन सुदेस उद्धार को अति अपार व्रत लीन ।
जिन तिहि पूरन हित अवसि बहु साँचे स्रम कीन ॥
बिघन अनेकन पाय पुनि पायँ पछारे नाहिं ।
औरहु नव उत्साह सों रहे निरत हित माहिं ॥
पै अबको उत्साह कछु औरै हमैं लखात ।
जाके हित सुभ सम्मिलन सह यह सिच्छा बात ॥
सुभ सम्मिलन को साँचहूँ अतिसय सुअवसर यह अहै ।
सब सुजन सोचि बिचारि करतब करिय तब रस ज्यों रहै ॥
बचि हानि सों निज देस लाभ बिसेस लहि दुख दल दहै ।
उत्साह नवल प्रवाह यह जैसो उठ्यो प्रति दिन बढ़ै ॥
यदपि हरख सँग प्रति बरख चारहुँ दिसि तैं धाय ।
सम्मिलनी जातीय हित मिलहु परस्पर आय ॥
बहु दिन तुम सब निरन्तर सुसमाहिति स्रम कीन ।
राजनीति कृषि काज लगि सोचत युक्ति नवीन ॥

---

*ब्राह्मणों के ऊपर ।

लहि सुराज बरखा सलिल सुतन्त्रता झर पाय।
जीत्यो मेघा मेदिनी विद्या हल भल भाय॥
बयो बीज उद्योग जो सरद सँजोग बिचारि।
सुभ आसा अंकुर उग्यो जासु हरित द्रुति धारि॥
तिहि चरिबे हित दुष्ट पसु धाये बार अनेक।
रच्छ्यो रच्छक वृद्ध जुव जा कहँ सहित विवेक॥
सींच्यो जिहि मिलि आप स्रम जल दिन वत्सर बीस।
जिहि प्रभाय दल अवलि भरि साख परति वहु दीस॥
जे बिबिध साखा सभा, समिति, समाज आज विराजहीं।
प्रस्ताव पत्रावलि सुधार प्रचार मय छवि छाजहीं॥
नाना प्रयोजन बरन, जाति, जमाति उन्नति काजहीं।
जाके प्रभाव प्रसार लखि लखि विलखि वैरी लाजहीं॥
भई वृद्धि वँचि घोर तर कुटिल नीति हेमन्त।
कियो कृपा करि कोउ विधि जौं बिधि वाको अन्त।
प्रविस्यो साहस को सिसिर फैलावत आतङ्क।
कम्पित करि निज दर्प सों विद्देशी जन रङ्क॥
बिरति बिदेसी वस्तु सन-सीत भीत अधिकाय।
सुभ सुदेस अनुराग मय कुसुम समूह सुहाय॥
कियो प्रफुल्लित सस्य सों सिल्प सुगन्ध वढ़ाय।
स्रम-जीवी मधु मच्छिकन को जनु प्रान वँचाय॥
आनन्द को अति यह विषय संसय कछू जामैं नहीं।
पर भयङ्कर हेमन्त सों यह सिसिर सोचहु सहजहीं॥
कृषि हानि प्रद उत्पात याको धरम जाहि कहीं कहीं।
तुम लखहु ताके समन हित करियै जतन अति वेगहीं॥

निज प्रमाद पाला जहँ तहँ धीरज धारि।
छमा वारि सींचिय तुरत आगत दोप निवारि॥
राज कोप के उपल सों सावधान अति होय।
रहियैं रच्छक बीच जो सकत नास करि सोय॥
राज भक्ति को अति बृहत तासों छप्पर छाय।
ऊपर वाके राखियै जासों भय मिटि जाय॥
प्रतिद्वन्द्वी जन विघ्न के कीट नासिबे काज।
यथा जोग प्रतिकार को रहिय साजिये साज॥
निरलसता, दृढ़ता, जतन, उद्यम, सत्य विवेक।
सहित सदा उत्साह नित सेइय इन प्रत्येक॥
सावधान ह्वै रच्छियै या कहँ उक्त प्रकार।
ईस कृपा करि सिद्धि तुहिं दीन चलत इहि वार॥
होन चहत ऋतु सिसिर को बिन विलम्ब अब अन्त।
लिबरल दल अधिकार मिसि आवत चल्यो वसन्त॥
जामैं प्रजा प्रतिनिधि सुखद सासन प्रथा फल लागिहै।
व्यापार निज देसी दिवाकर शिल्प कर लै जागिहै॥
परिपक्व पूरन पुष्ट करिहैं तिहि सकल भय भागिहै।
एडवर्ड सप्तम की कृपा निज प्रजन पर अनुरागिहै॥
नहिं अवहीं तासों कछू कारन हरख विखाद।
निज कारज तत्पर रहिय नित प्रति विगत प्रमाद॥
सब कृषि फल दल साख सँग आनि धरिय इक साथ।
सार अंश निर्विघ्न जब लहियै अपने हाथ॥
ईस कृपा तैं सिद्ध करि लहिय जबै सुख स्वाद।
तब आनन्द मचाइयै ह्वैकै विगत विखाद॥

अबहिं मनाइय ईस जो इत अँगरेजी राज।
राखै थिर बहु दिवस लौं जो कारन सुख साज॥
राजकरमचारीन को देय सुमति सुभ नीति।
जे न बढ़ावैं प्रजा मैं वैमनस्य दुख भीति॥
होय सत्य जो प्रेमघन देत आज आसीस।
दया वारि बरसत रहै भारत पै जगदीस॥
सब द्वीप की विद्या कला विज्ञान इत चलि आवई।
उद्यम निरत आरज प्रजा रहि सुख समृद्धि बढ़ावई॥
दुष्काल रोग अनीति नासि सद्धर्म उन्नति पावई।
भट, विबुध, अन्न, सुरत्न भारत भूमि नित उपजावई॥*

---

* काशी की इक्कीसवीं कांग्रेस में आये प्रतिनिधियों की सेवा में एक भेंट।

आनन्द अरुणोदय

सं० १९६३

आनन्द अरुणोदय*

हुआ प्रवुद्ध वृद्ध भारत निज आरत दशा निशा का।
समझ अन्त अतिशय प्रमुदित हो तनिक तव उसने ताका॥
अरुणोदय एकता दिवाकर प्राची दिशा दिखाती।
देखा नव उत्साह परम पावन प्रकाश फैलाती॥
उद्यम रूप सुखद मलयानिल दक्षिण दिश से आता।
शिल्प कमल कलिका कलाप को बिना विलम्ब खिलाता॥
देशी वनी वस्तुओं का अनुराग पराग उड़ाता।
शुभ आशा सुगन्ध फैलाता मन मधुकर ललचाता॥
वस्तु विदेशी तारकावली करती लुप्त प्रतीची।
विद्वेशी उलूक छिपने का कोटर वनी उदीची॥
उन्नति पथ अति स्वच्छ दूर तक पड़ने लगा लखाई।
खग वन्देमातरम् मधुर ध्वनि पड़ने लगी सुनाई॥
तजि उपेक्षालस निद्रा उठ बैठा भारत ज्ञानी।
ध्याय परम करुणा वरुणालय बोला शुभ प्रद बानी॥
उठो आर्य्य सन्तान सकल मिलि बस न विलम्ब लगाओ।
वृटिशराज स्वातन्त्र्यमय समय व्यर्थ न बैठ बिताओ॥
देखो तो जग मनुज कहाँ से कहाँ पहुँच कर भाई।
धर्म्म, नीति, विज्ञान, कला, विद्या, बल, सुमति सुहाई॥

---

*भारतवासियों के ऊपर

की उन्नति निज देश जाति, भाषा, सभ्यता, सुखों की।
तुम सबने सीखी वह बान रही जो खान दुखों की॥
वैदिक सत्य धर्म्म तजकर मनमाने मत प्रगटाये।
ऋषि त्रिकालदर्शी गन के उपदेश भूल दुख पाये॥
वर्णाश्रम गुण कर्म्म स्वभाव विरुद्ध चाल चलने से।
बने दीन तुम धर्म्म सतानम की सम्पति टलने से॥
मिथ्या डम्बर दम्भ, द्रोह पाखण्ड फूट फैलाते।
अपने मुख से अपने को सब से उत्कृष्ट बताते॥
धर्म्म तत्व से हुए शून्य तुम बिना विचार विचारे।
फन्दे में फँस अल्पज्ञों के दाँव सब अपने हारे॥
क्षमा, सत्य, धृति, दया, शौच, अस्तेय, अहिंसा, त्यागी।
शम, दम, तितिक्षादि, यम, नियम, विहीन विषय अनुरागी॥
धर्म्म ओट सुख, स्वार्थ साधने की है चाल लखाती।
कुत्सित लाभ लोभ के कारण जो नहिं छोड़ी जाती॥
बिन विवेक वैराग्य ज्ञान तप उपासना के भाई।
सदाचार उपकार बिना कब किसने सद्गति पाई॥
प्रचलित हाय अन्ध परिपाटी पर तुम चलते जाते।
आर्य्य वंश को लज्जित करते कुछ भी नहीं लजाते॥
है मिथ्या विश्वास तुमारे मन में इतना छाया।
ढूहों औ क़बरों पर भी जा मस्तक हाय नवाया॥
पञ्च देव से पाँच पीर जिनसे हैं पूजे जाते।
घृणित अर्थवाची भी हिन्दू हैं वे आज कहाते॥
परब्रह्म सों विमुख सदा तुम सिद्धि कहाँ से पाओ।
नित्य नये दुख सहने पर भी तनिक नहीं पछताओ॥

स्वार्थ रहित धर्म्मोपदेष्टा विरले कहीं लखाते।
धर्म्म तत्व ज्ञानी सच्चे गुरु कोई ढूँढ़ कर पाते॥
नहिं विचार कर धर्म्म तत्व जो अज्ञों को वतलाते।
ग्रहण त्याग सत असत रीति कुछ कभी नहीं समझाते॥
खण्डन मण्डन की वातैं करते सव सुनी सुनाई।
गाली देकर हाय वनाते वैरी अपने भाई॥
नित्य नवीन धर्म्म पथ रचकर ठग तुमको वहकाते।
स्वर्ण छोड़ तुम राख राशि लेकर प्रसन्न दिखलाते॥
छिन्न भिन्न समुदाय सनातन नित्य इसी से होता।
प्रवल विरोधी दल हो उसके शक्ति पुञ्ज को खोता॥
धर्म्म आग्रह सव है केवल करने ही को झगड़ा।
नहिं तो सत्य धर्म्म प्रेमी से कैसा किससे रगड़ा॥
सवी धर्म्म के वही सत्य सिद्धान्त न और विचारो।
है उपासना भेद न उसके अर्थ वैर विस्तारो॥
जगदीश्वर आराध्य देवता सव का है वही एकी।
मूल धर्म्म का ग्रन्थ वेद सव का जव एक विवेकी॥
समझो तव कैसा विरोध आपस का सव ने ठाना।
वैर फूट का फल अद्यापि नहीं तुम ने क्या जाना॥
वीती जो उसको भूलो सँभलो अव तो आगे से।
मिलो परस्पर सव भाई वँध एक प्रेम धागे से॥
आर्य्य वंश को करो एक, अव द्वैत भेद विनसाओ।
मन वच कर्म्म एक हो वेद विदित आदर्श दिखाओ॥
वैठो सव थल एक ध्याय सर्वेश एक अविनाशी।
एक विचार करो थिर मिलकर जग आतङ्क प्रकाशी॥

मिथ्या डम्बर छोड़ धर्म्म का सच्चा तत्व विचारो।
चारो वेद कथित चारों युग प्रचलित प्रथा प्रचारो॥

चारो वर्ण आश्रम चारो भिन्न धर्म्म के भागी।
निज २ धर्म्माचरण यथा विधि करो कपट छल त्यागी॥

चारो वर्ग अवस्था चारो के अनुसार सराहे।
आवश्यक साधन सब का है विधिवत नियम निवाहे॥

नहीं एक से काम जगत का चलता कभी लखाता।
जगत प्रबन्ध ठीक रखने को धर्म्म वेद बतलाया॥

लोक और परलोक उभय सँग जब साधोगे भाई।
तब यथार्थ सुख पाओगे खोकर यह सब कठिनाई॥

सीखो नई पुरानी दोनों प्रकार की विद्यायें।
दोनों प्रकार के विज्ञान सिखाओ रच शालायें॥

शिल्प कला सम्यक् प्रकार उन्नत कर शीघ्र प्रचारो।
निज व्यापार अपार प्रसार करो जग यश विस्तारो॥

आवश्यक समाज संशोधन करो न देर लगाओ।
हुए नवीन सभ्य औरों से अपने को न हँसाओ॥

अपनी जाति वस्तु अपने आचार देश भाषा से।
रक्खो प्रीति रीति निज धर्म्म वेष पर अति ममता से॥

राज, अर्थ, औ धर्म्म नीति तीनों को संग मिलाओ।
दृढ़ उद्योग निरालस होकर करो सफल फल पाओ॥

सब से प्रथम धर्म्म संचय का यत्न करो ऐ प्यारे।
सकल मनोरथ होते सफल धर्म्म के एक सहारे॥

सत्य सनातन धर्म्म ध्वज़ा हो निश्छल गगन उड़ाओ।
श्रौतस्मार्त कर्म्म अनुशासन के दुन्दुभी बजाओ॥

फूँको शङ्ख अनन्य भक्ति हरि ज्ञान प्रदीप जलाते।
जगत प्रशंसित आर्य्यवंश जय जय की धूम मचाते॥

आर्य्य शास्त्र उपदेश करत रव विजय घण्ट को भारी।
विश्व विजय करलो प्रयास बिन वैरी वृन्द विदारी॥

मुख्य सत्य बल सञ्चय करके मन में दृढ कर जानो।
जहाँ सत्य जय तहाँ नियम यह निश्चय करके मानो॥

रक्खो ईश कृपा की आशा शरण उसी के जाओ।
मङ्गल होगा सदा तुमारा सहज सिद्धि सब पाओ॥

यह सुनकर सब सम्प्रदाय के उठे आर्य्य हर्षाते।
जय सच्चिदानन्द, जय भारत उच्च स्वर चिल्लाते॥

पहुँचे प्रयाग जाकर तीर्थराज है जो कहलाता।
मज्जन करके सलिल त्रिवेणी जो अघ ओघ नसाता॥

सन्ध्या वन्दनादि कर बैठे तट पर मिलि सब भाई।
होकर अतिशय उत्साहित मन मण्डप रुचिर बनाई॥

बिखरी बिविधि सनातन धर्म्मी सम्प्रदाय की एकी।
महाशक्ति सम्मिलित संगठन अर्थ सुजान बिवेकी॥

आराधते ईश हैं सुलभ सोचते सकल उपायें।
सफल मनोरथ हों वे अपना सुयश जगत फैलायें॥

दया वारि के बूँद प्रेमघन ईस रहे बरसाता।
सानुकूल रह इन पर भारत उन्नति पथ दरसाता॥

और भी

आर्य्य जाति का हो अभ्युदय भूमि भारत पर।
सत्य सनातन धर्म्म अटल हो उन्नत होकर॥
सुख समृद्धि धन अन्न शिल्प विज्ञान ज्ञान वर।
बसैं यहाँ सब विद्या कला कलाप निरन्तर॥
एकता धीरता प्रेमघन देशभक्ति स्वाधीनता।
हरि वैर फूट अन्याय सँग हरैं दोष दुख दीनता॥

आर्याभिनन्दन

सं० १९६३

आर्य्याभिनन्दन

अर्थात्

श्रीमान् युवराज जार्ज फ्रेडरिक अर्नेस्ट आलबर्ट प्रिन्स आफ़ वेल्स के भारत शुभागमन पर स्वागतार्थ विरचित

दोहा

स्वागत ! स्वागत ! आप हित भावी भारत भूप ।
बड़े भाग सों पाइयत ऐसे अतिथि अनूप ॥
पलक पाँवड़े आप हित जौपै देहिँ बिछाय ।
लोचन जल, पद जुगल तुव धोवैं हिय हरषाय ॥
सब कुछ वारैं आप के ऊपर तौहूँ थोर ।
लखि तुव गुरुजन राज कृत गुरु उपकारनि ओर ॥
जिहि प्रभाय भारत सक्यो बहुतेरे दुख खोय ।
उन्नति हू बहु करि सक्यो सावधान अति होय ॥
तऊ अजहुँ याकी दसा अधिक दया के जोग ।
जासु आस तुव तात सों हैं राखत हम लोग ॥
धन्य भाग्य तिहि लखन हित तुम इत आये आज ।
प्यारी युवरानी सहित हे प्यारे युवराज ॥
यदपि न भारत वह रह्यो ज़िहि गावत इतिहास ।
जाहि लखन हित नित जगत जन मन रहत हुलास ॥

अंग, वंग, कुरु, मध्य, पञ्चाल, मगध, कसमीर।
सूरसेन, मिथिला, दसा लखि मन होत अधीर॥
पूरब की कासी न वह, यह जो तुमैं दिखाति।
अलका अरु कैलास तें सरस कही जो जाति॥
स्वर्णमयी नगरी सुभग ताको सूचक नेक।
अहै कनक मन्दिर यहै विश्वनाथ को एक॥
नष्ट भयो कै बार को थप्यो अनेकन ठौर।
दुखद अंश अवशिष्ट तिनके निरखहु करि गौर॥
माधव मन्दिर और माधव धवरहरा देखि।
सकहिँ आप सहजहिँ समझि उभय दसा सुविसेखि॥
पिछली कासी पास मझली कासी की रेख।
सारनाथ निस्सार मैं खँडहर रूप धमेख॥
नहिं अड़तालिस कोस अब अवधपुरी विस्तार।
रामायन ही मैं मिलति वाकी छटा अपार॥
राजधानि जो जगत की रही कबहुँ सुख साज।
सौ पचास बिगहान मैं सो सिकुरी सी आज॥
प्रतिष्ठानपुर मध्य अब माटी ही की ढेर।
इक ईंटहु वा नगर की लहि न सकत कोउ हेर॥
श्री मथुरा, द्वारावती, इन्द्रप्रस्थ वह रूप।
पढ़ि भारत लखि सकत नहिँ भारत छिति पर भूप॥
नहिँ पाटली, न हस्तिना, नहिं अवन्तिका सोय।
जासु कथान पुरान सुनि अतिसय अचरज होय॥
टूटीं, फूटीं, लूटी गईं, लटीं अनेकन बार।
उन नगरिन लखि हरखि को सकि है कौन प्रकार?

कहँ केशव, गोविन्द, कहँ सोमनाथ को धाम।
महाकाल शिवसदन कहँ, ज्वालायतन ललाम॥
थानेसर, परभास, पुष्कर अरु गया विलोकि।
सहृदय को अस जो भला सकै सोक हिय रोकि?
सहत महत, धारापुरी, नासिक नग्र निहारि।
पाटन, कुन्ती नगर लखि सकै धीर को धारि?
दुर्ग मानधाता तथा रोहिताश्व अब देखि।
कालिञ्जर, चित्तौर त्यों दसा देवगढ़ पेखि॥
पाय सकत आनन्द को निरखि दसा अति हीन।
विविध नगर कन्नौज से हाय आज छवि छीन॥
साठ सहस नर जहँ रहे नित प्रति बेंचत पान।
तहँ की जन संख्या करे कैसे कोउ अनुमान॥
दिल्ली मैं किल्ली बची भग्न पिथौरा धाम।
सकल नगर प्राचीन को बच्यो पुरानो नाम॥
खँडहर कै, विपरीत निज नाम दृश्य दिखराय।
दर्शकगन मन माहिँ उपजावत करुना भाय॥
जहँ देवालय दिव्य नित राग रंग सो पूर।
सब सुख साज सजे रहत हाय उड़त तहँ धूर॥
सूनी मस्जिद कहुँ, बने कहुँ मकबरे लखाहिं।
अरब और ईरान के टुकरे से दरसाहिं॥
बने अनेक प्रकार जे नगरन भवन नवीन।
उनमैं कहूँ न लखि परति भारत छवि प्राचीन॥
नहि पूरब से नगर, नहिं जनपद, तीरथ, धाम।
नहिं वन, नहिं तप संस्थल बीत राग विश्राम॥

ऋषि त्रिकाल दर्शी न कहुँ मुनि जन इतै लखाहिं।
आतमज्ञानी, सिद्ध योगी नहिं प्रगट दिखाहिं॥
धर्म्म कर्म्म रत तपोधन विबुध बिप्र न लखात।
दया, दान, रन बीर छत्री नहिं कहूँ सुनात॥
धन कुबेर वर वैश्य के वृन्द न अब या ठौर।
शिल्पकला कुल कुशल को शूद्र गुनी सिरमौर॥
सबै बरन सब आश्रम की अब एकै चाल।
सब स्वधर्म्म विपरीत पथ पथिक बने यहि काल॥
कहँ धर्म्मानुष्ठान कहँ लुटत दान दरसाय।
कहाँ यज्ञशाला रुचिर रचना परत लखाय॥
बीरन की हुँकार कहँ, दीनन की आसीस।
बन्द्य बेद निर्घोष कहँ शुचि सुनात अवसीस॥
जहँ संगीत समुद्र सुर उमड्यो रहत हमेस।
जो उछाह, आनन्द, गुन गन धन पूरित देस॥
सो सब अगले गुनन सों साँचहुँ सूनो आज।
ताहि निरखि कब मन हरखि सकिहौ हे युवराज॥
सबै बिदेसी बस्तु नर गति रति रीति लखात।
भारतीयता कछु न अब भारत में दरसात॥
मनुज भारती देखि कोउ सकत नहीं पहिचान।
मुसुलमान, हिन्दू किधौं, कै हैं ये क्रिस्तान॥
पढ़ि विद्या परदेश की बुद्धि बिदेशी पाय।
चाल चलन परदेश की गई इन्हें अति भाय॥
ठटे विदेशी ठाट सब, बनयो देस विदेस।
सपनेहूँ जिनमैं न कहुँ भारतीयता लेस॥

यदपि तिहारो राज इत सुभ सिच्छा कोद्वार।
खोल्यो देन प्रजान हित विद्या बिबिध प्रकार॥
पेट काज पै ये सिखे वस अँगरेज़ी एक।
अँगरेज़ी मति गति लई तजि संस्कृत विवेक॥
बोलि सकत हिन्दी नहीं अब मिलि हिन्दू लोग।
अँगरेज़ी भाखत करत अँगरेज़ी उपभोग॥
अँगरेज़ी वाहन, वसन, वेप, रीति औ नीति।
अँगरेज़ी रुचि, गृह, सकल वस्तु देस विपरीति॥
हिन्दुस्तानी नाम सुनि अब ये सकुचि लजात।
भारतीय सब वस्तु ही सों ये हाय घिनात॥
देस नगर बानक बनो सब अँगरेज़ी चाल।
हाटन में देखहु भरो बस अँगरेज़ी माल॥
तासों भारत मैं कहा भारतीयता सेस।
जो इत, सो सब आप नित हे देखत निज देस॥
पै अँगरेज़ी राज संग सब अँगरेज़ी साज।
वृद्धि देखि तुव हरख को हेतु एक युवराज॥
परम कठिनता इक परी है याहू के माहिं।
अँगरेज़ी गुन गन्ध नहि प्रविसी इन हिय माहिं॥
ऊपर सो भारत सकल पलटि रूप प्राचीन।
मनहुँ विलायत को बनो बच्चा एक नवीन॥
पै नहिं बाकी प्रजा सम इन्हैं मिल्यो अधिकार।
जासों विविध प्रकार को इनमैं बढ़ो विकार॥
पिता मही तुव दै चुकी वचन देन हित तासु।
दुर्भागनि पायो न इन अब लौं लाये आसु॥

पैहैं पिता प्रसाद तुव जब वह ये युवराज।
सजिहैं भारत पर तवहिं यह अँगरेजी साज॥
जौ आये भारत लखन तुम करि इतो प्रयास।
तौ विशेष फल की नहीं सम्भव पूरनि आस॥
अरु साँची निज प्रजन की दशा देखिवे काज।
जौ आये सहि कष्ट तुम इतो इतै युवराज॥
तौ निरखहु निज नैन सों अन्तर दशा सुजान।
नहिँ ऊपर की चमक लखि भूलौ कै सुनि कान॥
यों कृत कारज होहुगे निश्चय हे युवराज।
सहजहि समुझि सुधारि हौ भारत को शुभ साज॥
कीरति निज निजवंश निज राज थापिहौ आप।
भारत भूमी पर अटल उज्ज्वल वृटिश प्रताप॥
यदपि चाल सब भारती पलटि भये छवि छीन।
तौ हूँ इनमैं बचि रह्यो इक गुन अति प्राचीन॥
राजभक्ति इन मैं रही जैसी अकथ अनूप।
वैसीही तुम आजहूँ पैहौ पूरव रूप॥
भारतपति सुत पत्नि संग भारत निरखन काज।
आयो सुनि भारत प्रजा को हिय हरखित आज॥
करत सक्ति अनुरूप जो उत्सव विविध प्रकार।
सो नहिं तुमरे जोग यह निश्चय राजकुमार॥
वाहर इनकी दसा दरसात मनोहर पीन।
पर जो भीतर देखिये सवही विधि सों हीन॥
रोग सोग दुष्काल सों आरत भारत आज।
सकत कहा सत्कार करि ये तुमरो युवराज॥

पर जौ इनके हृदय मैं पैठि लखहु धरि ध्यान।
अमल प्रेम उत्साह तहँ पैहौ बिन परिमान॥
सबै गुनन के पुञ्ज नर भरे सकल जग माहिं।
राजभक्त भारत सरिस और ठौर कहुँ नाहिं॥
लहि तिन दीन प्रजान को अमल प्रेम उपहार।
यदपि तुच्छ तौ हूँ अधिक गुनियै हरखि कुमार॥
अरु अलभ्य अनमोल गुनि लेहु प्रजा आसीस।
युवरानी संग सुख सहित जियहु असंख्य बरीस॥
राज दुलारी! लाड़िली! युवरानी! गुन खानि।
अचल सुहाग रहै सदा तेरो जग सुख दानि॥
जुग जुग जीवहु यह जुगल जोरी लहि आनन्द।
पुत्र पतोहू पौत्र संग हीन सकल दुख द्वन्द॥
तेरे अरि हेरे न कहुँ मिलैं जगत के माहिँ।
राज तिहारे बीच दुख प्रजा अनीति हेराहिँ॥
बिना विघ्न भारत भ्रमन करि पहुँचहु निज देस।
भारतेश सों कहहु यह भारत को सन्देस॥
माँग्यो बारम्बार जो वह शुभ अवसर जानि।
माँगत सोई आप सों फेरि जोरि जुग पानि॥

रोला

चहत न हम कछु और दया चाहत इतनी बस।
छूटैं दुख हमरे, बाढ़ै जासों तुमरो जस॥
भारत को धन, अन्न और उद्यम व्यापारहिं।
रच्छहु, वृद्धि करहु सांचे उन्नति आधारहिं॥

बरन भेद, मत भेद, न्याय को भेद मिटावहु ।
पच्छपात, अन्याय बचे जे तिनहिं निवारहु ॥
पूरन मानव आयु लहौ तुम भारत भागनि ।
पूरन भारतीन की करत सकल सुख साधनि ॥

बरवै

या हित तुम कहँ पुनि यह देहिं असीस ।
करै कुँवर तिहि साँची श्री जगदीस ॥

सवैया

प्रजा सुखी तेरी रहै लहि वृद्धि समृद्धि वढ़ै सँग राज दराज ।
सुकीरति छाय रहै छिति छोर, परै तुव वैरिन के सिर गाज ॥
प्रताप अखण्ड रहै 'घनप्रेम' सुनीति परायन मन्त्रि समाज ।
सँवारत भारत को सुभ साज जियो सदा भारत के युवराज ॥

योंही और भी

हरिगीती

सब दीप की विद्या, कला, विज्ञान इत चलि आवई ।
उद्यम निरत आरज प्रजा, रहि सुख समृद्धि वढ़ावई ॥
दुष्काल, रोग अनीति नसि, सद्धर्म उन्नति पावई ।
भट, बिबुध, अन्न, सुरत्न भारत भूमि नित उपजावई ॥

सौभाग्य समागम

सं० १९६९



आलोचक तथा निबंधकार प्रेमघन (४० वर्ष)

सौभाग्य-समागम

अथवा

भारत सम्राट सम्मिलन

श्री पंचम जार्ज के दिल्ली में साम्राज्याभिषेक पर बधाई और स्वागत सम्बन्धी कविता

दोहा

श्री जगदीश दया दियो यह शुभ अवसर आज।
आनन्दित आरज प्रजा लखि तुहिँ भारतराज॥
भूलि आधि अरु व्याधि दुख तथा अनेक उपाधि।
निज अभिनव भूपति रही उल्लासित आराधि॥
अगिले दिन जहँ के मनुज निज नृप दरसन पाय।
करत निछावरि प्रान धन साचहुँ हिय हरपाय॥
सुनि आगमन स्वदेश मैं विविध मङ्गलाचार।
करि अरचत नर नाँह पद सह स्वागत सत्कार॥
पै पिछले दिन इत भई सबै बात विपरीत।
आवन सुनि सम्राट को होत परम भयभीत॥
निश्चय जानत नास जे मान, प्रान, धन, धर्म।
निज रच्छा हित जिन रहत एक पलायन कर्म॥

करि सूनो जनपद भजत हाहाकार मचाय
"ईस ! न आवै नृप इतै, बारहिँ बार मनाय ॥"

हरिगीती

पै आज इत लखियत अनोखी बात यह अचरज मई।
प्रचरत पुरानी फेरिहूँ सोँ होय परिपाटी नई ॥
निज राज सुनि आगमन स्वागत साज साजत मन दई।
पूरब समानहिँ आर्य्य जाति प्रजा परम प्रमुदित भई ॥

दोहा

नगर नगर घर घर हिये नर नर के चहुँ ओर।
भारत मैं आनँद उदधि उमड़्यो आज अथोर ॥
कैसे इनके हरष की सीमा आज लखाय।
भारतीय कैसे सकहिँ कृतज्ञता बिसराय ॥
सह्यो कई सत बरस जिन दुसह दुखन की पीर।
नहिँ रच्छा नहिँ न्याय तहँ बसि भये अधीर ॥
लहि अँगरेजी राज को ते सुनीति सञ्चार।
समुझे विपति समुद्र सों तरिकै पावत पार ॥
महरानी विक्टोरिया पिता मही तुव नाथ।
पाल्यो सुत सम बहु दिवस जिन्हैं दया के साथ ॥
जो कुछ उन्नति इत भई परति लखाई आज।
सो सब तिनके राज मैं हे नव भारत राज ॥
नृप सप्तम एडवर्ड तुव पिता अधिक अधिकार।
दै तिन कहँ प्रमुदित कियो बनि करुना आगरा ॥

यों उपकृत तुव वंश सोँ भारत प्रजा समाज।
जौ तुम पैँ वलि जाय नहिँ तौ अचरज महराज॥

हरिगीती

ऐसो नृपति जौ मिलै धरम धुरीन उपकारी महा।
अन्याय पूरित देस को दुख दुसह सों जो भर रहा॥
वाके निवासी नर जो तापैं प्रान धन वारन चहा।
तौ लखहुँ नेक विचारि यामैँ वात अचरज की कहा॥

दोहा

यदपि विविध सुख ये लहैं या अँगरेजी राज।
पै इनके हिय इक रह्यो दुसह सोच को साज॥
निज नृप दरसन देस मैं परम असम्भव मानि।
रहि निरास तिहि सोँ रहे जानि परम निज हानि॥
निज नैनन निज प्रजा की साँची दसा निहारि।
हरि दुख के कारन सकै जो सुख साज सवांरि॥
कवहुँ नहीं ते लखि सके निज परिपालक भूप।
जिन मुख दरसन कै लहैं अति आनन्द अनूप॥
किहि सोँ निज दुख सुख कहैं को तिनकी सुधि लेय।
सात समुद्र के पार वसि नृप किमि धीरज देय॥
हैं मानत निज भूप कहँ जे देवता समान।
नृप दरसन अति पुन्यप्रद गुनत आर्य्य सन्तान॥
तासों अव लौं ये रहे या सुख सों अति हीन।
जाके विन सव सखहु लहि रहे निपट वन दीन॥

उभय वार युवराज के दरसन सों मन साध।
कछुक पुजायो इन मगन ह्वै सुख सिन्धु अगाध॥
यही एक दिन होहिँगे भारत के भूपाल।
आरत दसा निवारिहैं तव ह्वै अवसि कृपाल॥
यों भावी आनन्द सोँ उत्साहित ये होय।
कियो सुभग स्वागत सदा बहु सुख साज सँजोय॥
जाहि आप स्वयमेव प्रभु! आय इतै लखि लीन।
साँचे मन स्वीकार करि निज सम्मति अस दीन॥
"सहानुभूति विशेष सँग भारत सासन जोग।"
श्री मुख बच सो मन्त्र सम सुमिरत नित हम लोग॥
लौटि इतै सोँ आप जिहि कहे देस निज जाय।
सफल होन हित सो दिवस दियो ईस दिखराय॥
तासु राज अभिषेक हित जौ आये तुम आज।
बड़भागी भारत भयो अवसि अहो महराज॥

बरवै

भारत भारत भूपति नव संयोग।
टारन दुख दल कारन सब सुख भोग॥

दोहा

स्वागत महरानी सहित तुम हित भारत भूप।
बड़े भाग सों पाइयत ऐसे अतिथि अनूप॥
तव उदारता कुलागत दयालुता की बानि।
न्याय निपुनता धीरता गुनि नृप गुन गन खानि॥

पलक पाँवड़े आप हित जो पै देहिँ विछाय ।
लोचन जल पद युगल तुव धोवैं हिय हरषाय ॥
सब कछु वारैं आप के ऊपर तौहूँ थोर ।
लखि तुव गुरुजन राज कृत गुरु उपकारनि ओर ॥

हरिगीती

प्रथमहु सबै सुभ समय पर भारत प्रजा हरखाय कै ।
निज राज भक्ति दिखाय दीनी यदपि जगत लजाय कै ॥
इहि वार पञ्चम जार्ज ! पै आदर्श नृप तुहिं पाय कै ।
सब आस पूजी गुनि रहीं उत्साह अति दिखराय कै ॥

तोटक

घर ही घर मंगल मोद मच्यो ।
सबही जनु व्याह विधान रच्यो ॥
सबही उर आज उछाह महा ।
सबही अति आनँद लाहु लहा ॥

दोहा

नहिं ऐसी सोभा कबहुं नहिं ऐसो उत्साह ।
लखि पायो कोऊ इतै हे भारत नरनाह ॥
बैठहु दिल्ली राज सिंहासन पर तुम जाय ।
सकल यवन सम्राट गन की सुधि सबहि भुलाय ॥
इन्द्र प्रस्थ रह्यो कबहुँ जहँ बसि कै साहंकार ।
जग नगरन करि तुच्छ सब सुख सम्पत्ति आगार ॥

अलका अरु अमरावती जिहिं लखि सकुचि सिहाति।
कुरुख लखत जिहि देवतहु की हिम्मति हहराति॥
राजसूय जहँ पर प्रथम कियो युधिष्ठिर साजि।
भारत जाके निकटहीं किये वीर वहु गाजि॥
विविध वंश छत्री किये जहाँ राज-वहु काल।
जाके निकटहिं अन्त में अनंगपाल भूपाल॥
करि किल्ली ढिल्ली दियो डिल्ली नगर वसाय।
पृथ्वीराज को जहँ महल टूटी अजहुँ लखाय॥
हाय! कुटिल जयचन्द्र जिहि नास्यो यवननि टेरि।
जिन वहु नामन सों नगर तोरि वसायो फेरि॥
जिन महम्मद गोरी तथा तुगलक अरु तैमूर।
नादिर अरु चंगेज अहमद नास्यो करि चूर॥
मार काट जित मचीही रही कई सत साल।
लूट पाट अन्याय सों भई प्रजा वेहाल॥
स्रोनित सरितः जहँ वही वार अनेक महान।
ललित भूमि जाकी अजहुँ करत जासु गुनगान॥
चहुँ ओरन खँडहर कई योजन जितै लखाहिं।
जनु पूरव उत्पात के दुसह दृश्य दरसाहिं॥
जो दिल्ली तुम लखहु सो विरचित शाहजहान।
सहि सौ २ साँसति सोऊ रही होत हतमान॥
राजधानि जो हिन्द की रही हजारन साल।
जाके हिय नित विहरतहिं रहे विविध भूपाल॥
लुटी पटी वहु वार जो उजरी वसी विलाय।
वहु अन्यायी भूप जित किये अमित अन्याय॥

सो उजारि नगरी बसी देहली नाम धराय।
राजधानि पदहीन अति दीन बनी बिन राय॥
राजमहल बहु खोय जित बन्यो दुर्ग मनहूस।
कोहनूर जामें न अब नहीं तखत ताऊस॥
जो अँगरेजी राज लहि डिलही बनी सोहाति।
दिन प्रति दिन जाकी छटा निखरत ही सी जाति॥
तऊ सोच सालत हिये जाके बलम बियोग।
रह्यो, सोऊ श्रीमान् को लहि सँयोग सुभ योग॥
मन भायो पिय पाय सो फूले अंग न समाय।
चिर दिन की खोई प्रभा पाय रही मुसुक्याय॥
राज तिलक बहु नृपन के भये जहाँ बहु बार।
कबहुँ न पै ऐसी सजी करि दिल्ली सिंगार॥
कोहनूर लखि आप के राजमुकुट पर आज।
समुझत निज सौभाग्य को फेरि मिलन महराज॥
नव भारत दिल्ली नई नयो सज्यो सब साज।
नयी भाँति अभिषेक तुव हे नव भारत राज॥
नकल भई द्वै बार जहँ लहन राज अधिकार।
असल राज अभिषेक तुव भारत में इहि बार॥
साँचहुँ सब सामन्त सों ह्वै तुम बन्दित आज।
साँचे भारत राज राजेस बनहु महराज॥
सुखी करहु निज भारती प्रजा सकल दुख टारि।
बरन भेद मत भेद अरु न्याय बिभेद निवारि॥
राजभक्त भारत प्रजा की लीजै आसीस।
सपरिवार सुख के सहित जियहु असंख्य बरीस॥

पितामही निज पिताहू सों जस अधिक पसारि।
हरहु सकल परजान मन तिन सुख साज सँवारि॥
मेरी महरानी अरी मेरी! गुन गन खानि।
अचल सोहाग रहै सदा तेरो जग सुख दानि॥
तेरे अरि हेरे न कहुँ मिलै जगत के माहिं।
राज तिहारे बीच दुख प्रजा अनीति हेराहिं॥
मङ्गल भारत राज सँग मङ्गल भारत राज।
मङ्गलार्य्य भारत प्रजा करै ईस सुभ साज॥

हरिगीती

राजत तिहारे राज पञ्चम जार्ज सब दुख दल टरै।
नित नवल भारत भूमि आर्य्य प्रजान हित सुभ फल फरै॥
जगदीस बनिकै प्रेमघन बरसै दया सुख सर भरै।
मेरी महारानी सहित तेरी सदा रच्छा करै॥

और भी

सब दीप की विद्या, कला, विज्ञान इत चलि आवई।
उद्यम निरत आरज प्रजा रहि सुख समृद्धि बढ़ावई॥
दुषकाल, रोग, अनीति नसि, सद्धर्म उन्नति पावई।
भट, विबुध, अन्न, सुख भारत भूमि नित उपजावई॥

मयंक महिमा

सं० १९७९

मयङ्क महिमा*

"वाहरे तेज़िये दिल खामये मिश्कीं मेरा।
दफ़अतन कूक उठा रात को वनकर कोयल॥"

माधव राका निसा रसीली, सजी सेज पर सोता था।
जगा जो मैं गोविन्द नाम, श्रोताजन आलस खोता था॥
पर अद्यापि घड़ी दो रजनी, शेष विशेष सुहाती थी।
मंजु मयङ्क मरीचि मालिका, मिस मानो मुसकाती थी॥
फबती फैल रही थी चारो, ओर चाँदनी मन भाती।
मानो सुधा सुधाकर से ले, कर वसुधा को नहलाती॥
निखर पड़ा सारा जग जिससे, शोभा नई लखाती थी।
वहीं अटक सी जाती थी यह, दीठ जहाँ पर जाती थी॥
सुधा धवलिमा धवलित हो सब, सौध सदन मन भाते थे।
गुथे गृहावलि मध्य राज पथ, सुन्दर स्वच्छ सुहाते थे॥
बनकर नवल दूलहा बन, वाटिका दूलहिन प्रेम भरा।
लगी लगन प्राचीन लगन, आतेही हर्षित हुआ हरा॥
सूहा जामा पल्लव नवल, मधूक पुंज से वह सोहा।
जोड़ा मुकुल मंजरी सुरंग, समुद्र फलों ने मन मोहा॥

---

*इस कविता को प्रेमघन जी ने अपने पौत्र श्री दिनेश उपाध्याय के बाल्यकाल में चन्द्रमा में कालिमा के ऊपर पूँछे प्रश्न के ऊपर लिखा है और यह ही आपकी अन्तिम कविता है।

ललित प्रफुल्लित किंसुक जाल, पाग पर मौर मनोहर था।
अमिलतास कुसुमावलि मानो, पुष्प राग मणि निर्म्मित सा॥
अलंकार गजमुक्ता फल सम, कुसुम कुँआंट लखाते थे।
पन्ने के लटकन से लटके, वृन्त रसाल सुहाते थे।
शाल मौर चामर वितान सी, तनी मालकाकुनी लता।
बने बराती सभी विटप, अटवी धारे नव सुन्दरता॥
बोल उठा कोकिल नकीब, बज चला शिवारुत का बाजा।
जंगल ने मंगल का मानो, सबी साज सचमुच साजा॥
उमड़े उदधि उतंग तरंगिन, शोभा में अब तक डूबा।
चंचल चला छोड़ मलयाचल, इधर दक्षिणानिल ऊबा॥
बात बात में सब थल की, शोभा निहारता कानन में।
पहुँचा वह वर वाजि बना, संचलन मचाता तरु गन में॥
शोभा बढ़ी अधिक ऐसी, कुछ जिसका वारापार न था।
वस्तु न थी कोई ऐसी, जिस पर छाया सिंगार न था॥
लगा सोचने मैं सब इन्हीं, वस्तुओं को देखता सदा।
रहता हूँ पर कभी न पाई, इनपर ऐसी खिली प्रभा॥
कारन इसका क्या है मेरे, नहीं समझ में आता है।
कुछ न समझता था जिसको, वह भी अतिशय मन आता है॥
पड़ी निशाकर पर जब आकर, अचांचक आखें मेरी।
माना मन ने शमन हुईं, शंकायें जो थीं बहुतेरी॥
यह मयङ्क महिमा है जिसने, सब जग रम्य बनाया है।
शोभा कर वह औरों को, शोभा देकर अति भाया है॥
चतुर चकोर चारु लोचन कर, अचल देखता चाह भरे।
उड़े उच्चतर प्रेम दिखाता, भाता धीरज धीर धरे॥

निज प्रिय मुख मण्डल मधूरिमा, मंजु अमीरस पीता है।
औरों पर नहि आँख उठाता, देख उसी को जीता है॥
परम अनूपम प्रेम पात्र भी, पाया है उसने ऐसा।
इस विरंचि रचना विशाल में और नहीं कोई जैसा॥
वाह वाह क्या सुखमा है जो, कहने में नहिं आती है।
ज्यों २ उसे देखिये त्यों त्यों, नई छटा छहराती है॥
मेचक चिकुर पुंज रजनी के, मध्य मंजु मन भाता है।
रमा रुचिर विधु वदन चाँदनी, मिस मानो मुसकाता है॥
जिसका चारु चकोर चक्रधर, चकित लालची लोचन से।
निहारता हारता सदा मन, रहता है भोलेपन से॥
अथवा गगन सरोवर नील, सलिल पूरित पर फूला है।
सित सहस्र दल अमल कमल, वनकर मन मधुकर भूला है॥
जिसकी केसर सरस कौमदी, जग कमनीय वनाती है।
शुभ सुगन्ध सम्मिलित सुधा, मकरन्द विन्दु वरसाती है॥
वा यह अम्वर उदधि वीच, उतराया क्या मन भाया है।
उज्वल उपल महान खंड, मंडलाकार छवि छाया है॥
तिमिर मत्त मातङ्ग मारकर, सिंह उसी पर वैठा है।
मरीचिमाला सटा छटा, छहराता गर्वित ऐंठा है॥
अथवा क्या आकाश माठ में, मथित हुआ उतराया है।
मंजुल मक्खन पिन्ड स्वच्छ, सव के मन को ललचाया है॥
प्रकृति देवि छवि दर्शक दर्पण, गोल अलौकिक भारी है।
वा यह पूरित प्रभा दिखाता, भाता जगती सारी है॥
रमना रम्य व्योम उद्यान वीच, वा विकसित भाया है।
सुन्दर सूर्य्यमुखी कमनीय, कुसुम का यह रंग ल्याया है॥

अथवा आदि अखंड पिन्ड ब्रह्मान्ड मनोहर दिखलाता।
फिर भी है जगदीश आज निज माया महिमा प्रगटाता॥
वा यह थाल रजत मन्मथ महीप का जिला कराया है।
रस श्रृंगार सार जिसमें भर जग को सरस बनाया है॥
वा कलधौत कलश पूरित, पीयूष धरा सा भाता है।
वा भारत हृदयेश सुयश, सम्पुट नभ पहुँच सुहाता है॥
अथवा किसी देव शिशु ने, क्या गोली गुड़ी उड़ाई है।
प्रभामई जिसने जगदीठ, खींच कर पास बुलाई है॥
अम्बर मानसरोवर में वा, राजहंस यह चरता है।
तारावली सकल मुक्ता चुंग, जिसका पेट न भरता है॥
वा चतुरानन कुम्भकार का, चलता चक्र सुहाता है।
भव्य भान्ड प्राणी समूह जो, सदा बनाता जाता है॥
पांचजन्य वा हृषीकेश का, मध्य सुदर्शन सोहा है।
भरा प्रभा वा क्या कमनीय, कौस्तुभ ने मन मोहा है॥
शची देवि सिर सीस फूल सा कैसा चित्त चुराता है।
आतपत्र वा नृपति पुरन्दर, श्वेत प्रभा प्रगटाता है॥
दीन भारती प्रजा जिन्हे वा, नहि कर्त्तव्य सुझाता है।
दुसह शोक उच्छ्वास उनका बन, उड़ा गुबारा जाता है॥
विद्युदीपावरण प्रभा पूरित, क्या सोहा सुन्दर है।
टँगा उसी बिवाह सम्बन्धी, मजलिस के क्या अन्दर है॥
उसी समय हूँ हूँ हूँ हूँ धुनि अरुण शिखा की मैं सुनकर।
लगा सोचने मन ही मन मैं चौकन्ना हो विशेष तर॥
क्या सचमुच बिवाह का साज सजा है इस फुलवारी में।
इधर अग्नि क्रीड़ा होती है क्या दिसि प्राची प्यारी में॥

उठा अंक पर्य्यङ्क त्याग कर तुरन्त मैं तब चकराय।
उतर उच्च अट्टालिका के ऊपर से जब नीचे आया॥
सटे सदन के सहन से सजे ग्रीष्म भवन से मैं होकर।
ज्योंहीं पहुँचा जाकर मिले सरोवर तट सुन्दर थल पर॥
मध्यवर्ति रमणीय रविश पर आसन सुखद बिछा पाया।
बैठ गया मैं जाकर उस पर जो था अति मन को भाया॥
बनी ठनी वाटिका बनी की बनक जहां से दिखलाती।
शोभा सरिता उमड़ी लहराती थी मन को नहलाती॥
सोही सूही सुरंग चूनरी पहिन मोनियां वेली की।
गोल मुहर की चादर चारु बढ़ाती प्रभा नवेली की॥
कुसुम सावनी की कंचुकी गुलाबी शोभा देती थी।
स्वर्णलता स्वर्णालङ्कार सजाये मनहर लेती थी॥
था थल कमल अमल प्रफ़ुल आनन अनूप शोभाकर सा।
हंसराज अलकावलि मानो नर्गिस नैन मैन सरसा॥
पद्मराग मणि कर्णफूल करवीर कुसुम छवि भाता था।
सुमन समूह माधवी हीरे का लच्छा बन भाता था॥
बना मोतिया मोती माला हिय पर हिय हर लेती थी।
चम्पाकली कली चम्पा मिल कुच श्रीफल छवि देती थी॥
लाल लाल के लटकन से गुल अनार थे मन हर लेते।
जपा कुसुम के झब्बे चारो ओर झूलते छवि देते॥
कलित कांची वेगम वेइलिया की ललित मनोहर थी।
चारु चांदनी कुसमावलि की पायल सजती सुन्दर थी॥
किस २ अंग परिच्छद अलंकार की शोभा जाय कही।
जिधर दीठ यह पड़ी अड़ी मोहित होकर बस वहीं रही॥

शुभ सिंगार सुसज्जित देख दूलहिन की शोभा प्यारी।
बनी ठनी सब गईं संग की सहेलियाँ उस पर वारी॥
सरस राग सच्चे सुर साधे गीत ब्याह के गाती थीं।
बनी प्रेम मदमाती निज गुन रूप गर्व प्रगटाती थीं॥
बनरा सेहरा सुना सुहाना मन में मोद मचाती थीं।
वर विहगावलि बोल ब्याज से बहु विनोद बगराती थीं॥
चारो ओर मंगलाचार मचा सचमुच था मन भाता।
साज बाज सब विवाह का सा जिधर देखता मैं पाता॥
चतुष्कोण प्राकार मध्यवर्ती उचित स्थल पर सोहे।
नव दल फल फूले फूलों से दबकर द्रुमदल मन मोहे॥
लेते थे, मानो है लगी कनात हरी उनकी अवली।
चारु चमत्कृत चमन की अवनि जिसके बीचो बीच भली॥
लीची औ सहकार पनस बन फर्शी भाड़ सुहाते थे।
लाल हरे पीले फल कवल कुमकुमे कमल दिखाते थे॥
कदली पत्र लिये पंखा था घौर बनाये चामर था।
दास पपीता आतपत्र ले खड़ा देखता सुन्दर था॥
चोबदार बाअदब खड़े से सर्व कनार सुहाती थी।
द्विजअवली की बोल ब्याज से उचितादेस सुनाती थी॥
लतिका कुंज द्वार पर परदे परे सुमन गुच्छावलि के।
जिसके भीतर जाने को थे वृन्द अनेक अड़े अलि के॥
सजी सजाई सी मजलिस थी शोभा अपनी दरसाती।
जिसे देखते ही बनता था कहने में थी कब आती॥
ऊपर अम्बर का दल बादल नीला तना सुहाता था।
लगा चोब सागू औ नारिकेलि तरु दल मन भाता था॥

हरी दूब कालीन मखमली बिछी मनो मन हर लेती।
बने वेल बूटे से गुल फिरंग की क्यारी छवि देती॥
साज मजलिसी पान दान आदिक सब थे मीनाकारी।
किये काम के औ गंगा यमुनी सुन्दर शोभाधारी॥
अति विचित्र दल फूले फूलों के गमले थे बने हुए।
रक्खे क्रोटन और केलियस आदि लगे छवि छूने हुए॥
रत्न जटित पत्रों के से जो मन को मोहे लेते थे।
शहन शिस्त वेदिका मनोहर के आगे छवि देते थे॥
जिसके चारो ओर सभासद विराजते थे बने ठने।
मानो वस्त्र विभूषण भूपित रूप गर्व के रूप बने॥
विविध जाति औ भाँति के लगे आल बाल लघु तरु सोहे।
रंग विरंगी फूल खिलाये लेते थे मन को मोहे॥
शीतल मन्द मलय मारुत चल मानो व्यजन डुलाता था।
फैलाता सुगंध की लहर मन की कली खिलाता था॥
धूप धूम सा पराग उड़ता हुआ हृदय हरसाता था।
त्रिपद विनोद बाढ़ ल्याता मकरन्द विन्दु बरसाता था॥
बँधा सनाका सुर का था संग मिला ताल का प्यारा था।
भरे राग अनुराग रागिनी लय अलाप ढंग न्यारा था॥
सातों सुर संग तीन ग्राम इक्कीस मूर्छनायें जो हैं।
सहज सरसता उनकी सुनकर गन्धर्वों के मन मोहैं॥
सुहावनी सारंगी मानो स्यामा सरस बजाती थी।
दामा अति आनन्द बढ़ाती हुई सरोद सुनाती थी॥
सुर सिंगार सिंगार सुरों का करके मंजु बजाता था।
हरित हरेवा हरता सा मन मानो मोद मचाता था॥

तेवर कोमल आरोही इमरोही सुर सिखलाता था।
गिन गिन अगिन मोहता मन मानो इसराज बजाता था॥
जल तरंग था बया बजाता दहियर रहा सितार बजा।
मानो द्रुत गति बोल विलम्पत मीड़ ज़मज़मो सहित सजा॥
पवई हारमोनियम बुलबुल रबाब का रस लाता था।
सब का गुरु बन भृङ्गराज बैठा बाँसुरी बजाता था॥
पियरोला मृदंग की परन सुनाता रस बरसाता था।
संग २ मुहचंग बजाता फिद्दा रंग जमाता था॥
मुदित भुजंगी मंजु मजीरे की ठुनकार सुनाती थी।
सब का मेल मिलाती सब को एक रंग में ल्याती थी॥
टप्पा मैना गाती कथा रस भरी गिटगिरी लेती थी।
शोरी का दम भरती सब को मनो मुग्ध कर देती थी॥
तोड़े नाच नाच कर मुनियाँ गति की गति दिखलाती थी।
हाव भाव जिस्के लखकर मन में मेनका लजाती थी॥
शुक था साधुवाद करता मन हरा हुआ सा हरा हुआ।
कराहता था कपोत प्रेमी राग राग से भरा हुआ॥
हो उन्मत्त घूमता लक्का था वक्षस्थल ऊँचा कर।
तान तीर से विंध कर लोटन लोट रहा था भूमी पर॥
उत्सव समारोह संगीत सहित सब साजों से सोहा।
सबी थलों पर जिसे देखते ही जाता था मन मोहा॥
कहीं कलावँत कोकिल खयाल पंचम सुर में गाता था।
तानें तरह तरह की लेता सदारंग बन जाता था॥
कहीं लता मन्दिर सुन्दर में बैठा बीन बजाता था।
लाल सारदा नारद की सी रंगत गत में लाता था॥

किसी कुंज में मंजु तराना तूती परी सुनाती थी।
छिपी अलग अलबेली बन मानो बायला बजाती थी॥
खड़काता था चंग कहीं चंडूल लावनी सा गाता।
सुनता था चुपचाप चतुर चातक मयूर सा चकराता॥
गाती थी फिरकी फुदकी कृष्ण औ श्रीरामी मिलकर।
कोरस..का रस देती वृक्ष पुञ्ज रंगस्थल में सुन्दर॥
कहीं मंडली भांड़ों की अपना ही रंग जमाये थी।
रूपक सह संगीत हास रस के सब साज सजाये थी॥
ढोटा धौरा सुढंग नाचता बाँकी ठुमरी गाता था।
सनद सनद की लिए कद्र की मानो वद्र कराता था॥
भाव रस भरे करता लोचन चंचल चारु घुमा करके।
सुन्दर ग्रीव सिकोड़ मरोड़ सिकुड़ इठलाता मन हरके॥
देते थे करताल साथ सुर भरते थे पीछे जिसके।
नील ग्रीव चटक पिन्डुक वर दारुविदारक जो तिसके॥
बने विदूषक तीतर धनुप वटेर छेम कर खूसट थे।
बक वत्तक महोख्र टिट्टिभ उल्लूक हँसाते चटपट थे॥
इतने ही में काले सूट पहिनने वालों का आया।
काकावलि का स्वांग कि जिसने महा हास रस बरसाया॥
कोलाहल बहु बढ़ा कि जिसका कुछ भी वारा पार नहीं।
हँसते हँसते लोट पोट हो गये रहे जो लोग जहीं॥
इधर देखिये तो महफिल में नई छटा छहराती थी।
जैसे कोई सुन्दरी युवती होकर चित्त चुराती थी॥
था मुजरा हो चुका कभी कल्यान, कान्हरा विहाग का।
परज कलिंगरा भैरव माल कौस आदि क सब सुराग का॥

जश्न भैरवी का आरम्भ हुआ था अब सब साज सजा।
ठाट वाट से देता था अपने जो इन्द्र समाज लजा॥
जिससे सब संगीत अंग इक रंग सुहाते थे भाते।
रंग स्थल में मङ्गलमय आनन्द सिन्धु से लहराते॥
रंग विरंगी चारु चमत्कृत रुचिर तितिलियों की अवली।
सज़ित विचित्र सुन्दरी परी पंक्ति सी थी नाचती भली॥
संग संग ही भृङ्गी भी गुंजार मचाती जाती थी।
नर किन्नर गन्धर्व मात्र का गुञ्जन गर्व गिराती थी॥
चित्र लिखित सा दर्शक दल तन्मय सा हुआ दिखाता।
अनुभव कर आनन्द ब्रह्म अपने में आप समाता॥
चहल पहल कलरव कोलाहल सुनकर चित ललचाया सा।
सब को वे सुध जान हुआ आनन्द मग्न मन भाया सा॥
धन्य सुअवसर जान क्रूरमति कूटनीति का अनुगामी।
पहुँचा लेकर सैन सुसज्जित संग सेन भट संग्रामी॥
लगा अमित उत्पात मचाने द्विज दल को दलने मलने।
निर्वल जान कर चंगुल में कस उर विदार शोणित चखने॥
सेना जो वहरी जुर्रे शिकरे सैनिक मिल टूट पड़े।
डपट डपट कर दीन खगों को निपट निडर निर्दयी वड़े॥
पकड़ मारने नोच नोच कर लगे चाभने चाव भरे।
देख दुर्दशा यह विहंग संकुल व्याकुल हो उठे डरे॥
वेचारे वहुतेरे दब छुप गये शेष उड़ भाग चले।
चिल्लाते निज प्रान वचाते हुए वहाँ भय देख टले॥
चला वेग से अनिल वहाँ से ऊब अनीति न देख सका।
कंपित हुआ सदय तरु का दल हिला हिला कर कर दल का॥

उठकर मैं भी चला वहाँ से सीधे रमने में आया।
देखा तो सब ओर अनोखा फीकापन फैला पाया॥
अस्ताचल चूड़ा अवलम्बित मरीचि माली मंडल की।
मन्द मनोहरता हो गई प्रकाशित प्रभा हुई हलकी॥
लगा दिखाई देने जिससे स्वच्छ स्वरूप सहज ससि का।
जैसे गोले उज्वल कागज़ पर हो पड़ा दाग मसि का॥
लगा सोचने मन में मैं यह विधि विचित्रता कैसी है।
"तले दिया के अंधकार" की सुनी कहावत जैसी है॥
इस प्रकार आकर के भीतर तिमिर अंश कैसे आया।
सुन्दर सुमन गुलाब कंटकों में ज्यों विधि ने विकसाया॥
नहीं समझ में आता है फिर लगी कालिमा कैसी है।
जिसके जी में आता जो वह बकता बातें वैसी है॥
कोई कहता है मयंक जब निकला सागर मन्थन से।
लगी कीच जो थी छूटी वह नहीं अभी उसके तन से॥
कोई कहता है "शशाङ्क, शश को ले गोद खिलाता है।
सुन्दर जिसका रूप दिखाता, अतिशय मन को भाता है॥
कोई कहता जुता हुआ मृग, विधु रथ में शोभाशाली।
की है दिखलाती परछाहीं, पड़ी हुई उसमें काली॥
कोई कहता क्रुद्धित होकर, मुनि ने मारा मृगछाला।
पड़ा चन्द्रमा बदन आज लौं, चिन्ह उसी का यह काला॥
कोई कहता है मुनि पत्नी से, कलंक है उसे लगा।
मान प्रिया सम्बन्ध वस्तु, यह हिय में उसको समझ ठगा॥
नव अँग्रेजी के विद्वान् आर्य्य सन्तान बताते हैं।
हम पढ़ कर विज्ञान जान कर सत्य तुम्हें समझाते हैं॥

दूरवीक्षण यंत्र देखने का नक्षत्र बड़ा कोई।
लभ्य यहाँ यदि होता जा सकती सब शंकायें खोई॥
चन्द्र लोक प्रत्यक्ष दिखा देते हम तुमको मित्र अभी।
सुनी सुनाई बातों को तुम सत्य न सकते मान कभी॥
चन्द्र लोक भी इस पृथ्वी के समान ही है हुआ बना।
पृथ्वी सागर वन पर्वत प्राणी समूह से बसा घना॥
वह पर्वत उसका है, जो दिखलाता काला काला है।
उसी यंत्र से कई बार यह मेरा देखा भाला है॥
बहुतेरी अनपढ़ी भारती बुढ़ियायें भोली भाली।
भरी मोद में गोद खिलाती, बालक बहु बघने वाली॥
देखो भय्या उई जोन्हैया, कैसी अच्छी लगती है।
करती अपना काम और को, सीख सिखाती जाती है॥
है कहता कोई अपनी, पृथ्वी की यह परछाईं है।
अथवा पड़ी राह भय की है, उसके हिय में काई है॥
कथन किसी का है, हरि भक्त चन्द के हिय में बसते हैं।
आभा श्याम उन्हीं की है वह, प्रेम जाल में चितते हैं॥
मैं तो कहता हूँ तारा का विरह न सोम संभाल सका।
हुआ उसे क्षय रोग कलेजा, झांझर हुआ हताशय का॥
गगन श्यामता पीछे की, जिससे पड़ती दिखलाई है।
ईश कान्ता पति की मानो, प्रगट प्रेम प्रभुताई है॥
अथवा जैसे चन्द्र मौलि के भाल चन्द्र जो बसता है।
अमी लोभ अहि श्याम समूह, सुहाता उसमें बसता है॥

तीसरा खंड

संगीत काव्य

संगीत काव्य

रचना काल

सं० १९३२ से १९७९

संगीत काव्य

श्रृंगार बिन्दु

भैरव

जय जय जय जयति जगत जोति जनन हारे ॥टेक॥
नारद, शारद, महेश, सेस वेद औ गनेश
थाके गुन गान ध्यान मौन मारि धारे।
सच्चित आनन्द रूप माया तुव अति अनूप
किंकर सुर भूप तीन देव चन्द तारे॥
निरमल नित निराकार व्यापक जग निराधार,
सूच्छम आकार पार वार तयों भारे।
बदरी नारायन जू निराकार निरगुन तू—
सर्व्व शक्ति सहित इष्ट देवता हमारे॥

नेक देहु इतै चितै यार प्रान प्यारे ॥टेक॥
मोहत मुरली बजाय मन्द मधुर मुसकुराय,
आय धाय लागो गर नन्द के दुलारे।
बद्री नारायन सन न्यारे जनि होवहु छुन
मन मैं बसिऔ सु आय मोर मुकुट वारे॥

नैन मैन वान जान कान लौं निहारे,
भौंह की कमान तान २ प्रान मारे ॥टेक॥
चंचल चहु ओर कोर, ताकत टुक जासु ओर,
बरबस बेबस बनावते ये मतवारे॥

ललित भैरव

भाजत रंग डार डार, ए ही जसुमति कुमार,
देखी इत ठाढ़ी वृषभानु की लली ॥टेक॥
गावत गाली वनाय, मीठी मुरली वजाय,
रोकत घर वामन वन कुंज की गली।
देखत नहिं तुमरी ओर—राधे भाजौ किशोर!
वद्रीनारायन लहि घात या भली॥

फूले वन लाल लाल टेसू वौरे रसाल,
चटकत चहु ओर सो गुलाव की कली ॥टेक॥
वद्री नारायन कवि देखिये अपूरव छवि
भौर भीर अभिरीं कल कुञ्ज की गली॥

विनवत हूँ वार वार ए रे चित चोर यार!
नेह को लगाय कहां जाय है छली ॥टेक॥
वद्री नारायन जू हाय ना विलोकै जू—
मद मनोज भीनी कुच कंज की कली॥

भैरव

दोऊ दृग वास लियो वन में मृग कञ्ज
कीच वीच फसे नेक हीं निहारे।
वद्री नारायन जू मधुकर मद मोच्यो तू,
खञ्जन मन रञ्जन अवलोकि भये कारे॥
सांची कहूँ काकी छवि छीन लीन प्यारे—
फीकी कर दीन हीन जोति चन्द तारे ॥टेक॥

बद्री नारायन जू मद मनोज मोच्यो
तू मानहु चतुरानन निज हाथ ही संवारे ॥

सिन्धु भैरवी

गुजरिया क्यों हँसि हँसि तरसावत ॥टेक॥
मुख वारिज सौरभ वथनन सजि, मन मधुकर बिलामावत।
असित अलक घन बीच दसन दुति, हँसि चपला चमकावत ॥
निज गति चलि चलि छलि गज सारस, ताल मराल उड़ावत।
बद्रीनाथ चितै चित चोरयो, अब कत दृगन दुरावत ॥

कोइलिया भोरहि आन जगावत ॥टेक॥
या दई मारी! कैलिया पापिन, मोंहि विरहिनिहिँ जलावत।
एक मयन छुन चैन देत नहिं, बिरह बिथा उपजावत ॥
सनि समीर सौरभ गुत लागत, मम धीरजहि नसावत।
बद्रीनाथ पपीहा पी पी करि छुतियां दरकावत ॥

भैरवी

हमैं रट राधा राधा लागी ॥
श्रीराधा राधा रट लागी कृष्ण भये अनुरागी।
मन सों भ्रम तम दूर भयो भजि प्रेम ज्योति जिय जागी ॥
भव भय हरन सरन असरन जुग चरन ध्याय छल त्यागी।
कृपा वारि बरसाय प्रेमघन जन बनयो बड़ भागी ॥
जाग! जाग! मन भोर भयो भज राधावर घनस्याम।
सेवा कुंज कुसुम सेजहिं तजि जागे दोउ छवि धाम ॥

लागि हिये मुख चूमि चले दोउ बरसाने नदग्राम।
छाये दुहुँ मन सघन प्रेमघन सकत न तजि वह ठाम॥

माधव मुकुन्द को कर मेरे मन ध्यान।
या जग के जंजाल जाल में कहा फिरै उरझान॥
मात पिता सुत नारि बन्धु हित जेते सुजन जहान।
ये सब स्वारथ के साथी नहिं तोहि परत पहिचान॥
कलियुग मैं नहि साधन एकहू जोग जाग तप ज्ञान।
तासो करि प्रभु चरन प्रेमघन अटल कही यह मान॥
साँचे सुहृद स्वामि समरथ हरि एकहि और न आन।
उभय लोक सब सुख के दाता तोहिं न अजहुँ लखान॥

सिंध भैरवी

जनु कछु जादू करि जानत—
मम मन इमि अनुमानत॥ टेक॥
नयन मयन के बान बिराजत,
समसत सूल बरौनी भ्राजत।
सुरमे सहित सरस छबि छाजत,
मीन, जलज, अलि-मृग, दृग लाजत,
सो मन खग के हाय हतन
हित भौंह कमाननि तानत॥

जनु कछु......अनुमानत॥टेक॥
मारन की विधि कहीं प्रथम हम,
अवलोकनि अखियन को अनुपम,

मोहन मृदु मुसुक्यानि मंजु तम,
सिसकारी सुभ वसी करन सम,
दन्तन दावि अधर मन जन जग,
उच्चाटन विधि ठानत ॥

जनु कछु......अनुमानत ॥टेक॥
मीठे वैन सुनाय रिझावत,
विविध भाव करि चाव चढ़ावत,
मयन अयन हिय हाय वनावत,
जुग दृग मीन मनहु गहि लावत,
कुन्तलि अवलि जाल वल सों—
नहिँ हीन दोन पहिचानत ॥

जनु कछु..... अनुमानत ॥टेक॥
श्री वदरी नारायन कविवर
कनक कुम्भ सम पीन पयोधर
जनु राखी चतुरानन विप भर,
दरसत ही लेते सुध वुध हर,
होते अन्त प्रान गाहक
नहिँ नेक दया उर आनत ॥

चितवन वारी छवि न्यारी, (तव)
तिरछे दृग की प्यारी ॥टेक॥
श्री वदरी नारायन प्यारे, मत वारे भारे रतनारे,
छीन मीन करि देत निहारे, कंज खंज अलि कीनों कारे,
काटन हेत करेजन प्रेमिन—मनहुँ मनोज कटारी ॥

रोकत श्याम जांव कित पानी ॥ टेक ॥
जान न देत छैल जसुदा को,
रोकत बाट सदा हठ ठानी ।
गाली देंत बीच मुरली के,
वनमाली आली अभिमानी ॥
बद्रीनाथ विलोकत वाके,
छूटत लोक जात कुल कानी ॥

बँसुरिया रे टेरत है बलवीर ॥ टेक ॥
बंसी तान सुनाय कान तिन,
जियको करत अधीर ।
चंचल चखनि बिलोकनि बाँकी,
मनहुं मयन की तीर ॥
सांवरी सी सूरति दिखलावत,
वह उपजावत मन पीर ।
बद्रीनारायन नटवर नट,
बेपीर अहीर ॥

अब सखियां अँसियाँ उलझानी ॥ टेक ॥
नहिं भूलत चित तैं वाकी छबि,
मुख मोरनि मंजुल मुसुक्यानी ।
नासा मोरि विलोकनि बाँकी,
लीनो मन भौंहन को तानी ॥
बदरीनारायन पिय औचक
मार गयो जादू जनु आनी ॥

ढूंढत श्याम फिरत कुञ्जनि बिच,
कित वृषभान किसोरी रे॥ टेक॥
चम्पक, केसर, कुन्दन हूँ ते,
सरस सरस तन गोरी रे।
सिसु मृग दृगवारी ससि बदनी,
नवल वयस अति थोरी रे॥
कहाँ गइ छन छवि हरनी
चितवत हीं चित को चोरी रे।
बदरीनारायण कित भाजी लै
मत भौंह मरोरी रे॥
तोरी सांवरी सूरतिया नाहीं भूले रे॥ टेक॥
मृदु मुसुक्याय, नचाय नयन सर,
बस कीनो रे ये करत रस बतियां।
बदरीनारायन छवि छाकी
जेहि लाख रे लाजै मैन मूरतिया॥
फुलवरिया रे-फुलवा बिनन गईं-गईं॥ टेक॥
औचक दीठ परी प्यारे मैं—
बरबस मन लई लई।
पिया प्रेमघन निरखत हीं मैं
सब सुध दई दई॥

पीलू का खेमटा

गई गिरि हो मोरी नीकी झुलनियां॥ टेक॥
नग जड़ली मोतियन सों
साजी रे-वैठि गढ़ाई पी की।

वद्रीनारायन प्यारे की रे—
वीर लुभावनि जी की॥

दरकि गई मोरी झीनी चुनरिया॥ टेक॥
यह चुनरी मोरे जिय सों प्यारी रे—
प्रेमिन मन हर लीनी चुनरिया।
अब कह कैसी करूँ मोरी आली री,
वद्रीनाथ क़ी दीनो चुनरिया॥

इक नाहक कुञ्जन आज गई घर हाथ लई॥ टेक॥
देखत ही सुध वुध सव भूली,
भली भूल यह आज भई री।
वाँकी वनक माधुरी मूरत,
अलवेली सव चाल नई री॥

राग गौरी

सवलिया रे तू तो भयो मीत मोर॥ टेक॥
कहर करत निस वासर डोलत वाँके भौंह मरोर॥
भोली सूरत पे सत कोटिन मदन निछावर थोर।
वदरीनारायन मैं वारी तुम पर नन्द किशोर॥

सेजरिया सैंय्या आजा मोरी॥ टेक॥
सैन करो हिय सों हिय मेले निज मुख सों मुख जोरी।
वदरीनारायन है खासी जोरी मोरी तोरी॥

आली काली घटा घिरि आई॥ टेक॥
सनसन सरस समीर सुगन्धन सनकत सुख सरसाई॥
वदरीनारायन नहिँ आये साचहुँ सुध विसराई॥

प्यारी प्यारी सूरत मन भाई रे ॥ टेक ॥
अब इन दृगन जँचत नहिँ कोऊ जब सों छबि दरसाई रे ॥
बदरीनारायन पिय तोरी चितवन मन में समाई रे ॥

छिन पल कल नहिँ पड़त उन्हें बिन रहि रहि जिय घबरावै ॥ टेक ॥
सूने भवन अकेली सेजिया, सपनेहुँ नींद न आवे,॥
बदरीनारायन पिया पापी अजहूँ न सुरत दिखावे ॥

पैयां लागूँ बलम इत आओ ॥ टेक ॥
कबहूँ तो दरसाय चन्द मुख जिय की तपन बुझाओ ॥
बद्रीनारायन दिलजानी, भर भुज गरवाँ लगाओ ॥

जनियाँ तोरे जोबन रस भीने ॥ टेक ॥
दाड़िम, श्रीफल, मदन दुंदभी की मानहुं छबि लीने ॥
श्री बद्रीनारायन मेरो लेत चितै चित छीने ।

गौरी बरसाती

देखो आली नवल ऋतु आई ॥ टेक ॥
श्याम घटा घनघोर सोर चहुँ ओरन देत दिखाई रे ॥
चमकि चमकि चंचला चोरि चित, दिसि दिसि दुति दरसाई रे ॥
करत सोर चहुँ ओर मोर गन, बन बन बोल सुहाई रे ॥
बद्रीनारायन प्यारे की अजहुँ न कछु सुध पाई रे ॥

पूर्वी

बिन देखे प्रीतम प्यारे नयनवां न मानैं—हो राम ॥ टेक ॥
समझाये समुझत कछु नाहीं रे—बरबस ही हठ ठानैं ॥
बद्रीनाथ लाजकुल कनिहरे—ये जुलमी नहिं मानैं ॥

मन बरबस बस कर लीनो बालम तोरे नयनाँ रे॥
बद्रीनाथ सुरत ना भूलत, हूलत बाँके नयनाँ रे॥
सैंयां जाने ना दूँगी बनज परदेसवाँ॥
बारी उमिर जोवन मतवारे यह मन माहिं अनेसवाँ॥
बद्रीनारायन बरसन में कोऊ विधि मिलत सनेसवाँ॥

राग गौरी

चितवत ही चुराये चला जात॥ टेक॥
व्याकुलता निशदिन रहै मन मन पीर पिरावत,
लगी कटारी प्रेम की नहिं अब धीर धिरात।
बद्रीनाथ विना लखे रे तुअ छवि ललचात।
पहिले प्रीत लगाय के अब काहे कतरात॥

सेजरिया रे आवत काहे न यार॥ टेक॥
वीतत जात दिवस आवत नहिं, नाहक करत अवार।
क्यों वैठाय अवधि नौका पर अब कस कसत कनार॥
प्रेम पयोनिधि, मैं गहि वहियां वोरत कत मझधार।
वदरीनारायन छतिया लगि कै करि जा तू प्यार॥

कटरिया आँखिन की उर लागी॥ टेक॥
बिन देखे सुभ दीपति हिय मैं लागत है बिरहागी॥
अब तो बिहरत औरन के सँग नये प्रेम अनुरागी।
बद्रीनाथ कहा फल पायो हम प्रेमिन जन त्यागी॥

करूँ का रे लागे तुम से नैन॥ टेक॥
नहिं भूलत चित तै तोरी छवि मीठे मीठे वैन।
अलक जाल के फन्द फस्यौ चित उरझ्यौ फिर सुरझै न॥

प्रेम नगर विच रूप आश मन मरथौ लैन को दैन।
प्रेम फिरा वदरीनारायन देख्यो नफा कछु है न॥

पापी नैना नहीं बस मेरे ॥टेक॥
रूप अनूपम अवलोकत ही जाय वनत चट चेरे।
फिर नहिं इन्हैं चैन सपनेहूँ, विन वा छवि छन हेरे॥
लोक लाज तज यार गली मैं करत रहत नित फेरे।
श्री वद्रीनारायन जू फँसि प्रेम जाल मैं तेरे॥

गौरी की ठुमरी

जुलुफिया हो नागिन सी लटकाये ॥टेक॥
चन्द अमन्द कपोल राहु लखि जनु जुग करहि वढ़ाये।
श्याम जलद कच वीच दृगन दुति हँसि चपला चमकाये॥
विमल मुखाम्वुज पर प्रेमिन के मन मधुकर ललचाये।
अलक जाल मिलि अन्न प्राण खग वद्रीनाथ फँसाये॥

कौन विधि हो नैया लागै पार ॥टेक॥
नहिं पतवार धार विच भरमत मद मतवार खेवार।
झंझा पवन झकोरत जात माच्यो हाहाकार।
वदरीनारायन नारायण करत कृपा करौ पार॥

काफ़ी की ठुमरी

प्यारे मन मोहन वांके यार, तुम ऊपर वारों कोटि मार ॥टेक॥
मोर मुकुट सुखमा अपार, उर ऊपर राजत सुमन हार,
वांके दृग लखि मन लियो हमार।

बद्रीनारायन जू निहार, तन मन धन वार्‌यौ सौ सौ वार,
विनवंत कर जोरे ठाढ़े द्वार ॥

मृदु मुसुकाई—जुग दृगन नचाई,
सुकन्हाई मन लियो लियो ॥टेक॥

मुख चन्द अमन्द प्रभा दिखलाई, हिय विच प्रेम की वेलि लगाई,
नटवर नट नटि मन लियो है चुराई ॥
बद्रीनारायन करि लँगराई, मन लै तन विरह अगिन भड़काई,
नहिं धरत धीर जिय गयो बौराई ॥

सखि तान तान भौंहन कमान मनमोहन मार्‌यौ नैन बान ॥टेक॥
उर उठत पीर जिय ह्वै अधीर, भयी विवस छुट्यो सब खान पान ।
बद्रीनारायन सुन आली ब्याली जुलफन डस गई है प्रान ॥

छलिया छल छल चित छीनो रे ॥टेक॥
मुसुक्याय धाय मो पास आय निज छवि दिखाय बस कीनो रे ।
बद्रीनारायन गाय गाय बिलमाय हाय मन लीनो रे ॥

मन मोह्यो मीठी बोलनि मैं, अधराधर पल्लव खोलनि मैं ॥टेक॥
कविवर बद्रीनारायन जू जुगल कपोलनि डोलनि मैं ॥

प्यारी छवि प्यारी प्यारी है ॥टेक॥
भोली सुरत रसीले नैना मनहु मनोज कटारी है ॥
लटकत लट काली घुघराली, जनु जुग ब्याली कारी है ।
मधुर मन मुसुक्यात दसन दुति, उज्वल ज्योति उजियारी है ॥

आओ आओ जावो कहि जानी सतराये हो ॥ टेक ॥
मान गुमान सान सौकत सों काहे फिरत कतराये हो ॥
श्रीवद्रीनारायन उत कित, चलेई जात बिना बोले बतराये हो ॥

जाय कौन पानी (वा वारी) हाय ठाढ़ो बनवारी रे,
लीने कर मुरली मोर मुकुट धारी रे ॥ टेक ॥
श्रीवद्रीनारायन नटवर मन्द मन्द मुसुकाय मोह कर,
आय आय लग जाय धाय गर, हा हा खाय बिलखाय
परि पाय लाख लाख बरजोरी लंगर,
बिच डगर करत न बचत कोई नारी ॥

मेरे मन माहीं मन मोहन मुरारी रे,

बस गयो बरबस मूढ़ भारी ॥ टेक ॥
दीसत सब सुध बुध बिसराई बीर,
मोहनी मूरत सोहनी सूरत कारी रे ॥
चोरि चित लियो चपल चखनि, चितवत
सोइ चितचोर चितचोर ब्रजनारी ॥
कैसी करूँ आली पल परत न कल मन
विकल विलोकन विना रहत भारी ॥
वाही बद्रीनारायन ल्याय जो मिला दे या
दिखा दे या बता दे, जाऊँ तू वारी प्यारी ॥

कभू फिर इन गलियन में आओ, चन्द अमन्द सरिस
सूरत इन नैन चकोर दिखाओ ॥ टेक ॥
सखा संग सब साज सजे सुठि, सांचहु सुख सरसाओ!
विरहानल व्याकुल वहि आनन्द वारि वुन्द बरसाओ ॥

बद्रीनाथ देखिबे हूँ मैं, अब जनि यार सताओ ॥
या मनमोहन वारी मुरली को इक टेर सुनाओ ॥

गजब कियो गोरिया तोरे जुबनां रे ॥ टेक ॥
लगत मरन नहिं को अस जग महँ विष वेधे सैना रे ॥
बद्रीनाथ हाथ जोरत हूँ, काजर दै अब ना रे ॥

चाल आँख लड़ाने की नहीं यार भली है,
लाखों से इन्हीं बातों में तलवार चली है ॥ टेक ॥
बद्रीनारायन जानी कैसी ठान है ठानी,
हम खूब पहचानी कि तू ऐ यार छली है ॥

(इमन)

बानि नहीं यह नीकी अली री ॥ टेक ॥
नेक उझकि झाकत न झरोखे लोचन लाभ न लेत अली री ॥
बिन मधुकर शोभा नहिं पावत जुगल उरोज सरोज कली री ॥
चलि बृजराज आज मिलिये कस कोकिल कूजित कुञ्ज गली री ॥
बद्रीनाथ हाथ मलि मलि नहिं पछतैहो मन मांहि भली री ॥

मानति काहे न ए मृगलोचनि ॥ टेक ॥
मुख मयंक करि मन्द, मानिनी, लेति सीरी उसास मसूसनि ॥
ताकत कनखैयन अनखैयन, भौहैं कुटिल कमान रहीं तनि ॥
बोलत बैन बुझाये बिष जनु, मारत घाव हिये मैं सो हनि ॥
श्रीबद्रीनारायन जू धनि मान गुमान गरूर तेरी धनि ॥

राग इमन ताल ३

हूजै नयननि सों जनि न्यारे ॥
प्रिय बृजराज दुलारे ॥ टेक ॥

मन मोहनी माधुरी मूरत, सुन्दर सरस सांवरी सूरत,
मुसुकुराय चंचल चख घूरत, मोर मुकुट सिर धारे ॥
उप वनमाल रसाल विराजत, कटि तट पीताम्बर छवि छाजत,
निरखत जाहि मदन सत लाजत; जुवति जनन मन हारे ॥
श्री कालिन्दी के कूलनि मैं, कलित कुंज श्री बृन्दावन मैं,
रानी कमला अरु मुनि मन मैं; नितही बिहरन हारे ॥
बदरीनारायन गिरवर धर, सुख सँयोग सरसाय निरन्तर,
मिलिये छलबल छाड़ि दयाकर, प्रानन हूँ सन प्यारे ॥

प्यारे टरहु न मन सन टारे । भूलत नाहि बिसारे ॥ टेक ॥
मन्द मन्द मृदु हसन तिहारी, मूरति मनहुँ मयन मन हारी,
लोचन चपल चितौन कटारी, कसकत हीय हमारे ॥
श्री बदरीनारायन दिलवर, जादू डाल दियो तुम हम पर,
मिलत न तरसावत छलबल कर; रूप गरब हठ धारे ॥

भूलत तूरत नाहिं तिहारी ॥ टेक ॥
मुसुकुराय मन मोह्यो, मारी नैन कटारी कारी ॥
सुध आए सब सुध बिसरत छवि मन ते टरत न टारी ॥
निकसत प्रान बिना तेरे अब, आय धाय मिल जा री ॥
श्री बदरीनारायन लागी कैसी लगन हमारी ॥

खम्माच

खम्माच की ठुमरी

कजली खेलत आली, झुलनी गिरी मजेदार ॥टेक॥
विन झुलनी नीकी नहिं लागै रे, यह सावन की बहार।
वद्रीनाथ चोरायो छल करि बाँको मोहन यार॥
चुम्बन समय दुरावत ओढ़नि तासों प्रीत अपार॥

विन देखे निज यार चित में परे नहीं चैन ॥टेक॥
रहत सदा चित चढ़ी अमल छवि, जेहि लखि लाजत नैन॥
वह मुसुकानि हसनि बन बोलनि, मीठे मीठे वैन।
वदरीनारायन कोई की यों आँख उरझै न॥

तू कर धर काहे रहत कँधाई रे ॥टेक॥
वद्रीनारायन सीधे साधे घर चले जाओ नहिं नीकी बहुत ढिठाई रे॥

खम्माच

(हो) दिलजानी लगूं तोरी पैयां, तुम ही अनोखे बिदेस चले,
मोरी वारी वयस लरकैयां ॥टेक॥
वार वार विनती कर हारी, सुनत नहीं टुक अरज हमारी;
वद्रीनारायन सैयां॥

कब लौं योंही तरसैयो हो—इत आय धाय कबहूँ तो हाय,
निज छवि दिखाय हरखैयो हो ॥टेक॥
वद्रीनारायन दिल जानी, मन ते जनि हो अब न्यारे प्यारे,
प्यासे मन मोर अथोर भये तुम सरस सुधा बरसैयो हो॥

कान्हरा

इहि औसर मान न कीजै—ए री मेरी वीर अयानी,
कौन तिहारी वान परी......॥टेक॥
सरस सुखद छवि छाई ऋतुपति, चलि मिलियै ब्रजराज साज सजि,
श्री वद्रीनारायन जू इहि अवसर ॥

उन संग खेलनि जनि जैयै—निपट हठी नटखट नटनागर;
छल वल कै लैहै लुभाय ॥टेक॥
श्री वद्रीनारायन सजनी, जोवन जोर जवानी तू पै,
लगि न जांय ये नैन कहूँ ॥

दूसरे चाल की

(हो) जल भरन मैं न जाउँ आली,
लंगर डगर विच रगर करत नित ही नटवर वनमाली ॥टेक॥
श्री वद्रीनारायन कविवर, वंसी तान सुनाय अधर धर,
व्याकुल करि विलमाय लेत ओढ़े सिर कामर काली ॥

देस

देस की ठुमरी

सखी री चलियत घूंघट घाल ॥ टेक ॥
छीन हीन नित होत कलानिधि पेखि पेखि दुति भाल ॥
पावजेव किंकिनि धुनि सुनि सुनि, भाजत लाज मराल ॥
छिप्यो मृनाल ताल विच जल के, लखि जुग भुजा विशाल ॥
वद्रीनाथ हाथ मलि मलि नित निरखत रहत गुपाल ॥

कृपानिधि नाम की धरि लाज, दया दृग फेरियो हो राज ॥ टेक ॥
यद्यपि हौं खल नीच अधम पै तुम हरि दया जहाज ॥
बद्रीनाथ जांव अब तुम तजि कितै गरीब निवाज ॥

सोवत सोवत भयो भोर सुगुंयां (रे जगाये ना जागै)
मोरी नींद बैरन भई रे ॥ टेक ॥
नभ लाली बोलत चटकाली, करि करि चहुँ दिशि सोर ॥
बद्रीनाथ गयो उठि बेगहिं धौं कित उठि ना जानूं केहि ओर ॥

दिना चार है यार जोशे जवानी, इसीसे खुशी में इसे है बितानो ॥टे०
यह बिचार संसार सार सुख भोगो मिल दिलजानी ।
मान गुमान त्याग कर तू हँस बोल खेल सैलानी ॥
करना होय सो कर लेवो वस, वेग न विलम लगानी ।
श्री बद्रीनारायन जू यह बीते फेर न आनी ॥

इन नैनन घनश्याम लजाओ ॥टेक॥
निस वासर वरसत हिय सरवर आंसुन जलहि भरायो ।
इत बियोग सरिता बढ़ि धीरज नवल तमाल नसायो ॥
बद्रीनाथ हाय नहि सूझत, विरह तिमिर नभ छायो ।
उन बिन पावस बनि अनंग अलि, सूल समीर चलायो ॥

देस का खेमटा

कटारी नैना लगि गयो ए मोरी गुयां ॥टेक॥
जब से लगी तन की सुधि नाहीं, लाज डर भागि गई (ए मोरी गुयां)
बद्रीनाथ विरह की तव सों आग उर लाग गई—ए मोरी गुयां ॥

अरे अलबेले बनवारी ॥टेक॥
निस दिन नहिँ भूलत सुध मन तैं सपनहुँ तनक तिहारी।
नैननि आगे रहत अरी साँवरी सुरत वह प्यारी॥
जी मैं नाचत लखियत मन हारी अँखियाँ रतनारी।
गूंजत कानन मैं मुरली धुनि मधुर सप्त सुरन संचारी॥

सोरठ

नैन लगे दुख दैन लगे।.टेक॥
लखतहिँ रूप अनूप अचानक, तजि निज साथ भगे॥
जाय उतै आवत नहिं अव इत, निज प्रिय रंग रँगे।
वद्रीनाथ हाँथ परि औरन के ये गये ठगे॥

हाय दिल दरद न जानत कोय ॥टेक॥
पीर कौन आनत को मानत, कासों कहूँ दुख रोय॥
कोऊ कछु पूछै नहिँ कहनो चुप रहिये मुख जोय।
वद्रीनाथ कहा फल प्यारे, भरम मरम को खोय॥

चितै चित चोरत चट चित चोर॥टेक॥
मुख मयंक मुसुकानि माधुरी, मोहि लियो मन मोर।
वद्रीनाथ वनक वानक मन, वसी करत वर जोर॥

मागत चन्द श्री वृजचन्द,
मातु पै मचले न मानत करत वहु छल छन्द।
वाल कौतुक करत लोटत, भूमि मैं नद नन्द॥
यदपि जननी वहु मनावत वचन के करि फन्द।
पै न वद्रीनाथ कविवर, सुनत आनँद कन्द॥

कहवावत तौ हूँ श्यामै सुजान।
प्रीत करी कुब्जा दासी सँग सब अवगुन की खान ॥टेक॥
तजि राधा रानी सी रमनी के उर अन्तर ध्यान ॥
कह ब्रजराज कहा वह डाइन यह आचरज महान।
श्री बद्रीनारायन जू यह कठिन लगन लग जान॥

दोउ मिलि केलि कुञ्जनि करत।
राधिका राधेरमन की सरस छबि लखि परत॥
रास रँग राते रसीले भामिनी भुज परत।
झमकि नाचत सखिन संग लखि भोर लाजनि मरत॥
मधुर अधरा धरनि ऊपर, ललित बंसी धरत।
मोहिवे हित कोकिलन कल, सरस सुभ सुर भरत॥
रति मनोज दुहून की दुति जनु जुगल मिलि हरत।
विमल बद्रीनाथ कविवर छवि न हिय ते टरत॥

सोरठ

सयानी अलिन वीच इन गलिन, आज सौं न आइयो हो यार।टेक॥
बृजबासी, बैरी विसवासी, तासौं विनय करत यह दासी,
मेरो लै लै नाम, न वंसी वजाई थी हो यार॥
कालिन्दी के कूल कुञ्ज में, अलि गूंजत छवि अमल पुंज में,
मम जुग चखनि चकोर, चन्द मुख दिखावना हो यार॥
बद्रीनाथ यार दिलजानी लोक लाज कुल कानी,
तासों अब तो प्रीत परस्पर छिपवाना हो यार॥

सोहनी

मतवारे रतनारे तेहारे नैन मैन के बानैं ॥टेक॥
तान कमान कान लौं भौंहें बिकल करत तन प्रानैं।
श्री बद्रीनारायन जू टुक दरद न दिल में आनैं॥

विहाग

लखियत कत मुखचन्द उदास ॥टेक॥
मानहु मन्द जलज सन्ध्या गुनि रवि बिछोह सी त्रास।
पिया प्रेमघन प्यारी काहे सीरी लेति उसास॥

वा जोबन मतवारी प्यारी देख्यो कोउ या ठौर ॥टेक॥
कुन्दन बरन हरन मन रञ्जन,
गात ललित लोचन जुत अंजन।
खंजन मीन मधुप मद गंजन,
चितवन की छवि न्यारी॥
आनन अमल इन्दु छवि छाजत,
कुन्तल अवलि कपोल बिराजत।
अमी अचौत सरस सुख साजत,
मानहु सांपिन कारी॥
दरसत दसन दबी दुति दामिन,
लाजत निरखि काम कल कामिन।
मन्द मराल मत्त गज गामिन,
सुमन सरिस सुकुमारी॥
श्री बद्रीनारायन कविवर,
गावत राग विहाग सुभग स्वर।

फेरत बिरही रसिकन के गर,
चोखी चारु कटारी॥

छिपाये छिपत न नैन लगीले ॥टेक॥
लाख जतन करि इन्हैं दुरावो, दुरत न प्रेम पगीले॥
उघरे फिरत शंक नहिं लावत, निज प्रिय रूप गठीले।
बद्रीनाथ यार दिल जानी, के दृग रंग रंगीले॥

सखी अपने इन नैनन की यह बान ॥टेक॥
सपनहुँ सुख की आस न इन ते दुसह दुखन की खान।
नेक न भय मानत उर अन्तर लोक लाज कुल कान॥
हटकत नेक न माने तब तो, गे बरबस हठ ठानि।
नफा करन हित प्रेम नगर में, भली उठाई हानि॥
दिलबर को दरसन नहिं पायो फिरे जगत रज छानि।
बद्रीनाथ भये बिसवासी, आज परे मोहे जानि॥

सुखमा सुखद सरद सरसाई ॥टेक॥
देखत देस देस दिसि २ दुति, दूनी देत दिखाई॥
फूलो कास अकास सकल थल, बिमल छटा छिति छाई।
सुनियत सोर मोर बागन बन, सरिता सहज सिधाई॥
उदित अगस्त भये मन रंजन, खंजन परत लखाई।
बिकसे बिमल वारि वारिज जुत, सर सोभा अधिकाई॥
चक्रवाक सारस मराल मिलि, ताल तरल जल भाई।
पंकज पुंज पराग मधुर मधु मधुकर मनहि लुभाई॥
चन्द अमन्द दुचन्द लसत नभ चित्त चकोर चुराई।
श्री बद्री नारायन कबिवर बिरचि सुराग सुनाई॥

हे हे भारत भाई ! मिलि सब सुभग बधाई गाओ ।टेक॥
बृटिश राज बसि तुम सब अब लौं, जो अनेक दुख पाओ,
जिन दीने वे अब प्रतिनिधि नहि तासो ताहि भुलाओ ॥
अब तो गवरमेन्ट लिबरल है तासो मन हरखाओ,

तापै वाइसरा भागन सो,
लार्ड रिपन सो आओ।
शुद्ध न्याय दिनकर सों दिन कर,
उन्नति पथहि लखाओ ॥
शीत अनीत भीत हरि तम निज,
पक्षपात बिनसाओ ।
दुखित दुष्ट अधिकारी तस्कर,
प्रजा प्रमोद बढ़ाओ ॥
दुःख कुमुद संकुचित कियो त्यों,
सुख सरोज विकसाओ।
बिती निसा दुर्भाग्य भरत सों,
भाग्य भोर प्रगटाओ ॥
उठो उठो भारत भुव वासी,
वेग न बिलम लगाओ।
मूरखता की नींद छाड़ि कर,
आलस दूर बहाओ ॥
पहिचानहु निज स्वत्व वेग चित,
हित अनहित अब लाओ।
गोरे अरु कारे में अब कित,
भेद रहो न बताओ ॥

सिंह अजा दोऊ सुख सों जल,
एकहि घाट पियाओ ।
तासो अब तो चेत करहु कुछ,
क्यों निज कुलहिं लजाओ ॥
साहस करि उद्योग विविध विध,
फिरि वे दिन दिखलाओ ॥
सेकरटरी, प्रेसीडेन्ट शब्द सुनि,
स्वान सरिस मुख वाओ ।
मिथ्या डर छोड़ो मूरख सठ,
क्लीव कुमति न कहाओ ॥
म्यूनिसूपिल के सांच कमिश्नर,
वनि जिय जलद जुड़ाओ ।
राय वहादुर ठीक ठीक ह्वै,
प्रतिनिधि फलहि फलाओ ॥
भारत माता के 'उर उन्नति,
आशा धीर धराओ ।
श्रीयुत लाट रिपन प्रभुवर की,
जय जय कार मनाओ ॥

छयल छोड़ो गई आधी रात ॥ टेक ॥
घर लौं जात प्रभात होय गो, कत नाहक इठलात ॥
फेरि कहूँ मिलि जैहों तोसों पार पाय कोउ घात ।
बद्रीनाथ जान दै प्यारे, सौ सौ सौहैं खात ॥

बसौ इन नैननि मैं नँद नन्द ॥ टेक ॥
युगल जलज सारँग सोभित कच राहु सहित मुख चन्द ।

चिबुक गुलाब बिम्ब अधराधर, सुख को सरस अमन्द ॥
उर वनमाल मृणाल बाहु युग चाल रसाल गयन्द ।
बद्रीनाथ मिलो अब प्यारे, छाड़ि सकल छल छन्द ॥

जन्म भयो बृजराज आज अलि ॥ टेक ॥
जग जाचक सब शोक नसायो नन्द सबहि सम्पतिहि लुटायो ।
बची एक बछिया छछिआ, नहि दीनी दान दराज ॥
श्री बदरीनारायण कविवर बजत बधाई आज सबैघर ।
चारन, वन्दी-जन की छाई मंगल मई अवाज ॥

परच

आनन्द नन्द घर छायो आज ।
छवि छाय रही बृज में औरै सुखमा सुरपुरहिं लजायो आज ।
सुभ साज जन्म बृजराज आज चहुँ ओर बधाई रही बाज ।
कविवर बद्रीनारायन जू सुर हरखि सुमन बरसायो आज ॥

ए री सखि लखि छवि नागर नट की ॥ टेक ॥
चुभी चितौनि गई गड़ि सोभा, मोर मुकुट कटि पट की ।
वा विलोकि सुधि रहत न आली औघट घाटन घट की ॥
लँगर डगर रोकत नहि मानत गोकुल बंसीवट की ।
बद्रीनाथ आज कुञ्जनि बिच धरि बहियां मोरी झटकी ॥

परच की ठुमरी

उन बिन जिय निकसत तरसि तरसि ॥ टेक ॥
अँधियारी कारी लगत रैन,
डरपत अति जिय पिय बिन छिन छिन ।

पुरवाई पवन बहत झूँकन करि,
विकल देत तन परसि परसि ॥
लाजत घन अचरज देखि नवल,
नहि टूटत धार निसि निसि दिन दिन ।
बिन पिया प्रेमघन जीवन धन,
वर्षा कियो नैननि बरसि बरसि ॥

अजब इन अँखियन की लग जान ॥ टेक ॥
परत दृगन पर दृग ऐंचत जिय, डोर पतङ्ग समान ।
बिन कारन बिन जतन होत ज्यों, चुम्बक लोह मिलान ॥
सुखद जुराफा के सँयोग सम, बिछुरत निकसत प्रान ।
श्री बद्रीनारायन कछु अब हमैं परी पहचान ॥

नहीं वाकी सुध भूलत हाय, कीजै कौन उपाय ॥ टेक ॥
गोरी सुरत मोहनी मूरत चन्द अमन्द लजाय ।
दिखाय लियो मन मेरो मन्द मधुर मुसुक्याय ॥
नासा मोरि कलित जुग भृकुटी सारंग बंक बनाय ।
गई बेधि हिय विसिख अचानक लोचन चपल चलाय ॥
उभरे उरज ललित अंचल मैं नेकहि नेक छिपाय ।
युग भुज मूल सरस सोभा दरसायो करन उठाय ॥
नाभी अमल दिखावन हित, लचकीली लंक लचाय ।
श्री बद्रीनारायन जू को बरबस लियो लुभाय ॥

लगन लागी यह कैसी हाय, रहि रहि जिय घबराय ॥ टेक ॥
मुख मयंक अमि अधर मधुर रस, हित चकोर चित चाय ।
फस्यो फन्द जंजाल जाल अलकावलि में उलझाय ॥

रूप सरस सौरभ आसा मन मत्त मलिन्द लुभाय।
बिध्यो विरह कांटा कसकत सिसकत रोवत अकुलाय॥
नेम प्रेम मृग तृष्णा लौं मन मिथ्या मोह मढ़ाय।
सुख की सेज नहीं सोवत जो याके हाथ बिकाय॥
यदपि लाभ को लेस न यामें, कोऊ रीत लखाय।
श्री बद्रीनारायन यह मन, तौ हूँ नहिँ सकुचाय॥

निपट ये निडर हमारे नैन॥ टेक॥
नित नूतन मुख चन्द चाह में होत चकोर सचैन।
मान हानि, कुल कानि, लोक की लाज लेस भय हैन॥
यार गली मैं ढूँढ़त डोलत मानत ना दिन रैन।
श्री बद्रीनारायन काहू की नहिँ मानत बैन॥

बुरी यह प्रीत निगोड़ी होत॥ टेक॥
दिल दरपन मैं दुरत न दीपक लौं दरसात उदोत।
बद्रीनाथ सरिस प्रेमिन की प्रगट प्रेम की जोत॥

मरम मन की अखियाँ कहि देत॥ टेक॥
दरसत दरपन दुरो यथा रंग होत स्याम वा स्वेत।
ज्यों अंकुर कहि देत बीज गति यदपि छिप्यो विच खेत॥
चित चोरी की करन चलाई ये चट पट करत सचेत।
श्री बद्रीनारायन से बुध जन, लखि कै सब तड़ि लेत॥

पड़ै उन बिन कल हमैं नहीं॥ टेक॥
कुतुबनुमा सम जात उतै चित, रहत यार जितहीं।
सुनि कलरव कल किंकिनि, नूपुर, बाजत जाय वहीं॥

श्रवन सुनत वाही मृदु वैनन वोलै कोऊ कहीं।
श्री वद्रीनारायन लखियत ताको चहै कहीं॥

दिना चांदनी चार-रहे नाहीं वे दिन अव यार ॥ टेक ॥

नहिँ वह रूप, नहीं वह रंगत नहिँ सुखमा संचार।
जानी जोश जवानी ना . जापै जिय जात हजार॥
नहिँ वह चन्द अमन्द वदन की दुति दमकनि दिल्दार।
नहिँ वह गोल कपोल लोलता लसित व्याल से वार॥
नहिँ वह मुरनि कुटिल भृकुटिन मैं मनहुँ सरासन मार।
नहिँ सर चपल चखनि चितवनि चुभि होत हिये जो पार॥
नहिँ वह हाव भाव नख़रे अन्दाज़ नाज के तार।
चोज चोचले नहीं करिश्मे गम जों के व्योहार॥
(नहिँ वह) अरनि मुरनि अधरनि मैं वह मुसकानि करन लाचार।
सिसकारनि पीसनि दन्तनि दुति दाने मनहु अनार॥
नहिँ वह चित चोरनि मन्मोहनि चकित करनि संसार।
नित यारन की लाग डाट में उपजावनि वह खार॥
नहिं वह तुम रहि गये न मेरे इन अखियनि वह प्यार।
नहीं उन्माद न चित उत्साह न मन मेरो रिझवार॥
लाख मदन उन्माद होय वा अमित प्रेम उद्गार।
पै फीकी लागत आवत वृद्धापन को पतझार॥
बिती जवानी की जब जानी विमल वसन्त वहार।
प्रेम सुमुखि युवतिन को तव तो है फजीहताचार॥
वरनन मैं बिभत्स के सोहत कैसहु रस श्रृंगार।
श्री वद्रीनारायन यह गुनि कै हम कसे कनार॥

अरी अलबेली तज यह बान ॥ टेक ॥
उझकि उझकि जनि झाँकि झरोखे अरी कही यह मान।
तन दुति दामिनि सी दरसावति कहर कलह की खान॥
राह चलत युवजन रसिकन तकि तानत भौंह कमान।
मारत नैनन बानन सों साजे सुरमा की सान॥
गोरे भुज पैं श्याम सघन लट छिटकीं छवि छहरान।
लै सम्भार अंचल आली दिखलाय न उरज उठान॥
झुलनी की झूलनि गालनि की गालन पै हलकान।
झनकारनि पाजेबनि की कछु मनहीं मन बतरान॥
गुंजन छवि पुञ्जन मोती नथुनी के करत अयान।
मिसी पान से सोहत अधर मधुर की मुरि मुसुक्यान॥
अलगी अलग रहत नाहीं हौ लखी लाख बिरिपान।
बोअत क्यों विष वृक्ष बीज फल लखियारी है पछतान॥
खिरकी पै हिरकी रहती हौ ऐ उत चढ़ी अटान।
पनघट पै प्रेमी न जान के नूतन मारत प्रान॥
भई अनोखी तुही सुन्दरी जोबन जोर जवान।
अरी रूप गर्वीली सुन मन तैं तजि मान गुमान॥
कोउ सँग सैन बैन कोऊ संग हंस कोउ संग सतरान।
दै छाटा गुर्री घत्ता कहु धांई दै कतरान॥
काहू सिसकारी सुनाय काहू लखाय अँगिरान।
काहू उर उभार मारत कोउ मोहत लंक लचान॥
प्यारी है बारी तू अब ही कुसुम कलीन समान।
बन मत मतवारी मैं वारी मदन मद्य कर पान॥
बड़े बाप की है बेटी तज तू न अरी कुलकान।

कुलवारी नारी सम रहि गहि लाज संक सकुचान॥
गुरुजन को डर डारि नारि तू औढर ढरत ढरान।
ठानत मन पथ अपथ अरी घूमत इत उत इतरान॥
लग जैहै नैना काहू सों तव परिहै तोहि जान।
नहिँ सुरझत कैसहु आली उर अन्तर की उरझान॥
झूठी कथा सखी सच ह्वैहैं सुन लैहैं सतकान।
ह्वै जैहै वेकाम अरी वदनाम वाम नादान॥
कठिन संयोग जानि जिय पै प्रगटत मिलान अरमान।
श्री वद्रीनारायन जू को करत हाय हैरान॥

करत नखरे नित नये नये अरे ए दिलवर प्यारे-आरे
मत तरसा मुझको॥ टेक॥
श्री वद्रीनारायन दिलवर दिखला जा टुक मुख हमको॥

करत नित ही नित नहीं नहीं, नहीं मालूम परत कछु-मन
की तेरे कौन ठान ठानी जानी॥
श्री वद्रीनारायन कह दे-हां हँस कर-हमने मानी॥

अरे नठ खट निरदई दई॥ टेक॥
कुटिल कटीली डारिन हित फूलन गुलाव पठई।
नहिं चन्दन से तरु हित सुमनावलि सरस विकास बनई॥
कर हरचन्द मन्द चन्दै छवि छाजत छीन छई,
दमकावत द्युति दूनी कर छुद्रन तिलसी तरई॥
लोभी मूढन धन दानी वुधजन दीनता भई,
प्रेमी रसिक जनन बियोग सठ सुमुखि सँयोग सई॥

लखि अविवेक अनेक अनीतिन यह जिय जान लई,
समझि न परति प्रेमघन तेरी रचनि आचरज मई ॥

चाल पलटत नित नई नई ॥ टेक ॥
लखियत जामा पाग न पटुका झगा न मिरजई,
घड़ी कोट पतलून बूट टरकी टोपी डटई ॥
कर तलवार तुपक भाला सर कमर कटार कई
अब तो काफ़ी है एक बेत छड़ी वारनिश भई ॥
रही वीरता ऐंड़ सूर सामंतन की इतई,
घँसि साबुन सुरमा मिस्सी बालन सी मेहरई ॥
नहिं वह धर्म्म कर्म्म न ज्ञान, तप, योग जाप जपई,
अब तो वैर कपट छल मिथ्या पातक वेलि वई ॥
तब को कहँ वह तिलक सुमिरनी चौका चक्कर छूत छुई;
अब तो मद्यपान होटल संग भोजन विसकुटई ॥
नारिन की सारी कुर्ती चोली लौं छीन लई,
पहिनावत हैं गौन मेम कर इसकूलन .पठई ॥
चरणामृत तजि के अब तो सब सोडावाटर पियई,
पान खान की रीत नहीं पीयहिं सिगार सबई ॥
लखी जो कल वह आज नहीं ऋतु सम यह बदल गई,
लखहु विचारि प्रेमघन तौ जग गति यह दई दई ॥

रंग बदलत नित नये नये ॥ टेक ॥
कहँ ऋतु शिशिर हिमन्त आय पतझार उजार कये,
फिर बनि विमल वसन्त बाग वन फूलन फल फलये ॥
शरद चन्द द्युति कभौं गिरीषम तापन तन तपये,

कवहूँ वर्षा की वहार घुमड़त घन सघन छये ॥
कवहुँ जवानी रहत युवारी जन पै सिंगार सजये,
पै आवत वृद्धापन के तेहि दिसि न जात चितये ॥
कवहु विपति के जाल परे जन रोवत दीन भये,
हरखित हँसत प्रेमघन पुनितिन सुख सूरज उदये ॥

परच

एरी सखि लखि छवि सुन्दर श्याम की ॥ टेक ॥
नटवर वेष केश सिर सुखमा, मोर मुकुट अभिराम की ॥
कटि तट पट फहरानि छटा, छहरानि हिये वन दाम की ॥
वद्रीनाथ (हिये बिच हूल) हीन दुति होती छन २ जवि काम की॥

हूलत हिय गति अँखीयान की, भूलत नहिं सुधि प्रिय प्रान की ॥
चन्द अमन्द कपोल लोल पर हलकनि कुंडल कानकी ॥
वद्रीनाथ चितै चित चोरत, लट पट चाल सुजान की ॥

जमुनातट लटकन टूटा रे ॥ टेक ॥
सुन्दर निपट कसे कटितट पर चटपट मन धन लूटा रे ॥
बद्रीनाथ विलोकि बनक वन आज लाज डर छूटा रे ॥

परच की ठुमरी

निराली चाल तेरी आली-अनोखी बान आन उर मान
करत नित पाँय परत पिय न सुनत ॥ टेक ॥
श्री बद्री नारायन सो· भौंह चढ़ाय-अनत चलत ॥

सखी री का कहूँ को जानै री-सखी री निश दिन चैन परतनहिं
उन बिन, जिय कसकत-हिय धरकत-कल न परत ।टेक॥
बद्रीनाथ लंगर अति नागर, डगर चलत बतियाँ कहत मनहिं हरत ॥

मेरो तुमहीं चोर चित लीनो लीनो छैल ॥ टेक ॥
श्री बद्रीनारायन बोली बोलत नाहक करत ठिठोली,
गर लग कर दरकाई चोली, बस माफ़ करो चलो छोड़ो गैल ॥

चलो हट जाओ बस छोड़ो डगर ॥ गाली दूँगी बस बोले अगर ॥टेक॥
श्री बदरीनारायन दिलवर जिय जानि अनोखे आप लंगर,
लगिजात गात नहिं कछु डरात, सकुचात न लखि नर नगर बगर ॥

उन धर बहियाँ मोरी झटकी ॥ टेक ॥
गाली गावत रँग बरसावत लहि मग बंसी बटकी ॥
बदरीनाथ तनिक नहिं बिसरत वा नागर नटकी ॥

कान्हरा

ये जग किसने पहचाना है—

जो तू मान मेरा कहना तो देख,
टुक सोच समझ दिल में प्यारे,
न्यारे रहना झगड़े से तो,
मेरा बस यही सिखाना है ॥टेक॥
दुनिया सराय के भीतर,
अनगिन्त मुसाफिर का मेला,
कोइ सोय खोय धन रोवे,
कोइ धन डर बिन सोये झेला ।

पर निर्धन जन हर हाल सुखी,
ना खोना है ना रोना;
सोना आनन्द सेतीं लेकिन,
सबको सबेर उठ जाना है ॥१॥
जग के दरख्त के ऊपर,
घर चिड़ियों का न बसेरा है,
सब देस देस के पच्छी,
अब एक ने एक को घेरा है।
एक एक के डर से डरती है,
बोल बोल एक कडुई तीखी,
एक तीखी बैन सुनाय पथिक,
दिन को हो गई रवाना है ॥२॥
संसार चमन चमकीला,
हैं रंग विरंगी फूल खिले,
कोइ सुभ सुगन्ध सरसावै,
कोई सोभि मंजु मलिन्द मिले।
कोइ काँटे गड़ दुख देत मनुज,
कहीं शीत छाँह कहिं मीठे फल,
पतझाड़ उजाड़ कराती है,
औ कभी बसन्त सुहाना है ॥३॥
श्रीयुत बद्रीनारायन जू,
कवि बरसे जैहैं बुध तव,
जिनको न फिकिर हरलोकी,
औ नहीं आकबत को भी डर।

है चैन रैन दिन दिल भीतर,
है अपन बयन शुचि कवित्त,
संगीत सरस साहित्य सुधा,
पीये एक बन दीवाना है ॥४॥

कलङ्गरा

जोगिनियां बन आईं रे—लाड़ली केहि कारन ॥टेक॥
अंग भभूत गले विच सेल्ही कर लै बीन बजाई रे ॥
गेरुआ रंग गूदरी अंगन, रूप अनङ्ग लजाई रे ॥
मुन्दर करन बदन सुन्दर पर लट काली लटकाई रे ॥
बद्रीनाथ यार द्वारहि अलि भोरहि अलख जगाई रे ॥

काफ़ी की

जाय उन ही संग रहो रहो—यह लखि कुचाल अब सहि न जाय ॥टेक॥
सोई फूल त्यागि तरु डाली, डाली लगत जाय घर माली,
पै मधुकर नाहिन लखाय ॥
श्री बदरीनारायन प्यारे, भये अनेकन यार तुम्हारे,
यह हमसे कैसे लखाय ॥

कहाँ जागे ? सच कहो कहो, आवत भोर भये भागे ॥टेक॥
लटपट पाग नयन अलसाने, अटपट बयन कपट छल छाने,
अञ्जन मधुर अधर लागे ॥
लगत न लाज दिखावत लालन, जावक छाप छुपाये भालन,
गाल पीक लीकन दागे ॥
झूठी सौंहन खात खिस्याने, शिथिल अंग नहि होस ठिकाने,
छतियन हार बिना धागे ॥

दिलवर श्री बदरीनारायन, जाय परो उन ही के पायन,
जिनकी प्रीतनअनुरागे ॥

कलङ्गरा

सैंय्या मोरी सूनी सेजरिया रे—चले जात कित यार ॥टेक॥
हाँ हाँ करत हूँ पैयां परत हूँ, जनि जा प्रेम बजरिया ॥
बद्रीनाथ हिये बिच कसकत; तुमरी तिरछी नजरिया ॥

नीकी अधिक लगैं—सैंय्या तोरी सूही पगरिया रे ॥टेक॥
मुस्कुरात बतरात चितैं चित—लेत नजरिया रे ॥
बद्रीनाथ कभूँ फेरि अइयो—प्यारे हमरी नगरिया रे ॥

उन बिन हो नैनन नींद न आवै ॥टेक॥
कर पाटी पटकत निसि बीतत जब जब मदन सतावै ॥
कोइलिया कूकत दई मारी, पपिहा बोल सुनावै ।
सुधि बद्री नारायन पी की, सजनी हाय दिलावै ॥

बालम भोर भयो अब जागो ॥टेक॥
सारी रैन चैन से खोई, अब तो आलस त्यागो ॥
श्री बद्रीनारायन जू पिय प्यारे, किन गर लागो ॥

सूरत मूरत मैन लखे बिन, नैना न मानैं मोर ॥टेक॥
बरजत हारि गई नहिं मानत जात चले बरजोर ॥
बद्रीनाथ यार दिल जानी मानत नाहिँ निहोर ॥

फिरत हो निपट बने बिगरैल, छुटे छबीले छैल ॥टेक॥
औरन के संग सजे धजे नित, करत बाग की सैल ॥
श्री बदरीनारायन लखि कतरात हमारी गैल ॥

पद

कौने टेरत राधा रानी ॥
आई दही वेचवे तू इत, काके हाथ विकानी ॥
को मोहन मोहन मन वारी तेरो वीर अयानी ।
चलि घर लौटि लाज कित वेचै क्यों खोवै कुल कानी ॥
काके प्रेम प्रेमघन माती वेगि वताय वखानी ॥

जसुदा मनही मन मुसुक्यानी ।
सुनत उरहनो राधा के मुख, मुग्ध मनोहर बानी ॥
चहत खुटाई हरि की भाखनि पै नहि सकत वखानी ।
हियो सराहत जाहि सहस मुख ताही सों सतरानी ॥
कहत तिहारो मोहन टोनो सीखो सो नंदरानी ।
चितवत चितहि अचेत देत करि रंचक भौंहन तानी ॥
हाट वाट वन कुंजनि दौरत देखे नारि विरानी ।
हँसि हँसि रार मचाय लुभावत रोकै मग हठ ठानी ॥
नहि बसाय बातैं कछु बातैं करत सबै मन मानी ।
हाय समाय गयो सो हिय, का कीजै परत न जानी ॥
याको आप उपाय कोऊ वतराथो वेगि सयानी ।
भरी प्रेम घनश्याम प्रेमघन वकत खरी अनखानी ॥

जसुदा फिर पीछैं पछतानी ।
श्यामसुन्दर ऊखल मैं वांधत, तव न तनक सकुचानी ॥
कजरारे मृग नैननि अँसुवा लखि छतिया थहरानी ॥
नैन नीर कन छीर पयोधर मुख सो कढ़त न वानी ।
गद्गद् कंठ कही तू कारो लंगराई की खानी ॥

सुनि डरपे से दामोदर लै ऊखल भजि जानी।
तोरे तरुवर जुगल जाय जब लखि लीला अकुलानी॥
दौरी जाय ललकि उर लागी भागि सराहि सयानी।
मुख चूमति भरि प्रेम प्रेमघन पुनि पुनि संक सकानी॥

पद

ऊधो कहा कही उन कैसे!
हा हा फेरि समुझि समुझावो रहे जहां जित जैसे॥
जेहि विधि जो जाके हित भाख्यो उतनो ही बस वैसे।
बरसावत बतियन को रस ज्यों वे बरसावहु कैसे॥
भरी प्रेम घनश्याम प्रेमघन रटत राधिका ऐसे॥

ऊधो बात कहो कछु नीकी।
सुन्दर श्याम मदन मन मोहन माधव प्यारे पी की॥
सानि सानि जनि ज्ञान मिलावहु भाखो उनके जी की।
हम प्रेमिन तजि प्रेम नेम नहिं भावत बतियां फीकी॥
बरसाओ रस-प्रेम प्रेमघन और लगैं सब फीकी॥

बिसारो बातैं बीर बिरानी।
कैसो हूँ वह कोऊ कहूँ को तू केहि सोच समानी॥
जात कहूँ आयो कितहूँ तै का करिहै तू जानी।
कुलवारी बारिन की रहनि न जानै निपट अयानी॥
लगत कलंक संक झूठे हू लेखि लखनि सुनि बानी।
निपट नकारो प्रेम प्रेमघन जामैं सरवस हानी॥

जय जय अभिराम चरित राम रूप धारी।
जय असरन सरन हरन भक्ति भीर भारी॥

मुनि मख राखे सुवाहु आदिक भट मारी।
ताड़का सँहारि सहज गौतम तिय तारी॥
तोरि धनुप ब्याहि जनक राज की दुलारी।
सिर धरि गुरु सासन तजि राज बन विहारी॥
खरदूषण त्रिशिर कुंभकरन खल संहारी।
राछस बहु कोटिन संग लंकपति पछारी॥
सिय संग कियो प्रजा प्रेमघन सुखारी॥

जय रघुनंदन राम-चरित अभिराम काम पर भव भय हारी।
केवल सदगुन पुंज मनुज तनु धरि पवित्र लीला विस्तारी॥
दरसायो आदरस नृपति जग जन हित सिच्छा सुभग प्रचारी।
परजन मनरंजन हित लागे स्वारथ सकल आप तजि भारी॥
जय जय रघुकुल कुमुद कलाधर राम रूप हरि आरति हारी।
दया वारि बरसाय प्रेमघन आप अमित भू-ताप निवारी॥
जय आनंद कंद जग वंदन वासदेव वृज विपिन विहारी।
जय जय व्यापक ब्रह्म सनातन तन धरि नर लीला विस्तारी॥
निराकार साकार सगुन निरगुन मय रूप अनूप सँवारी।
जय जोगेश अशेप शक्तिधर परमातम् परतच्छ मुरारी॥
कियो अमानुस काज अनेकन कालिय मंथन गिरवर धारी।
रहि असंग भोगे सुख भोगनि जग मन उपजावत भ्रम भारी॥
वेद सार विज्ञान खानि गीता उपदेस्यो समर मँझारी।
विश्वरूप अरजुनहिं दिखायो संशय सहित मोह तम टारी॥
छिपे आप क्रूरन सों करि क्रीड़ा बहु विधि मनमोहन वारी।
पूरन कियो आस भक्तन की जथा जोग दुख दोख विसारी॥

सवहिं दसा में राखिये करस निज सुभाव अच्युत अविकारी।
नासे असुर खलनि दल दलि मलि कियो साधु जन सहज सुखारी॥
विधि भ्रम गर्व इन्द्र हरि दावानल अँचये खल कंस पछारी।
मान सुदामा प्रन भीषम संग राखे लाज पांडु-सुत-नारी॥

जय गोविन्द गोकुलेश मंथन अहि काली।
जय जय नँद नंदन जगवंदन बनमाली॥
निन्दत सत चंद बदन लाजत लखि जाहि मदन।
नवल नील नीरद तन शोभा शुभ शाली॥
बृन्दाबन सघन कुंज विकसित नव सुमन पुंज।
कालिन्दी पुलिन बसत गुंजत भ्रमराली॥
सरस तान गान संग बाजत बीना मृदंग।
निरतत मिलि युवती जन मन मोहन वाली॥
लीला नित बहु प्रकार करत हरत भव विकार।
बरसहु निज प्रेम प्रेमघन मन प्रन पाली॥

कौन वह मुरली मधुर बजैया ॥टेक॥
परत कान जाकी धुनि व्याकुल करत प्रान रे दैया॥
रटत नाम जनु मेरोई सों मन मनोज उपजैया।
कदम निकुंजन बीच प्रेमघन प्रेम बुन्द बरसैया॥

कौन तू हिये मन मोहन वारे ॥टेक॥
निवसत कहां किसोर कौन को किन नैनन के तारे॥
चन्द अमन्द वदन पर प्यारे लहरावत कच कारे॥
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल केसर खौर सुधारे॥
कटि पट पीत लसत मुरली कर बनमाला गरधारे॥

सुभग सांवरी सूरत सलोनी रस सिँगार सिंगारे ॥
लोचन चंचल जुगल नचावत मतवारे रतनारे ॥
जात कहां तू मन्द हँसनि सों मूठ मोहनी मारे ॥
दया वारि वरसाय प्रेमघन नेक निकट तब वारे ॥

दीपावली के पद

खेलत पिय के सँग मिलि प्यारी ॥टेक॥
जुरे जुआ के जुद्ध आज जाहिर जनु जुगल जुआरी।
रसिक रूप रस बस ह्वै मन सों साँचहु सरवस हारी ॥
जीते जदपि प्रेम मद माते मानत हार मुरारी।
श्री वदरी नारायन मिलि दोऊ विलसत रैन दिवारी ॥

देखे ए दोउ अजव जुआरी ॥टेक॥
पासा पास लिए खरकावत चहत न फेंकन प्यारी।
याही मिलि ललचावत चाखत रूप सुधा रस नारी ॥
धरहु धरहु किन दाव और कहि विहँस रही सुकुमारी।
खेलत खेल खेलावत मारत मानहुँ मदन कटारी ॥
मन हरि धन हारत पै नाहीं मानत हार विहारी।
वढ़ि २ दांव धरत हरखत मदमाते प्रेम मुरारी ॥
हानि लाभ नहिँ हार जीति की जागत जानि दिवारी।
श्री वदरी नारायन श्री राधा माधव गिरधारी ॥

खेलत जुआ जुगल नैनन सों ॥टेक॥
मारि लेत बाजी मन को त्यों तनक ताकि सैनन सों।
हारि जात हिय हँसत तऊ कहि सकत न कछु वैनन सों ॥

मिली मार यह होत परस्पर चाहि रहे चैनन सों।
श्री वदरी नारायन जू दोऊ विँधे वान मैनन सों॥

देखो दीपति दीप दिंवारी॥ टेक॥
कातिक कृष्ण कुहू निसि मैं यह लागत कैसी प्यारी।
खेलत जुआ जुवन जन जुवतिन संग सव सुरत विसारी॥
अम्वर अमल विमल थल तल जगि जगमत जोति उँजारी।
स्वच्छ सदन साजे सज्जित ह्वै सोहत नर औ नारी॥
मिलि मित्रन सव घूमत इत उत छाई द्यूत खुमारी।
छाई छवि वीथी वजार में भई भीर वहु भारी॥
मोल खिलौना मोदक लै कै रहे वाल किलकारी।
श्री वदरी नारायन जाचक जन जाचत त्यौहारी॥

देखत दीपावली दिवारी॥ टेक॥
दीपति दीपक दवी वदन दुति दूनी देख तिहारी।
मनहु मयङ्क मध्य उरगन लौं उई आय तू प्यारी॥
आज अजव जोवन जौहर की जागत जोति उंजारी।
श्री वदरी नारायन रीझे वातैं करत मुरारी॥

बनरा, यशन, बधाई

बनरा

धावो धावो वनरा की छवि आओ,
देख लोरी जानि मंगल नयन लाहु लेहु तृन तोरी॥ टेक॥
कवि वदरी नारायन जू वनत शुभ वैन
कहूँ ऐसी माधुरी मूरत होनो नहि दैन,
अवलोकि अति आनंद अलीगन लहो री॥

धावो धावो संग की सब सहेलरियां—
आवो आवो पकरि जकरि बनवारी लाओ ॥ टेक ॥
बरसाओ रंग सहित उमङ्ग एक सङ्ग,
सरसाओ ताल जाल देत चङ्ग औ मृदङ्ग,
गाली आली बनमाली को सबन गावो गावो ॥
पिय बदरी नारायन कविवर ललकारि कर,
धर नैन सैनन के बान मारि मारि
लाल भाल मैं गुलाल माल पै लगाओ ॥

मंगल मैं मंगल साज आज ॥ टेक ॥
सुभ दिन गुनि गहि उछाह अनुचर,
प्रमुदित जिमि लहि बसन्त मधुकर;
जय जय धुनि कोकिल कल समाज ॥
लै खिलत सकल मुख भनित दान
जिमि द्रुम नव दल कुसुमित सुहान,
तिमि लखियत याचक गन समाज ॥
श्री बदरी नारायन द्विजवर, जिय जानि सुभग
सोभित औसर यह देत बधाई काशिराज ॥

बनरा बराती

राग शाहाना

नीकी बनक बन आया बनरा। सबके मनहिँ लुभाया बनरा॥
माथे मौर मुख बेले का सहरा, चितवत चितहिं चुराया बनरा॥
मनहु तरैय्यन मोहि आज, पूरन चन्द बनाया बनरा॥

भूषन मानिक वसन केसरिया तन सुभ साज सजाया वनरा ॥
मनहुँ प्रेमघन प्रेम वनी के नख सिख सुरंग नहाया वनरा ॥

वनरा

आज साजि सजि आया वनरा लाड़े लावे ॥ टेक ॥
सिर पर सहरा मोतियों का वे निरखत नैन लुभाया ॥
वद्रीनाथ देखि शोभा यह मन मन मयन लजाया ॥

(एजी) चहुँ ओर वजत वधैय्या, नृप लाडिले घर जाय ॥टेक॥
वद्रीनारायन द्विजवर, मंगल मचो घर घर,
छवि सौगुनी नगर की, वन ऋतुपति आये ॥

वनरा घराती

वनरा का ससि आया वनरा, सव के चखनि चकोर वनाया ॥
जामा सुभग सियो दरजी तुव पाग रुचिर रँगरेज सुहावा।
सुखमा सीस तिहारी माली सजि सेहरा अति अधिक वढ़ाया ॥
गर लगाय माला तू अपनी करि टोना जनु चितहि चुराया।
चिरजीओ सौ वरस प्रेमघन वरसि वरसि रस हिय हुलसाया ॥

सुहाती गाली

गारी देन जोग नहिं कवहूँ समझि परौ तुम प्यारे।
सव सद गुन सों भरे पुरे हौ तुम सारे के सारे ॥
लहियत नहिं उपमा सुखमा तुव घर की वात बिचारे।
सव दिन तुम सत्कारयो सव विधि अति उदारता धारे ॥
झूठ नाहिं रतिहू जाचत जे जाय आय के द्वारे।
सो सौ मग सत्कार सदा लहि पीटत सुजस नगारे ॥

गिने विवुध सौ जन में तुम वन्दित जाहु विठारे।
सुखदायक गुनि वन सदा प्रेमघन रस बरसावन वारे॥

रुलाती गाली

का गुन दीजै कौन तुम्हैं गाली।
जग अपमान सहत वहु दिन जिन, जिय न ग्लानि कछु धारी।
कियो कलंकित आर्य्य वंश तुम वनि हिन्दू व्यभिचारी॥
कहलाये काले कापुरुष, दास वनि सर्वस हारी॥
पितामही भारती तुमारी तुम सो समुझि निकारी।
सात सिन्धु तरि म्लेच्छन के घर, जाय वसी करि यारी॥
श्री सम्पति हरि लियो विधर्मिन जे तुमारि महतारी।
चची चातुरी शक्ति भीरता तुव तिय संग सिधारी॥
भोगे तुव भगनी वीरता, वड़ाई प्रभुता प्यारी।
फोरि फूट कुटनी के वल, वहु वार यवन दल भारी॥
धर्म प्रथा नानी मर्यादा भाभी तुव डर डारी।
वारि नारि वनि घर २ नाची, अञ्चल अलक उघारी॥
फूफी ईशभक्ति भावी तव देस प्रीति मतवारी।
वनि तजि तुमै नीच रति राची करि तिन सवन सुखारी॥
समुझ निलज्ज नपुंसक तुम कहँ निपट अपङ्ग अनारी।
तुव पत्नी स्वाधीनता सरकि पर घर पायँ पसारी॥
सुता सभ्यता पोती कीरति नातिनि नीति दुलारी।
गई कहां नहिं जान परै कछु तजि तुव घर कर झारी॥
कुल करतूत बुरी अपनी सुनि, सांचे सांचे ढारी।
दोप प्रेमघन पैं न देहु पिय विन कछु लहे लवारी॥

हँसाती गाली ज्योनार

तुम जेंवहु जू जेवनार ! हमारे पाहुने ।
खाये से हमरे घर के तुम होवहु परम सुखार ।
वड़े मुँगौरे सेव समोसे पूरौ मुख के द्वार ॥
वे टिकिया पापर तुम रीझौ कैसे कौन प्रकार ।
ताही लगि रस चखो सलोनो निज रुचि के अनुसार ॥
चाटहु चटनी जो रुचि राचै चाखहु सभुग अँचार ।
जवहिन तुम नमकीन छोड़िहौ लै रस सव रस वार ॥
पूरी गरम कचौरी भाजी खस्ता भरि भरि थार ।
लेहु न मिरचा चीखि आपने रुचि सँग साग सुधार ॥
मोहन भोग कियो खुरमा हित गुप चुप करि प्यार ।
तुम लगि निज कुल भावती मिठाई न परस्यो यहि वार ॥
वहु विधि गोरस मधुर मुरव्वे मेवन की भरमार ।
लेहु स्वाद सव सहित प्रेमघन के सारे सरदार ॥

समधिन

सिन्ध भैरवी

सुनिये समधिन सुमखि सयानी ।
आवहु दौरि देहु दरसन जनि प्यारी फिरहु लुकानी ॥
फैली सुभग सरस कीरति तुव, सुन सवहिन सुखदानी ।
आये हम सव करैं निवेदन, यहै जोरि जुग पानी ॥
जनि संकोच करहु अव सुन्दरि, लेहु सुयश मनमानी ।
दया वारि वरसाय प्रेमघन, वनहु बिनोद वढ़ानी ॥
सम समधी तुव सदन द्वार यह आनि भीड़ मड़रानी ।
पुरवहु काम सवन के वेगहि उर उदारता आनी ॥

उर्दू बिन्दु

उर्दू विन्दु

ग़ज़लें

कूचये दिलदार से बादे सदा आने लगी।
ज़ुल्फ मुश्की रुख प बल खा खा के लहराने लगी ॥ टेक ॥
देख कर दर पर खड़ा मुझ नातवां को वो परी।
खींच कर तेग़े अदा बेतर्ह झुँझलाने लगी ॥
ज़ुल्फ़ मुश्की मार की बढ़ बढ़ के अब तो पैर तक।
नातवां नाकाम उशाकों को उलझाने लगी ॥
देख कर क़ातिल को आते हाथ में खंजर लिए।
ख़ौफ से मरकत मेरी बेतर्ह थर्राने लगी ॥
हो नहीं सकती गुज़र मेहफिल में अब तो आप के।
बदज़ुबानी गालियाँ साहेब ये सुनवाने लगी ॥
देख कर चश्मे ग़िज़ाला यार की बेताब हो।
बीच गुलशन के कली नरगिस की मुरझाने लगी ॥
जा रहा है सैर गुलशन के लिए वो सर्वकद।
शोखिये पाज़ेब की यां तक सदा आने लगी ॥
चश्म गिरियां की झड़ी मय की लगाये देख कर।
हँस के बिजली वो परी पैकर भी कड़काने लगी ॥

अपने आशिक पर सितमगर रहम करना चाहिए।
देख कर एक बारगी उससे न फिरना चाहिए ॥

काटना लाखों गलों का रोज यह अच्छा नहीं।
आकवत के रोज़ को कुछ दिल में डरना चाहिए॥
जां निकलती है ग़मे फुरकत में तेरे ऐ सनम।
अब भी तो बेताव दिल को ताव देना चाहिए॥
रोज़ हिज़रां की नहीं होती है उमरों में भी शाम।
अभी कुछ दिन और तुमको सब्र करना चाहिए॥
बोसये लाले लबे शीरीं की क्या उम्मेद है।
अब तुझे फरहाद थोड़ा ज़हर चखना चाहिए॥
सांस का आना हुआ दुशवार फुरकत से तेरे।
अब तो मिसले मोम दिल को नर्म करना चाहिए॥
अर्ज सुन बदरीनरायन को वहीं बोला वो शोख।
तुमको अपने दिल से नाउम्मीद होना चाहिए॥

मेरी जान ले क्या नफ़ा पाइएगा।
छुड़ाकर ए दामन किधर जाइयेगा॥
जो कहता हूँ अब रहम हो जाय मुझ पर।
तो कहते हैं फिर आप आजाइएगा॥
किया कत्ल तेगे निग़ह से जो मुझ को।
कदमरंजा मरकद पर फरमाइएगा॥
इनायत करो हुस्न के जोश में वरना।
फिर हाथ मल मल के पछताइयेगा॥
वो हँसते हैं सुनकर जो कहता हूँ उनसे।
जलाकर मुझे आप क्या पाइएगा॥
निकलवा के छोड़ेंगे बदरीनरायन।
अगर आप मेरे तरफ आइएगा॥

जो तेगे निगह वो चढाए हुए हैं,
यहाँ हम भी गरदन झुकाए हुए हैं।
इन्हीं शोला रूओं ने शेखी सितम से,
जलों के जले दिल जलाये हुए हैं।
नये फूल की मुझको हाजत नहीं है,
यहां रंग अपना जमाए हुए हैं।
यही हजरते दिल के हैं लेनेवाले,
जो भोली सी सूरत वनाए हुए हैं।
नहीं दाग़ मिस्सी का लाले लवों पर;
ये याकूत में नीलम जड़ाए हुए हैं।
डरूंगा न मैं घूरने से सितमग़र,
हसीनों से आखें लड़ाए हुए हैं।
अजल भी नहीं आती है खौफ़े से यां,
जो वो दान उलफत लगाये हुए हैं।
जिग़र पर है कारी ज़खम मुश्फ़िके मन,
निगह तीर वो जो चढाये हुए हैं।
धरे दामे गेसू में दाना ए तिल का,
वहुत तायरे दिल फँसाए हुए हैं।
सताओ भली तर्ह वदरीनरायन,
वहुत तुम से आराम पाए हुए हैं।

दिल को तो लूट लिया करते हैं,
मुझको वेचैन किया करते हैं।
क्या तरीका यह निकाला है नया,
जान दे दे के लिया करते हैं।

शाम से सुवह शवो रोज़ मुदाम,
हम ही धागें में रहा करते हैं।
हम भी उम्मीद में तसकीं करके,
जिन्दगी अपनी फना करते हैं।
खा के ग़म पीके जिगर के खूँ को
............ख्वाब कहा करते हैं।
बादये वस्ल की उम्मेद में हम,
शाम से सुबह जपा करते हैं।
शिकवये कत्ल किया जब मैंने;
हँस के बोले कि वजा करते हैं।
झिडकियां खा के याद की ऐ अब्र,
गालियाँ रोज सुना करते हैं।

बगरजे कत्ल गर शमशीर अवरूवी उठाते हैं,
इसी उम्मीद में हम भी एलो गरदन झुकाते हैं।
हजारों जां वलव होते उसी दम कूये जाना में,
अदा से जब कभी खिड़की का वो परदा हटाते हैं।
हिनाई हाथ रखकर दीदये तरपर मेरे बोले,
तमाशा देखिए हम आग पानी में लगाते हैं।
लिए सागर मये गुलगूँ वो साकी यों लगा कहने,
कि जो दे नक़द जां हमको उसे यह मय पिलाते हैं।
मसीहा की वहुत तारीफ सुन कर यार यों बोला
हजारों जां वलव हम एक वोसे में जिलाते हैं।
सुना कर आशिकों को कल वो कातिल यों लगा कहने,
कलेजा थाम्ह लो लोगो अदा हम आजमाते हैं।

नहीं आसां है आना अब्र इस बागे मोहब्बत में,
जहां दोनों से जाते हैं वही इस जा पर आते हैं।

ऐ सनम तूने अगर आँख लड़ाई होती,
रूह क़ालिब से उसी दम ही जुदाई होती।
तू ने गुस्से से अगर आँख दिखाई होती,
रूह क़ालिब से उसी दम निकल आई होती।
हफ़्त इक़लीम के शाही का न ख्वाहां होता,
उसके कूचे की मयस्सर जो गदाई होती,
दिले मजनू तो कभी होता न लैली का असीर,
रश्के लैली जो कहीं तू नजर आई होती।
लेता फिर नाम न फ़रहाद कभी शीरी का,
चांद सी तुमने जो सूरत ये दिखाई होती।
गो कि फूला न फला नख्ले तमन्ना फिर भी,
उसके गुलज़ार तक अपनी जो रसाई होती।
तेग़े अबरू जो कहीं होती न तेरी खमदार,
तो न मैं शौक से गर्दन ये झुकाई होती।
फिर तो इस पेच में पड़ता न कभी मैं ऐ अब्र,
जुल्फ पुरपेंच से अबकी जो रिहाई होती।

तेरे इश्क में हमने दिल को जलाया,
कसम सर की तेरे मजा कुछ न पाया ।।टेक।।
नजर खार की शक्ल आते हैं सब गुल,
इन आखों में जब से तू आकर समाया।
करूं शुक्र अल्लाह का या तुम्हारा,
मेरे भाग जागे जो तू आज आया।

हुआ ऐ असर आहोनालों में मेरे,
पकड़ कर तुझे चङ्ग सी खींच लाया।
किसी को भला मकदूरत कब ये होगी,
हमीं थे कि जो नाज तेरा उठाया।
असर हो न क्यों दिल में दिल से जो चाहे,
मसल सच है जो उसको ढूँढा वो पाया।
शहादत की हसरत ने है सर झुकाया,
जो शोखी से शमशीर तुमने उठाया।
तसउवर ने तेरे मेरे दिल से प्यारे,
हमी की है वल्लाह हम से भुलाया।
शकरकन्द वो अंगूर दिल से भुलाया,
मजा लाले लब का तेरे जिसने पाया।
दोआ मुद्दतों मांगी है मसजिदों में,
तब उस बुत को हमने शिवाले में पाया।
झुका बस लिया हार कर अपनी गरदन,
तेरे वसूफ़ में जो क़लम को उठाया।
खुली मह मुनवर की क्या साफ़ कलई,
शबे माह में बाम पर जो तू आया।
नहीं सिर्फ मुझ पर ही तेरी जफाएँ,
हजारों का जी हाय तूने जलाया।
चमन में है बरसात की आमद आमद,
अहा आसमां पर सियः अब्र छाया।
मचाया है मोरों ने क्या शोरे महशर,
पपीहों ने क्या पुर गजब रट लगाया।

वरुसे वरक़ नाज़ से क्या चमक कर,
है बादल के आंचल में मूं को छिपाया।
तुझे शेख जिसने वनाया है मोमिन,
हमें भी है हिन्दू उसी ने वनाया।
नज़र तूर पर जो कि मूंसा को आया,
वही नूर हम को वुतों ने दिखाया।
परीशां हो क्यों अब्र वे खुद भला तुम,
कहो किस सितमगर से है दिल लगाया।

पड़े न वल वाल सी कमर पर,
समझ के चलिए ए चाल क्या है।
नजर के गड़ने से साफ चेहरे,
पै यार तेरे जवाल क्या है।
वहुत न इतराइये खुदा के लिए,
अभी सिन वो साल क्या है।
ए तेज कदमी अवस है साहव,
समझ के चलिए ये चाल क्या है।
ए फरशे गुल है जनावे आली,
वताइए फिर खयाल क्या है।
गजव है अटखेलियों से आना,
सँभल के चलिए ए चाल क्या है।
मचाये महेशर ये चुलवुलाहट,
कि चाल तेरी मोहाल क्या है।
जिलाओ मुर्दों को ठोकरों से,
जो तुम मसीहा कमाल क्या है।

अजीब दाना धरे है सइयाद,
गाल अनवर पर खाल क्या है।
फँसा लिया तायरे दिल अपना,
ए वाल जंजाल जाल क्या है।
पहाड़ ढाहैं हमारी आहैं,
जलायें जंगल जमी हिलाएं।
जो सीनये चर्ख चीर डालैं,
हमारे नाले कमाल क्या है।
जो इश्क सादिक हो आदमी को,
रहै जो साबित कदम तो फिर वह।
मिलै खुदा शक नहीं कुछ इसमें,
विसाल इन्सा मुहाल क्या है।
मजा है फुरकत में जो अजीजो,
है जिसमें मिलने की रोज चाहत।
भला हो जिसमें जुदाई आखिर,
बताओ लुफ़्ते विसाल क्या है।
री सा क़द वो चांद सी सूरत,
अदा वो अन्दाज वो हूर गिलमां।
ूं न क्या तुमसे ऐ अजीजो,
मेरा वो जादू जमाल क्या है।
बगैर खुशबू के गुल हैं जैसे,
बिला मुरव्वत है चश्मे नरगिस।
उसी तरह से बगैर सीरत,
हुआ जो हुस्नो जमाल क्या है।

अगर हो मुमकिन जो तुझसे नेकी,
बजा है तेरे जहां में जीना।
वो गर न जो एक दिन है मरना,
हिफ़ाजते गंजी माल क्या है।
गदाई तेरी गली की हमने किया है,
मुद्दत तक ऐ सितमगर।
मगर न पूछा कभी ए तूने,
कि हाय तेरा सवाल क्या है।
सन शवेतार हैं ऐ जुल्फैं,
शफ़क सा है मांग में ए सिन्दू।
ग्वया सितारे हैं सब ए दन्दां,
जवीन मिसले हिलाल क्या है।
गुलों को शरमिन्दगी है रंगत से,
मेह मुनवर चमक से नादिम।
अजीव हैरान आइना है,
ए साफ़ सफाफ गाल क्या है।

गिला वो जारी हमारी सुनकर,
चढ़ा के तेवर वह शोक बोला।
ए झूठे आंसू बहाइए मत,
बताइए साफ हाल क्या है।
लखूकहां दिल बगैर कीमत हैं,
रोज लेते न सिर्फ तेरा।

नहीं जो मंजूर फेर देंगे फिर,
इसमें जाये सवाल क्या है।
दिया है जब नक्त दिल तुम्हें तब,
लिया है बोसा जनाबआली।
बराये इनसाफ आके कहिए,
कि इसमें जाए मलाल क्या है।
उदास बैठे हो सर्वजानू,
नजर चुराते हो हाय हम से।
रखाये हो दिल कहां बताओ,
जनाबे आली हवाल क्या है।
अगर वे हों फरहादी कैसमजनू,
वो हमको उस्ताद करके मानै।
रक़ीब बुजदिल मेरे मुक़ाबिल,
सहे जफायें मजाल क्या है।
किसी शहे हुस्न महेलक़ा ने,
किया तुझे क्या असीर उल्फत।
उदास हो क्यों बतावो बदरी,
नरायन अपनी कि हाल क्या है।
खराब ख़िस्ता जलील रुसवा,
मतूंब वेदीं कहै जहाँ गर।
मगर जो हैं मस्ते जामे उल्फत,
उन्हें फिर इसका खयाल क्या है।

रेख़ता

अजब दिलरुबा नंद फ़रज़न्द जू है।
इक आलम को जिसकी पड़ी जुस्तजू है॥
तेरी ख़ाके पा से रहे मुझको उलफ़त,
यही दिल की हसरत यही आरज़ू है।
सिफ़त का तेरी किस तरह से बयां हो,
कब इस्में किसै ताक़ते गुफ्तगू है॥
तुझे भूल कर ग़ैर को जिसने चाहा,
उसी की मिली ख़ाक में आबरू है॥
जहाँ की हवा वा हवस में जो घूमा,
उड़ाता फिरा ख़ाक वह कू ब कू है॥
ज़मीनो फ़लक काह से कोह में भी,
जो देखा तो हर जाय मौजूद तू है॥
जिधर ग़ौर करता हूँ होता हूँ हैरां,
अजब तेरी सनअत अयां चार सू है॥
कहां रुतबये यूसुफ़ो हूरो गिलमां,
शहनशाह ख़ूबां फ़क़त एक तू है॥
गिलो आब से आब गुल कब ये पाते,
ये तेरी ही रंगत ये तेरी ही बू है।
महो मेहर अनवर सितारों में प्यारी,
तुम्हारी ही जल्वागिरी चार सू है।
तुही जल्वागर दैर दिल में है सब के।
अबस सब यह रोज़ा नमाज़ो वज़ू है॥

बरसता रहे अब्र रहमत तुम्हारा।
यही "अब्र" की एक ही आरज़ू है॥

किया इश्क़ ज़ुल्फ़े दुतां चाहता है।
बला क्यों यह सर पै लिया चाहता है॥
हुआ दिल यह तुझ पर फ़िदा चाहता है।
सरासर ख़ता बस किया चाहता है॥
कहां तू उसे वेवफ़ा चाहता है।
अरे दिल तू यह क्या किया चाहता है॥
नक़ाब उसके रुख़ से हटा चाहता है।
ख़िज़िल माह कामिल हुआ चाहता है॥
व फ़ज़ले ख़ुदा अब मेरे दौर दिल में।
किया घर व बुत महेलक़ा चाहता है॥
हँसा गुल जो शाख़े शजर में तो समझो।
कि अब यह ज़मीं पर गिरा चाहता है॥
बिछा गाल के तिल पै है दाम गेसू।
मेरा तायरे दिल फँसा चाहता है॥
यह शाने ख़ुदा है कि वह बुत भी बोला।
मेरा बख़्ते ख़ुफ़्ता जगा चाहता है॥
मेरे लग के सीने से वह हँस के बोला।
बता तू क्या इसके सिवा चाहता है॥
सुना रोज़ करते थे जिसकी कहानी।
वही आज मुझसे मिला चाहता है॥
ज़रा इक नज़र देख दे तू इधर भी।
यही दिल किया इल्तिजा चाहता है॥

बरसता रहे "अब्र" वाराने रहमत।
यही अब्र देने दुआ चाहता है॥

बन में वो नंद नंदन बंसी बजा रहा है।
मन में व्यथा मदन की मेरे जगा रहा है॥
जब से मनोज मोहन मन में समा रहा है।
जिस ओर देखती हूँ वह मुसकुरा रहा है॥
भौंहें मरोड़ कर मन मेरा मरोड़ता है।
नैनों की सैन से वस वेबस बना रहा है॥
सिर मोर मुकुट सोहै कटि पीत पट विराजै।
गुञ्जावतंस हिय में वनमाल भा रहा है॥
कैसी करूं सखी अब कल से नहीं कल आती
मन मोह कर वो मोहन मुझको भुला रहा है॥

रेखता

हमने तुमको कैसा जाना, तुमने हमको ऐसा माना ॥टेक॥
सैरों को गैरों सँग जाना, पास मेरे हरगिज़ नहिं आना,
देख दूर ही से कतराना; ए तोतेचश्मी जतलाना॥
जहरीले नखरे बतलाना, सौ २ फिकरे लाख बहाना,
दम्बाज़ी ही में टरकाना; ग़रज़ हमैं हर तरह सताना॥
रोज़ नई सज धज दिखलाना, चपल चखन चित चितै चुराना,
भौंह कमान तान सतराना; लचक निज़ाकत से बल खाना॥
श्रीवदरी नारायन मत जाना, सीखा दिल का खूब जलाना,
पास मुहब्बत जरा न लाना, पहिने वेरहमी का वाना॥

ए दिलवर दिल कर दीवाना। अब कैसा घाई बतलाना ॥टेक॥
पहिले मन्द मन्द मुसुक्याना, अजीब भोलापन दिखलाना,
मीठी बातों में बहलाना; फन्द फिरेबों में फुसलाना।
बाकी बनक दिखाय लुभाना, प्यारी सूरत पर ललचाना,
गालों में जुल्फ़ैं छितराना, काले नागों से डसवाना॥
एक बोल पर सौ बल खाना, एक बोसे पर लाख बहाना,
भौंह कमान तान सतराना; नाक सकोड़ मुकड़ मुड़ जाना॥
श्री बदरीनारायन माना, हम में ये ढँग माशूक़ाना,
पर इतना भी हाय सताना, ख़ौफ़े खुदा दिल में नहिं ल्याना॥

लावनी

क्या सोहै सीस पर तेरे दुपट्टा धानी,
मन मेरा मस्त हो गया दिल जानी॥
मुख पर क्या सोहैं छुटी लटैं लटकाली,
आशिकों के दिल डसने को नागिन पाली,
चमकाली चौंकाली आली घुंघुराली,
हैं कहीं डंक बिच्छू से जहराली,
देती हैं पेंच ये आपस में उलझानी,
मन मेरा मस्त हो⋯⋯दिलजानी॥

दोनों यह चश्म नरगिसी तेरे मतवारे,
मृग मीन खञ्ज अरविन्द लजाने हारे,
क्या सजे संग सुरमे के ये रतारे,
दिल दीवाना करते हैं नैन तुमारे,

चुभ जाती चितवन यह प्यारी अलसानी,
मन मेरा मस्त हो······दिलजानी ॥

क्या कहूँ चाँद से मुखड़े की छवि तेरे,
पाता हूँ नहीं मिसाल जगत में हेरे,
गुल दोपहरी लखि मधुर अधर मुरझेरे,
दाने अनार दाँतों को रे,
खुश रंग अंग दुति दामिन देखि लजानी,
मन मेरा मस्त हो······दिलजानी ॥

शोभा सब संचि विरंचि मनोहरताई,
साँचे में ढाल ये कारीगरी दिखाई,
एक अचरज की पुतली सी तुम्हें बनाई,
चातुरी आपनी लाज लपेट छिपाई,
निरखत बद्री नारायन से सैलानी,
मन मेरा मस्त हो······दिलजानी ॥

लावनी

किस गोकुल के दिलवर की यादगारी है।
क्या हाय बन गई यह शक्ल तुमारी है ॥टे०॥
सच बतलाओ यह कैसी बेकरारी है।
आहो नालो से अयाँ इन्तिशारी है ॥
चश्मों से चश्म प अश्क क्यूँ प जारी है।
छा रही उदासी चेहरे पर न्यारी है ॥

मंजूर कहो यः किस मैं जां निसारी है।
बतला तो कैसी तुझको बीमारी है॥
खाई तूने यह कहा जख्म कारी है।
किस कातिल की लगी चश्म की कटारी है॥
किस जालिम की तुझ पै य सितमगारी है।
किस दामें जुल्फ में हुई गिरफ़्तारी है॥
भा गई तुझै किस गुल की तरहदारी है।
किस बुलबुल की सुनली खुश गुफ़्तारी है॥
बस गई दिल में किसकी सूरत प्यारी है।
किस रश्के कमर से हुई नई यारी है॥
किसके फिराक में ऐसी लाचारी है।
बद्री नारायन यः कैसी गमख्वारी है॥
किस शाकी के मये इश्क की खुमारी है।
क्यों दिल को ऐसी हुई सोच भारी है॥
बतलाओ तुम को कसम अब हमारी है।
किस पर जनाव जंगल की तैयारी है॥

है इश्क बुरा जंजाल मेरे ऐ प्यारे,
सब चातुर सयाने लोग जहाँ पर हारे ॥टेक
लैली पै बनाया मजनू को सौदाई,
फरहाद देख शीरी की जान गवाई॥
की छैल बटाऊ मोहना सँग रुसवाई,
फिर हरि और राधे की कथा चलाई॥

क्या कहूँ हजारों के घर हाय उजारे,
सब चतुर सयाने लोग जहाँ पर हारे ॥
देखो चिराग पर जलता है परवाना,
प्यासा मरता है स्वाती पर चातक दाना ॥
मधुकर गुलाब के काटों में उलझाना,
निरखत मयंक नित चतुर चकोर चकराना ॥
नित वीन सुना कर जाते हैं मृग मारे,
सव चतुर सयाने लोग जहाँ पर हारे ॥
कुछ और सबव इसमें न हमें नज़र आया,
कुछ दिलको दिलके साथ वास्ता पाया ॥
गुनरूप सबव नाहक लोगों ने गाया,
य है कुछ उस परवर दिगार की माया ॥
जुल्फों के फन्दे जो निज हाथ सँवारे,
सव चतुर सयाने लोग जहाँ पर हारे ॥
वस यही बना माशूक सितम करता है,
जिस पर आशिक दीवाना वन मरता है ॥
कोई लाख कहे वह नहीं ध्यान धरता है,
राहत और रंज एकी मरना पड़ता है ॥
वदरी नारायन सच्चे ख्याल तुमारे,
सव चतुर सयाने लोग जहाँ पर हारे ॥

बर्षा बिन्दु

सं० १९७०

कजली

प्रधान प्रकार

अर्थात् रागिनी वा गीत का मूल वा मुख्य रूप

सामान्य लय

जय जय प्यारी राधा रानी, जय जय मन मोहन बृजराज ॥
दोउ चकोर, दोउ चन्द, दोऊ घन, दोउ चातक सिरताज ।
दोऊ अमल, कमल अलि दोऊ सजे सजीले साज ॥
दोऊ प्रेम भाजन, दोउ प्रेमी, दोऊ रूप जहाज ।
सुकवि प्रेमघन के मिलि दोऊ सवै सँवारौ काज ॥ १ ॥

दूसरी

जय जय राधा वदन सरोरुह मधुकर मोहन वनमाली ॥
विहरसि युवति समूह समेतो नव शोभा शाली ।
कुसुमित बकुल कदम्ब निकुञ्जे गुञ्जति भ्रमराली ॥
कंस विमर्दन कालियमन्थन कुञ्चित कच जाली ।
प्रसरतु सदा प्रेमघन हृदि तव नव पद प्रेम प्रणाली ॥ २ ॥

तीसरी

हे हरि ! हमरी ओरियाँहूँ अब फेरौ तनिक दया दृगकोर ॥
राधा रमन, समन बाधा, नट नागर, नन्द किसोर ।
मुनिमन मानस के मराल, बृज जुबती जन चितचोर ॥

अधम उधारन, पतितन पावन, अवगुन गनौ न मोर।
बरसहु नित नित प्रेम प्रेमघन! मन मैं सरस अथोर॥ ३॥

चौथी

सोर करत चहुँ ओर मोर गन चल सखि! वृन्दावन की ओर।
छाय रहे घनस्याम अवसि उत कहि नाचत मन मोर॥
ललचत लोचन चातक सम छवि पीयन हित चित चोर।
बरसत सो घन प्रेम प्रेमघन जनु आनन्द अथोर॥ ४॥

गृहस्थिनियों की लय

सिर पर सूही रे ओढ़नियाँ ओढ़े खेलै कजरी॥
हिलि मिलि के झूला सँग झूलैं सब सखी प्रेम भरी।
सजी प्रेमघन सावन के सुख मिरजापुर नगरी॥ ५॥

दूसरी

रिम झिम बरसै रे बादरिया मोरी चादरिया भीजी जाय।
कहाँ जाय अब हाय बचौ मैं! दैया! जिय घबराय॥
लै छाता तर, छाती से लगि, प्रीति रीति सरसाय।
पिया प्रेमघन! पैयाँ लागौं वेगि बचावो आय॥ ६॥

नटिनों* की लय

वन वन गाय चरावत घूमो! ओढ़े कारी कमरी।
तुम का जानो रस की बतियाँ? हौ बालक रगरी॥

---

* नट नामक एक जङ्गली जाति की स्त्रियाँ जो नाचने, गाने और वेश्या वृत्ति उठाने से यहां एक प्रकार मध्यम श्रेणी की रण्डी वा नर्तकी वारवधू बन गई हैं, जिनकी कजली गाने में कुछ विशेषता है, और जिसका कुछ वर्णन इस पुस्तक के अन्त में "कजली की कजली" में भी हुआ है।

बेईमान! दान कस मांगत गहि बहियाँ हमरी ?
सीखौ प्रेम प्रेमघन! अबहीं, छोड़! मोरी डगरी ॥ ७ ॥

दूसरी

नैना पापी मानैं नाहीं प्यारे! ये काहू की बात।
लाख भाँति समझाय थके हम करि करि सौ सौ घात ॥
चलत छाँड़ि कुल गैल बने बिगरैल नहीं सकुचात।
छके प्रेममद मस्त प्रेमघन तकत यार दिन रात ॥ ८ ॥

रंडियों* की लय

बांके नैनों ने रसीले! तोरे जदुआ डाला रे।
मुख मयंक पर मण्डल मानौ कान सजीले वाला ॥
मोर मुकुट सिर अधर मुरलिया गर बिलसत बनमाला।
प्रेम प्रेमघन बरसावत कित जात नन्द के लाला ॥ ६ ॥

दूसरी

तोरी गोरी रे सूरतिया प्यारी प्यारी लागै रे॥
मन्द मन्द मुसुकानि लखे उर पीर काम की जागै।
बरसावत रस मनहुँ प्रेमघन बरबस मन अनुरागै ॥ १० ॥

तीसरी

मारी कैसी तू ने जनियाँ! बाँके नैनों की कटार ॥
पलक म्यान सों बाहर कर कर दीन करेजे पार।
व्याकुल करत प्रेमघन मन हक नाहक हाय! हमार ॥११॥

---

* नर्तकी वेश्या वा घुंघुरूबन्द पतुरिया।

बनारसी लय

तोहसे यार मिलै के खातिर सौ २ तार लगाईला ॥
गंगा रोज नहाईला, मन्दिर में जाईला।
कथा पुरान सुनीला, माला बैठि हिलाईला हो ॥
नेम धरम औ तीरथ बरत करत थकि जाईला।
पूजा कै कै देवतन से कर जोरि मनाईला हो ॥
महजिद में जाईला, ठाढ़ होय चिल्लाईला।
गिरजाघर घुसि कै लीला लखि लखि बिलखाईला हो ॥
नई समाजन की बक बक सुनि सुनि घबराईला।
पिया प्रेमघन मन तजि तोहके कतहुँ न पाईला हो ॥१२॥

गुण्डानी लय

नैन सजीले बैन रसीले छैल छबीले तेरे रे ॥
नित टरकाय, हाय! क्यों मारत, दिलबर प्यारे मेरे।
यार प्रेमघन! बेदरदी छबि देखलावत नहिं एरे ॥१३॥

दूसरी

एक दिन तोरे रे जोबन पर चलिहैं छूरी तरवार।
रतनारे मतवारे प्यारे दूनौ नैन तोहार ॥
धानी ओढ़नी सोहै सीस पर, अँगिया गोटेदार।
यार प्रेमघन ललचावत मन बरबस हाय हमार ॥१४॥

बनारसी लय

हम तो खोजि २ चौकाली चिड़िया रोज फँसाईला।
जहाँ देखि आई, सुनि पाई, बसि डटि जाईला हो ॥

चोखा चारा चाह, जतन कै जाल बिछाईला।
पट्टी टट्टी ओट नैन कै चोट चलाईला हो॥
कम्पा दाम लगाईला, चटपट खिड़पाईला।
यार प्रेमघन! यही तार में सगतौं धाईला हो॥१५॥

दूसरी

वहरी ओर जाय बूटी कै रगड़ा रोज लगाईला॥
बूटी छान, असनान, ध्यान कै, पान चबाईला।
डण्ड पेल चेलन के कुस्ती खूब लड़ाईला हो॥
बैरिन सारन देखतहीँ घुड़री, गुर्राईला।
त्यूरी वदलत भर मेँ लै हरवा सटि जाईला हो॥
क़ैसौ अफगातून होय नहिँ तनिक डेराईला।
गुरू प्रेमघन! यारन के संग लहर उड़ाईला हो॥१६॥

नवीन संशोधन

आये सावन, सोक नसावन, गावन लागे री वनमोर॥
घहरि घहरि घन बरसावन, छवि छहरि छहरि छहरावन।
चातक चित ललचावन, चहुँ ओरन चपला चमकावन॥
संजोगिन सुख सरसावन, विरही वनिता बिलखावन।
अधिक वढ़ावन प्रेम, प्रेमघन पावस परम सुहावन॥१७॥

साखी बद्ध

घिरि घिरि आए वदरा कारे, प्यारे पिय बिन जिय घबराय॥
आह दई! वचिहैं कला कौन वियोगी प्रान।
चहुँ ओरन मोरन लगे अवहीँ सोँ कहरान।
झिल्लीगन झनकारत, मारत बैरी दादुर सोर सुनाय॥

अँधियारी कारी निसा निपट डरारी होय।
बाढ़त विरह विथा जुरी जोति जोगिनी जोय।
पी ! पी ! रटत पपीहा पापी सुनि धुनि धीर धरो नहिं जाय॥
इन्द्र धनुष धनु, बूँद सर वरसावत यह आज।
वरखा व्याज वनो वधिक मदन चल्यो सजि साज।
सहत न वनत पीर अव आली ! कीजै कैसी कौन उपाय॥
चखचौंधी दै चंचला चमकि रही चढ़ि चाव।
करि करवाली काम के करवाली उर घाव।
पिया प्रेमघन सों कहु आली आवैं, मोहिँ वचावैं धाय॥१६॥

जन्माष्टमी की वधाई

धनि धनि भाग जसोदा तेरो ! जायो जिन अविनासी वाल॥
सकल सुरन पूजित पद पल्लव, असुर कंस को काल।
सुक, सनकादिक, नारद, मुनि मन मानस मंजु मराल॥
तजि गोलोक, आय गोकुल, जगदीस भयो गोपाल।
सुकवि प्रेमघन वृज मैं छायो मंगल मोद विसाल॥२०॥

झूले की कजली

झूलन कालिन्दी के कूलन झूलन चलिये नन्दकिसोर॥
वृन्दावन कुसुमित कदम्ब की कुञ्जनि नाचत मोर।
कूकत कोइल, चहँकत चातक, दादुर कीने शोर॥
सरस सुहावन सावन आयो, घहरत घिरि घन घोर।
अँधियारी अधिकात, चञ्चला चमकि रही चित चोर॥
मन भाई छाई छवि सों छिति हरियारी चहुँ ओर।
लहरावत द्रुम लता चलत पुरवाई पवन झँकोर॥

चलौ उतै जनि विमल करौ मन ठानत हठ वरजोर।
पिया प्रेमघन! बरसावहु रस दै आनन्द अथोर ॥२१॥

दूसरी

झूलत राधा गोरी के सँग सोहत सुघर सलोने स्याम॥
गल वाहीं दीने दोउ राजत, मानहुँ रति अरु काम।
छहरत छवि छुन छवि मिलि ज्यों घनस्याम नवल अभिराम॥
मन मोहत मिलि ज्यों कालिन्दी, सुरसरिता इक ठाम।
पाय प्रेमघन चन्द लगत प्रिय जथा जामिनी जाम॥२२॥

तीसरी

झूलैं राधा सँग वनमाली, आली! कालिन्दी के तीर॥
नचत कलापी कदम कुंज, किलकारत कोकिल, कीर।
विकसे जहाँ प्रसून पुंज, गुंजरत भौंर की भीर॥
लचत लंक लचकीली लचकत, प्यारी होति अधीर।
निरखि प्रेमघन प्रेम विवस ह्वै भरत अंक वलवीर॥२३॥

चौथी

प्यारी पावस की ऋतु आई, झूलत पिय के सँग प्यारी।
राजत रतन जरित हिंडोर पर गर बहियां डारी॥
निरखि सुहावन सावन घन की घिरी घटा कारी।
नाचत मोर, कोकिला, चातक चहँकत हिय हारी॥
बन प्रमोद सुन्दर सरजू तट भईं भीर भारी।
रघुनन्दन सँग जनक नन्दनी मिलि सखियाँ सारी॥
गावत कजरी औ मलार सावन बारी बारी।
बरसत जुगल प्रेमघन रस हरसत जनु मन वारी॥२४॥

उर्दू भाषा

आई क्या ही भाई भाई दिल को यह प्यारी बरसात ॥
घिर कर अब्रि-सियः ने बनाया इकसाँ दिन औ रात ।
अजब नाज़ अन्दाज़ दिखाती बिजली की हरकात ॥
छाई सब्ज़ी ज़मीं पे गोया बिछी हरी बानात ।
खिले गुले गुलशन, क्या लाई कुदरत है सौग़ात ॥
शुरू रक़्से ताऊस हुआ सहरा में, शोरि नग़मात ।
गातीं झूला झूल झूल कर नाज़नीन औरात ॥
चलो सैर को साथ जानि-जाँ मानो मेरी बात ।
बरस रहा है "अब्र" प्रेमघन गोया आबि-हयात ॥२५॥

दूसरी

ग़ैरों से मिल मिल कर मेरा क्यों दिल जिगर जलाते हो ॥
क़सम खुदा की साफ़ बता दो क्यों शरमाते हो ।
यार प्रेमघन "अब्र" मज़ा क्या इसमें पाते हो ॥२६॥

तीसरी

वारी २ जाऊँ तुझ पर दिलबर जानी सौ सौ बार ।
दिखा चाँद सा चिहरा मत कर तीरे निगाह के वार ॥
इस बोसे के लिये सताते हो करते तकरार ।
खूब प्रेमघन "अब्र" मिले तुम हमें अनोखे यार ॥२७॥

द्वितीय भेद

मिलती लय

प्यारी ! लागत तिहारी छवि, प्यारी प्यारी ना ।
गोरे गालन पैं लोटत लट, कारी कारी ना ॥

मुस्कुरानि मन हरै मोहनी, डारी डारी ना।
मनहुँ प्रेमघन बरसै तोपैं, वारी वारी ना॥ २८॥

तृतीय भेद

ऋतु आई बरखा की नियराई कजरी॥
सब सखियाँ सहेलिन मचाई कजरी।
लगीं चारो ओर सरस सुनाई कजरी॥
नभ नवल घटा की छबि छाई कजरी।
पिया प्रेमघन! आवो मिल गाई कजरी॥ २६॥

चतुर्थ भेद

ठाह की लय में

सैयाँ सौतिन के घर छाए, सूनी सेजिया न सोहाय॥
गरजै बरसै रे बदरवा, मोरा जियरा डरपाय।
बोलै पापी रे पपीहा, पीया! पीया! रट लाय॥
बरजे माने ना जोबनवाँ; दीनी अंगिया दरकाय।
पिया प्रेमघन बेगि बुलावो अब दुख नाहीं सहि जाय॥ ३०॥

पञ्चम भेद

अथवा नवीन संशोधन

गुय्यां देखो री कन्हैया रोकै मोरी डगरी॥ टेक॥
ओढ़े कारी कमरी, सिर पर टेढ़ी पगरी;
कारी बंसी बीच बजावै देखौ ऐसो रगरी॥

भाजै मारि मारि कँकरी, रोजै फोरै गगरी;
यह अन्धेर मचाये घूमै सारी गोकुल की नगरी॥
लखिके सुन्दर गूजरी, तजिकै सखियाँ सगरी;
गर लगि मेरे सब रस लूटै दैया! कारो ठगरी॥
कीजै जतन कवन अबरी, लखि लखि हँसै सबै जगरी;
प्रेमी बनो प्रेमघन घूमै मेरे संग संग लगरी॥ ३१॥

द्वितीय विभेद

विकृत लय

जाऊँ तोरे संग मुरारी—मैना! मैना! रे मैना!॥ टेक॥
मैना! मानूँ बात तिहारी—मैना! मैना! रे मैना!
मैना! जाऊँ घरवाँ मारी—मैना! मैना! रे मैना!
मैना! जाऊँ तोपैं वारी—मैना! मैना! रे मैना!
मैना! करिहौं तोसे यारी—मैना! मैना! रे मैना!
मैना! निरी प्रेमघन बारी—मैना! मैना! रे मैना!।
मैना! व्याही तेरी नारी—मैना! मैना! रे मैना॥ ३२॥

दूसरी

मैना सुनहौं गाली, बोलो बात सँभाली रे मैना।
मैना तेरी तरह कुचाली, सुन बनमाली रे मैना॥
मैना! तेरे घर की पाली, सरहज साली रे मैना!।
मैना! लेवँ कान की बाली, झूमकवाली रे मैना!॥
मैना! ऐसी भोली भाली, रीझूँ हाली रे मैना!।
मैना! प्रेम प्रेमघन घाली, बैठी खाली रे मैना! ३३॥

नवीन संशोधन

नागरी भाषा

सजकर है सावन आया, अतिही मेरे मन को भाया।
हरियाली ने छिति को छाया, सर जल भरकर उतराया।
फूला फला विटप गरुआया, लतिकाओं से लिपटाया।
जंगल मंगल साज सजाया, उत्सव साधन सब पाया।
जुगनू ने जो जोति जगाया, दीपक ने समूह दरसाया।
झिल्लीगन झनकार मचाया, सुर सारंगी सरसाया।
घिरि घन मधुर मृदंग बजाया, तिरवट दादुर ने गाया।
नाच मयूरों ने दिखलाया, हर्षित चातक चिल्लाया।
सखियों ने मिलि मोद मनाया, दिन कजली का नियराया।
पिया प्रेमघन चित ललचाया, भूला कभी न भुलवाया।

अद्धा

तृतीय विभेद

स्थानिक ग्राम्य भाषा

विकृत लय

पिय परदेसवाँ छाये रे—मोरी सुधिया बिसराय ॥
सूनी सेजिया साँपिन रे—मोरा जियरा डँसि डँसि जाय ॥
सब सजि साज पिया कै रे—ननदी छतियाँ ले लगाय ॥
रसिक प्रेमघन को किन रे—सौतिन लीनो बिलमाय ॥ ३५ ॥

दूसरी

आए सखी सवनवां रे—सैय्यां छाये परदेस ॥
अस बेदरदी बालम रे—नाहीं पठवै सन्देस ॥

उमड़े अवती जोवना रे—नाहीं वालापन को लेस ॥
हेरबै पिया प्रेमघन रे—धरि जोगिनियां कै भेस ॥ ३६ ॥

नवीन संशोधन

सैयाँ अजहूँ नाहीं आय ! जियरा रहि रहि के घबराय ॥
घिर घन भरे नीर नगिचाय । बरसैं, पीर अधिक अधिकाय ॥
दुरि दुरि दमकै दामिनि धाय । मोरा जियरा डरपाय ॥
सोही हरियारी छिति छाय । बिच बिच बीरवधू बिखराय ॥
मोरवा नाचै हिय हरखाय । पपिहा पिया २ चिल्लाय ॥
कर पग मेंहदी रंग रँगाय । सूही सारी पहिरि सुहाय ॥
सखियां झूलैं कजरी गाय । मैं घर बैठि रही बिलखाय ॥
झिल्लीगन झनकार सुनाय । दादुर बोलैं सोर मचाय ॥
पिया प्रेमघन ल्यावो हाय ! अब दुख नाहीं सहि जाय ॥

चतुर्थ विभेद

दून

विकृत लय और छन्द

ललना

छेड़ो छेड़ो न कन्हाई मैं पराई ललना ॥
नोखे छैल भए तुमहीं, फिरो घूमत बनि दुखदाई ललना ॥
इन चालन लालन अनेक, बस करि कलंक कुल लाई ललना ।
पिया प्रेमघन माधव तुम, हठि करत हाय ठगहाई ललना ॥

दूसरी

तोरी साँवरी सूरत लागै प्यारी जनियां ॥
तोरी सब सज धज अति न्यारी जनियां ॥
मतवारी अँखियन की चितवन सों जनु हनत कटारी ज० ॥
मंद मंद मुसुकाय मोहनी मंत्र मनहुँ पढ़ि डारी जनियां ॥
मीठी बतियन मोहत मन सब सुध बुधि हरत हमारी ज० ॥
मनहुँ प्रेमघन बरसत रस छबि भूलत नाहिँ तिहारी ज० ॥

झूलन

नवीन संशोधन

झूलै नवल लला सँग नवेली ललना ।
ताक झाँक औ झुकनि मैं छुटत छल ना ॥
झोंका लहि अकुलाय, प्यारी अंगन दुराय ;
डरी जाय जाय, अञ्चल कहूँ तै टल ना ॥
पिय लगै हिय आय, तिय जिय सकुचाय ;
लेन चहत बचाय, पै चलत बल ना ॥
जौ लजाय, अनखाय, बांकी भौंहन चढ़ाय ;
जात जुवति रिसाय, तौ परत कल ना ॥
फेरि नैनन मिलाय, मन्द मन्द मुसुकाय ;
प्रेमघन बरसाय, रस तजै पल ना ॥४०॥

बांके वलमा

मिलती धुन

सारी धानी मोल मँगावः कुरती करौंदिया रँगवावः ।
चुनिकै हमके पहिरावः मोरे बांके वलमा ॥
रोजै पिया प्रेमघन आवः झूठै प्रेम जाल फैलावः ।
झांसै में सावन बितावः मोरे बांके वलमा ॥४१॥

नवीन संशोधन

ग्रीषम हुआ दूर दुखदाई, प्यारी वर्षा है जो आई;
मानो देते हुए वधाई, मोरों ने कलकूक सुनाई॥
काली घटा घेरती आती, चित को चातक के ललचाती;
विजली का है पटा फिराती, क्या दिखलाती सुन्दरताई॥
छाई धरती पर हरियारी, निकलीं बीरवधूटी प्यारी;
खिल २ कर फूलों की क्यारी, उपवन की छवि अधिक बढ़ाई॥
नीर प्रेमघन घन बरसाते, भरकर झील ताल उतराते;
दादुर भी रट लाते भाते, बहती वेग भरी पुरवाई॥

दूसरा प्रकार

मनोहर मिश्रित भाषा

सामान्य लय

मैं बारी कहाँ जाऊँ अकेली, डगर भुलानी रे सांवलिया।
कुञ्जगली में आय अचानक, बहुत डेरानी रे सांव० ॥
डगर बता दे गरवाँ लगा ले, निज मनमानी रे सांव० ।
चेरी हूँ जी से मैं तेरी, रूप दिवानी रे सांवलिया॥

सुन जा हाय ! तनिक तों मेरी, प्रेम कहानी रे सांव० ।
ये अँखियां तेरी अलकन में हैं उलझानी रे सांवलिया ॥
काह बिचारै आह उतै तू, भौंहन तानी रे सांवलिया ।
पिया प्रेमघन आओ वेगहिँ दिलवर जानी रे सांव० ॥४३॥

गृहस्थियों की लय

साँवरी सुरतिया नैन रतनारे, जुलुम करैं गोरिया रे तोरे जोबना ॥
मोहत मन तोरे दाँते कै बतिसिया, करत चित चोरिया रे तोरे ॥
देखत हीं हिय पैठत मनहुँ, कटरिया कै कोरिया रे तोरे जो० ।
रसिक प्रेमघन को मन छोरि, लेत बरजोरिया रे तोरे जो० ॥

दूसरी

कारी घटा घिरि आई डरारी, दुरि २ दमकैं री दामिनियाँ ॥
प्यारी पुरवाई सुखदाई, भाई चंचल गति गामिनियाँ ॥
झिल्ली दादुर मोर पपीहा, सोर मचावैं जुरि जामिनियाँ ॥
विहरत संजोगिनी प्रेमघन विलखत विरही जन कामिनियाँ ॥

नटिनों की लय

नैन तोरे बांके रे गूजरिया ॥
चितवत हीँ चित ऊपर परत, आय जनु डाँके रे गूजरिया ॥
कहर काम की करद समान, वान सैना के रे गूजरिया ॥
ऐसी अजब घाव ये करत, लगत नहिं टाँके रे गूजरिया ॥
वरसत प्रेम प्रेमघन कौन मंत्र पढ़ि झाँके रे गूजरिया ॥४६॥

दूसरी

बोलावै मोहिं नेरे रे सांवलिया।
फिरत मोहिं घेरे रे सांवलिया॥
रोकत जमुना तट पनिघटवाँ, साँझ सवेरे रे सांवलिया।
भाजत धाय हाय मुख चूमि, मिलत नहिं हेरे रे सांवलिया॥
कौन बचावै अब मोहिं, कोऊ सुनत नहिं टेरे रे सांवलिया॥
मेरी गलिन अली वह लँगर, करत नित फेरे रे सांवलिया॥
रसिक प्रेमघन मानत नाहिं, कहे वह मेरे रे सांवलिया॥४७॥

रंडियों की लय

सुरत तोरी प्यारी रे सांवलिया॥
कारी कजरारी मतवारी, आँख रतनारी रे सांवलिया॥
चितवत काम कटारी सरिस, हाय हनि मारी रे सांवलिया॥
बरसत रस मीठी मुसुकानि मोहनी डारी रे सांवलिया॥
रसिक प्रेमघन प्यारे यार चाल तोरी न्यारी रे सांवलिया॥४८॥

ब्रजभाषा

जैसो तू त्यों प्यारी तिहारी, लगो भली यारी रे साँवलिया॥
कारे कान्हर के हित कुबजा, बिधि नै सँवारी रे साँवलिया॥
ज्यों चरवाहो तू त्यों चेरी, वह दई-मारी रे साँवरिया॥
राधा रानी सँग नहिँ सोहै, मीत मुरारी रे साँवरिया॥
प्रेम प्रेमघन सम जन पाय, होय सुखकारी रे साँव० ॥४९॥

झूलन

प्यारी की झूलनि में प्यारी, उझुकि झुकि झूलै हो झूलनियां।
गोरे बदन सीप-सुत सहित, लखे हिय हूलै हो झूलनियां॥
खेलत सुक जनु ससि की गोद हरखि, छवि तूलै हो झूल०।
बिकसे बारिज पैं कै कलित, कुन्द फबि फूलै हो झूलनियां॥
झूमि झूमि कै चूमत अधर, माधुरी मूलै हो झूलनियां।
बरसत मनहुँ प्रेमघन सुधा वुन्द नहिँ भूलै हो झूल० ॥५०॥

गोवर्धन धारण

डगमगात गिर, गिरै न हाय! देख! गिरधारी रे साँवलिया॥
थरथरात हिय समझत भार, लागै डर भारी रे साँवलिया।
बीते सात रात दिन अबतौ, बरसत बारी रे साँवलिया।
गोबरधन धरि कर पर राख्यो, तू बनवारी रे साँवलिया।
धन्य २ भाखैं गोपी सुधि, सकल बिसारी रे साँवलिया।
चूमत स्याम स्याम की बहियां, करि रतनारी रे सांवलिया।
धन्य जसोमति जिन तोहि जायो, जग हितकारी रे सांव०।
नन्द जसोमति मिलि मींजत भुज, सुतहि दुलारी रे सांव०।
चिरजीवो प्यारे तुम व्रज के, बिपति बिदारी रे सांवलिया।
बाधा हरनि हरहु की भाखत, राधा प्यारी रे सांवलिया।
पीर तिहारी सहि न जात अब, मीत मुरारी रे सांवलिया।
वुन्द न परत देखि बृज सुरपति, भागे हारी रे सांवलिया।
जय जय जयति प्रेमघन सुर गन, हरखि उचारी रे सां० ॥५१॥

नवीन संशोधन

नेक नजर कर नेक निहार; आस मोहिँ तोरी रे साँवलिया ॥
हौं अति नीच, पाप के कीच, फँसी मति मोरी रे सांवलिया ॥
निसु दिन काम, क्रोध सोँ काम, लोभ की खोरी रे सांवलिया ॥
तुम कहँ भूलि, विषय की धूलि, सराहि बटोरी रे सांवलिया ॥
पाहि ! प्रेमघन, पतितन पावन ! लखि निज ओरी रे सांवलिया ॥५२॥

दूसरी

भूली सुधि बुधि नागर नटकी, लखे लट लटकी रे सांवलिया ॥
गोरे गाल, चन्द पर व्याल, बाल जनु भटकी रे सांवलिया ॥
अतिही प्यास, अमृत की आस, आय जनु अँटकी रे सांवलिया ॥
निरखनहार, देत विष धार, काढ़ि निज घटकी रे सांवलिया ॥
मिलु अभिराम, प्रेमघन स्याम, पीर हरि टटकी रे सांवलिया ॥५३॥

तीसरी

संग चलि चलि के, हिये हलि हलिके, ठगे छलि छलि कै रे सां० ॥
लै रस हाय ! गये अनखाय, रहे टलि टलिकै रे सांवलिया ॥
सूखी प्रीति, बेलि सब रीति, फूलि फलि फलिकै रे सांवलिया ॥
गुनि २ गाथ, प्रेमघन हाथ, रही मलि मलि कै रे सांवलिया ॥५४॥

चौथी

भल छल किहले छली ! गनि गनिकै, मीत बनि बनिकै रे सां० ॥
लखि ललचाय, मन्द मुसुकाय, प्रेम सनि सनिकै रे सांवलिया ॥
करि बेचैन, दिहे सर नैन, सैन हनि हनिकै रे सांवलिया ॥

लै मन हाथ, छोड़ि फेरि साथ, चले तनि तनिकै रे सांवलिया ॥
भौंहन तान, प्रेमघन मान, ठान ठनि ठनिकै रे सांवलिया ॥५५॥

विकृत विशेषता

खँजरी वालों की लय

औरन से रीति, राखि किहले अनीति, तै देखाय झूठी प्रीति, फँसाये जटि जटि कै रे सांवलिया ॥
नैनवाँ नचाय, मन्द मन्द मुसुकाय, लिहे मनहिँ लुभाय, ठाट ठटि ठटिकै रे सांवलिया ॥
गोकुल गलीन, लखि सहित अलीन, बिनये तैं बनि दीन, साथ सटि सटिकै रे सांवलिया ॥
ऐरे चित चोर! चित चोरि चहुँ ओर, किहे सोर नित मोर, नाव रटि रटिकै रे सांवलिया ॥
प्रेमघन पिया, लगि सौतिन के हिया, तरसाये मोर जिया, बात नटि नटिकै रे सांवलिया ॥५६॥

दूसरी

कहि नहिँ जाय कर मीजि पछताय, रही मन समझाय, तैं सताये दम दै दैं रे सांवलिया ॥
देखि धाय धाय, बरबस पास आय, झूठी बातन बनाय, बिलमाये कर धै धै रे सांवलिया ॥
ऐँठि इतराय, मन्द मन्द मुसुकाय, बाँके नैनवाँ नचाय कै, चोराये चित लै लै रे सांवलिया ॥
प्रेमघन हाय! कबहूँ न गर लाय, मिले मन हरखाय, तैं छली छल कै कै रे सांवलिया ॥५७॥

उर्दू भाषा

दिल तुझपर है आया जान! फिरा करता हूँ मैं हैरान;
हज़ारों लिए हुए अरमान, बता मिलने का कोई ज़रिया।
आऊँ मैं किस तर्ह किधर से, मुश्किल महज़ गुज़रना दर से;
है अफ़सोस तेरे भी घर से, नहीं हिलने का कोई ज़रिया।
बाहर "अभ्र" प्रेमघन हद, के पहुँचा हिज्र क़िस्मते बद के;
बाइस, नहीं गुले मक़सद के मेरे खिलने का कोई ज़रिया।

दूसरी

तेरे फ़िराक़ में हैरानी, हमको जैसी पड़ी उठानी;
सुन तो उस्की ज़रा कहानी, करम कर अब ऐ दिलवर जानी।
रूए रौशन का दीदार, दिखलाने में भी इन्कार;
करता है क्यों तू हर बार, बता तो सबब ऐ दिलवर जानी।
हुस्ने दिल-फ़रेब यः जान, है थोड़े दिन का मिहमान;
ढलने पर शबाब के शान, रहेगी कब ऐ दिलवर जानी।
घिरकर "अभ्र" प्रेमघन! छाये, सैरे गुलशन के दिन आये;
तूभी साथ अगर मिल जाये, मजा हो तब ऐ दिलबर जानी।

द्वितीय भेद

न्यूनता

तोसे तो डर लागै रे बेइमनवाँ॥
नैन लड़ाय लुभाय, फेरि सुधि त्यागै रे बेइमनवाँ॥
मन्द मन्द मुसुकाय, दूर लखि भागै रे बेइमनवाँ॥
झूठी मिलन आस दै, रैन दिना दिल दागै रे बेइमनवाँ॥
रसिक प्रेमघन रोजै जाय, सौति संग जागै रे बेइमनवाँ॥

तृतीय विभेद्

विशेष विकृत वा सर्वथा स्वतन्त्र लय

रामा हरी

सामान्य लय

जुरी जमात गूजरी जमुना कूल कदम कुञ्जन मैं रामा ।
हरि २ हिलि मिलि खेलैं कजरी राधा रानी रे हरी ॥
कोउ मृदंग, मुहँचंग, चंग, लै सारंगी सुर छेड़ैं रामा ।
हरि २ कोउ सितार, करतार, तमूरा आनी रे हरी ॥
कोउ जोड़ी टनकारैं, कोऊ घुंघरू पग झनकारैं रामा ।
हरि २ नाचैं कितनी माती जोम जवानी रे हरी ॥
छायो सरस सनाको सुर को, गावैं मोद मचावैं रामा ।
हरि २ गीतैं कजली की कल कोकिल बानी रे हरी ॥
हँसत लंक ललकावैं, नाक सकोरैं, ग्रीवँ हलावैं रामा ।
हरि २ नैन बान मारैं जुग भौंहैं तानी रे हरी ॥
कहर भाव बतलावैं, सुरपुर की सुन्दरिन लजावैं रामा ।
हरि २ मोहि लियो मन स्याम सुँदर दिल जानी रे हरी ॥
निरखत लीला ललित सुखद सावन मैं ध्यान लगाये रामा ।
हरि २ भरे प्रेमघन प्रेम जोरि जुग पानी रे हरी ॥

दूसरी

छुनहीं छुन छुन-छवि की छवि है, छहरति आज छबीली रा० ।
हरि २ घिरी घटा घन की क्या, कारी कारी रे हरी ॥
हरी भरी क्या भई भूमि, तरु ललित लता लपटानी रामा ॥
हरि २ चलन लगी पुरवाई प्यारी प्यारी रे हरी ॥

कूकैं मधुर मयूरी, नाचैं मुदित मोर मदमाते रामा।
हरि २ चहुँ चिलायँ चातक चढ़ि डारी डारी रे हरी॥
गुंजत मञ्जु मनोज मंत्र से, भँवर पुञ्ज कुञ्जन मैं रामा।
हरि २ फबे फूल खिलि जंगल, भारी भारी रे हरी॥
बरसत मनहुँ प्रेमघन रस जुवती मिलि झूला झूलैं रामा।
हरि २ गावैं कजरी सावन, वारी वारी रे हरी॥ ६२॥

गृहस्थिनों की लय

मीठी तान सुनाय प्रान करि विकल गयो वनमाली रामा।
हरि २ मोहि लियो मन मेरो मुरलीवाला रे हरी॥
मोर मुकुट सिर, लकुट कलित कर, कटि पट पीत विराजै रा०।
हरि २ छवि छाजै उर लसित ललित वनमाला रे हरी॥
रसिक प्रेमघन बरसत रस क्या सुभग साँवरी सूरत रामा।
हरि २ मनहुँ मोहनी मूरति मदन रसाला रे हरी॥ ६३॥

नवीन संशोधन

कैसी करूँ! देत दरकाये अँगिया, उभरे आवैं रामा।
हरि २ नाहीं मानै मदमाते जोवनवाँ रे हरी॥
लगे सखी सावनवाँ अजहू आए नहीं सजनवाँ रामा।
हरि २ मोरवा बोलन लागे बनवाँ बनवाँ रे हरी॥
पिया प्रेमघन के बिन कैसौं भावै नहीं भवनवाँ रामा।
हरि २ सूनी सेजिया लागै नहीं नयनवां रे हरी॥ ६४॥

दूसरी

बिलसत वदन अमन्द चन्द पर काली घूँघरवाली रामा।
हरि २ लोटैं लट मानो पाली नागियाँ रे हरी॥

सोहै नाक नथुनियाँ, लटकैं मोतिन की लटकनियाँ रामा ।
हरि २ जियरा मारै कमर परी करधनियाँ रे हरी ॥
मन्द मन्द मुसुकनियाँ, बाँकी भौंहन की मटकनियाँ रामा ।
हरि २ भूलै नाहीं मधुर बोल बोलनियाँ रे हरी ॥
गति गयन्द गामिनियाँ, छम् छम् बाजै पग पैजनियाँ रामा ।
हरि २ कुच नितम्ब के भार लंक लचकनियाँ रे हरी
अजब उमंग जवनियाँ डाले जादू जनु मोहनियां रामा ।
हरि २ रसिक प्रेमघन सम हम पर तू जनियाँ रे हरी ॥ ६५ ॥

तीसरी

जादू भरी अजब जहरीली मानो हनत कटारी रामा ।
हरि २ बाँके नैनन की चंचल चितवनियाँ रे हरी ॥
सुभग सौसनी सारी, सोहै तन पर कैसी प्यारी रामा ।
हरि २ बादर मैं ज्यों दमकै दुति दामिनियाँ रे हरी ॥
कोकिल बैन सुनाय, मन्द मुसुकाती क्या बल खाती रामा ।
हरि २ मदमाती जाती गयन्द गामिनियां रे हरी ॥
बरबस मन बस किये प्रेमघन बरसत रस इतराई रामा ।
हरि २ इत आई वह कहो कौन कामिनियां रे हरी ॥ ६६ ॥

रण्डियों की लय

मनहुँ मदन मदहारी तोरी मनमोहनी मुरतिया रामा ।
हरि २ भूलै ना सूरतिया प्यारी प्यारी रे हरी ॥
कसकैं नैन सैन हिय बेधे मानौ कोर कटारी रामा ।
हरि २ मुस्कुरानि छवि छहरै न्यारी न्यारी रे हरी ॥

गोरे गालन अलकैं, छलकैं सरद चन्द पर जैसे रामा।
हरि २ लोट रहीँ नागिनियाँ कारी कारी रे हरी॥
जोहत जुग जोबन लट्टू से, होत हाय! मन लट्टू रामा।
हरि २ निखरी जोति जवनियाँ वारी वारी रे हरी॥
बरस २ रस वेगि प्रेमघन! बिन तेरे कल नाहीं रामा।
हरि २ कौन मूठ पढ़ तू ने मारी मारी रे हरी॥ ६७॥

दूसरी

नागरी भाषा

नवीन संशोधन

मुरली मधुर सुनावो हमसे भी तो आँख मिलावो रामा।
हरि हरि गिरधारी, बनवारी, यार मुरारी! रे हरी॥
अलकैं घूँघरवारी, लहरैं जैसे नागिन कारी रामा।
हरि हरि लगैं चाँद सी सूरत पर क्या प्यारी रे हरी॥
आवो पिया प्रेमघन वारी जाऊँ मैं बलिहारी रामा।
हरि हरि बरसाओ रस मानो अरज हमारी रे हरी॥६८॥

तीसरी

आकर गले लगाले, मेरे निकलत प्रान बचा ले रामा।
हरि हरि साँवलिया मैं तोपैं वारी वारी रे हरी॥
लगी लगन अपनी है तुमसे, अब क्यों हाय सतावो रामा।
हरि हरि दिखला जा सूरतिया प्यारी प्यारी रे हरी॥
पिया प्रेमघन दिलवर जानी! तुझ पर मैं दीवानी रामा।
हरि हरि कौन मोहनी तू ने डारी डारी रे हरी॥६९॥

नटिनों की लय

मन्द मन्द मुसुकानि मनोहर बानि मोहनी डारे रामा।
हरि हरि जियरा मारै कजरारी नजरिया रे हरी॥
क्या करौंदिया सारी, पहिने लागी लैस किनारी रामा।
हरि हरि निखरि परी ओढ़े धानी चादरिया रे हरी॥
उभरे जोवन अंचल पर कर देत चित्त हैं चञ्चल रामा।
हरि हरि देखत धसैं हिये ज्यों कोर कटरिया रे हरी॥
लाख आँख उलझाये, चलती ठहर २ बल खाये रामा।
हरि २ वाल कमानी सी लचकाय कमरिया रे हरी॥
पीर प्रेम की समझि, प्रेमघन हम पर दया दिखावो रामा।
हरि २ चार दिना है जोवन की वहरिया रे हरी॥७०॥

दूसरी

निकरल ऊ तो आफत कै परकाला रे हरी॥
औरन के संग जाला, रोजै वदलि रंग चौकाला रामा।
हरि २ देखत हमके दूरै से कतराला रे हरी॥
जादू हम पर डाला, मारा कहर नजर का भाला रामा।
हरि २ गोरी सूरत मीठी मूरतवाला रे हरी॥
पिया प्रेमघन तरसावै दै, टाला कसे निराला रामा।
हरि २ पड़ा कठिन वस! वेदरदी संग पाला रे हरी॥७१॥

तीसरी

वनारसी लय

हम पर जानी! तू ने जादू डाला रे हरी॥
सोहै सुन्दर वाला, कानन में क्या झूमकवाला रामा॥

गरवां में छहराला मोती माला रे हरी ॥
कर चेहरा चौकाला, देकर सुरमे का दुम्वाला रामा।
कैसा मारा कहर नजर का भाला रे हरी ॥
क्या लहँगा लहराला, लाल दुपट्टा गजब सुहाला रामा।
देखत चोली हरी हाय जिउ जाला रे हरी।
सरस प्रेमघन आला, पायल नूपुर सोर सुनाला रामा।
चलत चाल जैसे मतंग मतवाला रे हरी ॥७२॥

गवनहारिनों* की लय।

घूमो मत इतरानी, भरी गरूरन भौंहन तानी रामा।
हरि २ जानी चार दिना जिन्दगानी रे हरी ॥
जोबन रूप दिवानी, बोलो सब से अटपट बानी रामा।
हरि २ मानो मन में अपने को लासानी रे हरी ॥
है बादर परछाहीं, रहिहै यह कबहूँ थिर नाहीं रामा।
हरि २ बिते जवानी, कोऊ काम न आनी रे हरी।
हँस कर कबहुँ न ताको, हाय झरोखेहू नहिं झाँको रा०
हरि २ यार प्रेमघन से हठ बरबस ठानी रे हरी ॥७३॥

दूसरी।

सूरतिया ना भूलै, हिय मे हाय हमारे हूलै रामा।
हरि २ जानी तोरी चंचल चितवनियां रे हरी ॥

---

* गवनहारिन यहाँ अधम श्रेणी की वेश्याओं को कहते हैं, जो प्रायः नफीरी और दुक्कड़ अर्थात् रोशनचौकी पर विशेषतः बधावे आदि के साथ सड़क पर गाती चलती हैं और उनके गाने की लय सबसे विलक्षण और अलग होती है।

प्यारी प्यारी बतियाँ, सोहैं कुछ कुछ उभरी छतियाँ रामा
हरि २ बारी बारी निखरी जोति जवनियाँ रे हरी।
सरस प्रेमघन बरसत रस, मृदु मन्द मन्द मुसुकाई रामा।
हरि २ मारि गई मोहिं मनहू मूठ मोहनियां रे हरी ॥७५॥

तीसरी

बनारसी लय

सावन रस उपजाव बीतन चाहत ये वेदरदी रामा।
एक वेर दे देखै भरि नजरिया रे हरी ॥
झलकौ नहीं दिखाओ, दिल में दया दरद नहीं ल्याओ रामा।
काहे मारो बरबस विरह कटरिया रे हरी ॥
रसिक प्रेमघन वदरी नारायन मन लै मत भूलो रामा।
कतरावो जिन हमको देखि डगरिया रे हरी ॥७४॥

विन्ध्याचली लय

घुमड़ि घुनड़ि घन गरजन लागे रामा।
हरि २ सैयाँ बिना जियरा घबरावै रे हरी ॥
काली रे कोइलिया कुहू कुहू रट लाये रामा।
हरि २ विरहा बधाई मोरवा गावै रे हरी ॥
पिया प्रेमघन अजहुँ न आये, आली सुधि बिसराये रामा।
हरि २ सूनी सेजिया साँपिन सी डँस जावै रे हरी ॥७६॥

गुण्डानी लय

तथा गुण्डानी भाषा और भाव

ठाला में क्या सावन बीतल जाला रे हरी ॥
तोहरे संगी साला, रोजै लहर करैलैं आला रामा।

हरि २ हम तौ वैठा फेरत बाटी माला रे हरी ॥
तुहईं पर जिव जाला, हमसे जिन करः टालवेटाला रामा ।
हरि २ टहरावः जिन दै दै वुत्ता वाला रे हरी ॥
यार प्रेमघन प्याला मदिरा प्रेम पिये मतवाला रामा ।
हरि २ तोहरे दर पर अव् तौ डेरा डाला रे हरी ॥७७॥

गवैयों की लय

ज्यों वर्षा ऋतु आई, सरस सुहाई, त्यों छवि छाई रामा ।
हरि २ तेरे तन पर जानी, जोति जवानी, रे हारी ॥
जोवन उभरत आवैं, ज्यों नद उमड़त घुमड़त धावैं रामा ।
हरि २ टूटत ज्यों करार, चोली दरकानी, रे हरी ॥
ज्यों कारे घन घेरे, त्यों कजरारे नैना तेरे, रामा ।
हरि २ वरसत रस हिय रसिक भूमि हरियानी, रे हरी ॥
रसिक प्रेमघन प्रेमीजन, चातक वनाय ललचाए रामा ।
हरि २ हंसत मनहुँ चंचल चपला चमकानी, रे हरी ॥७८॥

दूसरी

नन्दलाल गोपाल, कंस के काल, दीन हितकारी रामा ।
हरि २ भज मेरे मन, मनमोहन वनवारी रे हरी ॥
राधावर सुन्दर नट नागर, मंगल करन मुरारी रामा ।
हरि २ मधुसूदन माधव बृज कुञ्ज बिहारी रे हरी ॥
जग जीवन गोविन्द गुनाकर, केशव अधम उधारी रामा ।
हरि २ रसिक राज कर गिरि गोवर्धन धारी रे हरी ॥
काली मथन कृष्ण कलिन्दी के तट गोधन चारी रामा ।
हरि २ सुखद प्रेमघन सदा हरन भय भारी रे हरी ॥७९॥

झूले की कजली

कालिन्दी के कूल कलित कुञ्जनि कदम्ब मै आली रामा।
हरि २ झूलनि की झूलनि क्या प्यारी प्यारी रे हरी॥
चमकि रही चंचला चपल, चहुँ ओर गगन छवि छाई रामा।
हरि २ सघन घटा घन घेरी कारी कारी रे हरी॥
प्यारी झूलैं पिया झुलावैं गावैं सुख सरसावैं रामा।
हरि २ संग वारी सब सखियां वारी वारी रे हरी॥
लचनि लंक की संक लली लहि वंक भौंह करि भाखैं रा०।
हरि २ "बस कर झूलन सों मैं हारी हारी" रे हरी॥
बरसत रस मिलि जुगल प्रेमघन हरसत हिय अनुरागैं रा०।
हरि २ टरै न छवि अँखियनि तैं टारी टारी रे हरी॥८०॥

जन्माष्टमी की बधाई

मिट्यो सकल दुख द्वन्द, बढ्यो आनन्द, नन्द घर जाए रामा।
हरि २ अज आनन्द कन्द बृजचन्द मुरारी रे हरी॥
भार उतारन काज भूमि, लखि भरी पाप तैं भारी रामा।
हरि २ लीला ललित करन रुचि रुचिर विचारी रे हरी॥
असुर सकल अकुलाने, सुरगन बरसत सुमन सुखारी रामा।
हरि २ कहत "जयति जय जय जग मंगलकारी" रे हरी॥
गाय प्रेमघन गुन विरञ्चि शिव नाचत दै करतारी रामा।
हरि २ मुदित मनहुँ तन मन की सुरत विसारी रे हरी॥८१॥

गोवर्धन धारण

इन्द्र कोप करि आए, सँग में प्रलय मेघ लै धाए रामा।
हरि २ राखो बृज बृजराज! आज भय भारी रे हरी॥

घुमड़ि घोर घन कारे, घिरि २ ज्यों कज्जल गिर भारे रामा ।
हरि २ आय रहे जग छाय सघन अँधियारी रे हरी ॥
बज्रनाद करि धमकैं, चारहुँ ओर चंचला चमकैं रामा ।
हरि २ प्रबल पवन धरि झोकैं झंका झारी रे हरी ॥
बरसैं मूसल धारा, जाको कहूँ वार नहिं पारा रामा ।
हरि २ जलही जल दरसात भरी छिति सारी रे हरी ॥
गो, गोपी, गोपाल, भये वेहाल सबै मिलि टेरैं रामा ।
हरि २ नन्द जसोमति मिलि हेरैं बनवारी रे हरी ॥
अकुलानी राधा रानी, हिय लागि स्याम सों भाखैं रामा ।
हरि २ ! "राखहु ब्रज बूडत अब हाय मुरारी" ! रे हरी ॥
दुखित देखि सबही करुनाकर, करुनाकर कर ऊपर रामा ।
हरि २ गिरि गोवरधन धर्यो धाय गिरधारी रे हरी ॥
चकित भये ब्रजबासी, अचरज देखि धन्य धनि भाखैं रामा ।
हरि २ वरसैं सुमन सकल सुर अम्बर चारी रे हरी ॥
बरसि थके नहिं पर्यो वुन्द ब्रज, भाजे तब सिर नाई रामा ।
हरि २ समझि प्रेमघन सुरनायक हिय हारी रे हरी ॥८२॥

उर्दू भाषा

नई तरहदारी है यह, या नई सितमगारी है (जानी)
(दिलबर !) लगी नई बनलाओ, किससे यारी ये जानी ?
क्याही सूरत प्यारी, उबलैं आँखैं भरी खुमारी (जानी)
(दिलबर !) नई जवानी की छाई सर्शारी (ये जानी)
है जोड़ा ज़ंगारी पर, यह आज तेज़ रफ़्तारी जानी;
(दिलबर !) किधर चले हो करने को अय्यारी ? (ये जानी)

अजव प्रेमघन 'अब्र' हमें इस दिल से है लाचारी जानी;
(दिलवर !) इसै जो है मं.जूर तेरी गमख़ारी (ये जानी) ॥८३॥

तीसरा प्रकार

सॉंवर गोरिया

सामान्य लय

व्रज भाषा

दोऊ मिलि करत विहार साँवर गोरिया ॥
आजु कलिन्दी कूलन कुसुमित कदम निकुञ्ज मझार सांव०
दोउ दुहूँ पर मन करत निछावर दोउ दुहुँ ओर निहार सां०
दोउ दुहुँ के गरवाहीं दीने रूसत करि तकरार सां० गो०
वरसत दोउ रस उमड़ि प्रेमघन मुख चूमत करि प्यार सां०

दूसरी

कैसी करूँ कहाँ जाँव अव दैय्या रे ॥
वरसाने के धोखे देखो आय गई नन्दगाँव अव दैय्या रे ॥
जिय डरपत हिय थर २ कांपत लाग्यो वाको दाँव अव दै०
मिलै न कहुँ मग वीच प्रेमघन मोहन जाको नाव अव दै०

गृहस्थिनों की लय

स्थानिक ठेठ स्त्री भाषा

तोहिं पर सँवरा लुभान साँवरि गोरिया ॥
सँवरी सूरत, रस भरी अँखियां, लखि विन मोलवैं विचान सा०
तोरे देखन काज आज कल, घूमै सँझवौ विहान सां० गो०

एकहु पल नहिं कल अव ओके जव से नैन उरझान सां०
मिलि रस वरसु प्रेमवन पिय पर दै कै जोवनवाँ कै दान सां०

दूसरी

जिनि करः जाए कै विचार वनिजरऊ !
रिमिझिमि २ दैव वरीसै, वढ़ि आए नदिया औ नार वनि०
और महीना वनह वैपारी, सावन गटई कै हार वनिज०
काउ नफा फेरि आइ मँजैंय्यः, वढ़ि गए जोवना कै वाजार ? व०
वरसः रस मिलि पिया प्रेमघन मानः कहनवाँ हमार व०

तीसरी।

भैय्या न आयल तोहार छोटी ननदी ॥
वरसत सावन तरसत वीता, कजरी कै आइलि वहार छो०
सव सखी झूला झूलैं गावैं, सावन, कजरी, मलार छो०
पी २ रटत पपीहा, नाँचत मोर किए किलकार छो० न०
पिया प्रेमघन विन एकौ छन, नाहीं लागै जियरा हमार छो०

रंडियों की लय

अजहूँ न आयल हमार परदेसिया !
वन २ मोरवा वोलन लागे, पापी पपिहरा पुकार पर०
घर घर झूला झूलत कामिनि, करि सोरहो सिंगार परदे०
सावन वीते कजरी आई, मिलि न खवरिया तोहार परदे०
छाये कहां प्रेमघन तुम, करि झूठे कौल करार पर० ॥८६॥

दूसरी

बनारसी लय

नाहीं भूलै सूरति तोहार मोरे वालम ॥
जैसे चन्द चकोर निहारै, तैसे हाल हमार मोरे वालम
और ओर जिय लागत नहिँ करि, थाकी जतन हजार मो०
पिया प्रेमघन तुमरे विन मन करत रहत तकरार मो० ॥६०॥

नटिनों की लय

पिया २ कहां ? न सुनाव रे पपिहरा ॥
संजोगिनी सुखी सुमुखिन कहँ, भय वियोग न जनाव रे प०
व्याकुल विरही वनितन मन क्यों कहर पीर उपजाव रे प०
निठुर ! प्रेमघन वनिकै तैं जिनि काम कटार चलाव रे पपिहरा ॥

दूसरी

जुलमी जोवनवाँ तोहार सांवर गोरिया ॥
छतियन पर अस उभरे देखौ, जैसे कोर कटार सांवर गो०
राह वाट घर वाहर सगतौं, चलत मचावैं तकरार सां० गो०
लगत न हाथ पसारि प्रेमघन कीने जतन हजार सां० गो०

गवनहारिनों की लय

वृज भाषा भूषित

कुञ्ज गलीन भुलाय गई गुय्याँ रे ॥
कौन वतैहै गैल आय अव;
यह जिय सोच समाय गई गुय्याँ रे ॥
इतने मैं इक छैल छली की;
लखि छवि छकित लुभाय गई गुय्याँ रे ॥

नेरे आय, सैन सर मार्‍यो;
मैं जेहि घाय अघाय गई गुय्याँ रे ॥
व्याकुल जानि, मोहिँ गर लायो;
हौं सकुचाय लजाय गई गुय्याँ रे ॥
पिया प्रेमघन, मग बतरायो;
मैं तेहि हाथ बिकाय गई गुय्याँ रे ॥६३॥

दूसरी

स्थानिक स्त्री भाषा

कजली खेलने वालियों की रुचि का चित्र

सारी रँगाय दे; गुलनार मोरे बालम ॥
चोली चादरि एक्कै रंगकै, पहिरब करिकै सिँगार मोरे बा०
मुख भरि पान नैन दै काजर, सिर सिन्दूर सुधार मोरे बा०
मेंहदी कर पग रंग रचाइ कै, गर मोतियन कर हार मो०
गोरी २ बहियन हरी २ चुरियाँ, पहिरन जावै बजार मोरे बा०
अँठिलातै चलवै पौजेबन की करिकै झनकार मोरे बालम ॥
बीर बहूटी सी बनि निकरब, बनउब लाखन यार मो० बा०॥
झुआ झूलब कजरी खेलब, गाउब कजरी मलार मो० बा०
सावन कजरी की बहार में, तोहसे करौवै तकरार मो० बा०
देखवैय्यन में खार बढ़ाउब जेहमें चलइ तरवार मो० बा०
आधी राति तोहरे संग सुतवै, मुख चूमब करि प्यार मो० बा०॥
बारे जोबन कै इहइ मजा है, जिनि किछु करह बिचार मो०
रसिक प्रेमघन पैय्यां लागौं, मानः कहनवां हमार मो० बा०॥

गवैयों की लय

आई री बरखा ऋतु आली॥
घुमड़ि २ घन घटा घिरी चहुँ दिसि चपला चमका बनवाली।
छाय रहे कित जाय प्रेमघन।नहिं आये अजहूँ बनमाली॥६५॥

दूसरी

है जानी! दिन चार जवानी॥
दिना चार की चमक चाँदनो, फेरि अँधेरी रात अयानी॥
बादर की परछाहीं है यह, तापैं काह इती इतरानी॥
बरसौ रस मिलि रसिक प्रेमघन बैठी हौ भौंहन जुग तानी॥६६।

तीसरी

हाय! गयो जादू जनु डाली॥
चुभी चितौन कौन विधि निकरै, कसकत रहत अरी उर आली
बिसरै नाहिं प्रेमघन पिय की प्यारी छबि मनमोहनवाली॥६७॥

झूले की कजली

वृजभाषा भूषित

झूलन की उझकनि झूकि झूलनि॥
कलित निकुंज कदम्ब कलापा
कुल कूकनि कालिन्दी कूलनि॥
ललित लतन लपटनि तरु उपवन
फवे फैलि फूले फल फूलनि॥
गावनि गरबीली गजगामिनि
गन गोपाल हरखि हँसि हूलनि॥

लहँगन की लहरानि पितम्बर,
की फहरानि हरनि हिय सूलनि ॥
झुमकन की झूलनि जैसी,
त्यों झुलनी की झूलनि सुख मूलनि ॥
उरझनि वन माली वन माला,
वाल माल मोती सँग चूलनि ॥
प्रेम प्रलाप करत दोउ मोहे,
कहि २ निज बतियन की भूलनि ॥
बरसत रस मिलि जुगल प्रेमघन,
लगि हिय लहि आनन्द अतूलनि ॥९८॥

तिनतुकी

खँजरीवालों की लय

नन्द के कुमार, दियो तन मन वार,
लखि आई तोरे जोवन पर बहार रे गुजरिया ॥
जनु करतार, निज हाथनि सँवार,
दियो तोहि रचि जगत सिंगार रे गुजरिया ॥
नैना रतनार, मयन मद मतवार,
हेरि सैसन की हनत कटार रे गुजरिया ॥
दरके अनार, लखि मुस्कान डार,
देत मानौ मोहनी सी पढ़ि मार रे गुजरिया ॥
प्रेमघन यार, गयो तोपैं बलिहार,
ताकु ताहि तनी घूँघट उघार रे गुजरिया ॥९९॥

उर्दू भाषा

दिल फ़रेब दिन हैं सावन के ॥
घिरकर काली घटा दिखाती है जोबन को चर्ख़ कुहन के।
सब्ज़ा छाया ज़मीं प' हँसते हैं खिलकर गुलहाय चमन के ॥
घूम रही हैं वीरबहूटी गोया बिखरे लाल इमन के।
चमक रही है वर्क सीखकर नख़् नाज़नीनेपुरफ़न के ॥
नाच रहे हैं मोर पपीहे शोर मचाते हैं गुलशन के।
गा कर झूला झूल रहे हैं माह लक़ा सब सीम बदन के ॥
पियो मये गुलरंग भूलकर सब ख़याल बातिल बचपन के।
अब्र बरसता है बाराँ दो बोसे दो लिल्लाह दहन के ॥१००

द्वितीय भेद

दून

बुँदेलवा

मिलल बलम बेइमान रे बुंदेलवा ॥ टे ॥
हमसे प्रीत रीत नहिं राखै, औरन संग उरझान रे बुंदेलवा ॥
रतियां जागि भागि उठि भोरहिं, आवइ घर खिसियान रे बुं० ॥
पिया प्रेमघन की चालन सों, मैं तो भई हैरान रे बुंदे० ॥१०१॥

दूसरी

उमड़े जोबनबन पर परि बुँदवा होइ जायँ चखना चूर रे बुँ०
तन दुति देखि लजाय दमिनियाँ दौरै दूरै दूर रे बुँदेलवा ॥
पिया प्रेमघन अलकन लखि घन कँहरत छोड़ि गरूर रे बुँ० १०२

तृतीय भेद

नवीन संशोधन

श्रद्धा

पाये भल बाये रँग लाल रे करँवदा।
नहीं ओस जेस दूओ गाल रे करँवदा॥
ओठ लखि बिकल प्रवाल रे करँवदा।
कुनरू गिरल खसि हाल रे करँवदा॥
देखि २ नैनन कै हाल रे करँवदा।
कँवल बुड़ल बिच ताल रे करँवदा॥
लखि अँटखेलिन की चाल रे कँरवदा।
लजि २ भजलैं मराल रे कँरवदा॥
निरखत भुजन बिसाल रे कँरवदा।
कीच वीच घुसल मृनाल रे करँवदा॥
देखि २ ठोढ़िया कै ढाल रे करँवदा।
पकि चुइ परल रसाल रे करँवदा॥
लखि कुच कठिन कमाल रे करँवदा।
दाड़िमहुँ भयल हलाल रे करँवदा॥
ससि पर आयल जयाल रे करँवदा।
लखि भल चमकत भाल रे करँवदा॥
प्रेमघन घन अलि नाल रे करँवदा।
लाजे लखि घुँघराले वाल रे करँवदा॥१०३॥

चतुर्थ भेद

ढुनमुनियाँ की कजली

लोय

धावन लागे बादरवा मचावन लागे सोर मोर ॥
मिले मोरिनी संग कलोलैं नाचैं चारो ओर मोर ।
बाढ़न लागी पीर काम की जोवन कीनो जोर मोर ॥
लागै नाहीं जिया सखी री बिना मिले चितचोर मोर ।
बालम बसे बिदेस प्रेमघन भूले प्रेम अथोर मोर ॥१०४॥

नागरी भाषा

दसो दिशा में दमक रही दामिन है देखो बार बार ।
प्रभा प्रकृति प्रगटाती है अम्बर का अम्बर फार फार ॥
घिरकर काली घटा बरसती बूँद सुधा सी गार गार ।
उमड़ २ कर बहता है जल झील नदी औ नार नार ॥
वर्षा ऋतु आई सुखदाई तपन ताप कर पार पार ।
हरी भरी छिति भई, झुके तरु हरियारी के भार भार ॥
बहती वेग भरी पुरवाई खिले सुमन सब झार झार ।
नाच रहे हैं मोर पपीहे, पिहँक रहे हैं डार डार ॥
संयोगिनी नारि नीरज नैनों में अञ्जन सार सार ।
मेहँदी के रंग रंगकर कर पद, पट करौंदिया धार धार ॥
विशद विभूषण से भूषित झूलती हैं झूले द्वार द्वार ।
गाती हैं कजली मलार, मिल २ कर दो दो चार चार ॥

सरस भाव भीनी चितवन से देखैं घूँघट टार टार।
मन्द २ मुसुकातीं मानो मूठ मोहनी मार मार॥
पिय से मिलीं मदन मदमाती देतीं सी हिय हार हार।
वियोगिनी वनितायें विलख रही हैं आँसू ढार ढार॥
सुनकर जाने की बातैं जी जलता है हो छार छार।
जावो कहीं न पिया प्रेमघन जाऊँ तुम पर वार वार॥१०५॥

उर्दू भाषा

बने ठने यों कहां से आते हो मेरे दिल्दार यार॥
रुखे मुनव्वर पर बिखरे हैं गेसूये खमदार यार।
गञ्जि हुस्न पर याकि निगहवाँ है यह काले मार यार॥
चश्मि मस्त में बादे गुलगूँ का है भरा खुमार यार।
तेगे निगहे नाज से करते फिरते हैं यह वार यार॥
दस्तो पाय हिनाई पोशिश रंगे गुले आनार यार।
लबे लाल भी रंगे पान से दिखलाते हैं बहार यार॥
अब मत मेरा दिल तरसाओ सुनो मेरे अय्यार यार।
अब्रि करम बरसो मुझ पर दे दो बोसे दो चार यार॥१०६॥

पञ्चम विभेद

ढुनमुनियाँ में गाने की कजली

मोरे हरी के लाल

जमुना के तीर भीर भई आज भारी—जसुदा के लाल।
झूलैं झूला मिलि गोपी ग्वाल—जसुदा के लाल॥

गावैं सब सखी मिलि कजरी रसीली—जसुदा के लाल।
बांसुरी वजावैं दै २ ताल—जसुदा के लाल॥
डरन डेराय प्यारी आय गर लागै—जसुदा के लाल।
होयँ तव निपट निहाल—जसुदा के लाल॥
लपटाय मोतिन के हार हरखने—जसुदा के लाल।
सटि मुरझावैं वनमाल—जसुदा के लाल॥
कौनौ सखिया कै उड़ी ओढ़नी ओढ़ावैं—जसुदा के लाल
चञ्चलहु अञ्चल सँभाल—जसुदा के लाल।
झूलत केहूकै नथ वेसर बचावैं—जसुदा के लाल।
केहूकै सुधारैं वेंदी भाल—जसुदा के लाल॥
छुतियां लगाय हर केहूकै छोड़ावैं—जसुदा के लाल।
केहू के खिझावैं चूमि गाल—जसुदा के लाल॥
मीठी २ बात कै मनावैं फुसिलावैं—जसुदा के लाल।
कौनो के गरे में भुज डाल—जसुदा के लाल॥
इहि भांति प्रेमघन रस बरसावैं—जसुदा के लाल।
रचि छल छन्दन के जाल—जसुदा के लाल॥१०७॥

षष्ट विभेद

नवीन संशोधन

अद्धा

सुनः ! २ मदन गोपाल जसुदा के लाल।
सीख्यः ई तूं कवन कुचाल जसुदा के लाल॥
लखि बन सघन विसाल जसुदा के लाल।
लुकः चढ़ि कदम की डाल जसुदा के लाल॥

देखतहि, वारी वृजवाल जसुदा के लाल ।
धावः होइ अतिही उताल जसुदा के लाल ॥
धरिकै घुँघट खोल खाल जसुदा के लाल ।
लाज तजि करः देख भाल जसुदा के लाल ॥
वहियां गरे के बीच घाल जसुदा के लाल ।
चूमः हाय अधर रसाल जसुदा के लाल ॥
केथुवौ के करः न खियाल जसुदा के लाल ।
झकझोरि तोरः मोती माल जसुदा के लाल ।
जाय घरे कही जौ ई हाल जसुदा के लाल ।
परि जाय वृज में जवाल जसुदा के लाल ॥
प्रेमघन परि प्रेम जाल जसुदा के लाल ।
राखः चित रचिक संभाल जसुदा के लाल ॥१०८॥

चौथा प्रकार

सांवलिया

सामान्य लय

धनि विन्ध्याचल रानी रे सांँवलिया ॥
जलधर नवल नील सोभा तन चित चातक ललचानी रे ॥
भादवँ वदी दुतीया गोकुल नन्दभवन प्रगटानी रे सां० ।
तू जग जननि जोगमाया जसुदा दुहिता कहलानी रे सां० ॥
वदलि कृष्ण वसुदेव तोहि लै आप वृज रजधानी रे सां० ।
कृष्ण अष्टमी की निसि गोकुल सों मथुरा में आनी रे सां ॥

देवि देवकी गोद विराजत चिघरि २ चिल्लानी रे सां० ।
रोदन मिसि जनु कंसहि टेरति देवकि वन्दि छुड़ानी रे ।।
सुनि सठ दौरि धाय तहँ पहुँच्यो डरपत हिय अभिमानी रे ।
पटकन चह्यो उठाय ताहि धरि वल करि अतिसय तानी रे ॥
चमकि चली चपला सी छुटि तव तू मरोरि खलपानी रे ॥
पहुँचि गगन पर विहँसत बोली कंस विध्वंसन वानी रे ।।
आय वसी विन्ध्याचल 'देवी कान्ति' अमल छवि छानी रे ।
कृष्ण वहिन कृष्णा, काली, स्यामा, सुख सम्पति दानी रे ।।
विजया, जया, जयन्ती, दुर्गा, अष्टभुजा जग जानी रे ।
आदि सक्ति अवतार नाम इन कहि पूज्यो तुहिँ ज्ञानी रे ॥
भक्तन के भय हरत देत फल चारौ सहज सयानी रे ।
वरसहु कृपा प्रेमघन पैँ नित निज जन जानि भवानी रे ॥

दूसरी

काजर सी कजरारी देवि कजरिया ।।
कारे भादवँ की निसि जाई करि वृज लोग सुखारी देवि ।
कारे कान्हर की भगिनी तू जो सव जग हितकारी देवि ।
कंस नकारे कारे हिय मैं उपजावनि भय भारी देवि क० ।
कारे विन्ध्याचल की वासिनि दायिनि जन फल चारी देवि ।
काली ह्वै कारे महिषासुर अधमहिँ सहज सँहारी देवि कज०।
प्याहि प्रेमघन जानि भक्त निज कारी अलकन वारी देवि ।११०

गृहस्थिनों की लय

स्थानिक स्त्री भाषा.

काहे मोसे लगन लगाए रे सांवलिया ॥टेक॥
लगन लगाय हाय वेदरदी, कुवजा के घर छाये रे सां० ॥
अस वेपीर अहीर जाति तैं, कौल करार भुलाये रे सां० ॥
सावन बीता कजरी आई, तैं न सुरतिया देखाये रे सां० ॥
झूँठे प्रेम देखाय प्रेमघन, भल हमके तरसाये रे सां० ॥१११॥

रण्डियों की लय

लगत मुरत तोरी नीकी रे सांवलिया ॥टेक॥
सँवरी सूरत रस भरी अँखियां,
चितवन चोरनि जी की रे सांवलिया ॥
बरसि प्रेमघन रसहि सुनाओ,
तनक तान मुरली की रे सांवलिया ॥११२॥

नटिनों की लय

तोरे पर गोरिया लुभानी रे सांवलिया ॥टेक॥
गोल कपोलन पै लखि लांबी,
लट लोटत छितरानी रे सांवलिया ॥
मोर मुकुट सिर चपलित लोचन,
की चितवन अलसानी रे सांवलिया ॥
मिलि रस बरसु। प्रेमघन तोपैं,
बिन हीं मोल विकानी रे सांवलिया ॥११३॥

उर्दू भाषा

बारिश के दिन आए; प्यारे प्यारे।

उमड़ चलीं नदियाँ औ नाले, झील सबी उतराये प्यारे २।

हुई ज़मीं सर-सब्ज़ खूब रँग रँग के फूल खिलाये प्यारे २॥

खुश-इलहानी से हैं पपीहे, कैसा शोर मचाये प्यारे २।

मस्त हुए ताऊस नाचते हैं, पर को फैलाये प्यारे २॥

रंगि-हिना दस्तो पा में हैं, गुलरूओं ने लगाये प्यारे २।

झूल रहे हैं झूले, बाले ज़ुल्फ़ों से उलझाये प्यारे २॥

हरी भरी बेलों को हैं अशजार सबी लिपटाये प्यारे २।

चाराने रहमत हैं बरसते "अब्र" चारसू छाये प्यारे २॥११४॥

नवीन संशोधन

मोहे मन बँसिया बजाय कै रे सांवलिया॥

बँसिया बजाय कै, सरस सुर गाय कै,

मीठी २ तान सुनाय कै; रे सांवलिया;

नैनवां नचाय कै भउहैं मटकाय कै,

मधुर २ मुसुकाय कै; रे सांवलिया॥

नेहियाँ बढ़ाय कै ललचि ललचाय कै,

तन मन मदन जगाय कै; रे साँवलिया।

वेगि प्रेमघन रस बरसाय कै,

मिलु पिय हिय हरखाय कै; रे सांवलिया॥११५॥

दूसरी

जावे कहँ लगन लगाय कै; रे सांवलिया॥

कुञ्जन में आय कै, बँसुरिया बजाय कै,

सखियन सवन बुलाय कै; रे सांवलिया।
भावन दिखाय कै, रसीली गीत गाय कैं,
चितवत चितहि चुराय कै; रे सांवलिया॥
रासहि रचाय कै, अंग परसाय कै,
सब सुधि बुधि विसराय कै; रे सांवलिया।
पिया प्रेमघन गरवाँ लगाय कै,
सब रस लिहे मन भाय कै; रे सांवलिया॥११६॥

द्वितीय विभेद

डेवढ़

सुनि सुनि सैय्यां तोरी वतियां,
जियरा हमार डरै! जियरा हमार डरै ना!
सावन मास चलन कित चाहत, करि छल बल की घतियां;
जियरा हमार डरै! जियरा हमार डरै ना!!
नहिं बीतत बालम विन बरखा, की अँधियारी रतियां;
जियरा हमार डरै! जियरा हमार डरै ना!!
पिया प्रेमघन घन घिरि आये, सूतो लगकर छतियां;
जियरा हमार डरै! जियरा हमार डरै ना!! ॥११७॥

दूसरी

बोलन लगे हैं बन मोरवा,
सोरवा मचाय हाय! सोरवा मचाय हाय! ना॥टे०॥
सूनी सेज अँधेरी रतियाँ, जगत होत नित भोरवा;
मोहिं न सुहाय हाय! मोहिं न सुहाय हाय ना!!

पिया प्रेमघन तुम कहाँ छाये, भूलि सूरति चित चोरवा;
मिलु अब आय हाय ! मिलु अब आय हाय ना !! ॥११८॥

झूले की

धीरे धीरे झुलाओ बिहारी,
जियरा हमार डरै ! जियरा हमार डरै ना !! ॥टे०॥
छतियां मोरी धर धर धरकत, दे मत झोंका भारी;
जियरा हमार डरै ! जियरा हमार डरै ना !!
लचत लंक नहिं संक तुमै कछु, हौ बस निपट अनारी;
जियरा हमार डरै ! जियरा हमार डरै ना !!
दया वारि बरसाय प्रेमघन, रोक हिंडोर मुरारी;
जियरा हमार डरै ! जियरा हमार डरै ना !! ॥११९॥

नवीन संशोधन

स्थानिक ठेठ ग्राम स्त्री भाषा

मानः कि न मानः हम तौ जावै नैहरवाँ,
कजरी के दिन नगिचान वा;
जिया ललचान वा न ।
छोड़ि ससुरारि आइलि बाटीं सब सखियाँ,
छोटका बहनोयौ मेहमान वा;
मिलल मिलान बा न ।
भेजली संदेसा मोरी बड़ी भउजैया,
आवः भल सावन सुहान वा;
जुटल समान वा न ।

झूला मिल झूली गाई कजरी रसीली;
खेल ढुनमुनियाँ भिठान वा;
मन हुलसान वा न।
खुसी में वितावः सावन जयलै जवानी,
प्रेमघन प्रेम उमड़ान वा;
लहर लखान वा न। ॥१२०॥

दूसरी

वृजभाषा

चातक रटान की, मयूरनि नटान की,
छाई छवि घिरन घटान की;
लहर अटान की न।
पान मदिरान की, रसीले पान खान की,
छेड़नि मलारन के तान की;
कजरी के गान की न।
सजी सेजियान की सुतनि सतरान की,
पिय हिय लगि मुसकान की;
चुम्बन के दान की न।
छुटि छितरान की, अलक उलझान की,
झूलनि में लर मुकतान की,
सूहे दुपटान की न।
है न ऋतु मान की, अरी पिय मिलान की,
प्रेमघन प्रेम उमड़ान की,
सुख के विधान की न। १२१ ॥

तीसरी

आरे अब निठुर दुहाई तोहि राम की,
कैसी बरखा है धूम धाम की,
प्रेमिन के काम की न।
तरसत बरसन सों मैं बैठी,
पिया बनि चेरी तेरे नाम की;
बिकी बिना दाम की न।
बरसु वेगि रस प्रेम प्रेमघन,
बिछी सेज सजे सूने धाम की;
निसि जुग जाम की न। १२२॥

छूट

प्रधान प्रकार के चतुर्थ विभेद में

नवीन संशोधन

कबहूँ तौ इत आवो, तनी बाँसुरी बजाओ,
मन मेरो बहलाओ; भूलै नाहीं तोरी साँवरी सुरतिया ना।
नैना तोरे रतनारे, अन्हियारे कजरारे,
मयन मद मतवारे; करैं जुवतिन के हिय घतिया ना।
खुली गालन पैं प्यारी, लट लहरैं तिहारी,
कारी कारी घूँघरवारी, डसैं मन मानो नागिनि की भँतिया ना।
मुख लखि चन्द लाजै, सीस मुकुट विराजै,
अंग २ छवि छाजै; प्यारी २ प्रेमघन तोरी बतिया ना। १२३॥

अन्य

तीसरे प्रकार का सप्तम विभेद

जोवनवां तोरे बड़े बरजोर रे ॥
का करिहैं जानी बढ़े पर न जानी,
अबहीं तौ हैं ये उठे थौरै थोर रे।
छाती फारैं देखे छाती पर तोरे,
नोकीले जैसे कटरिया कै कोर रे।
प्रेम कै पीर बढ़ावैं झलकतै,
हैं घनप्रेम छिपे चित्त चोर रे। १२४ ॥

ढुनमुनियाँ की कजलियाँ

प्रथम लय

हरि हो—मानों कहनवां हमार, बजाओ फिर बाँसुरिया।
हरि हो—गावत राग मलार, बजाओ फिर बाँसुरिया ॥
हरि हो—वर्षा कै आइलि बहार, बजाओ फिर बाँसुरिया।
हरि हो—छाये मेघ दिसि चार, बजाओ फिर बाँसुरिया ॥
हरि हो—जमुना बढ़ीं जल धार, बजाओ फिर बाँसुरिया।
हरि हो—लखि न परत जाको पार, बजाओ फिर बाँसुरिया ॥
हरि हो—मोर करत किलकार, बजाओ फिर बाँसुरिया।
हरि हो—दादुर रट दिसि चार, बजाओ फिर बाँसुरिया ॥
हरि हो—झूलो हिँडोरा संग यार, बजाओ फिर बाँसुरिया।
हरि हो—करिके प्रेमघन प्यार, बजाओ फिर बाँसुरिया ॥

दूसरी

मोहिँ टेरत है बलबीर बजी बन बाँसुरिया।
सुनि बढ़त मनोज की पीर बजी बन बाँसुरिया॥
चलु बेगि जमुनवाँ के तीर बजी बन बाँसुरिया।
सखियन की भई जहाँ भीर बजी बन बाँसुरिया॥
जहाँ सीतल बहत समीर बजी बन बाँसुरिया।
किलकारत कोकिल कीर बजी बन बाँसुरिया॥
घनप्रेम की प्रेम जँजीर बजी बन बाँसुरिया।
मोहि खींचत करत अधीर बजी बन बाँसुरिया॥१२६॥

दूसरी लय

स्थानिक स्त्री भाषा

आय कजरी कै दिन नगिचान रँगावः पिया लाल चुनरी॥
रेशमी सबुज रंग अँगिया सिआवः,
बेगि बैठि दरजिया की दुकान—रँगावः पिया लाल चुनरी।
लालै रंग अपनी पगरिया रँगावः,
होइ रँगवौ से रँग कै मिलान—रँगावः पिया लाल चुनरी।
बगिया में झेलुआ डरावः झूलः सँग,
सुनः नई नई कजरी कै तान—रँगावः पिया लाल चुनरी।
प्रेमघन पिया तरसावः जिनि जिया,
आयल बाटै साजि सावन समान—रँगावः पिया लाल चुनरी।

तीसरी लय

काली बदरिया उमड़ि घुमड़ि कै उमड़ि घुमड़ि कै हो,
दैया! बरसन लागी चारिउ ओर।

दसौ दिसा में दमकि २ कै, दमकि २ कै हो,
दामिनि जियरा डेरावै लागी मोर।
पपिहा पापी पिया २ की, पिया २ की हो,
दादुर सँग रट लाये बरजोर।
पिया प्रेमघन अजहुँ न आये, अजहुँ न आये हो,
छाये कहाँ करि जियरा कठोर ॥ १२८ ॥

चौथी लय

दे नहँकारि, कि चलु मिलु पिय से,
हमै न सुहाए, तोरी बात, रे दुइ रंगी ॥
नाक सिकोरिकै, भौंहें मरोरति,
ओठवन से मुसुकात, रे दुइ रंगी ॥
आये पिया कर करत निरादर,
रूठि गये पछितात, रे दुइ रंगी ॥
बरसि २ निक्ररत, पुनि बरसत,
आई भली बरसात, रे दुइ रंगी ॥
निसि अँधियरिया मँ चमकै बिजुलिया,
भइलि सोहावनि रात, रे दुइ रंगी ॥
लाज संजोग के सोच विचार में,
वितलि जवानी जात, रे दुइ रंगी ॥
प्रेम प्रेमघन सों कर नाहक,
गुरुजन डर सकुचात, रे दुइ रंगी ॥१२९॥

पाँचवीं लय

सावन में मन भावन सों चलिकै मिलु आली।
बंसी बजाय बुलावत है तोहि को बनमाली॥
घेरत आवत अम्बर देखि घटा घन काली।
काहे विलम्ब लगावत है उठरी अब हाली॥
फेंकु छड़ा छला चम्पकली बिजुली अरु बाली।
तोहि अभूषन रूप रची विधि नारि निराली॥
काहे सिँगार सिँगारत री करि बीस बहाली।
वैसहिँ तू घन प्रेम पिया मन मोहन वाली॥१३०॥

छठवीं लय

कारे बदरा रे जल बरसि रहे।
छन गरजि सुनावैं, दुति दामिनि दिखावैं,
घिरि घिरि आवैं; जनु छिति परसि रहे॥
मोर नाचैं किलकारि, घेरी घटनि निहारि,
पिक पपिहा पुकारि; हिय हरसि रहे।
गावैं कजरी मलार, झूलैं सजिकै सिंगार,
तिय, मोहे रिझवार, छवि दरसि रहे॥
तजु मान इहि छन, मिलु सजनी सजन;
बिन तेरे प्रेमधन पिय तरसि रहे॥१३१॥

कजली की कजली

साँचहुँ सरस सुहावन, सावन, गिरिवर विन्ध्याचल पैं रा०
ह० २ मिरजापुर की क़जरी लागै प्यारी रे ह०॥

हर मङ्गल त्रिकोन का मेला, होला अजब सजीला रा०
ह० २ जङ्गल में है मङ्गल की तैय्यारी रे ह० ॥
काली खोह छानि कै बूटी, गुण्डे तान उड़ावैं रा०
ह० २ अष्टभुजा पर भैलौँ भिरिया भारी रे ह० ॥
कहूँ जुवक जन सजे इतै उत डोलैं, बोली बोलैं रा०
ह० २ कहूँ हिँडोला झूलैं वारी नारी रे ह० ॥
ओढ़ि ओढ़नी धानी, कितनी गुलेनार चादरिया रा०
ह० २ पहिने सारी जंगारी जरतारी रे ह० ॥
चातक, मोर सोर जहँ होते, तहँ खनकार चुरी के रा०
ह० २ छन्द छड़ा पाजेबन की झनकारी रे ह० ।
कानन सघन सृङ्ग गिरि कन्दर, विहरैं जहँ मृग माला रा०
ह० २ तहँ मनहरनी हरनी लोचन वारी रे ह० ॥
मंजुल मधुर मलार, सरस सुर सावन, कल कजली के रा०
ह० २ गुञ्जत कुञ्ज मनहुँ कोकिल किलकारी रे ह० ॥
निरतत नटिन परीन सरिस, संग ढोलक बजत चिकारा रा०
ह० २ लट खोले, पहिने टोपी औ सारी रे ह० ॥
उलटा शहर बनारस, मिरजा के रसिक रसीले रा०
ह० २ होन लगी आपुस में खारा खारी रे ह० ॥
बिते पहाड़ी मेला सावन के, जब कजली आई रा०
ह० २ मिरजापुर में तब छाई छवि न्यारी रे ह० ॥
घर घर झूला झूलैं, करैं कलोलैं गलियां गलियां रा०
ह० २ ढुनमुनियां खेलैं जुवती औ बारी रे ह० ॥
मेहँदी ललित लगाय करन में, साजे सूही सारी रा०
ह० २ फुलवारी तिय गावैं चढ़ी अटारी रे ह० ॥

वार नारि नाचैं औ गावैं, सरस भाव वतलावैं रा०
ह० २ वरसावैं रस मनहुँ सुमुखि सुकुमारी रे ह० ॥
पूरिस सहर सरंगी के सुर, सहित ताल तवलन के रा०
ह० २ टनकारी जोड़ी, घुंघुरू झनकारी रे ह० ॥
मोहें जुवक रसीले, निरखत इत उत व्याकुल घूमें रा०
ह० २ कजरी के मिसि छाई प्रेम खुमारी रे ह० ॥
डटे ज्वान बीहड़ औ अक्खड़, ठाढ़े नजर लड़ावैं रा०
ह० २ चलैं यार लोगन में छुरी कटारी रे ह० ॥
पैंदा कटैं जहां तोड़न* के, परी छूट † की लूटैं रा०
ह० २ लेलीं रुपिया रण्डी जेवा झारी रे ह० ॥
"चलः ! वहः धोवी"‡ वोली सुनि २ भागैं रा०
ह० २ दीन तमाशा वीनन की है ख्वारी रे ह० ॥
तिरमोहानी, नारघाट औ सड़क पसर हट्टा॥ पर रा०;
ह० २ चलैं दुतर्फा नैंनन की तरवारी रे ह० ॥
वरसै रस जहँ प्रेम प्रेमघन सुख सरिता भरि उमड़ै रा०;
ह० २ रहै नगर में नित्य नई गुलजारी रे ह० ॥१३२॥

---

* रुपये से भरी टाट की थैली।

† दो प्रेमी व तमाशःबीनों का नाचती हुई रण्डी को अधिक २ रुपया देने से एक दूसरे को परास्त करना।

‡ उज्वल वस्त्र पहिनकर बिना रुपया दिये नाच देखनेवालों पर सफर्दा और समाजियों की बोली, ठोलो।

॥महल्लों के नाम जहां रात को मेला जमता है। शोक ! कि अब यह रात का मेला नाम मात्र को रह गया।

दूसरी

मिरजापुरी गुण्डों का यथार्थ चित्र

बनी शकल गुन्डानी, बोलैं गजबै बीहड़ बानी रामा।
ह० चालैं मिरजापुरियों की मस्तानी रे हरी॥
टेढ़ी पगड़ी पर सतरंगा साफ़ा भी बेढंगा रामा।
त० डटा डुपट्टा गुलेनार या धानी रे हरी॥
कुरता भी चौकाला, डाला झूलै तिसपर माला रामा।
ह० गन्डा गले भले गाँधे सैलानी रे हरी॥
कसी किनार दार धोती, घुटने के ऊपर होती रामा।
ह० चलैं झूमते ज्यों हथिनी बौरानी रे हरी॥
काला कमर बन्द का फाँड़ा ऊँचा, हथवाँ खाँड़ा रामा।
ह० कमर कटारी छूरी जहर बुझानी रे हरी॥
काँधे मोटी लाठी, पैसा कौड़ी एक न गांठी रामा।
ह० तौभी डकरैं पी २ करके पानी रे हरी॥
काला टीका बेंड़ा पर, महाबीरी ऊँचा टेढ़ा रामा।
ह० मुँह में चाभत पान, बैल ज्यों सानी रे हरी॥
चेलन डण्ड पेलाये, कुछ को कुस्ती खूब लड़ाये रामा।
ह० सूखे चने चाभके बूटी छानी रे ह०॥
संझा छोड़ अखाड़े, करके यक्का भी येक् भाड़े रामा
ह० घूमि डटे "सत्ती" या "तिरमोहानी*" रे ह०॥
कमर तनिक लचकाये, कुछ २ गर्दन भी उचकाये रामा।
ह० अड़े घुड़रते संगिन संग दिलजानी रे ह०॥

---

*चौक वा उन मुहल्लों के नाम जहाँ वेश्यायें रहती हैं।

अण्ड बण्ड बतलाते छिन २ मेछां ऐंठत जाते रामा।
ह० भौंह तान आंखैं कर ऐंची तानो रे ह० ॥
तार देखकर रस्ते जाते, बोली ठोली कस्ते रामा।
ह० वदले में चाहै दस गाली खानी रे ह०
नाहक भी लड़ जाते, चाहे उलटे पीटे जाते रामा।
ह० परे पुलिस में भोग करैं हलकानी रे ह० ॥
कानिसटिबिलन मारैं, कोतवाली के धरि गढ़ि डारैं रामा।
ह० जेल जाय कोल्हू चढ़ि पेरैं घानी रे ह० ॥
जब छुटि कैं फिर आवैं, "गुरू मियादी" कै पद पावैं रा०।
ह० तब आवै पूरी उन पर मरदानी रे हरी ॥
महाजन डेरवावैं, बिसनिन से भी माल पुजावैं रामा।
ह० जुवा खेलावैं खुले जान पर ठानी रे हरी ॥
बरसहु दया प्रेमघन इनकी मूरखता हरि इन सन रामा।
ह० देहु सुमति जो फिरै गोल बिन्नानी रे हरी० ॥१३३॥

त्रिकोन का मेला

प्रधान प्रकार का पञ्चम विभेद

आई सावन की वहार, विन्ध्याचल के पहार।
पर मेला मजेदार लगा, छ्लः चली यार ॥
तिय सहित उमङ्ग, मिलि सखियन संग।
चलीं मनहुँ मतंग, किये सोरहौ सिंगार ॥
चोली करौंदिया जरतारी, सारी धानी या जंगारी।
चादर गुल अब्बासी धारी, गातीं कजरी मलार।
पहिने वेसर वन्दी वाला, झूमड़ झूमक मोतीमाला।

कटि किंकिनी रसाला, पग पायल झनकार ॥
कहूं घूँघट उठाय, चन्द वदन दिखाय।
मन्द मन्द मुसुकाय, देत मोहनी सी डार ॥
नैन मद मतवारे, रतनारे कजरारे।
नैन सरसे सुधारे, सैन मार देतीं मार ॥
प्रेमा जुव जन भंग पिये, सजित सुढंग।
रँगे मदन के रङ्ग, सङ्ग लगे हिय हार ॥
कोऊ कलपैं कराहैं, कोऊ भरैं ठण्डी आहैं।
कोऊ अड़े छेंकि राहैं, खड़े तड़ैं कोऊ तार ॥
मेला इहि के समान, सैर सुखमें समान।
नहिं होत थल आन, देखि लेहु न विचार ॥
प्रेमघन बरसावैं, अति आनन्द मचावैं।
मिरजापुरी सुभावैं, सब मंगल के वार*

सामाजिक संगीत

विनोद

तीसरे प्रकार की सामान्य लय

ऐङ्गलो हिन्दुस्तानी भाषा

साँवर—गोरवा

सोहै न तोके पतलून साँवर गोरवा ॥
कोट, बूट, जाकट, कमीच क्यों पहिनि बने बैबून † सां० गो०

---

* अर्थात् सावन के प्रत्येक मङ्गलवार को यह पहाड़ी मेला होता है।

† Baboon—एक प्रकार का वन्दर।

काली सूरत पर काला कपड़ा, देत किए रंग दून सां० गो० ।
अंगरेज़ी कपड़ा छोड़ह कितौ, ल्याय लगावः मुहें चून सां०
दाढ़ी रखिकै बार कटावत, और बढ़ाए नाख़ून सां० गो०
चलत चाल बिगड़ैल घोड़ सम, बोलत जैसे मजनून सां० गो० ।
चन्दन तजि मुँह ऊपर साबुन, काहें मलह दुऔ जून सां० गो० ।
चूसह चुरुट लाख, पर लागत पान बिना मुँह सून सां० गो० ॥
अच्छर चारि पढ़ेह अंगरेजी, बनि गयः अफ़लातून* सां० गो० ॥
मिलहि मेम तोहैं कैसे, जेकर फ़ेयर फ़ेस लाइक् दी मून† सां०
बिस्कुट, केक‡ कहा तूँ पैब्यः, चाभः चना भलें भून सां० गो०
डियर। प्रेमघन हियर ॥ दया कर गीत न गाओ लैम्पून× सां०

दूसरी

गोरी गोरिया

पिया के तो लिहलीँ लोभाय, गोरी गोरिया ॥
अँगरेजी पढ़ि गयनि बिलाइत, लौटत अबलैं लियाय गो० गो०
काले साहेब भये निराले, अनमिल मेल मिलाय गो० गो०
जूठ निवाले खाँय, पियाले मद के पियहिँ, पियाय गो० गो०
लोक लाज कुलकानि धरम धन, जग सुख दिहिसि नसाय गो०
बनि लंगूर बँदरिया के सँग, नाचहिँ नाच रिझाय गो० गो०

---

* Plato—प्लेटो

† Fair face like the moon—उज्वल मुख चन्द्रमा सदृश ।

‡ Cake—एक अंगरेज़ी मिठाई । Dear—प्रिय ॥ Hear—सुनो ।

× Lampoon—उपहासात्मक कविता ।

करजौ काढ़ि नहीं धन अँटै, सरवस देइ उड़ाय गो० गो०
बिके दास बनिकै परवस, मन भीखत हुकुम बजाय गो० गो०
औरन सँग निज मेम प्रेम लखि, रोवहिँ कहिर हाय ! गो० गो०
बनी जाल जंजाल प्रेमघन, छुटै न फन्द फँसाय गो० गो० ॥१३६॥

चण्डू बम्बू

प्रधान प्रकार की सामान्य लय

बम्बू बाय २ मुहँ चूसः, चन्डू पीयः हो चन्डूल ॥
पीकर पिनक लेत हौ, मानो रहे झूलना झूल
रंगत बनी अजब चेहरे की ज्यों गेंदे का फूल ॥
रोम अनेक दबाये बाढ़ी साँस, साक औ सूल
बकरी सी सूरत बन, आँखैं भईं लाल ज्यों तूल ॥
जौ नहिँ पावत, तौ मुहँ बावत उठत करेजवां हूल
पैसे की तंगी से जीना भूसन हुआ फजूल ॥
मैली बदन सुरत जिन्नाती फिरत छानते धूल
चन्डू बाज धनी दानी कहँ मिलै यार अनकूल ॥१३७॥

कुरीति

बाल्य विवाह

स्थानिक ग्राम्य स्त्री भाषा

भौंरा चकई बहाय, गुल्ली डण्डा बिसराय,
तनी नाचः इतराय, मोरे बारे बलँमू।
करिहैंयवां हिलाय, औ भँउहँ मटकाय,

ताली दै कै चमकाय, मोरे बारे बलँमू।
खोंड़ी दँतुली दिखाय, तनी तनी तुतराय,
गाय सोहर सुनाय मोरे बारे बलँमू।
आवः यहर नगिचाय, घँघरी देई पहिराय,
सुन्दर ओढ़नी ओढ़ाय, मोरे बारे बलँमू।
नैना काजर सुहाय, देई सेंदुर पहिराय
माथे टिकुली लगाय, मोरे बारे बलँमू।
नई दुलही बनाय, गोदी तोहके उठाय,
मुहँ चूमब खेलाय, मोरे बारे बलँमू।
पावै पावौं न उठाय छाती, बाल पिय पाय,
गोरो कहतौ सरमाय,—मोरे बारे बलँमू।
प्रेमघन अकुलाय, रस बिना बिलखाय,
कहै खिल्ली सी उड़ाय, मोरे बारे बलँमू॥१३८॥

दूसरी

अनमेल विवाह

नैहर में देवै बिताय बरु बिरथा बैस जवानी रामा!
हरि! २ का करवै लै ई छोटा साजनवां रे हरी!!!
पापी पण्डित पांमर पाधा गैलैं तिलक चढ़ावै रामा!
हरि! २ बनरा से बनरा कै दिहेनि बयनवाँ रे हरी!
नहिं कुल, रूप, नहीं गुन, विद्या, बुद्धि, सुभाव रसीला रामा!
हरि! २ नहीं सजीला देखन जोग जवनवाँ रे हरी!
आय बरात दुआरे लागी आली! चढ़ी अटारी रामा!
हरि! २ देखि दूलहा सूखल मोरा परनवाँ रे हरी!

गावन लागीं बैरिन बुढ़िया लोग ब्याह की गीतैं रामा !
हरि ! २ बाजन लागे हाय ! ब्याह बाजनवाँ रे हरी !
सुनत प्रान अधरन सों लागे ब्याकुलता अति बाढ़ी रामा !
हरि ! २ भसम होत हिय भावै नहीं भावनवाँ रे हरी !
गोदी चढ़े दूध से पीयत दूलह ब्याहन आए रामा !
हरि ! २ लै बैठाये माड़व बीच अगनवाँ रे हरी !
बरबस पकरि नारि घिसियावैं पैर परै नहिं आगे रामा !
हरि ! २ नाहीं मानै हमरा कोऊ कहनवाँ रे हरी !
बूढ़े बेईमान बाप जी पूजन पाँव लगे हैं रामा !
हरि ! २ मानो उनके फूटे दोऊ नयनवाँ रे हरी !
पकरि हाथ संकल्पत बेचारी बेटो बेदरदी रामा !
हरि ! २ कैसे बची ! करी अब कवन बहनवाँ रे हरी !
नहि उर दया, धर्म्म नहिं, लज्जा लोक लेस मन ल्यावै रामा !
हरि ! २ बोरत बा ई जनम मोर दुसमनवाँ रे हरी !
बेचत गाय कसाई के कर ! केऊ हरकत नाहीं रामा !
हरि ! २ जुरे नात औ भाई सबै सयनवाँ रे हरी !
जोबन जोर जवानी के मद माती मैं अलबेली रामा !
हरि ! २ तेके हेरेनि बर बालक नादनवाँ रे हरी !
मारे डर के सूखे ! नजर मिलावै काउ बेचारा रामा !
हरि ! २ एड़ी उचकायहु ना छुवै जोवनवाँ रे हरी !
धीर धरौं केहि भांति ! कहत कुछ हमसे बनै नहीं रामा !
हरि ! २ कैसे जावै ! केकरे सँगे ! गवनवाँ रे हरी !
जथा जोग बर सुन्दर देय पिता मता लड़िकी के रामा !
हरि ! २ बरु न देय दयजा, कपड़ा गहगनवाँ रे हरी !

मात पिता तो धोखा दिहलेनि लखि हाल दूलह की रामा !
हरि ! २ रामचन्द्र अब तौ तुहँईं सरनवाँ रे हरी !
काहू विधि वीते मधु माधव मास कठिन रितु आई रामा !
हरि ! २ बोलन लागे मोरवा वनवां बनवां रे हरी !
चलिवे नीको लगो पवन पुरवाई बदरा छाये रामा !
हरि ! २ लागे अब तो हाय ! सरस सावनवाँ रे हरी !
लगो प्रान अगुतान कैसहूँ धीर धरो ना जाई रामा !
हरि ! २ मारन लागो मैन पैन वाननवाँ रे हरी !
वरु विष खाय मरव ! सूतव हनि कारी करद करेजवाँ रामा !
हरि ! २ निकरि जाव की काहू के गोहनवाँ रे हरी !
ऐसे देस जाति कुल रीति नीति में है निवाह कै रामा !
हरि ! २ कहौ प्रेमघन दूसर कवन जतनवाँ ? रे हरी ! १३६

तीसरी

बाला वृद्ध विवाह

चलः हटः जिनि फाँसा पट्टी हमसे वहुत वघारः रामा ।
हरि २ फुसिलावः जिनि दै दै वुत्ता वाला रे हरी ॥
भोली गुनि भरमावः काउ रिझावः ? हम ना रीझव रामा ।
हरि २ समुझावः जिनि कै २ बहुत कसाला रे हरी ॥
लालिच काउ दिखावः हम ना पहिरव झुलनी झूमक रामा ।
हरि २ चम्पाकली, टीक, ना वुन्दा बाला रे हरी ॥
आगि लगै तोहरी जरतारी-सारी, लहँगा, चोली, रामा ।
हरि २ तुहऊँ कँ धरि खाय नाग कहुँ काला रे हरी ॥

हम ना चाही राज पाट धन धाम तोहार गुलामी रामा।
हरि २ नावँ और के लिखः मकान कवाला रे हरी॥
जिनि चुमकार पुचकारः वसि वहुत प्रेम दिखलावः रामा।
हरि विना काम जिन भरः आह औ नाला रे हरी॥
असी वरिस कै भयः वूढ़ तूँ, जेस हमार परपाजा रामा।
हरि २ हम बारहै वरिस कै अवहीं वाला रे हरी॥
पापी वेईमान! भला तैं कुकरम कवन विचारे रामा।
हरि २! लाज धरम सब धोय धाय पी डाला रे हरी॥
जव लग चढ़े जवानी हम पर तव तक तूँ मरि जाव्यः रामा।
हरि २ तव हमार फिर होयः कवन हवाला रे हरी॥
फेरि कैसे मन मिलै कहः तौ मुरदा औ जिन्दा कै रामा।
हरि २ होय प्रेम कैसे, जहँ रस कै ठाला? रे हरी॥
वूड़ि मरत्यः चिल्लू पानी मः, का मुहवाँ दिखलावः रामा।
हरि २ भल चाहः तौ "रटः राम लै माला" रे हरी।
वूढ़े प्रेमी सुजन प्रेमघन की सुनि सीख विचारौ रामा।
हरि २ "तजौ वुढ़ाई में तौ गड़वड़ झाला" रे हरी॥१४०॥

जातीय गीत

स्वदेश दशा

तीसरे प्रकार की सामान्य लय

क्षोभ

है कैसी कजरी यह भाई? भारत अम्बर ऊपर छाई॥
मूरखता आलस, हठ के घन मिलि २ कुमति घटा घिरि आई।
बिलखत प्रजा विलोकत छुन २ चिन्ता अंधकार अधिकाई॥

बरसत वारि निरुद्यमता को, दारिद दामिनि दुति दरसाई।
दुख सरिता अति वेग सहित बढ़ि, धीरज बिपुल करार गिराई॥
परवसता तृन छाय लियो, छिति, सुख मारग नहिँ परत लखाई
जरि जवास जातीय प्रेम को, वैर फूट फल भल फैलाई॥
छुधा रोग सों पीड़ित नर, दादुर लौं हाहाकार मचाई;
फेरि प्रेमघन गोवरधनधर! दौरि दया करि करहु सहाई॥१४१॥

दूसरी

गारत भयो भलें भारत यह आरत रोय रह्यो चिल्लाय॥
बल को परम पराक्रम खोयो विद्या गरव नसाय।
मन मलीन धन हीन दीन ह्वै पर्‌यो विवस विलखाय॥
नहिँ मनु, व्यास, कणाद, पतञ्जलि गये शास्त्र जे गाय।
गौतम, शंकर हू नाहीं जे सोचैं कछू उपाय॥
नहिँ रघु, राम, कृष्ण, अर्जुन, कृप, भीषम भट समुदाय।
विक्रम, भोज, नन्द नहिँ जे भुज बल इहि सकै बचाय।
नहिँ रणजीत, शिवाजी, बापा, पृथिवी पृथिवीराय।
जे कछु वीर धीरता देते निज दिखाय तन धाय॥
गई अजुध्या, मथुरा, काशी, झूँसी दिल्ली ढाय।
सोमनाथ के टुकड़े मक्के गज़नी पहुँचे जाय॥
नास कियो म्लेच्छन वेपीरन भली भाँति तन ताय।
काको मुख लखि धीर धरै यह नाहिँ कछू समुझाय॥
भये यहां के नर अधरमरत दास वृत्ति मन भाय।
कायर, क्रूर, कुमति, निलज्ज, आलसी, निरुद्यम आय॥
दुर्भागनि निद्रा सों निद्रित दीजै इन्हैं उठाय।
बरसहु दया प्रेमघन अब नारायन होहु सहाय॥ १४२॥

तीसरी

जाहिल औ जंगली जानवर कायर क्रूर कुचाली रामा।
हरि २ हाय ! कहावैं भारतवासी काला रे हरी ॥
भये सकल नरमें पहिले जे सभ्य सूर सुखरासी रामा।
हरि २ सुजन सुजान सराहे विवुध विशाला रे हरी ॥
सब विद्या के वीज वोय जिन सकल नरन सिखलाये रामा ॥
हरि २ मूरख, परम नीच, ते अब गिनि जाला रे हरी ॥
रतनाकर से रतनाकर जहँ धनी कुवेर सरीखे रामा।
हरि २ रहे, भये नर तहँ के अब कंगाला रे हरी ॥
जाको सुजस प्रताप रह्यो चहुँ ओर जगत में छाई रामा।
हरि २ ते अब निवल सबे विधि आज दिखाला रे हरी ॥
सोई ससक, सृगाल सरिस अब सब सों लहैं निरादर रा०।
ह० २ संकित जग जिनके कर के करवाला रे हरी ॥
धर्म्म, ज्ञान, विज्ञान, शिल्प की रही जहाँ अधिकाई रा०।
ह० २ उमड़्यो जहँ आनन्द रहत नित आला रे हरी ॥
विना परस्पर प्रेम प्रेमघन तहँ लखियत सब भाँतिन रा०।
ह० २ साँचे साँचे सुख को सचमुच ठाला रे हरी ॥ १४३ ॥

चेतावनी

चेतो हे २ बाभन भाई ! सुधि बुधि काहे रहे गँवाय ॥
तुमरेई पुरखे मनु, पाणिनि, भृगु, कणांद, मुनिराय।
व्यास, पतञ्जलि, याज्ञवल्क्य, गुरु, गये शास्त्र जे गाय ॥
जैमिनि कपिल, भरत, पाराशर धन्वन्तरि, समुदाय।
भये विवुध विज्ञान प्रदर्शक तुमहिं सीख सिखलाय ॥

तपसी भरद्वाज, दुरवासा, सृङ्ग, पुलस्त्यहु आय।
भये भक्त नारद, सुक से, भजि हरि तन अघ विनसाय॥
परसुराम, कृप, द्रोण, वीरवर निज वीरता दिखाय।
सुक्र, वसिष्ठ, विष्णु, चाणक, सुभ राजनीति प्रगटाय॥
वालमीकि, भवभूति, बान, जयदेव, नरायन चाय।
कालिदास आदिक कविवर, सत् कविता गये बनाय॥
ताके वंस जनम लैकै तुम निज कुल रहे लजाय।
हाय! लोक परलोक सोक सब जनु पी गये उठाय!!
करम, धरम आचार, विचारहि, सदाचार घर ढाय।
वेद, सास्त्र, तप, संसकार तजि बने निशाचर भाय॥
निज करतव्य धरम तजि घूमत स्वारथ लोलुप धाय।
धक्का खात घरहिं घर माँगत भीख तऊ मुँह बाय!!
नाना अधम वृत्ति करि लै धन डकरहु खाय अघाय।
हाय! २ नहिं लाज लेस हिय, नहिं अगमान समाय!!
देखहु जग सब अरि तुमरे जिय विहँसत मोद बढ़ाय।
खोदत जड़ तुमरी नित पै मन तुमरो नहिं मुरझाय।
वेद विरुद्ध हाय! भारत रह्यो कुपथन को तम छाय।
पै तुम कहँ नहिं सूझि परत कछु छिनहुँ न सोचौ भाय!!
बूड़त देस तुमारेहि आलस अधरम तापनि ताय।
विप्रवंस मिलि सबै प्रेमघन सोचहु वेगि उपाय॥१४४॥

उत्साह

घिरी घटा सी फौज रूस मनहूस चढ़ी क्या आवै रामा।
हरि २ खेलो कजरी मिलि गोरा औ काला रे हरी॥

साफ करो बन्दूकैं, टोटा टोश्रो, ढाल सुधारो रामा।
हरि २ धरो सान तरवारन लै कर भाला रे हरी ॥
ढीलढाल कपड़ा तजिकै अब पहिरौ फौजी कुरती रामा।
हरि २ डीयर वालेन्टीअर ! सजो रिसाला रे हरी ॥
ढुनमुनिया सम सहज कबाइत करि जिय कसक मिटाओ रा०।
हरि २ कजरी लौं गाओ बस करखा आला रे हरी ॥
मार ! मार ! हुंकार सोर सुर सांचे सब ललकारो रामा।
हरि २ सत्रुन के सिर ऊपर दै सम-ताला रे हरी ॥
बहुत दिनन पर ई दिन आवा देव ताव मोछन पैं रामा।
हरि २ सुभट समर सावनवाँ बीतल जाला रे हरी ॥
ऊठो बढ़ो धाओ धरि मारो वेगि न बिलम लगाओ रामा।
हरि २ पड़ा कठिन कट्टर से अब तौ पाला रे हरी ॥
उठैं धूम के स्याम सघन घन गरजैं तोप अवाजैं रामा।
हरि २ गिरैं वज्र सम गोला बस्व निराला रे हरी ॥
झरी बूँद सी बरसाओ बस गोली बन्दूकन सों रामा।
हरि २ चमकाओ चपलासी कर करवाला रे हरी ॥
कहरैं मोर सरिस दादुर लौं बिलबिलायँ गिरि घायल रामा।
हरि २ बिना मोल मनइन कें मूड़ बिचाला रे हरी ॥
करो प्रेमघन भारत भारत मैं मिलि भारतवासी रामा।
हरि २ महरानी का होय बोल औ बाला रे हरी ॥ १४८ ॥

आवश्यक निवेदन

धावो भारतवासी भाई ! लागो गैय्यन की गोहार ॥
अन्न सुतन जाके उपजावत जोतत भूमि अपार।
पियहु दूध घृत खाय जासु तुम सूतहु पाँय पसार ॥

दीन वचन उच्चरत चरत तृन करि उपकार हजार।
अन्तहु मुएँ तुमैं बैतरनी आवत जाय उतार।
सो तुमरी माता निरदोषी के गर फिरत कटार।
देखत तुम पै तनिक न लाजत जिय मैं हा! धिक्कार॥
नगर नगर गोसाला खोलहु रच्छहु हित निरधार।
बरसहु दया प्रेमघन मिलि सब मानौ कही हमार॥ १४६॥

आशीर्वाद

मङ्गल करै ईस भारत को सकल अमङ्गल वेगि बहाय॥
आलस निद्रा सों उठि जागैं भारतवासी धाय।
एका, सुमति, कला, विद्या, बल, तेज, स्वत्व निज पाय॥
उद्यम पगे, धरमरत, उन्नति देस करैं चित चाय।
दुःख कलंक धोय देवैं फिरि वेही दिन दिखलाय॥
बरसहिँ जलद समय पर जल भल सस्य समृद्धि बढ़ाय।
सुखी धेनु पय स्रवहिँ, सकै नहि कोऊ तिनहिँ सताय॥
राजा नीति सहित राजै नित प्रजा हरख अधिकाय।
प्रेम परस्पर बढ़ै प्रेमघन हम यह रहे मनाय॥ १५०॥

ऋतु की चीज़ें

मेघ मलार

सखि सजल जलद जुरि आये चातक चित चोरत चूमत
छिति छिति छन छन छन छवि छवि कर विहाल॥ टेक॥
केकी कलित कलाप कलोलत, कूल कूल कल कुञ्जनि मैं,
काली कोयल कूर कसाइन कूकि कराह रही कराल॥

गरजत गगन घटा घन की-ये दादुर सोर मचावत हैं—
सूनी सेजिया जनु व्याली, वनमाली आली नहिं आये—
वर्षा वधिक समान जनाये,
श्रीबदरीनारायन कविवर विकल करत विरहीन वाल ॥१॥

घनश्याम धाम नहिं आये छाये घनश्याम गगन घुमड़त,
गरजत तरजत जल वरसि वरसि ॥ टेक ॥
जीगन गन जोति जुरी जामिन, दसहूँ
दिसि दुति दमकत दामिनि, हिय हरष हरत विरही कामिनि,
मन मलिन होत दुति दरसि दरसि ॥
चातक चहुँ चाव चढ़े बोलैं, दिशि दिशि मयूर
नाचत डोलैं, विष विरह केवार मनहुं खोलैं;
उन विन निकसत जिय तरसि तरसि ॥
श्रीवद्रीनारायन कविवर, सरसिज सर
मिरजापूर सहर करि प्यार यार लग जाय जिगर,
तन मन वारूं पग परसि परसि ॥२॥

अलि मान मान ना कीजै वसि सावन सोक नसावन मैं
मन भावन सों मुख मोर मोर ॥ दृगवान कान लौं
तान तान, भौंहन कमान जुग जोर जोर ॥ टेक ॥
उमड़त नभ घुमड़त घनकारे धार धरे धावत मतवारे
श्रीवद्रीनारायन जू लखिये गरजत करि चहुँ ओर सोर ॥३॥

कोकिल कल कूजत डार डार, लागत नहिं मन उन विन हमार ॥
नव नीरद उनये छन छन छन, छन छवि छवि छाजत ।
मोर सोर, चहु ओर मचावत, दादुर बोलत बार बार ॥

कारी निपट डरारी जामिन, विधु वदनी विरही गजगामिन,
करि वेचैन मैन कल कामिन, पैन वान जनु मार मार ॥
श्रीवद्रीनारायन कविवर दिल श्राय हाय लगि जाय धाय गर,
नटनि हटनि, मुसुक्यानि मुरनि पर तन मन डालूं वार वार ॥४॥

घुमड़त घन गरजै वार वार, वोलत मयूर चढ़ि डार डार ॥टे०॥
झूलत मलार गावत कामिनि, किलकत कोकिल दादुर
जामिनि, दसहूँ दिसि तें दमकत दामिनि,
मानहु मनोज तरवार धार ॥
हरियारी चहु श्रोरन छाई--तापैं वीरवधू अधिकाई,
देती छिति छवि लखि सुख दाई,
मन मानिक जनु वार वार ॥
ससि वदनी सजि सूही सारी, जुव जन गन मनमोहन वारी
मिलती नाह नेह निजधारी, मान मान हिय हार हार ॥
श्रीवद्रीनारायन पिय विन, करि वेचैन मैन मन छिन छिन
कहरत कोकिल क्रूर कसाइन, कूक हूक हिय मार मार ॥५॥

ए पिय पावस भूपति आये ॥टेक॥
घन कारे कारे मतवारे दतवारे समताये,
गरजनि जनु वाजति दुन्दुभि दादुरन की छवि छाये ॥
इन्द्र धनुप को धनु लाये धरि वूँदिन सर वरसाये,
ग्रीपम रिपु ढूँढत छन छन छन, छवि करवाल लखाये ॥
जीगन गन दीपावलि तापै मोरन नाच नचाये,
झिल्लीगन झनकार चहूँ दिशि वाजन रुचिर वजाये ॥

ऐसे सजि सजाय चलि आयो चितवत चितहि चुराये,
बकनि पंक्ति को मुक्त माल उर बद्रीनाथ सुहाये ॥६॥

बदरा गरजि गरजि दुख देत ॥ टेक ॥
तरु पै झिल्ली कारी निशि में दादुर बोलत खेत ॥
पौन प्रबल पुरवाई झकोरत तोरत बृक्ष निकेत
चपला चमकि चमकि चौंधी दै चटपट करत अचेत ॥
सुन्दर स्वच्छ वितान बनायो सुथरी सेज सपेत ।
बद्रीनाथ पिया बिन सेजिया सांपिन सी डस लेत ॥ ७ ॥

चपलारी चहुदिसि चमकि२ छिति चूमैं—जलद घन बूनन बरसैं ॥टे०
चलत सुगन्ध सनी पुरवाई—दुखदाई तन परसैं
श्रीबद्रीनारायन जू पिय बिन आली तिय तरसैं ॥ ८ ॥

घिरि श्याम घटा घहराय रहीं,
चमकनि चपला छवि छाय रहीं ॥ टेक ॥
घन बूननि की बरसनि सौं,
छिति कछु औरहि शोभा पाय रहीं ॥
नाचत मयूर बन में प्रमुदित,
मोरिन कल कूक सुनाय रहीं ॥
मालती मल्लिका हरसिंगार जूही भौंरन ललचाय रहीं ॥
श्रीबद्रीनारायन पिय बिन, विरही बनिता बिलखाय रहीं ॥ ६ ॥

फेरि मुरवा लागे कहरान—कैसे बचैंगे अब प्रान ॥ टेक ॥
लागे गगन सघन घन घुमड़े—घेरि घेरि घहरान ॥
बूंदन की बरसनि पुरवाई सरस समीर चलान ॥
श्रीबद्रीनारायन बिन लागीं छतियां थहरान ॥ १० ॥

घोर घन सघन लगे घुमड़ान, घेरि घेरि घहरान ॥टेक॥
बिस्तारनि बर्षा बहार बर—बारि बिन्दु बर्षान।
बिलसत ब्योम बकावलि बीर बधून वृन्द बिलगान ॥
चहु ओरन चौंधी दै लोचन, चपला चपल चलान।
चोरनि चित चांदनी चमक चिन चकि चकोर सकुचान ॥
सीरी सरस सुगन्ध सनी संचार समीर सुहान;
सोहै सहज स्याम सरसीरुह सो सर सलिल महान ॥
कुटज बकुल कदम्ब कुसुम करमा कलाप विकसान;
कल कोकिल कुल की किलकारनि केकिन की कहरान ॥
जगत जमात जुरी जीगन जो वन जनु जामिन जान;
जरित जवाहिर जोति जुवति जन ज्यों जौहर जहरान ॥
मधु मय मुकुल मालती मंजुल मनहि मनोहर मान,
माते मुदित मलिन्द मधुर मकरन्द मयी मदिरान ॥
लहलहात लोनी लागत अतिँ ललित लवंग लतान;
लोचन लेत लुभाय अली अलबेली लहर लखान ॥
गरबीली गजगामिनि गन लागी झूलन करि गान;
श्री बद्री नारायन पिय हिय, लागन लागीं आन ॥११॥

आली भोरहि आज घुमड़ि घन घेरे आवत हैं ॥टेक॥
इन्द्र धनुष घन बूँदी सर त्यों, चपला कृपान को साज ॥
यों बनि वीर वेष आयो वध बिरही बनिता काज;
श्री बद्री नारायन लै पिक दादुर सैन समाज ॥१२॥

भीजत सांवरे संग गोरी,
बरसाने बारी रस बोरी।
ज्यों घन श्याम मिली दामिनि घनश्याम भामिनी भोरी॥
जोरी होत निहाल जुगल गल ललकि भुजन जुग जोरी।
वृन्दावन कालिन्दी कूलनि कलित निकुंजन खोरी॥
दोउ प्रेमघन दुहुँ के माते इतराते चित चोरी॥

[धुरिया मलार

घन उमड़ि घुमड़ि नभ धावैं—अबहीं ते विरहीन डरावैं॥टेक॥
यद्यपि नहिँ बरसैं तौ हूँ सजनी सुखमा सरसावैं॥
मधुर अलापी मोर चातकन चित चितवत ललचावैं॥
उड़त बकावलि झिल्ली बोलीं पुरवाई वहि भावैं॥
श्रीबद्रीनारायन लखियै भूपति पावस आवैं॥

ये अबहीं ते लागे गाजन, बादल सैन मैन सम साजैं॥टेक॥
पावस सेनापति लीने चलो, विरही जन बध काजन;
इन्द्र धनुष धनु बूँदी सर असि छन छबि की छबि छाजन॥
दादुर मोर सोर के लागे, समर बाजने बाजन,
बद्रीनाथ यार या ऋतु में चहत चले कित भाजन॥

(हो) अबहीं ते मोर अलापैं कोकिल किलकैं कीर कलापैं॥टे०॥
मानहुँ वर्षा बधिक आगमन कहत विरही अबला पैं,
धार धरे धुरवा धावत चढ़ी चंचलता चपला पैं॥
कोऊ जात हाय बिनवै बलि बद्रीनाथ लला पैं॥

मेघ मलार

अब तो आओ प्रिय प्यारे,
कारे कारे घन घूमि घूमि छिति चूमि चूमि दमकत दामिन ॥टे०॥
झोंकत रहत पवन पुरवाई—कूकत कोकिल क्रूर कसाई,
कुञ्जन मोर सोर दुख दाई—बिकल करत विरही कामिन ॥
बद्रीनारायन जू तुझ विन, नहि लगत पलक सपनेहु पल छिन,
सूनी सेजिया दुख देत कठिन, मानहु कारी व्याली जामिन ॥

चपला चमकै चमकाली—आली बनमाली बिन—
काली निशि मैं कूकत कोकिल कलाप ॥ टेक ॥
बद्रीनारायन जू नीरद, बरसत उमड़े आवत सब नद,
नाचत मयूर गन मतिमद, जिय डरपावत करि अलाप ॥

आयो पावस अब आली—बनमाली पिय विन व्याली सी
डँस जाय हाय यह कारी रैन। टेक ॥
नव नीरद उनये जनु आवत, विरहिन पर साजे मैन सैन,
छुन छुन छुन छवि छहराति मनहु कर लसति कलित करबाल मैन॥
झिल्ली दादुर मोर सोर चहुँ ओरन सों दुख दैन ऐन,
बद्रीनारायन जू पिय विन, निसि वासर बरसत रहत नैन ॥

घन उमड़ि घुमड़ि नभ धावत ॥ टेक ॥
काली रैन डराली लागन चपला चख चमकावत।
ता विच वोलि पपीहा पी पी करि छतियाँ दरकावत ॥
चोपनि चाव भरे चहुँ ओरनि मोरन सोच मचावत।
बद्रीनाथ रसिकवर ता छुन राग मलारहि गावत ॥

चपलारी—चहुँ दिसि चमकि चमकि छिति चूमै,
जलद घन बूनन बरसै ॥ टेक ॥
चलत सुगन्ध सनी पुरवाई, दुखदाई तन परसै—
श्रीबद्रीनारायन जू पिय बिन आली जिय तरसै ॥

मे

वन में मोरवा कहरान लगे सुनि धुनि धुरवा नियरान लगे ॥टे०॥
चहुँ ओर चपल चपला चमकत, छिति इन्द्र धनुप दिशि २ दमकत;
पुरवाई पवन सरस रमकत, लखि विरही जन विरहान लगे ॥
श्री बदरी नारायन कविवर तिय भूल रहीं झूला घर घर;
फूलन बगिया सोंही सजकर चित चंचरीक ललचान लगे ॥

बरसाती ठुमरी

दसहूँ दिशि दुति दमकत दामिन, जीगन जुत जगमगात जामिन ॥टे०॥
बद्री नारायन जू पिय बिन, गरजत घन रहत सदा निशि दिन;
पिक चातक मोर सोर छिन छिन, व्याकुल कीनो विरही कामिन ॥

मलार की ठुमरी

इत आओ यार सैलानी, घेरि घटा घन बरसत पानी ॥टेक॥
आय धाय गर लागो प्यारे—करो केलि मनमानी ॥
बद्रीनाथ पागरी धानी जैहैं भीग दिलजानी ॥

कोइलिया छिन छिन कूकि कूकि दई मारी, अरी जियरा डरपावै ॥टे०॥
सूनी सेज रैन अँधियारी—रहि रहि जिय घबरावै ।
श्री बदरी नारायन जू पिय बिन निस दिन नींद न आवै ॥

खेमटा

कहूँ जनि जावो—हो—दिलजानी ॥टेक॥
करत सोर चहुँ ओर मोर गन, वन वन बरसत पानी।
वद्रीनाथ बिलोकत काहे न जोवन जोर जवानी॥

घटा घन घेरी, सुनरी परी ॥टेक॥
चमकि चमकि चपला डरपावे, सूनी सेजिया मेरी॥
श्री वद्री नारायन जू पिय आवत है सुधि तेरी॥

बरसाती खिमटा

क्या अलबेली नवल ऋतु आई रे ॥टेक॥
स्याम घटा घन घोर सोर चहुँ—ओरन देत दिखाई रे॥
चमकि चमकि चंचला चोरि चित—दिशि दिशि देत दरसाई रे॥
करत सोर चहुँ ओर मोर गन—बन बन बोल सुहाई रे॥
वद्री नाथ पिया की आली—अजहुँ न कछु सुधि पाई रे॥

आली काली घटा घिरि आई रे ॥टेक॥
सनि सनि सरस समीर सुगंधन सनकत सुख सरसाई रे॥
वद्री नाथ अजौं नहिँ आये सजनी सुधि विसराई रे॥

आज आली मोर वन बोलैं ॥ टेक ॥
घन करि करि मतवारे—दत वारे सम डोलैं॥
ता छुन वद्रीनाथ पियारे सौतिन के संग डोलैं॥

चले जाओ ए मेरे सैलानी ॥ टेक ॥
उमड़ घुमड़ घन घटा घूमि छिति चूमत वरसत पानी॥
सूने भवन सजी सेजिया यह वद्रीनाथ दिलजानी॥

झूला गौरी में

बलिहारी बिहारी न झूलूँ ॥ टेक ॥
थरथरात पग हरहरात हिय वारी वयस हमारो ॥
श्रीवद्रीनारायन दिलवर धाय धाय लगि जाय आय गर हाय।
सुनत नहिँ अरज गरज तुम मोहें डर लागत भारी ॥

हिंडौर का खिमटा

हिंडोरे रे झूलैं राधिका श्याम ॥ टेक ॥
वृन्दावन कालिन्दी के तट सुखमा अति अभिराम ॥
वंसी टेरत हरि उत आवत गावत प्यारी ललाम ॥
झूलत लाल लली हैं झुलावत सखि वृजवासी वाम,
वद्रीनाथ नवल यह शोभा निरखत रहत मुदाम ॥

हिंडोरे उझकि झुकि झूलै ॥ टेक ॥
मनमोहन वृष भानु नंदिनी, कुंज कलिन्दी कूलैं ॥
वद्रीनाथ देखि सुभ शोभा मगन मदन मन भूलैं ॥

श्याम हिंडोरवा झूलैं री गुयां जमुनवां के तीर ॥ टेक ॥
मोर मुकुट वनमाल विराजत, कटि तट सोहत चीर ॥
लचत लंक लचकोली झूलत प्यारी होत अधीर ॥
ललित कंचुकी दीसत फहरत अंचल लगत समीर ॥
वद्रीनाथ हिये विच विहरो—राधा श्री वलबीर ॥

सावन

सावन सूही सारी सजि सखी सब झूलैं हिंडोर ॥ टेक ॥
कोयल कूकत कुंजन, मोर मचावत सोर ॥

घेरि घटा आई दामिनि चमकि रही चहुँ ओर ॥
बद्रीनाथ पिया बिन मानत नहीं मन मोर ॥

हिंडोरा वा झूला

राग सोरठ मलार

उझकि झुकि झूलनि छबि न्यारी, हिंडोरे मैं पिय सँग प्यारी ॥टे०॥
सजल जलद जूमि जूमि नभ घूमि घूमि झूमि झूमि
लेत छिति चूमि चूमि छन छन छबि छहरात
दरसात, पात पातनि बून पात वारी ॥
कलित कलाप कोकिलान की कलोल किलकारत
करीलन कदम्बन के कुञ्ज कुञ्ज—कीर कुल भरि
भारी; अधिक अथोर मोर सोर चहु ओर पिक,
चातक चकोर के समान की अवाज आज
बद्रीनाथ हाथौं हाथ लेत मन मांगि छवि हगन टरत टारी ॥

झूलैं हो हिंडोरे सावन मास सजीले, सरस सरयू के कूलैं ॥टे०॥
सीय सीय-वल्लभ रति रति-पति की उपमा नहि तूलैं झूलैं हो ॥
लली लंक लचकीली लचकन मचकत पाटन हूलै झूलै हो ॥
श्री बद्रीनारायन जू मन यह छबि कबहुँ न भूलैं झूलैं हो ॥

झूलत श्यामा श्याम आली, कालिन्दी के कल कुंजनि मैं ॥टेक॥
नवल लली राजत छबि छाज़त, नवल अली गन संग
गावत नवल राग अभिराम आली ॥

लटकन लट काली घुघराली, शरद चन्द पर जनु जुग व्याली
सुखमा ललित ललाम आली ॥
ऐसी अमल अनूप छटा पर—श्री बद्रीनारायन कविवर
वारत छवि-सत काम आली ॥

खेमटा

घुमड़ि घन घेरन लागे आली ॥टेक॥
चहुं ओरन चौंधी दै दै चख, चमक रही चपला चमकाली ॥
गरजनि घोर सोर की धुनि विरही तन तावन वाली,
श्री बद्री नारायन जू पिय जनु सुधि भूलि रहे वनमाली ॥

चितै जनु चातक लौं चित चोरैं ॥टेक॥
नील कंज दुति हारी गिरि कज्जल अवली घन घोरैं ॥
मनहु मत्त मातङ्ग मैन के धीरज के तरु तोरैं ॥
मन्द मन्द अरु मधुर मधुर धुनि, करत हरत मन मोरैं ॥
वाह! वाह! देखो तो वदरी नारायन या ओरैं ॥

बिमल वन बागन मैं, वर्षा की आई वहार ॥टेक॥
गुलवास, गुलशब्बो सजकर फूले हार सिंगार ॥
छवि मालती मल्लिका लखि मन मधुकर दीनो वार ॥
विरही जन वध काज खिलीं कर केतक लिये कटार ॥
कल कदम्ब के कुसुम गेंद हैं मनहु मनोहर भार ॥
गुल मेहदी गुल दोपहरी रंग वदल वने दिलदार ॥
हरियारी चहु ओरन छाई डोलत सुखद बयार ॥
चातक मोर चकोर कोकिला बोलत डारहि डार ॥
श्री बद्री नारायन जू पिय चलि लखिये इक वार ॥

हिंडोरे झूलत प्रेम भरे,
झूलत लाल लली हैं झुलावत, सब ब्रज वाल खरे ॥ टेक ॥
प्यारी मुख पैं वेसर राजत मोती माल गरे, इत
मनमोहन होत सुसोभित वंसी अधर धरे, हिंडोरे ॥
गाय मचाय मचाय सरस रस, सब दुख द्वन्द हरे ॥
वद्रीनाथ देखि नभ शोभा, सुर गन सुमन झरे ॥

आहा कैसी छवि छाय रही—झूलन की हूलन भाय रही ॥टे०॥
मचकत हिंडोर नासा सकोर, पिय हिय प्यारी लपटाय रही ॥
सिसकीन सोर भौंहन मरोर चपलति चख चोट चलाय रही ॥
श्रीवद्रीनारायन जू जिय में शोभा सरस सोभाय रही ॥

झूलैं राधिका श्याम वही वन ॥ टेक ॥
कलिन्दी तट झूलन शोभा देखि लाजत काम वही वन ॥
इत मनमोहन वंसी वजावत उत गावत वाम वही वन ॥
कारी जुलफनि में फँसि फँसि कै उरझत मोती दाम वही वन ॥
वद्रीनाथ रसिक यह शोभा निरखत आये जाय वही वन ॥

हहा ! अब झूलन झूलन दे रे ॥ टेक ॥
कूलन कालिन्दी के कदमन कलित कुंज नेरे;
केकी कलरव करत नचत चातक चहुँ दिशि केरे ॥
झूलन सुख मूलन के लागे नाक सकोरन;
झूठी संक लंक लचकन करि, आय लगत हिय मेरे ॥
फूलन सों फूले वन छवि जनु चहत चितै चित चेरे;
जिनपै मधुर मंजु गुंजत अलि मदन मंत्र जनु टेरे ॥

स्फुट बिन्दु

स्फुट बिन्दु

ठुमरी

बरबस लावत चित पॅच बीच, लटकाली घूघर वालियाँ ॥टे०॥
चमकीली चौकाली आली; मानहुँ पाली व्यालियाँ ॥
बद्रीनाथ फँसावनि जाली वाली चाल निरालियाँ ॥

जानत हूँ सैयां आज चले मोरारे नयनां फरको जाय ॥टेक॥
टूटत बन्द चोली के, चुड़िया कगना सरको जाय ॥
बद्रीनाथ आज मोंराई सन जियरा धरको जाय ॥

सखीरी जनि पनियां कोऊ जाव—
सखी मग रोकत ठाढ़ो नन्द कुमार ॥टेक॥
बद्रीनाथ चुरावत चित नित—वेन वजाई वंसीवट—जमुना तट॥

संवलिया रे हो सैयां लागी तुमसों प्रीत ॥टेक॥
पहिले प्रीत लगाय पियारे, अब कत करत अनीत ॥
बद्रीनाथ यार अलवेला बांको मोहन मीत ॥

गुजरिया रे हो गुयां पानी कैसे जांव ॥टेक॥
नित नित रार करत कुञ्जनविच, मोहन जाको नावँ ॥
बद्रीनाथ न रहिवे लायक अब यह गोकुल गाँव ॥

सखि सोवत रहीं सपन विच पिय अपना मैंने देखा ॥टेक॥
धेनु चरावत वंसी बजावत तेहि विच गावत प्यरी गुंयारे ॥
बद्रीनाथ कांकरी लैकर मोपर मारत प्यरी सैंयारे ॥
एतने में खुलि गई नीद हाय ! पिय अपना मैंने देखा ॥

तेरी अलवेली चाल मोहे मेरो मन लीनो रे ॥टेक॥
लटकाली काली घुघराली चमकाली चित चोरन वाली ॥
मतवाली मानहु पाली व्याली, छवि छीनो रे ॥
नैन मैन के बान निहारे रतनारे कारे मतवारे ॥
कंज खंज करि मीन दीन वासहि जल दीनो रे ॥
चंद अमंद बदन सुंदर पर, लाल प्रवाल सदृश मधुराधर ।
मंद मंद मुसुकाय हाय वरवस वस कीनो रे ॥
श्रीबद्रीनारायन दिलवर, डाल दियो जादू जनु हम पर ।
अव नहिं नेक नजर चितवत, छलिया छल भीनोरे ॥

चित चितवत होय अचेत गयो,
बांकी विलोकि बृजराज बनक ॥टेक॥
सवही सुधि भूलि भई भरमाती—
नित कुंज गली सुनि श्याम सनक ॥
बद्रीनारायन बिवस भई सुनि तान तान वंशी की भनक ॥

ये लँगराई के वैन सनम ! हमसे न बनाओ रे ॥टेक॥
ग़ैरों के गले लग जाते हो, लख के हमको शरमाते हो ॥
बद्रीनारायन जू प्यारे अब तो न सताओ रे ॥

प्यारे पीव हमारे नयन तुम पै उलझाने (यार) ॥टेक॥
वद्रीनाथ मोहनी मूरति, मानहुँ ढली सील की सूरति,
लखि लखि मैन लजाने ॥

हो चलो छोड़ो हमे मुरकी कलाई रे ॥टेक॥
वदरीनारायन पिय जोर न जनाओ,
जाओ रिस जनि उपजावो, जो चाहो अपनी भलाई रे ॥

दिखला मुख टुक चाँद सरिस,
तन मन धन डालूँ वारियाँ ॥टेक॥
वदरीनाथ चितै चित चोरत, चंचल चख रतनारियाँ ॥

इन बगियन फेर न आवना ॥टेक॥
चंचल चंचरीक चंपा मैं, चखि जनि जनम गवांवना ।
वदरीनाथ वसंत वीते पर फिर पीछे मत आवना ॥

रस भरे नैन की सैनन सों मन, वस कर लै गयो सावलियाँ ॥टेक॥
गोलन कपोलन मैं लहुराती प्यारी काली अलकावलियां ॥
वदरी नारायन गाय २ विलमाय वनायो वावरिया रे ॥

प्यारे हाय हमारे सांवलियां कैसी वंसी वजाई रे ॥टेक॥
पड़त कान्न कर देत विकल वस, तानैं ऐसी सुनाई रे ॥
श्री वदरी नारायन जू जनु चोखे विखन वुझाई रे ॥

रतनारे नैन वारे ये रतनारे नैन वारे ॥ टेक ॥
काहे है मारत जान जान ॥ टेक ॥
बदरी नारायन ये तेरे अजब अनोखे भाले ये रतनारे नैन वारे ॥

आओ आओ नित बात न बनाओ जी ॥
घातन करत जनु जोरा जोरी जाओ जी ॥ टेक ॥
बदरी नाथ हाथ इत लाओ,
अबस न वरवस नितहिं सताओ जी ॥
तरसत रहत नयन दरसन बिन,
मिलो हाय अब न छबीले छल छाओ जी ॥

अब तोरी प्यारी प्यारी प्यारी सूरत
चित चोरत कारी कारी जुल्फन मन ॥टेक॥
श्री बद्री नारायन जू पिय—मारि भूठ जनु नैन सन ॥

ये लटकाली काली चमकाली आली घूंघर वाली
पाली व्याली मतवाली सम ॥टेक॥
बद्रीनाथ फसावनि डाली निपट निराली चाल अनूपम ॥

ठुमरी

तेरी चितवन मन मैं चुभी चैन चितये बिन नाहीं रे ॥टेक॥
पिय बद्री नारायन मनो मूरत मैन बस गई बरबस मन माहीं ॥

मीठी मूरत मेरे मन बसी—तेरी अलबेले छैल रे ॥टेक॥
सांवरी सूरत प्यारी चित चोर लेन वारी,
क्या सजी पाग सिर लसी ॥
लखि बद्री नारायन चख चारु
चितवन उर लोक लाज वस नसी ॥

अवस छेड़ो नाहीं रे मेरे पास नहीं मन मेरो ॥टेक॥
अय हाय समुझावै काहे कौन जिय ल्यावै,
यह सुनै सिखावन तेरो ॥
मत बद्री बद्री नारायन करो बचन रचन,
चले जाव जाव जनि घेरो ॥

छल बल कर दिलदार मेरा सैनों में जादू मारा ॥टेक॥
आकर गले लग जा तुम तरसत प्रान हमारा ॥
बद्रीनाथ तेरे मुख ऊपर चाँद सुरज छवि वारा ॥

अरज यही अब सुन लीजे (येजो) कीजै वस नहीं नहीं ॥टेक॥
श्री बद्रीनारायन पिय सों वैर ठानिवो भलो न जिय सों,
सखी सखी के बैन, अैन सुख होते कहीं कहीं ॥

जब कबहूँ इत आय जैयो जी।
तब सब दिन को फल पाय जैयो जी ॥टेक॥
श्री बद्रीनरायन दिलवर जैसे गाली देत
बिना डर वैसहि गाली खाय जैयो जी ॥

बहार की ठुमरी

गयो बाकें द्दगन द्दग जोर जोर,
लयो चितवत चित चित चोर चोर ॥टेक॥
दिखलाय नवल कछु बनक नई भौंहैं मरोर नासा सकोर ॥
बद्री नरायन जू मोह्यो मृदु मुसुकुराय मुख मोर मोर ॥

कान्हैया ने डगरिया छेंकी नागरिया मेरी,
हटको मानत नहिं नेकु लंगर ।.टेक॥
बद्री नारायन जू नटखट फेंको काँकरिया
कुचाली फोरी गागरिया मोरी ॥

कबहूँ ऐयो दिलदार गलिन, दरसन बिन तरसत रहत नैन ॥टे०॥
श्री बद्री नारायन तुम बिन, चित चैन है न प्यारे पल छिन,
दिन रैन मैन मान मलिन ॥

अँखियन वह बनक समाय गई,
सखि काह कहूँ कछु कहि न जाय ॥टेक॥
दिखलावत सुभ सांवरी सूरत, मन मैं मनसिज उपजाय गयो ॥
श्री बद्री नारायन दिलबर चितवत चट चितहिं चुराय गयो ॥

जेहि लखि सखि भाजत लाज मार,
सजनी वह छबि दरसाय गयो ॥टेक॥
चोखे चखनि चितै वह बीर, सुतीर सरिस द्दग होत पार ॥
बद्रीनाथ यार यदि मिलिना, तन मन वारूँ सौ सौ वार ॥

सब साज बाज बृजराज आज मेरे मन बस गई रे ॥टेक॥
सीस मुकुट कर लकुट विराजै कटि तट पर पीताम्बर छाजै,
लट घूँघर वाली व्याली, आली जिय डस गई रे ॥
बद्री नाथ सांवरी सूरत मानहु मदन मोहनी मूरत,
मतवारी प्यारी पलकन की चितवन मन में धँस गई रे ॥

दुखियाँ अखियाँ रोवत तुझ बिन, टुक दरस दिखा जाओ ॥टे०॥
बद्री नाथ यार तेरे बिन, सपनहु लगत न पल एकौ छिन,
यार कभी भूले से तो इन गलियन आ जावे ॥

शहाने की ठुमरी

ठगि गये आज ब्रजराज सो नयनवाँ ॥टेक॥
बिक बिन दाम गये, ध्यान ही को काम लये,
बिवस भये सुनि सरस नयनवाँ ॥
बद्री नाथ वीर हाय, वेदना कही न जाय,
चित चुभि गयो जुग दृग के सयनवाँ ॥

ठुमरी सिंदूरा

ये चित चोर चातुरी तेरी आज परी पहचान ॥टेक॥
मृदु मुसुक्याय लुभाय हाय मन मारत नैन बान ॥
बद्रीनाथ छयल छलबलिया तोह गई हम जान ॥

न लगो सैयां धाय धाय छतियाँ—
चलो हटो जानी हम सिगरी घतियाँ ॥टेक॥
बद्रीनाथ हाथ पकरो जनि, मोहे न भावै ऐसी प्रीत तुमारी
जावो जावो जहाँ रहे रतियाँ ॥

दिखला मुखड़ा टुक चंद सरिस, तन मन धन तुझ पर वारियाँ ॥टे०॥
बद्री नाथ चितै चित चोरथों चंचल चख मत मारियाँ ॥

ठुमरी सै लंग

रूसो जात आली री गुंया रे—बांको दिलवर यार ॥ टेक ॥
बद्री नाथ पिया जो मनावै रे—देहौं कान की बाली री ॥

मोरो आली री—नैनवाँ लगे नहीं मानैं ॥टेक॥
लोक लाज कुल की मरजादा रे—ये जुलुमी नहिं मानैं ॥
बद्री नाथ हाथ परि औरन के न हमैं पहिचानैं ॥

ना जानूं केहि कारनवां (गुयां रे) सजनां रूसो जाय ॥टेक॥
जिय धरकत हिय थर थर काँपत पिय बिन कछु न सुहाय ॥
बद्री नाथ जाय बरजोरी—लावो सखी समुझाय ॥

बन माली दिल दार (हो) टोनवाँ काहे कीनो रे ॥टेक॥
बद्री नाथ नेक इत चितवो रे मेरे बाँके यार ॥

ठुमरी

दिलवर दिल लै कित जात चले
उर बस आय धाय लग जाओ गले ॥टेक॥
चतुराई निठुराई लंगराई को जानत तुम फन्द भले ॥
बद्री नारायन बाँके यार—आफत के सिगरे ढंग तुमार,
छन-छबि सी छवि छहराय'चले ॥

झिझौटी की ठुमरी

मैं तो जात रही पिया की सेजिया,
(गुयां) मोहे नजर लगा दीनों ॥टेक॥
कोऊ सौतन आइकै, औचक मोको देखि—
बद्रीनाथ कहूँ कहा मोहें दगा दीनोरी ॥

बनमाली री—औचकहीं मन लै गयो ॥टेक॥
साँवरी सूरत माधुरी मूरत रे दिखलावत छल कै गयो ॥
श्रीबद्रीनारायन जू पिय जनु जादू कछु कै गयो ॥

ठुमरी

सैनन नैन कटारी कैसी यार तुमारी ॥टेक॥
मन्द मन्द मुसुकात जात, सकुचात लजात निहारी ॥
नाहकही गाहक भयो जियको, जनु जादू कछु डारी ॥
अब मुख मोड़ छोड़ भाज्यो कित, लै मन सुरत बिसारी ॥
श्रीबद्रीनारायन जू नहिं भूलत चित छबि प्यारी ॥

ठुमरी

ना बोलूं विन पाये कगनवां ॥टेक॥
झूठी बात वहु भाँति बनावत, जाव जाव जनि छुवो रे जुवनवां ॥
बाली झूमक वाली लाना, तव फिर पीछे हाथ बढ़ाना—
कोरी मुहव्बत हमें न भावै, बद्रीनाथ दिलजानी सजनवाँ ॥

काहे गोरी ऐरी मुसुकाती जाती मन मन—
चपल चखन चितवत इत छुन छुन ॥टेक॥
बद्रीनाथ अमल छबि लखि लखि,
वारत लोक लाज तन मन धन ॥

*सुधि तैरी भूलत नाहिँ तनक जादू कछु मार करदाँ ॥टेक॥
बद्रीनाथ हाथ मल मल तुम ऊपर, आशिक मरदाँ ॥

मन मोती वारत मराल गिरधारी तोरे चाल पै ॥
गयन्द छाड़ि मद लखत जुगल पद धुन सुन नूपुर रसाल ॥

नाजुक हमरी कलैय्या जनि पकरो ॥टेक॥
बदरीनाथ यार दिलजानी पैय्याँ परूँ तोरी लेत बलैय्या ॥

प्यारी तोरी सुरतिआ नाहिं बिसरै ॥टेक॥
बदरीनाथ अमल आनन लखि भाजत लाजत मैन मुरतिआ ॥

सजन प्यारी २ सुरत मन भाई रे ॥टेक॥
अब इन दृगन जचत नहिं कोऊ, जब से सुध बिसराई रे ॥
बदरीनाथ यार की चितवन, अब मन बीच समाई रे ॥

नैनन नैन मिलाय मार जादू कछु किओ रे ॥टेक॥
बदरी नाथ छुटि अलकैं घुघुराली काली व्याली रे ॥
आली बनमाली मुसुकाय हाय मन लिओ रे ॥

जावो जी मोहन यार—मोरीं चुरिया दरक गईं रे ॥टेक॥
बदरीनाथ पिया जनि बोलो, भावै नहिं यहु प्यार ॥

*तेरी ए छल बल दी बाताँ, माड़े जीवन भाँवदाँ ॥टेक॥
बदरी नारायन टुक—सारे नाल न आवदाँ ॥

---

*पंजाबी भाषा

जाओ सैय्यां जाओ सैय्यां, ना बोलूं मैं ना बोलूँ मैं ॥टेक॥
श्री बदरी नारायन दिलबर धाय लगो बस उनके गर ॥
जान गई मैं तुमको नटखट हट, घूंघट पट मैं ना खोलूं रे ॥

लगर न कर कर धर बर जोरी रे ॥टेक॥
जाओ २ बहुत न करो बर जोरी रे ॥

काफ़ी

देखो उत ठाढ़ो नन्द किशोर—
जनि जाओरे कोऊ जमुना की ओर ॥टेक॥
बद्रीनाथ करत लंगराई, चित चोर चितै चित लयो चुराई,
सौंहीन करि दृग भौंहन मरोर ॥

भाजत ही कत पिचकारी मार,
झकझारे तोर मोतियन की हार ॥टेक॥
रंग बरसावत गावत धमार, सुख सरसावत जावत अपार
बदरीनारायन बांके यार ॥

चितवत चित लै गयो चोर, मुसुक्याय मंजु मुख मोर मोर ॥टे०॥
बदरीनाथ पिया पनघट परे वाके बांको दृग जोर जोर ॥

मेरो औचहि मन हर लीनो, छल बल करि चित छीनोरे ॥टे०॥
बद्रीनाथ दिखा मुखड़ा टुक, चितवन में बस कीनोरे ॥

क्या दिल बीच बिचारा रे तज दीनो देस हमारा रे ॥टेक॥
बद्रीनाथ तेरे बिन सूना लगत सकल संसारा रे ॥

बद्रीनारायन बांके यार, लगि जावो गले से करूँ प्यार ॥
मुसुक्याय मूंठ सो गयो मार, चंचल दृग अंचल दिशि निहार,
चितवत चित चोर लयो हमार ॥

छतियाँ न लगो वनवारी श्याम
घतियाँ हम जानी तिहारी श्याम । टेक॥
बद्रीनाथ भई सो भई कछु एसई भाग हमारी श्याम ॥

प्यारी प्यारी प्यारी तेरी बात,
यार दिलदार प्यार कर आजा इत आजा इत,
मेरे पास—वारूँ तूपै तन मन ॥टेक॥
साँवरी सूरत मन मोहनी मूरत यार उर मोतियों का हार,
देखि दृग-देखि दृग, भृंग लजात कंज खंज ते न कम ॥
बदरीनारायन कविवर सुभ सुर गाय राग रसीली सुनाय,
भोरि चित्त-भोरि चित्त मुसुकुरात कल नाहीं पल छुन ॥

बाँके बाँके तिहारे ये नैन, मीन छवि छीन बनावत,
कहा कहूँ-कहा कहूँ कह न जात, जनु जुगल कमल ॥टेक॥
बद्रीनारायन दिलबर ने कहीं निहार, गयो जनु जादू मार,
मेरी जान चोखे बान, मनहुँ मयन, छवि सरस अमल ॥

लखनऊ के चाल की

जावो जावो जाऊँ मैं तिहारे संग नाही रे—
काल्ह खेल खेलत मरोरी मोरी बाहीं रे ॥टेक॥
श्रीबदरी नारायण चल हट है तू निपट निडर नटखट,
छल बल भरेई रहत मन माहीँ रे ॥

मैं तू तेरी साँवरी सूरत पर वारी,
नंद के किशोर चित्त चोर वनवारी रे ॥टेक॥
श्रीवदरी नारायण दिलवर देखन दे छवि अब नैनन भर,
जाँव घर चाहैं वैर मानै व्रजनारी रे ॥

काहे ऐसी करत निडर बरजोरी रे,
चलो हटो जावो छोड़ देओ गैल मोरीरे ॥टे०॥
श्रीवद्रीनरायन झटपट आय धाय हिय लिपट चट,
नटखट चोली की चली तू तनी तोरी रे ॥

ठुमरी

काहे मारत नैन सैनन भाला री ॥टेक॥
सुन हे मृग लोचनि ! जा दिश नेक विलोकि दियो तुम—
तापै तुरत जादू जनु डाला री ॥ १ ॥
छवि ससि संकोचनि ! देखि लियो जिन रूप तेरो
कहरत करि आह भरत नाला री ॥ २ ॥
परी मेरी प्यारी ! कारी अलकावलि घेरे जनु
विष धर व्याल युगल काली री ॥ ३ ॥
"लू पै रति वारी" ! जिन इन लीनो डस परिगो
वस जनु उन सो यम सो पाला री ॥ ४ ॥
हे हे कल कामिनी ! योगी यती तपसी तज तप
सब फेंक दियो मृग को छाला री ॥ ५ ॥
दमनी दुति दामिनि ! भगत चले भगतीन छाँड़
तजि छाप तिलक कण्ठी और माला री ॥ ६ ॥

है ! है !! दिलजानी !!! हम तो हुए हैरान जान
क्यों दिल को करत हो अरे वाला री ॥ ७ ॥
तू है लासानी ! श्रीबदरीनारायन जू कवि
को काहे देत रहत टाला री ॥ ८ ॥

सखी कौन सी चूक परी रतियां बतियां नहीं बोलत रूसी रहे ॥टेक॥
लंगराई करि करि तरसावत, सरसावत छल बल घतियां ॥
बद्रीनाथ यार दिल जानी—आय लगो अब तो छतियां ॥

छतियन पर भौंरा भूल रहे—बिसराय कमल के फूल रहे ॥टे०॥
श्रीबद्रीनारायन लुभाय तज पास मेरो कतहूँ न जाय—
छबि छकित निहारि अतूल रहे ॥

बहियां मरोरी गोरी—चुड़ियां दरक गई मोरी । टेक॥
श्री बृजचन्द बड़ो अभिमानी, आनि गही औचक युगपानी ।
लपटि झपटि चट मार लकुट सों, सीस की गगरी फोरी मोरी ॥
बद्रीनाथ छयल अति नागर, रूपशील गुन बीर उजागर ।
मुख चूमत बरजों नहिं मानत, लगि गरवां बर जोरी जोरी ॥

अब हम सों नहिं काम तुमैं कछु,
जाव जी जाव जी जावो चले पिया ।
अनखात जात पछतात खरे,
अरे होत कहा अब हाथ मले पिया ।
बद्री नारायन माफ करो बस
जाय लगो उनही के गले पिया ॥



युवक प्रेमघन (२० वर्ष)

दिखला मुखड़े की झलक अलक,
घन बीच बिहसि बिजुरी चमकावत ॥
सखि स्याम सीस की मोरपखा लहि
कै समीर सुखमा सरसावत ॥
दृग वान कान लौं तान तान,
धरि भ्रू कमान छतियां दरकावत ॥
वद्रीनाथ विलोक कोर दृग,
मृग अलि मीन खंज सकुचावत ॥

श्री व्रजचन्द अमन्द प्रभा लखि प्रेम विवस भई नागरिया ॥टे०॥
धरे अधर मधुर पर ललित वेनु, सिर सोहत सूही पागरिया ॥
पट लसत लंक पर पीत हरत चित रोकन नाहँक डागरिया री ॥
लखि वद्रीनाथ विलोकि रही तन, सुन्दर रूप उजागरिया री ॥

उन विन पल छिन नहीं पड़त चयन,
निस बासर वरसत रहत नयन ॥टेक॥
नहि भूलत वाकी छवि जिय सों,
जिहि लखि लखि भाजत लाज मयन ॥
निरखत हरत जगत सत मति मति,
दृग मृग मद मतवारे सयन—
मन मोह्यो श्री वद्री नारायन मीठे २ बोलि वयन ॥

दरसन विन तरसत रहत नयन ॥टेक॥
आय लंगर विच डगर रगर कर कर धर सौंप्यो मनहु मयन ॥
कहा कहूँ आली बनमाली, मुरली वजाय, मधुर २ सुर सरस

गीन गाय, बद्रीनाथ भावनि बताय बावरी बनाय,
हाय तबहीं सो चित चैन है न ॥

आली री ! आन चित चुभ गई माधुरी सी मूरतिया—
काली काली अलकावलि व्याली सी बस डस गई मन मेरो,
कहा कहूँ हाय अब कल न परत है (आनचित) ॥टेक॥
श्री बद्री नारायन जू पिय अब नहि दरस दिखावें;
कल न परत छुन, धीर न धरत मन (आनचित)

दिना दस के जोवनवां हैं मेहमान—हो जनि जान अजान ॥टे०॥
चार दिना की चमक चांदनी—तापै कहा इतरान ॥
स्याम सघन घन घिरन जान वा दामिनि दुति दरसान ॥
श्रीबद्रीनारायन से बुध जन को यह अनुमान ॥

पगरिया तोरी सूही रंगाऊं ॥टेक॥
मैं हूँ सूही चुनर महिन् रंग रंग मिलाऊं ॥
जयपुर से रंगवाऊ ढूंढ़कर ढाखे से मंगवाऊं ॥
पाग बांध मुख चूमूँ प्यारे जिय की कलक मिटाऊं ॥
श्रीबदरीनारायन दिलबर तुझको बांका छयल बनाऊं ॥

लगनिया लागी कैसे छुड़ाऊं ॥ टेक ॥
कैसी करूं कित जाऊँ अपनो मन अपने ही बस मैं नहि पाऊं ॥
जो जग में चहुँ दिसि दिखाय तेहि कैसे हाय भुलाऊँ ॥
प्रेम रोग को यार छोड़ नहिं औरन हे जेहि लाऊँ ॥
श्रीबदरीनारायन कैसे यह उलझन सुलझाऊँ ॥

कभौ इत ऐहौ प्रान पियारे ॥
जमुना तीर कदम की छहियां, अहलादित उर लैहै
अब कब आय पियारे पीतम, वंसी तान सुनैहै ॥
वैन सुधा साने कानन में, आय कवै धौकैहै ॥
वदरीनाथ बिछोहि रोआयो, सो कब आय हँसैहै ॥

खिमटा

पापी नैना नहीं वस मेरे ॥टेक॥
रूप अनूपम देखत ही ये, जाय बनत चट चेरे ॥
पुनि इन चैन है न सपनेहूँ, नहि विन छवि छिन हेरे ॥
लोक लाज तजि यार गलिन मैं करत रहत नित फेरे ॥
श्री वदरी नारायन जू फँसि प्रेम जाल मैं हेरे ॥

जोगिनियां काहे बाजावत बीन ॥टेक॥
जुगल लोल लोचन लोहित लखि लाजत खंजन मीन ॥
मानहुं उभय गेंद मनसिज के उभय पयोधर पीन ॥
लंक लचत छन छन छन छवि की लेत मनहुँ छवि छीन ॥
वदरी नारायन बियोगिनी विरच्यौ वेश नवीन ॥

लावनी

छिपा के मुखड़ा ज़ुल्फ़ सियह में गहन लगाओ न माह में—
ख़ाले ज़न खदां दिखाकर अवस डुवोवो न चाह में ॥टेक॥
ख़रावो रुसवा हुए व लेकिन सदा तुमारा ध्यान रहा—
हमेशः प्यारे-तुम्हारे फ़िराक़ में हैरान रहा ॥

छोड़ तमा भी दौलत हशमत सहेरा मे ये जान हा;
चाह रही हरगिज़ न और कुछ एक तेरा ध्यान रहा,
जलाना दिल का सहज है ए बुत ? मुशकिल पड़ती निपाह मे
खाले ज़न खदां…………………

कारे इश्क का उठा के हम तो आलम से बेकार बने
डुबो के मज़हब-सारे जब इस मै से सरशार बने;
पर गुमराही छोड़ के प्यारे अब तो हम हुशियार बने;
करके दोस्ती यार तुम से सब से अगियार बने;
बहर इश्क में डूबी किश्ती को तो लगा देवो थाह में ॥
खाले ज़न खदां…… …………

खुदा राम से काम न रखकर ज़बां प तेरा नाम रहा,
तोड़ जनेऊ गले में तेरे जुल्फ का दाम रहा;
मैखाने के सिवा न बुतखाने में, काबे से काम रहा,
बजाय पुस्तक हाथ में तेरे इश्क का जाम रहा;
हम तो सब कुछ खोकर बैठे हुये हैं अब तेरी राह में ॥
खाले ज़न खदां…………………

पिला पिला कर शराब ऐ साकी ! तू बनाया मस्ताना
सब को खोकर—नाम अलम में धराया दीवाना;
फिदा हुआ है यह दिल तुझ पर ऐ बुत ! मिस्ले परवाना
माल जान की—नहीं परवाह ज़रा दिल में आना;
बदरी नारायन है राज़ी—बस टुक तेरी निगाह में
खाले ज़न खदां…………………

जनि करो यार दिलवर जानी छल बल घतियाँ ॥टेक॥
मुसुक्यानि मनोहर मेरे मन मानी, मोर मुकुट माथे मैं मंजुल,
मनो मैन की मूरतिया ॥
बिलसत वारिज वदन वेनु श्रुत बर बाजत बानी,
बद्रीनाथ बिलोकि बनक बन बिसरत नाही छुन सूरतिया ॥

पंजाबी प्यार

संगीत

(हो) निरतत नटवर वृन्दावन ॥टेक॥
बिलमावत गावत मुसुक्यावत, छवि निरखत कछु बनक नई;
मनसिज मन मन देखि लजानी, लोचन सावक मृग द्दग मानो;
काह कहूँ चितचोर चरित चित चुभि जात चीखी चितवन (हो) ॥

कहूँ का हाल मैं आली, लिया चित चोर वनमाली ॥
जुल्फ छूटीं वः लट काली, ड़सैं दिल को सु ज्यों व्याली ॥
कान में सोहती बाली, मधुर अधरानि मैं लाली ॥
न बद्रीनाथ की खाली, मुरलिया मोहने वाली ॥

पंजाबी प्यार

ख्याल

सखियाँ री चलके सैय्याँ को मनाओ हो रूसो पिय दिलजानी ॥टे०॥
बिन देखे छिन चैन पड़त नहिं बिसर गई कुलकानी ॥
बद्रीनाथ यार सो अँखियाँ लगि कै अब पछितानी ॥

ध्रुपद

गूजरी विलोकि श्याम दामे अभिरामे हिये,
सोहतो अमन्द चन्द, चारु विन्द भाल, लाल ॥टेक॥
बद्रीनाथ हाथ लकुट, सोहत सुभ सीस मुकुट,
झलक अलक छलक पलक, गौवन मैं मराल ॥

रेखता

लख्यो इक रूप अभिरामा,
लजै लखि जाहि रति कामा ॥
लटैं लटकाली चमकाली,
चन्द पैं ज्यों जुगल ब्याली ॥
नयन कजरा रे रतनारे,
चुटीली चारु मतवारे ॥
वह बद्रीनाथ दिलजानी,
लिया मन भौंह जुग तानी ॥

छयल तू छली, मोरा रोकता गली ॥टेक॥
रोकता नारियाँ बिरानी जाने देय न पानी,
बद्रीनाथ यार जानी, सीखी चाल न भली ॥

बात यार जानी तू न मानी मेरी रे ॥टेक॥
बद्रीनाथ यार आओ गले यों न लग जावो,
दिन चार चमक चाँदनी है जोश जवानी ॥

जाब चली देखा इठलाना, काली नागिन सी बल खाना ।टेक॥
गोरी सूरत पर इतराना, जोशे जवानी से अँगड़ाना;
मस्ताना मन हाय दिखाना, दिल को कर देना दीवाना ॥
श्री बदरी नारायन दाना है उसको नाहक ललचाना;
भौंहन की कमान क्यों ताना, नैनों के ये बान चलाना ॥

खेमटा

राति वालम हमसे रूसे ताकें तिरछी नजरिया ॥टेक॥
जैहैं सैयां परदेसवां हमहूं मारि मरवे कटरिया ॥
बद्री नारायन सेजिया तजि जाय बैठे अटरिया ॥

विचित्र खेमटा

नैनवां लगाये जाय मलिनियां ॥टेक॥
पीन पयोधर छीन कटि सरस सलोने गात।
चितवत चहु दिशि चपल चख चित चोरत चलि जात,
कटि लचकाये जाय मलिनियां ॥
चन्द अमन्द कपोल जुग लोल लोल दरसाय।
मन धन लूट्यो बिवस करि दुस्सह विरह बढ़ाय ॥
जिय ललचाये मलिनियां ॥
केश छोड़ि कर निशि निठुर निज मुख चन्द दुराय।
प्याय मधुर मुसुकानि मद मन दीनो बौराय ॥
चितहि चुराये जाय मलिनियां ॥
मन धीरज साहस लियो मीठे बैन सुनाय।
अब नहि चितवत निठुर चित पहिले प्रीत लगाय ॥
जिय तरसाये जाय मलिनियां ॥

व्याकुलता निशि दिन रहत मन मन पीर पिराय।
लगी कटारी प्रेम की अब नहि धीर धराय ॥
हिय दरकाये जाय मलिनियां ॥
मारि खड्ग जुग भौंह पुनि लोभे दृगन लखाय।
कठिन घाव पर लोन यह पापी गयो लगाय ॥
पीर बढ़ाये जाय मलिनियां ॥
लेत न सुधि कबहूँ निठुर जिय अति रहत अधीर।
यदि कबहूँ लखि परत मुख फेरि बढ़ावत पीर ॥
बिरह जगाये जाय मलिनियां ॥
बिरली चाल सुजान की मन लै करत न बात ॥
बद्रीनाथ विनय किये मोरि मुखहि मुसुकात ॥
जिय सरसाये जाय मलिनियां ॥

ये अखियां सैलानी रँगी दिलजानी सनेहिया रे ॥टेक॥
अब नहि सूझत इन्हैं बेद मग लोक लाज कुल कानी।
फिरत पलक नहीं पिये प्रेम मद, ये दिलदार दीवानी ॥
लाजत नाहिं लजावत जग कहँ सुरझत नहि उरझानी।
बद्रीनाथ न पूछो प्यारे इनकी अकथ कहानी। रंगी दिल० ॥

लाज तजि देखो भटू ब्रजराज ॥टेक॥
"मुख मयंक राजीव विलोचन रूप अनूप मार मद मोचन"
कटि तट पटको साज। लाज··· ॥
"बद्रीनाथ मधुर मन रोचन लगत लखो तजि वेग सकोचन"
जात दुसह दुख भाज। लाज··· ॥

परी चित चोरी करन की वान—तेरी अरी ए जान ? टेक
ताहीं सों दृग वान कान लौं तानत भौंह कमान ॥
श्री वद्री नारायन जू को काहे करत हैरान ॥

कहा कहूँ कहिबो न वनत सखी, लाज जंजीरन सों जकरी रे ॥टे०।
आज अचानक कही कुञ्जनि मैं, मन मोहन वहियां पकरी रे ॥
वद्रीनाथ गैल सकरी विच, मारि भज्यो मोपै कँकरी रे ॥

जाव जहाँ जहाँ रैन सैन किये, माफ करो न लगो छुतियां (पिया) ॥टे०॥
भये ललित कलित लोचन लालन, लगि लाल लीक पीकन गालन ॥
काजल छवि छाय रही भालन, उर राज रहे विन गुन मालन ॥
श्री वद्रीनारायन जू पिय, जान गईं सिगरी घतियां ॥ (पिया)

विष भरी वंसी की तान सुनाई सैयां ॥टेक॥
आन वान कर आंख लराई, मधुर अधर धर सरस वजाई ॥
वद्रीनाथ मन्द मुसुकाई चितहि चुराई सैयां ॥

चित चोर त्रोर चित लै गयो, मुसुकाय मधुर मुख मोर मोर ॥टेक॥
वद्री नारायन वाँके यार, कर आन वान मन लयो हमार ॥
भौंहन मरोर दृग जोर जोर ॥

इन वगियन फेर न आवना ॥टेक.।
चंचल चंचरीक चंपा पै, चखि जनि जनम गवावना ॥
वदरी नाथ वसंत वीते पर फिर पीछे पछतावना ॥

खेमटा

मुल्तानी का खिमटा

तेरे ओ मेरे प्यारे लटकसाल पर लटकी ।।टेक।।
जब से लखी नहीं सुधि तब तैं औघट घाटन घट की ।।
श्री बदरी नारायन मोही लखि छवि नागर नट की ।।

पियारे यार ही चित चोर ।।टेक।।
लखि मुख अम्बुज मधुकर मो मन लोभित होत अथोर ।।
दामिन दसन अलक घन लखि लखि नाचत है मन मोर ।।
बद्रीनाथ कपोल लोल ससि लखि चख होत चकोर ।।

साँवलिया सुन ले अरज हमार ।।टेक।।
जान देहु घर भोर होत है बांके मोहन यार ।।
बाँह मरोरि देत हौ रबस, कहो कौन यह प्यार ।।
बद्रीनाथ टुटी सब चुड़ियाँ हौ बस निपट गवाँर ।।

मोहत मन मोहन व्रजवाला ।। टेक ।।
चितवत ही चित चोरत चटपट कर मुरली उर मोहन माला ।।
बद्रीनाथ अहीर महा बेपीर बसुरिया बजावन वाला ।।

हूलत हाय नैन कर भाला ।। टेक ।।
अब नहि निकरत क्यों हू सजनी परो दाग उर अन्तर आला ।।
कौनो विधि छुटिबो नहिं लखियत परो अलक काला सों पाला ।।
प्रिय वियोग अखियाँन तिरीछे टपकत रहत जिगर कर छाला ।।
बद्रीनाथ लियो मन बरबस ताकि बड़ी बड़ी अँखियन वाला ।।

पिय के पास हमें कोऊ ले चलो ॥ टेक ॥
सोवत आज मिले मनमोहन, खुलि गईं अखियाँ भईं निरास ॥
बद्रीनाथ पिया बिनु सब जग, इन अखियन को लगत उदास ॥

नकटा खिमटा

सुथरी सेजरिया साजि के रे—जोहौं तोरी बटिया बालमू रे ॥टेक॥
बिन पिया सूनी सेजिया रे—लेत करवटिया बालमू रे ॥
पिय जिय निठुर न आवते रे—लिखत नहीं पतिया बालमू रे ॥
बीतत नहीं वियोग की रे—बजर सम रतियाँ बालमू रे ॥
बिन पिय बद्रीनाथ जू रे—फटत नहिं छतियाँ बालमू रे ॥

सूही ओढ़नियाँ ओढ़ि के रे—केकर जिय हरवे गोरिया रे ॥टेक॥
भौंह धनुहियाँ तानि के रे—केकर जिय मरवे गोरिया रे ॥
बद्रीनाथ दे कजरा रे—केकर जिय चोरिवे गोरिया रे ॥

विचित्र खिमटा

मिलन पिया जैहौं सैयाँ नगरी रे ॥ टेक ॥
नहिँ जानूँ कित पीव बसत हैं अनजानी डगरी रे ॥
बद्री नारायन नहि दरसत ढूढ़ी ब्रज सिगरी रे ॥

निरखन नारि बिरानी, सखी दिलजानी कधैया रे ॥टेक॥
बद्रीनाथ ढीठ ढोटा यह, बीर बड़ो सैलानी ॥
बरबस बाँह पकरि बिलमावत, भरन देत नहिँ पानी ॥

रोकत मग हठ ठानी, सखी सैलानो कन्हैया ॥ टेक ॥
वा विलोकि नहिँ रहत ज्ञान बुधि, लोक लाज कुलकानी।
बद्रीनाथ यार अलबेला छलबलिया दिलजानी ॥
सखी सैलानी कन्हैया।

नीकी लागै यार तोरी बोलिया ॥ टेक ॥
बद्रीनाथ लियो बरबस सूरति मूरति मथन सम भोलिया ॥

नीकी लागे सूरत तोरी जनियाँ ॥ टेक ॥
बद्रीनाथ गरीबन मारन जोबन मदमातो खतिरनियाँ ॥

गले पर प्यारी फेरी कटारी ॥ टेक ॥
दिल अपने की इच्छा यह अरु बहुत दिनन की चाह तुमारी ॥
बद्रीनाथ हाय मत रोको—यार तुम्हैं बस सौंह हमारी ॥

आली आज अगनवाँ नजर मोहिं लागी (राम) ॥ टेक ॥
हिय धरकत जिय थर थर काँपत विरह पीर उर जागी ॥
बदरी नारायन पिय सौतिन देखी मोहिँ अभागी ॥

नवल बनक बन आये—ठगिहौ केहि आज ॥ टेक ॥
श्रीबद्रीनारायन सजि सुभ साज, नेक गले लग जाओ प्यारे ब्रजराज

सोहै पगरिया धानी सनम सिर ॥ टेक ॥
रँगराते माते नयना तन छलकत मस्त जवानी ॥
नवल नागरिन को मन मोहन बद्रीनाथ दिलजानी ॥

खिमटा नये चाल का

वतियाँ रतियाँ वनैहौ फेरि तुम ॥ टेक ॥
हमसो एसई कर वतियाँ छुतियाँ उन्हैं लगैहौ फेरि तुम ॥
अधर सुधा मधु प्याय और को इहि जिय को तरसैहौ फेरि तुम ॥
कवहूँ लखाय चन्दमुख प्यारे अँखियन सुख सरसैहो फेरि तुम ॥
वद्रीनाथ गये पर भीतर कवहूँ न फेरि सरसैहौ फेरि तुम ॥

जनि अवहूँ परदेस जाव—सूनी सैय्याँ सेज हमारी ॥ टेक ॥
हा हा खात परत पैंयाँ दिलदार यार दिलजानी ॥
श्रीवद्रीनारायन लखिये जोवन जोर जवानी ॥

छोड़ो छोड़ो कलैया हमारी—जाव चले घर माफ़ करो जी ॥टे०॥
श्रीवद्रीनारायन जू जहँ जाय गवाँये रैन;
धाय धाय परि परि उन्हीं की लीजै वलैया ॥

सैयां मोंहे लादे चम्पाकली ॥ टेक ॥
रोज़ कहत आनत नहिं कवहूँ—हौं वस यार लवार छली ॥
वद्रीनाथ झूठ नित वोलत, वात नहीं यह यार भली ॥

दक्षिणी गुलेलखन्डी खिमटा

सिर ऊदी पगरिया न देओ, नजरिया न लागै कहूँ ॥ टेक ॥
वद्रीनाथ यार दिलजानी मोरी अरज सुनि लेओ ॥

जनि कीजै पिया अपमान—जुवन मदमाती लली ॥ टेक ॥
हा हा खात न मानत प्यारी—सीखी अनोखी बान ॥
वद्रीनाथ नैन सर मारत—तानत भौंह कमान ।

पूर्वी खेमटा

बद्रीनाथ यार दिलजानी आओ न मोरी नगरिया ॥ टेक ॥
मोरी गली आवत नित गावत, बाँधे सुरुख पगरिया ॥
तोरी सुरतिया पर मोर जिय ललचै, ताको तिरछी नजरिया ॥

बरसाने की बाँकी गुजरिया, नैनों से नैना लगाये जाय ॥ टेक ॥
चितवत अस जनु लाज भरे दृग अलि मृग मीन लजाये जाय ॥
बद्रीनाथ मधुर बतियाँ कहि लै मन विरह बढ़ाये जाय ॥

कै गयो चितवत कछु टोना—लै गयो मन नन्द ढोटौना ॥टेक॥
बद्रीनाथ विलोकत वाके—भूलत खानपान अरु सोना—कै गयो० ॥

देखि लुभानी सुरत तोरी जानी ॥ टेक ॥
वह मुसक्यानि मनोहर मुख की वह चितवन अलसानी ॥
बद्रीनाथ हाथ सो मन दै, भल कर मल पछुतानी ॥

समझावत गईं हार, यार मोरा मानेना ॥ टेक ॥
औरन के सँग रहत रसीलो हम सोँ कछु अनुरागै ना ॥
बद्रीनाथ नवल ढोटो यह, प्रीत रीत कछु जाने ना ॥

छिन पल कल नहिं पड़त उन्हें बिन, रह रह जिय घबरावे ॥टेक॥
सूने भवन अकेली सेजिया, सपनहुँ नीद न आवै रे ॥
बद्रीनाथ डालि कछु टोनौ—अब नहिं सुरत दिखावै रे ॥

चितवत हीं चुभि जात हिये बिच, तिरछी तोरी नजरिया ॥टेक॥
बद्रीनाथ हिये बिच लागै—जैसी चोखी कटरिया ॥

नेक गले लग जा दिलजानी—तुझ पर मैं गई वारी रे ॥टेक॥
बद्रीनाथ पियारे प्रीतम, पैयां लागूं तेहारी रे ॥

मारी कैसी हिये हनि नैनों की तूने कटार ॥ टेक ॥
परत नहीं कल अब तो छुन पल, करत जात लाचार ॥
तुम बिन बद्रीनारायन मन व्याकुल होत हमार ॥

बातैं ऐसी कहो जनि जाओ हटो महराज ॥ टेक ॥
डगर बगर बिच रगर करत हौ धरत न हिय डर लाज ॥
लेत पकड़ छाँड़त नाहीं तुम, नाहक करत अकाज ॥
पर युवतिन के निरखन हित नित साजे नटवर साज ॥
बद्रीनारायन एक तुमहीं भये रसिक सिरताज ॥

मसकि मुरकाई कलाई—परिगा अनारी से काम ॥टेक॥
चुरियाँ चूर चूर कर तूरी—गर मोतिन के दाम ॥
आँगी दरकी देखि हँसत सब सँगवारी ब्रज-बाम ॥
श्री बद्रीनारायन सो मिलि खूब भई बदनाम ॥

समझ कर गारी न दे रे ए रे अनारी नदान ॥ टेक ॥
कारे ये अहीर वारे जा चरा बनै बछरान ॥
ओढ़े कारी कमरिया जनावत नाहक सान गुमान ॥
खैहौ मार ढँगन इन इक दिन, बोल सम्भार जबान ॥
श्रीबदरी नारायन छोड़ो ऐसी अनोखी बान ॥

गोरी तोरी भूलै न मुरि मुसुकान ॥ टेक ॥
जहिरीली अँखियन की चितवन—हिय बेधै ज्यों बान ॥
श्रीबदरी नारायन अब क्यों तानत भौंह कमान ॥

कठिन नयनों की अरी उलझान चन्द चकोर समान ॥टेक॥
ज्यों लखि ललकि पतंग दीप पर करत निछावर प्रान ॥
मरतहु बार रहत दिलवर के देखन को अरमान ॥
जग जंजाल लाख लाग्यो मन भूलत ना वा ध्यान ॥
लाभ हानि बदरी नारायन पड़त एक सम जान ॥

रूसा सजन बगिया में कोऊ लावै मनाय ॥ टेक ॥
बद्रीनाथ पिया रतियागे हमसो रिसाय,
देहौं हाथ की कगना रे जो लावे मनाय ॥

तुमी सैयाँ लीन मोरी मुनरी रे ॥ टेक ॥
बद्रीनाथ सेज पर छूटी, साँची बताओ कितै धर दीन मोरी मुनरी रे।

मोरी मुनरी रे देवरवै लीन ॥ टेक ॥
बद्रीनाथ अजब छल कीनो लपट झपट मोरे कर सों छीन ॥

भूलि जनि जैयो यह बतियां रे ॥ टेक ॥
जात विदेस सन्देस आपनी की लिखियो पतियां रे ॥
बद्रीनाथ वेग ही बालम लौट लगो छतियां रे ॥

खिमटा

सुरतिआ तोरी नाहीं बिसरै रे ॥ टेक ॥
हिय दरसन पै खीची सी छबि नेकहु नाहिं टरै ॥
करद परी सो कसकत सोचत बरबस विकल करै रे ॥
सुधि आए औचक चित पर बिजली सी टूट परै रे ॥
श्रीबद्री नारायन जू जग के सब सोच हरै रे ॥

रूस गयो पिया रात मनाए मोरे मानैना ॥ टेक ॥
चितवत अस जनु कबहुँ की हमसों पहिचानै ना ॥
बदरीनाथ यार बेदरदी, नेक दया उर आनै ना ॥

बदरीनाथ यार दिलजानी, आओ मोरी डगरिया ॥ टेक ॥
मोरी गली नित आवत बाँधे टेढ़ी पगरिया ॥
तोरी सुरत पर मोर जिय ललचै, ताके तिरछी नजरिया ॥

मनमोहन दिलजानी भरन दे पानी ॥ टेक ॥
तुमहो एक छैल जग जन में, निरखत नारि बिरानी ॥
श्री बद्री नारायन जू पिय आय रार क्यों ठानी ॥

घाव कारी कटारी नजरिया कैसी प्यारी लगाई रे ॥ टेक ॥
मन्द मधुर मुसुकाय लुभायो, प्रीत जानी जगाई रे ॥
बदरी नारायन जनु टोना डारि बौरी बनाई रे ॥

प्यारे तेरे नैन रँग राते ॥ टेक ॥
करि छबि छीन मीन, अलि, सारँग, निज गरूर मदमाते ॥
श्री बदरी नारायन जू चित चोरी करत लजाते ॥

खिमटा

चितै जनु करि गयो टोना रे ॥ टेक ॥
भूख प्यास छूटी तबही सों, नैन रैन सोना रे ॥
बदरीनारायन दिलवर यार, अब जोगिन होना रे ॥

न भूलै सुरतिया यार की हो ॥ टेक ॥
मुख मोरनि मुसुकानि मनोहर वहु चितवन कछु प्यार की हो ॥
वदरीनाथ मोहनी मूरत मन मोहन दिलदार की हो ॥

सखि सतरानि नहीं यहु नीकी ॥ टेक ॥
हाहा ! खाय परत पायन नहिँ सुनत विनय तूं पी की ॥
श्री वदरी नारायन जू है कैसी कठोर जी की ॥

खिमटा परच

सूरत मूरत मैन लखे विन नैना न मानैं मोर ॥ टेक ॥
वरजत हारि गई नहिँ मानत जात चले वरजोर ॥
बदरीनाथ यार दिलजानी मानत नाहिँ निहोर ॥

गोरिया तूने तो जादू चलाय दीनों रे ॥ टेक ॥
एकहि पलक झलक दिखला दिल दिलवर लाख लुभा लीनो रे।
श्रीबदरीनारायन जू मन लेकै हाय दगा दीनो रे ॥

काहे मोरी सुरतिश्रा भुला दीनो रे ॥ टेक ॥
जबसों गये पतिया पठई नहिँ, चाल निराली नई लीनो रे ॥
बदरीनाथ यार दिलजानी वाहु ! निबाह भली कीनो रे ॥

देखो सारी हमारी भिजा दीनो रे ॥ टेक ॥
पिचकारी मुरारी चला दीनो रे ॥
श्रीवदरीनारायन जू पिय भाल गुलाल लगा दीनो रे ॥

बसन्त बिन्दु

बसन्त प्रकरण

बहार

बगियन बिचँ बरस रही बहार ॥टेक॥
कोकिल कुल कलरव करत कुंज, मानहुँ मनोज के चोवदार ॥
श्री बदरी नारायन निहार, जग अमराईं करि करि सिंगार ॥
कुसुमित वन सुखमा अति अपार ॥

चिटकन चहुँ ओर लगीं कलियाँ, छवि छाय रहीं ऋतुराज आज ॥टे०॥
फूलत गुलाब गहि आब और, सोंही अमराई सहित बौर ॥
लखि गुल अनार मोंही अलियाँ ॥

क्या मन्द पवन शीतल डोलैं, वन में बुल बुल विहंग बोलैं;
कल कुंजन कूकत कोइलिया ॥

श्री बद्री नारायन बहार, होली, बसन्त, काफी, धमार;
सुर सिन्दूरा पूरित गलियाँ ॥

ऋतु सरस सुखद छवि छाई री ॥टेक॥
सुभ सौरभ सुमन समीर सनो,
लोगन सुखमा सरसाई री ॥ ऋतु सरस०

कालिन्दी कूल कलित कुंजनि
कोकिल की कलरव भाई री ॥ ऋतु सरस०

अवलम्बित औरै ओप अवलि;
अलि अमराई अधिकाई री ॥ ऋतु०

चहुँ चारु चमक चौगुनी चन्द
चख चितवत चितहि चुराई री ॥ ऋतु०

बागन बिहगावलि बोल बजत
बलि विमल वसन्त बधाई री ॥ ऋतु०

मधु माधव मास मयङ्क मुखी
मानिनी मनोज मनाई री ॥ ऋतु०

भल भौंर भीर अभिरी भूलैं
भ्राजनि भुजङ्ग भरमाई री ॥ ऋतु०

श्रीयुत बदरी नारायन जू
कविवर बहार तव गाई रे ॥ ऋतु०

आये न अजौं वे हाय बीर। बौरीं बनि बैरिन आमिनियां ॥ टेक ॥
गुल अनार कचनार सुहाए, औरैं आब गुलाब ले आए;
दाऊदी दुति दामिनियां ॥

गुल्लाले लाली लहक़ाए, जनु होली खेलत चलि आए,
लखत जगे से जामिनियां ॥

खेतन अति अतिसी सरसाई, सरसों सुमन वसन्त ले आई
पीत पटी कल कामिनियां ॥

श्रीबदरीनारायन बन में, फूले ललित पलास पवन में;
शीतल गति गज गामिनियां ॥

रूप के रूप जगत जनाय, छिटकीं चमकीली चांदनियां ॥ टेक ॥
ज्यों चन्द अमन्द अमी अन्हाय, निखरी सोहैं द्युति दामिनियां ॥
चित चोरनि मैं ज्यों चन्द मुखी, चंचल दृग भोरी भामिनियां ॥
सित अभिसारिका चली पिय पै, सजि सित सिँगार कल कामिनियां ॥
वन आईं वदरीनारायन, वनिता वसन्त गज गामिनियां ॥

ए री मतवाली ! मालिनियां कित जादू डाले जात चली ॥टे०॥
दिखलाय हाय ! कछु कहि न जाय !! उघरत चंचल अंचल छिपाय;
उभरे औचक युग कंज कली ॥
छवि चम्पक की सी अंगन को, द्युति कुन्दकली सी दन्तन की;
लाली गुल्लाला अधर छली ॥
हैं ललित कपोल अमल कैसे, तापै तिल की शोभा कैसे—
सोवत गुलाब पै जाय अली ॥
श्री वदरी नारायन प्यारी, नरगिसी आंख वाली आरी !
छवि तेरी लागति मोहें भली ॥

कैसी यह बान सिखी गुय्यां ॥टेक॥
छाई ऋतु सरस सुहाय रही, तिह औसर वीर रिसाय रही;
चली री बलि लागति हूँ पैयां ॥
बगियन मधुकर गन गूंजत हैं, कल कोकिल कुंजन कूंजत हैं
तजि कै अब मान मिलौ सजनी ! वदरी नारायन जू सैयां ॥

बहार

कैसी यह बान सिखी गुय्याँ, छाइ ऋतु सरस सुहाय रही
तिहि औसर बीच रिसाय रही, चल री वलि लागत हूँ पैयां ॥टे०॥

बगियन मधुकर गन गूंजत हैं, कल कोकिल कुंजन कूजत हैं।
तजि कै अब मान लियो सजनी, बदरी नारायन जू सैयां ॥

छन्द अष्टपदी

सजि साज आज आयो बसन्त, सब सरस सु ऋतु कामिनी कन्त,
संयोगिन सुरपति सुख समन्त, विरही जन मानहु समय अन्त;
सजि साज आज०

सीतल सुभगति संचलित धीर, सनि सौरभ सुखद सुमन समीर,
उन्मादित करि मद मयन वीर, फहरावत अंचल युवति चीर ॥
सजि साज आज०

बिहरत विहगावलि व्योम जाय, निज पङ्क पच्छिनी से मिलाय,
कहुँ कूंजत कल कुञ्जन सुहाय, बोलत बोलन मन लै लुभाय;
सजि साज आज०

पल्लव लै ललित लता लवंग, लपटीं तरु नवल ललाम संग,
लहि फूल अमल मल सकल रंग प्याले जनु कलित सुरा अनंग;
सजि साज आज०

बिकसे गुलाब गहि आब आन, अलि अवलि सहित शोभायमान,
छिति छबि औलोकन समै जान, जनु लै सत दृग सोभित महान;
सजि साज आज०

अमराई में बौरे रसाल, जनु ऋतु पति की बरछी कराल,
कुसुमित बन किंशुक सुमन जाल, मनु नाहर नख युत रुधिर लाल;
सजि साज आज०

अति चन्द अमन्द भयो प्रगास, जनु रजनि युवति विहसन बिलास,
उगि उरगन गन करि तम बिनास मानहुँ आभूषन मनि उजास;
सजि साज आज०

बेला अरु मौलसिरीन दाम उर हार नवेली धारि वाम,
मोहन मुनि जन मन मनहुँ काम, दिय पाश नवल उज्वल ललाम;
सजि साज आज०

साहित्य सुधा संगीत सार, गायो बसन्त रागहि सुधार,
बरसाय प्रेमघन रस अपार, शोभित सुरभी सुखमा निहार;
सजि साज आज०

ऋतु नवल सुखद शोभित बहार, बिहँगावलि राजत डार डार ॥टे०॥
सुमनावलि सुखमा कहि न जाय, चित चितवत ही लेती चुराय ॥
मिलि सौरभ सरस सुमन्द गौन, पूरित पराग सों वहत पौन॥
घनप्रेम रह्यो रस, बरस प्यार, बगियन चलि बिहरहु मेरे यार ॥

मुसुक्यात जात मुख मोरि मोरि, निजप्रीतम पै दृग जोरि जोरि ॥टे०॥
कहुँ ग्रीव हिलावत लंक तोरि, कहुँ नाक सकोरति भौं मरोरि ॥
कोउ ठोढ़ी दै कर हँसत थोरि, अति जोबन मद माती किशोरि ॥
कहि बदरी नारायन निहोरि, चित चितवत लेतीं चोरि चोरि ॥

आवत देखो ऋतुराज आज, सजि मनहु मयंक मुखीन साज । टेक॥
मद मत्त मनहु मातङ्ग गौन, सीतल सुगन्ध सनि वहत पौन ॥
सुभ सुमन सुबन बागन विकास, जैसे युवती जन जनित हास ॥
सर सोभित सह अङ्कुर सरोज, जिमि बाला उर उमड़्यो उरोज "
श्रीबदरीनारायन बनाय, नव बनक लियो मन को लुभाय।

होली

होली में मिले भले आय लाल।
मलूँ आज तिहारे गुलाल गाल ॥टेक॥
मैं तो तोहि बनाऊँ नवल बाल, पहिराय सुरंग सारी गुपाल ।

झूमक वेसर वाला विशाल, कसि कंचुकि उर पर मुक्त माल ॥
नैननि अंजन दै विन्दु भाल, सिर सेंदुर गून्हे चिकुर जाल ।
मुख चूमौं मिलि गल वाहि डाल, घन प्रेम सहित कसकैं निकाल ॥

नन्द लाल सब ग्वाल वाल,
रंग पिचकारी भर भर, कर लै धावैं आवैं ॥ टेक ॥
मोर मुकुट पीताम्बर छाजत, निरखत छटा काम लखि भाजत ।
सरस सुरन सों वंसी टेरैं—मधुर अधर धर ॥
कोऊ लै वीर अबीर उड़ावत, कोऊ धमार की धूम मचावत,
कुम कुम मारत कुच तकि—कोउ घूमैं लीने कर कर ॥
श्रीवदरीनारायन जू पिय, हेरत फिरत आज युवती तिय;
कसक मिटावन हेत फाग—अनुरागे घूमैं घर घर ॥

पाय परो पिय हाय, पै मानिनी तू न मानै ॥ टेक ॥
नेक नहीं समझै सजनी क्यों नाहक ही हठ ठानै,
जा विन ह्वै थल मीन दीन गति यासों भौंहन तानै ॥
हा हा खाय करै विनती तुव विरह विथा अकुलानै,
तौ हूँ वीर हठोली तू नहिँ नेक दया उर आनै ॥
है होली की धूम धाम सुनियत धमार की गानै ।
श्रीवदरीनारायन अलि मिलि, भाल गुलाल मलानै ॥

होली खेलत है व्रजराज आली रंग रँगे ॥ टेक ॥
गावत रँग वरसावत आवत,
साजे साज समाज ग्वाला संग लगे ॥
हिलि मिलि मलत गुलाल गाल मैं,
त्यागि परस्पर लाज नागर प्रेम पगे ॥

बद्रीनाथ सखी ललकारत,
लैहो दांव सब आज अब कित जात भगे ॥

रंग उड़ि रहे वीर अबीर आहा! आज लखो ॥ टेक ॥
लाल पाग सिर लसत लाल के लाल बाल वर बीर,
ललित अभूषन लाल लाल के, लालै ग्वाल अहीर ॥
लाल कुंज लहि लाल प्रसूनन, लाल कलिन्दी नीर,
बद्रीनाथ लाल ललना लखि हेरि हरत भव पीर ॥

जमुना तीर खड़े, होली खेलत नन्द के लाल ॥ टेक ॥
इत ते श्याम उड़ावत केसर, रोरी रुचिर गुलाल।
उत पिचकारी भरि भरि धावत मारत हैं वृज बाल,
जमुना तीर०
बाजत ढोल मृदंग झांझ डफ़ मंजीरा करताल,
भरे मदन मद सब ब्रजबासी गावत तान रसाल;
जमुना तीर०
इतने में प्यारी प्रीतम संग कियो अजब यह ख्याल,
चपला सी चौंधी दै मलि गई लाल गुलालन गाल;
जमुना तीर०
बद्रीनाथ सदा चिरजीवो ह्वै नित जुगल वहाल,
मो मन में अब आय बसो करि दया सदा यहि चाल;
जमुना तीर०

होली खेलत है ब्रजराज मिलि ब्रज कामिनी ॥ टेक ॥
स्याम लिये पिचकारी कनक कर बरसावत रंग आवै
इत सों चलत कुंकुमा कुञ्जनि, कूंजि रह्यो संग साज
स्वर कल कामिनी०

श्रीबदरी नारायन जू कवि राग फाग यह गावै
नटवर रसिक शिरोमणि मोहन जू मन मोहन काज
अलि गज गामिनी०

होली खेलत सुन्दर श्याम संग व्रज भामिनी ॥ टेक ॥
भाल गुलाल मलत हिलि मिलि अति युगल छटा अभिराम
जनु घन दामिनी०
बद्रीनाथ गालियां गावत लै मोहन को नाम
कुञ्जर गामिनी०

जुवना वैरी भयो—कैसे दधि वेचन व्रज जांव ॥ टेक ॥
या जुवना लखि को नहिं मोहत, याही डरनि डेरांव,
अति उतङ्ग छतियन पर छलकत कैसे तिनहि छिपांव;
जुवना वैरी भयो०
औचक आनि लगत छतियां नित मोहन जाको नांव,
अब नहिं और उपाय सखी री तजियत गोकुल गांव;
जुवना वैरी भयो०
नट नागर आगर गुन गागर फोरत हौं सकुचांव,
नहि कछु सुनत करत निज मन की लाख भाँति समुझांव;
जुवना वैरी भयो०
लँगर डगर विच करत ठिठोली मैं वारी सरमांव,
बद्री नाथ लेत मन बरबस करि करि लाखन दांव;
जुवना वैरी भयो०

आय डाल गयो, इन नैनन लाल गुलाल। टेक॥
औचक रही जात जमुना तट मोहें मिल्यो नन्दलाल ॥आली०
वा मुसुक्यानि हँसनि वोलनि चितवनि चित चोरनि चाल॥ आली०
वद्रीनाथ लियो मन हिय लगि, मिसि होरी के ख्याल ॥ आली०

सखी फाग के दिन आये ! वन उपवन सुमन सुहाये ॥टेक॥
वौरे रसाल रसीले ! फूले पलास सजीले,
गहि आव गुलाव रंगीले !! चित चंचरीक ललचाये ॥
सखी फाग०
कल कोकिल कूक सुनाई, जनु वजत मनोज वधाई।
मिलि पौन पराग सुहाई, विरही वनिता विलखाये ॥
सखी फाग०
मानी युवा युवती जन, मिलियै प्रियनि निज दै मन।
मानहुँ सिखावत छन छन, तरुवरनि लता लपटाये ॥
सखी फाग०
उड़े नभ गुलालन की छवि, छीट्यो ललित घन जनु रवि।
वदरी नारायन जू कवि, रचि राग फाग तव गाये।
सखी फाग०

ए हो छवीले छैला ! अव तो रंग डालन दे रे ॥टेक॥
दिन फागुन सरस सुहावन, होली हरख उपजावन
प्यारे वदरी नारायन ! आवो लगि जाहु गले रे !!
ए हो छवीले छैला०

सखी राधिका वनवारी रंग रंगे खिलत दोउ होरी ! (टेक)
स्यामा सखी संग लीने, रति की छटा जनु छीने

घन श्याम पैं बरसावैं, कर लै लै रंग पिचकारी

सखी राधिका०

बदरी नारायन जू कवि देखिये यह आज की छवि,
सब ग्वाल बाल मद माते, गावत कबीर औ गारी ॥

सखी राधिका०

मग रोकत बनवारी रे, पनियाँ कैसे जैये ॥टेक॥
लगर डगर बिच रगर करत नित, आवत गावत गारी रे ॥
बद्रीनारायन छतियां तक, मार भजत पिचकारी रे—पनियाँ०

दोहे की होली

छन्द अष्टपदी

विनती यह सुनि लीजिये मोहन मीत सुजान
ह हा ! हरि होरी मैं ।
रसिक रसीले प्रान पिय जिय जनि गुनिये आन
ह हा ! हरि होरी मैं ॥
चल दल लसित द्रुमावली लतिका कुसुमित कुंज
ह हा ! हरि होरी मैं ।
मदन महीपति सैन सम अलि अवलिन को गुंज
ह हा ! हरी होरी मैं ॥
बरस दिनन पर पाइयत भागनि यह त्योहार
ह हा ! हरि होरी मैं ।
मद माते युव युवति जन करति केलि व्योहार
ह हा ! हरि होरी मैं ॥

भरि उछाह तासो पिया प्यारे श्री ब्रजराज
हहा ! या होरी में।
मुरली मुकट दुराय अब साजो युवती-साज
हहा ! या होरी में॥
अञ्जन दृग सिन्दूर सिर चोटी चारु सुहाय
हहा ! हा होरी में।
जरित जवाहिर भूषननि सारी सुरँग सुहाय
हहा ! हा होरी में॥
ऐसे सजि धजि चाव सों बनक विचित्र बनाय
हहा ! हा होरी में।
है जुवती जुवतीन सँग फाग खेलिये आय
हहा ! हा होरी में॥
कसक मिटावहु खोलि हिय खेलहु अब हरखाय
हहा ! हा होरी में।
फेंकहु कुंकुम कुचन पर गाल गुलाल मलाय
हहा ! हा होरी में॥
यों कहि बरसावन लगीं सब हरि ऊपर रंग
सुभग दिन होरी में।
कविवर बद्री नाथ जू गावत पीये भंग
हहा ! हा होरी में॥

चित चोर सुचित ठगो री ॥टेक॥
नासा मोरि नचाय नैन सर भौहैं जुगल मरोरी
तानि कमान कान लगि छाड्यो चित पंछीहि हतोरि
तापै अब मौन गहो री॰

जब सों नैन बान उर लाग्यो तब तें निडर भयो री
नहि काहू के दिशि चितवत वह रूप अभिमान भयो री
नेक दिशि वाके लखोरी०
इत कितने के जीव जात पर उत तो होति ठिठोली
जो कोउ कहत मरत यह प्रेमी तो कहैं काहू करूँ री
नाहि कछु चारो मेरो री०
रूप अनूप दियो विधि ने तौ मत अभिमान करो री
बद्रीनाथ नेक नहि चितवहु प्रानै लैन चहो री
राम सों नेक डरो री०

मुरली धुनि तान सुनाई रे ॥टेक॥
मांगि लियो मेरो मन बरबस मन्द मधुर मुसकाई ।
चंचल चखनि चितौत तिरीछे चित चित चोर चुराई ॥
मैन हिय ऐन बनाई ॥
बीर अबीर मल्यो मुख मेरे नटखट करि लँगराई
श्री बदरी नारायन जू पिय कीनी अजब ढिठाई
छयल छतियाँ सों लगाई ॥

होरी की यह लहर जहर हमै बिन पिय जिय दुख दैया ॥टेक॥
सीरी सरस समीर सखी री ! सनि सनि सौरभ सुख सरसैया;
परसत तन उर उठत थहर । होरी की यह०॥
कुंज कछार कलिन्दी कूलनि कल कोकिल कुल कुंज कसैया
काम करद सम करत कहर; होरी की यह०॥
बन रागनि विहगावलि बोलत बाजत बिमल बसन्त बधैया
पड़त कान सांचहु सुख हर; होरी की यह०॥

वद्रीनाथ यार सों कहियो ए चितचोर ! सुचित्त चुरैया
तेरी रहत सुधि आठो पहर; होरी की यह०॥

राग कलङ्गरा वा ललित

आये री होली के दिन नीके ॥टेक॥
भरि अनुराग फाग चलि खेलहु सँग प्यारे पर पीके॥
तजि कुल लोक लाज गुरुजन भय करहु काज निज ही के॥
श्री बदरी नारायन मिलि सब कसक मिटावहु जी के॥

सखियाँ औचक भोरी रे, उलझ गईं अखियाँ ॥टेक॥
विन देखे नहि चैन इन्हें छन लाज संक सब छोरी री॥
बद्रीनाथ अमल आनन छबि वाकी कैसे कहों री॥
मन्द मधुर मुसुक्याय लियो मन भौहें जुगल मरोरी॥

पिचकारी न विहारी मार ! मेरे लागै चोट बदन में ॥टेक॥
चिमट जात छतियन में हाय ! लखि मोहि अकेली कुंजन में॥
श्री बदरी नारायन बस मत मल गुलाल गालन में॥

जाओ हटो चलो छोड़ो नहीं भावै ऐसी अनैसी कुचाल ॥टेक॥
औचक आय आह ! अञ्चल तकि, पिचकारी रंग डाल॥
ऐचि अंक छतियन लगि दैया, गालन मलत गुलाल॥
श्री बदरी नारायन गावत गाली निरलज ग्वाल॥
हाय ! हाय ! मुख चूमत मेरो, तू पापी नन्द लाल॥

होली की ठुमरी

खेलत होली वृषभान लली संग लिये नवेली नागरियां ॥टेक॥
सब मिलि मनमोहन पैं डालत, भरि करि केसर रंग गागरिया॥

लै लै मुरली हरि की टेरत, दै दै सिर सूही पागरिया॥
नारी बनाय ब्रजराज छबीली छैल बनी गुन आगरिया॥
भरि प्रेमघन यों हरत वृज सुन्दर रूप उजागरिया॥

होली-खेमटा

हमैं नहि नीकी लगै यह आली बसन्त बहार॥टेक॥
पिय बिन सुमन रसाल सरन तकि, मानहु मारत मार।
तरु पलाश फूलन के मिस जनु, बरसत आज अँगार॥
तैसहि आग लगायो बगियन, मैं कचनार अनार।
मारन मैन मंत्र सुनि जात न, मधुकर गन गुञ्जार॥
कहर करन वारी कारी कोकिल की कूक अपार।
सुर न सुहात सिंदूरा काफ़ो, राग बसन्त धमार॥
बीर अबीर अगर केसर रंग, लै आगे तें टार।
श्रीबदरीनारायन बिन जिय, व्याकुल होत हमार॥

फाग चाल बिलवाई

न सूरतिया तोरि भूलै मन तें दिल जानी (वारे हां)॥टेक॥
एक तो तरुनाई बैस रे (वरे हां),
दूजे जोबन जोर जवानी रे (वरे हां)
ये मतवारे मानत ना तोरत अँगिया बन डोरी॥
न सूरतिया०
पिय तुम छाये परदेस रे (वरे हां)
नहि पठवत हाय सँदेस रे,
बेदरदी ! तुम हाय दया तजि भूल गये सुधि मोरी॥
न सूरतिया०

अब आये फागुन मास रे (वरे हाँ)
गई तुमरे मिलन की आस रे,
मदन सतावत बार बार कहिये अब काह करूं री
न सूरतिया०

बदरीनारायन यार रे (वरे हाँ)
मिलिये अब वेगहि धाय रे (वरे हाँ)
डारि गरे बहियां छतियां लगि खेलहु बालम ! (होरी)
न सूरतिया०

तोरी अखियां रतनारी मतवारी प्यारे (वरे हाँ)
मुख तो जनु सारद चन्द रे (वरे हां)
तापै तानत भौंह कमान रे (वरे हां)
गोल कपोलन पैं लटकैं लट हैं जनु नागिन कारी;
तेरी अखियां०

यह अधर मधुर के बीच रे (वरे हां)
जनु कुन्द कली से दन्त रे (वरे हां)
मुस्कुराय मुख मोरि मोरि ये करत रहन चितचोरी
तेरी अंखियां०

लचकीली लचकत लंक रे (वरे हां)
कच अभरन हार के भार रे (वरे हां)
छतियन पर जुवना छलकैं जिय मारत हैं बरजोरी
तेरी अंखियां०

चलि चलि मराल सी चाल रे (वरे हां)
दिल घायल करत हमार रे (वरे हां)
श्रीबदरी नारायन जी ! सुधि भूलत नाहीं तोरी
तेरी अंखियां०

दूसरे चाल का

छोड़ देश्रो वहियां हमारी ॥टेक॥
गारी गावत रँग वरसावत, कर लीन्हे पिचकारी ॥
लै गुलाल कर गाल मलत हौ भली न बान तुमारी ।
लपटि झपटि उर लागत मोहन, तोरत हार हजारी ॥
बद्रीनाथ टूटीं सब चुड़ियां हो बस निपट अनारी ॥

होली

एहो छबीले छैल ! अब तो रँग डालन दे रे ॥टेक॥
दिन फागुन सरस सुहावन, होली हरख उपजावन,
प्यारे बदरीनारायन ! आवो लगि जाहु गले रे ॥
एहो छबीले छैला ॥

लै जुवना कित जावँरी ! आये फागुन वैरी ॥टेक॥
लँगर डगर बिच रहत खरो, पिचकी कर लै री ॥
आये फागुन वैरी ॥
बनमाली आली रगरी, गाली नित दै री ॥
आये फागुन वैरी ॥

क्यों चितवै मेरी आली री ! करि नयन लजीले ॥टेक॥
श्रीबदरी नारायन सजनी मान कही कछु मेरी (एरे होरे)
मिलि विहरहु गल मैं भुज दै सँग सुन्दर स्याम सजीले री—
करि नयन०

कर चुरिया करकाई रे अति ढीठ कन्हाई ॥टेक॥
त्रिलमावत गावत रस गीतन चितवन चित्त चुराई—
अति ढीठ कन्हाई० ॥

शोभा पुंज कुंज मैं आली, औचक आन मिल्यो वनमाली;
बद्रीनाथ हाथ दै गालन, गाल गुलाल लगाई रे ॥
अति ढीठ कन्हाई० ॥

खेलत फाग आज मनमोहन सखियन संग सजे ॥टेक॥
गाली गावत रँग बरसावत गुरजन संक तजे ॥
गाल गुलाल अंग रँग केसर लखि २ मैन लजे ॥
बद्रीनाथ विलोकि नवल छवि मुनि मन हाथ भजे ॥

मुलतानी में

कछु कही न जात री उनकी वात ॥टेक॥
छलिया वह बद्रीनाथ यार भाज्यो नैनन सर सैनन मार,
मृदु मन्द मधु मुसुक्यात ॥

सुन एरी वीर ! बलवीर चीर रँग दीनो,
मारी पिचकारी छतियाँ तक छयल मदन मद भीनो ॥टे०॥
भाल गुलाल मलत मुख चूम्यो,
मन छलिया छल छीनो ॥

लाज जजीरन सों जकरी,
कछु कहि न जात का कीनो ॥
बाँकी बनक दिखाय हाय,
वह काम कला परवीनो ॥
श्री बदरी नारायन जू पिय,
सुधि बुधि सब हर लीनो ॥

होली यति

आओ जी आओ जी बांके यार, कित जात चले भजि ॥टेक॥
नोखे छयल बने घूमत हो, गावत फिरत जो गारी,
श्रीबदरी नारायन जू परिहै पिचकिन की मार ॥

एरी गोरी ! होरी हो रही री ॥टेक॥
खेलत अलि हिलि मिलि मन मोहन, श्री वृषभान किशोरी ॥
चलियत कत नहिँ सज धज खेलन अब कत गहर करो री ॥
बद्रीनाथ दोऊ रँगराते, करत युगल चित चोरी ॥

होली–सोहनी

सुघर खेलार यार बनमाली बहकि न गाली गाओ ॥टेक॥
लखि टुक मुख अपनो तब एहो, हम पर रँग बरसाओ ॥
बालक एक अहीर दीन के, सुरपति शान जनाओ ॥
श्री बद्रीनारायन कविवर, बाद बिवाद बढ़ाओ ॥

ललित वा पस्व

भाजत रँग डार डार एहो जसुमति कुमार,
देखो इत ठाढ़ी वृषभानु की लली ॥टेक॥
गावत गाली बनाय, मीठी मुरली बजाय,
रोकत वर वामन वन कुंज की गली ॥
देखत नहिँ तुमरी ओर, राधे माधो किशोर,
बदरी नारायन लहि स्वात या भली ॥

होली–सिंदूरा

इन गलियन कित आवत हौ जू—
लाज शंक नहिँ लावत हौ जू ॥टेक॥
लै लै नाम हमारो गाली वंसी वीच वजावत हौ जू ॥
छैल अनोखे आप जानि जिय, जापै जोर जनावत हौ जू ॥
लालन ग्वालन वाल लिये लखि अलिन नवेलिन धावत हौ जू ॥
वालन के भालन गालन मैं लाल गुलाल लगावत हौ जू ॥
पिचकारी छतियन तकि मारत, चोली चीर भिजावत हौं जू ॥
गाय कवीर अहीरन के सँग निज कुल नाम नसावत हौ जू ॥
पी पी भंग रंग सों रँगि तन डफ करताल वजावत हौ जू ॥
ऊधम धूधरि अधम अलौकिक धूम धमार मचावत हौ जू ॥
वेटा वाप वड़े के हो क्यों कुलहि कलंक लगावत हौ जू ॥
श्री वद्री नारायन जू फिर स्याम सुजान कहावत हौ जू ॥

क्यों यह अँड़ दिखावत हौ जू, वादहिँ वैर बढ़ावत हौ जू ॥टे०॥
जैहौ सीख स्याम सब दिन की, काहे मन अकुलावत हौ जू ॥
बदरी नारायन जू जौ आज चले इत आवत हौ जू ॥

होली की फुटकर चीज़ें

कान्हरा

सखियाँ फाग के दिन आये रे ।।टेक।।
किलकत कोकिल चढ़ि डार डार धुनि सुनि मुनि मनहि लुभाये रे ॥
श्री वद्री नारायन कविवर, गावत राग फाग तिय घर घर,
बन ललित पलास विकास सरस, सोहे गुलाब गहि आब नवल,
लखि मधुकर मनहि लुभाये रे ॥

जानी जानी लँगर तोरी ये लँगराई रे ।
मारी पिचकारी सारी हमारी भिजोई रे ॥
श्री वद्री नारायन दिलवर, आय धाय लग गयो हाय गर
भाज्यो मुख चूमि गाल गुलाल लगाई रे ॥

होरी भैरवी

बड़ो यह नटखट ढोटा है, देखत छोटा है ।।टेक।।
श्री वदरी नारायन आली, होली के दिन आज कुचाली,
पिचकारी मारी चटपट वहिंया गहि लीनो रे;
चुरिया करकाई हिय लगि, अंगिया दरकाई रे,
काह कहूँ नागर नट कों, अति खोटा है ॥

धनाश्री होली

छबीली ! छीन होत कत, छन छवि हरनी !! छिन छिन छी जात ।।टे०।।
उड़त गुलाल लाल नभ लखियत लाल लवँग लहरात ॥
कल कोकिल कूजत कुञ्जनि बिच चित हित सबद सुनात ॥

बन बागनि बगरो बसन्त अलि सहित सुमन सुहात ॥
बद्रीनाथ बिलोकत कत नहिं! आव गुलाव प्रभात ॥

सखि आये हैं फागुन मास पिया नहिँ आये ॥टेक॥
बगिअन मैं फूले गुलाव कचनार अनार सुहाये ॥
महुआ फूलि फूले टेसू वन से सब आग लगाये ॥
बौरे आम अरी अमरायिन कोकिल कूक सुनाये ॥
अभिरी भीर भवँर की भनकत बौरी जिन मोहिँ बनाये ॥
उड़त अबीर गुलाल अरगजा केसर रँग बरसाये।
बाजत डफ मिर्दङ्ग झाँझ सब धूम धमार मचाये ॥

घाटो वा चैती

नाहक जियरा लगावल रामा वेदरदी के संग ॥टेक॥
आशा में यह रूप सुधा के अपनहुँ मनवा गवावल रामा (रामा)
अलक जाल महँमान पंछी कह बरबस आनि फसावलि रामा!
कबहूँ न हँसि बोलो वह प्रीतम रोवत जनम गवावल रामा!
बद्रीनाथ प्रीति निरमोही सो करि भल पावल रामा!

जालिम जोर जुबनवां रामा! कैसे छिपावों ॥टेक॥
इन पर नजर गुजर सब ही को, बचत न कोटि दुरावों ॥
बद्रीनाथ कहर करिबे हित रुकत न कोटि मनाओं ॥

कैसे लागी लगनियाँ हो रामा! मोरी तोरी ॥टेक॥
मिलत बनै न चैन बिछुरत नहिँ कीजै कौन जतनियाँ हो रामा ॥
श्री बद्री नारायन जू यह, अजब नैन उलझनियाँ हो रामा ॥

डफ की होली या रसिया

भाजै जनि झाँकि झरोखे तैं ॥
काह बिगरि जैहै री तेरो मेरे नयननि तोखे तैं ॥
बरबस व्याकुल करत हाय मन मारि चारु चख चोखे तैं ॥
चन्द बदन फिर आय दिखा दै हा हा ! भाय अनोखे तैं ॥
प्रेम प्रेमघन मन उपजावत हरत लाज के धोखे तैं ॥

आवै किन उतरि अटारी तैं ॥
घायल करत तिहारे नैना क्यों मारत पिचकारी तैं ॥
ललित कुंकुमा से कुच तेरे झलकत झीनी सारी तैं ॥
बरसावत रस बिहसि प्रेमघन काम जगावत गारी तैं ॥

कैसो यह स्वांग सजो रसिया ॥
लाल नाम सम लाल रँग्यो तन सुभग सांवरी सूरतिया ॥
कारी कामरि लाल लाल सिर मोर मुकुट पीरी पगिया ॥
लाल पीत पट लाल माल बन लाल हरेरी बांसुरिया ॥
पीये भंग रँगे रँग गाली गावत बकत निलज बतिया ॥
लाल नाम सच कियो प्रेमघन कौन कहो किन सांवलिया ॥

बृज में चहु ओर मची होली ।
बजत मृदंग चंग डफ ढोलक झांझ मजीरन की जोरी ॥
नाचत ग्वाल बाल रँग राते गावत राग फाग कोरी ॥
उड़त गुलाल लाल भये बादर बरसत रँग खोरी खोरी ॥

खेलत फाग परस्पर हिल मिल नर नारिन गहि झक झोरी ॥
पकरि पर्‌यो सांवरो सखिन कर गहि केसर रँग सों बोरी ॥
धै बृषभान लली ढिग लाईं धरी माल मुरली छोरी ॥
मलत गुलाल गाल लालन के सुनि गाली राधा गोरी ॥
बरसि रहे रस जुगल प्रेमघन करत परस्पर चित चोरी ॥

दिखराय दै नेक झलक ऐ री ।
आय उतै लगवाय हाय हम भरि लाये गुलाल झोरी ॥
बरसावत रँग पिचकारिन सों छिपी प्रेमघन क्यों गोरी ॥

तरसाय जनि रूप भिखारी की ।
दै दिखाय मुखचन्द टारि टुक प्यारी घूँघट सारी की ॥
बरसि आज रस बिहँसि प्रेमघन सौहैं तोहि बनवारी की ॥

कबीर

कबीर झर र र र र र र र हाँ ।
होरी हिन्दुन के घरे भरि २ धावत रंग
सब के ऊपर नावत गारी गावत पीये भंग,
भला—भले भागैं बेधरमी मुँह मोरे ॥

कबीर झर र र र र र र र हाँ ।
पश्चिम उत्तर देश में जुरि जातीय समाज ।
हर्षित प्रजा कियो पर्‌यो बैरिन के सिर गाज,
भला—भले सब रोवत घूमैं बिलखाने ॥

कबीर भर र र र र र र हाँ।

विजय कांग्रेस की भई अंटी* अंटी* खाय;

पकड़ि गई पड़ि पह वह झुसकत है मुहाँ बाय।

भला—सब देश के वैरी रोवत हैं।

---

*यहाँ पर प्राचीन समय में एन्टी कांग्रेस का संकेत है

स्वदेश बिन्दु

स्वदेश विन्दु

जातीय गीत

बन्देमातरम्

जय जय भारत भूमि भवानी।
जाकी सुयश पताका जग के दसहूँ दिसि फहरानी॥
सब सुख सामग्री पूरित ऋतु सकल समान सोहानी।
जाकी श्री शोभा लखि अलका अमरावती खिसानी।
धर्म्म सूर जित उयो; नीति जहँ गई प्रथम पहिचानी॥
सकल कला गुन सहित सभ्यता जहँ सों सबहि सुभानी।
भये असंख्य जहां योगी तापस ऋषिवर मुनि ज्ञानी।
विबुध बिप्र विज्ञान सकल विद्या जिन ते जग जानी।
जग विजयी नृप रहे कबहुँ जहँ न्याय निरत गुण खानी॥
जिन प्रताप सुर असुरन हूँ की हिम्मत बिनसि बिलानी।
कालहु सम अरि तृन समुझत जहँ के छत्री अभिमानी॥
बीर बधू बुध जननि रहीं लाखनि जित सखी सयानी।
कोटि कोटि जहँ कोटि पती रत बनिज बनिक धन दानी॥
सेवत शिल्प यथोचित सेवा सूद समृद्धि बढ़ानी।
जाको अन्न खाय ऐंड़ति जग जाति अनेक अघानी॥
जाकी सम्पति लुटत हजारन बरसन हूँ न खोटानी।
सहत सहस बरिसन दुख नित नव जो न ग्लानि उरआनी।
सम्पति सौरभ सोभा सन जग नृप गन मनहुँ लुभानी।
प्रनमत तीस कोटि जन जा कहँ अजहुँ जोरि जुग पानी॥

जिन मैं झलक एकता की लखि जग मति सहमि सकानी।
ईश कृपा लहि बहुरि प्रेमघन बनहु सोई छुधि छानी॥
सोइ प्रताप गुन गन गर्वित ह्वै भरी पुरी धन धानी।
काहे रोवत हो छत्रीगन अपने करतब के फल पाय॥
रघु, अज, राम, कृष्ण, अरजुन के निर्मल कुल मैं जाय।
त्याग्यो उनको मारग तुम भल चले कुपथ चित चाय॥
तुमहिँ शाक्यमुनि, गौतम बुद्ध, ह्वै जग जन बुधि बहकाय।
निन्दा वेद, यज्ञ, द्विज की करि दियो धरम बिनसाय॥
मिथ्या जीव दया दिखाय दियो देसहि निबल बनाय।
बोयो बीज विरोध समय निरुपद्रव मैं इत ल्याय॥
चन्द्रगुप्त सम होन लगे नृप, यवनी रानी आय।
गयो तेज वह आरजता नसि सूद्र कहाये राय॥
तुम असोक ह्वै बौद्ध, त्यागि मत वैदिक, ठाटनि ठाय।
साठ हजार द्विजन एकै दिन दीनो देस छुड़ाय॥
कल्पित धरम प्रचारयो निज सासन बल जगत जगाय।
नास्यो हिंसा ही सँग हिम्मत, तेज, पराक्रम, हाय!!
निबल होय जयचन्द पिथौरादिक गृह कलह बढ़ाय।
टेरि आपु निज घर भरमाला सत्रुन दियो दिखाय॥
लरि लरि जीत जीत परबल रिपु धन लै छोड्यो भाय।
हारि कटायो सीस उनहिं कर भारत गरब गवाँय॥
धारि परस्पर बैर लड़े नहिं इक सँग सन्मुख धाय।
नास्यो धरम स्वतन्त्रता सबै कादरता प्रगटाय॥
तुमरी भूलनि भला प्रेमघन गिनि कब सकै बताय।
जैसो कियों सहो तैसो क्यों सोचहु सीस नवाय॥

———

स्त्रियों की कीर्ति

प्रधान प्रकार

धनि २ भारत की भामिनियाँ जिनको सुजस रह्यो जग छाय ।
कमला गौरी, गिरा, शची जिहि निरखि रहीं सकुचाय ॥
भईं गार्गी मैत्रेई मुनि पत्नी मुनिन हराय ।
विदुषी विशद ब्रह्म विद्या की तिय कुल मान बढ़ाय ॥
अरुन्धती अनुसूया, लोपामुद्रा पतिव्रत लाय ।
सावित्री, सीता, दमयन्ती, गन्धारी बरियाय ॥
सुदच्छिना, कौसिला, सुभद्रा, रुक्मिनि द्रुपदी पाय ।
वीर नारि भट वधू जननि, जिन गिनि को सकै बताय ॥
कलि पदमिनी, कमलावती तिनहि कुल जाय ।
रूपवती, संयोगिता जगत अचरज दियो देखाय ॥
करमदेवि, तारा दुर्गावति कर कृपान चमकाय ।
विजयिनि, रच्छिनि, देस प्रजा, चण्डी बनि समर सुहाय
धन्य जवाहिर बाई, नील देवि साहस प्रगटाय ।
छत्रानी रानी गन धन्य ! धन्य पन्ना सी धाय ॥
धर्म्म वीर द्वादस सहस्र तिय संग विलम्ब न लगाय ।
विरचि चितौर चिता करनावति भसम भई न बुझाय ॥
रानि भवानि, अहिल्या, मीरा, लच्छिमी बाई आय ।
दया, दान, वैराग्य, भक्ति वैजन्ती दियो उड़ाय ॥
राज प्रबन्धि प्रजा पालिनि उपकारनि जग दरसाय ।
पति सँग भसम भईं तिनकी तौ कोटिन संख्या बाय ॥
लज्जा, दया, धर्म्म, पति सेवा रत सब सहज सुभाय ।
बन्दनीय ते सुमुखि प्रेमघन सब की सीस नवाय ॥

चरखे की चमत्कारी

चला चल चरखा तू दिन रात ।
चलता चरख बनाता निस दिन ज्यों ग्रीषम बरसात ॥
मन मन मंत्र जपा कर मन में सुन न किसी की बात ।
कात कात कर सूत मैनचिस्टर को कर दे मात ॥
टेकुआ का सर साध धनुष रघुबर की लेकर तांत ।
लंका से लंकाशायर का कर विलम्ब बिन घात ॥
शक्ति सुदर्शन चक्र की दिया हरि ने तुझे दिखात ।
तेरे चलने की चरचा सुनि यूरप जो अकुलात ॥
ज्यों ज्यों तू चलता त्यों त्यों आता स्वराज्य नियरात ।
परतन्त्रता दीनता भागी जाती खाती लात ॥
चलना तेरा बन्द हुआ जब से भारत में तात ।
दुखी प्रजा तब से न यहाँ की अन्न पेट भर खात ॥
जो कमात दे देत विदेसिन बसन काज ललचात ।
दै दै अन्न नैनसुख लेत सिटिन साटन बानात ॥
चल तू जिससे खाय दुखी भर पेट दाल औ भात ।
सस्ता सुद्ध स्वदेशी खद्दर पहिन छिपावें गात ॥
हिन्दू मुसलिम जैन पारसी ईसाई सब जात ।
सुखी होंय हिय भरे प्रेम घन सकल भारती भ्रात ॥

(२)

ज्यों ज्यों चपल चरखा चलत ।
बसन व्यापारी विदेसी लखि बिलखि कर मलत ।
कहत गुन २ देत गुन २ दीन गन ज्यों पलत ॥



साहित्य-महारथी प्रेमघन जी (६० वर्ष)

बहुरि भारत में सकल सम्पत्ति साहस हलत।
ज्यों ज्यों चपल०
फेरि कर गह अमित करगह दर्प मिल दल दलत।
कल्पतरु बनि पट पवित्र प्रचारि शुभ फल फलत॥
ज्यों ज्यों चपल०
बहिष्कृत होलिका बीच वसन बिदेसी जलत।
एकता साँचा सवाँरि स्वराज्य सिक्का ढलत॥
ज्यों ज्यों चपल०
देशद्रोहिन के कुतरकनि करत साबित गलत।
राज अधिकारी लखत जे खल तिन्हैं अति खलत॥
ज्यों ज्यों चपल०
वैर फूट बढ़ाय भारतवासिनैं जे छलत।
प्रेमघन तिन मिलन लखि उनको हियो खलभलत॥
ज्यों ज्यों चपल चरखा चलत॥

होली राग काफी

मची है भारत में कैसी होली सब अनीति गति हो ली।
पी प्रमाद मदिरा अधिकारी लाज सरम सब घोली॥
लगे दुसह अन्याय मचावन निरख प्रजा अति भोली।
देश असेस अन्न धन उद्यम सारी सम्पति ढो ली॥
लाय दियो होलिका बिदेसी बसन मचाय ठिठोली।
कियो हीन रोटी धोती नर नाहीं चादर चोली॥
निज दुख व्यथा कथा नहि कहिवे पावत कोउ मुह खोली।
लगे कुमकुमा बम को छूटन पिचकारिन सो गोली॥

बह्यो रक्त छिति पंचनदादिक मनहुँ कुसुम रँग घोली।
हाहाकार धधाक दसो दिसि मची प्रजा मति डोली॥
सत्य आग्रह डफ बजाय सब नाचत मिलि हमजोली।
असहयोग की अबिर उड़ावत आवत भरि २ झोली॥
जय भारत कबीर ललकारत घूमत टोली टोली।
हिन्दू मुसलिम दोउ भाय मिलि कपट गांठ हिय खोली॥
चले स्वराज राह तकि तजि भय, सकल विघ्न तृण छोली।
विजय पताका लै महातमा गांधी घर घर डोली॥